राजस्थानी गौरव ग्रन्थमाळा

(२)

सपादक
नरोत्तमदास स्वामी, अेम अे
मनोहर शर्मा, अेम अे, पी-अेच डी
लक्ष्मी कमळ अम अे, पी-अेच डी

राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश

[राजस्थानी भाषा के प्राचीन और अर्वाचीन गद्य का
प्रतिनिधि-सकलन]

भाग १—विकास

सपादक
डा नरेन्द्र भानावत, अेम अे , पी-अेच डी
प्रवक्ता, राजस्थान विश्वविद्यालय
तथा मानद निदेशक,
आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञानभडार शोध प्रतिष्ठान
अेव
डा लक्ष्मी कमल, अेम अे , पी-अेच डी
प्रवक्ता, वनस्थली विद्यापीठ

श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा

मेहरा आफसेट प्रेस आगरा 1997 98 मूल्य रु 150 00

आमुख

राजस्थानी पद्य की भांति राजस्थानी गद्य भी प्राचीन समृद्ध और वैविध्य पूर्ण है। अपनी रूपगत एवं शैलीगत विशेषताओं के कारण वह समूचे भारतीय गद्य-साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उसका अधिकांश प्राचीन अंश हस्तलिखित पोथियों के रूप में राजस्थान और गुजरात प्रदेश के विभिन्न भंडारों में उपलब्ध है। मुद्रित रूप में उसका बहुत कम अंश ही प्रकाश में आया है।

स्नातकोत्तर कक्षाओं को राजस्थानी साहित्य का अध्ययन अध्यापन कराते समय मुझे राजस्थानी गद्य के एक ऐसे प्रतिनिधि संकलन की आवश्यकता अनुभव हुई जिसमें ऐतिहासिक क्रम से प्राचीन एवं अर्वाचीन राजस्थानी गद्य विधाओं के विविध अंश और रूप संकलित हों। राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष डा॰ सत्येन्द्र ने मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित किया। राजस्थानी गद्य : विकास और प्रकाश उसी भावना और प्रेरणा का मूर्त रूप है।

प्रस्तुत कृति में चौदहवीं शती से लेकर आज तक के राजस्थानी गद्य के विविध रूपों को दो खण्डों में संकलित किया गया है। प्राचीन खण्ड में २१ गद्यांश हैं जो धार्मिक तत्त्व धर्म कथा, वर्णनात्मक गद्यकाव्य, ऐतिहासिक वचनिका, ऐतिहासिक जीवनी, ख्यात के अन्तर्गत बात, पत्र, राजनीति सम्बन्धी निबंध, लोक-कथा, पौराणिक गद्य, ऐतिहासिक बात, शिलालेख, संस्मरण ख्यात, ऐतिहासिक गद्य और शृंगारिक वचनिका के रूप और शिल्प के परिचायक हैं। अर्वाचीन खण्ड में २८ गद्यांश हैं जो आधुनिक युग की—उपन्यास, नाटक, गद्यकाव्य, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावृत्त, कहानी, एकांकी, रेडियो रूपक आदि—विविध गद्य विधाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रत्येक पाठ के आरंभ में लेखक के संक्षिप्त जीवन परिचय के साथ उसकी गद्य शैली की विशेषताओं और संकलित अंश के मूलभाव को स्पष्ट करने वाली टिप्पणियां दी गयी हैं। प्राचीन खण्ड में संकलित पाठों का हिंदी अनुवाद उसी पृष्ठ पर पाद टिप्पणी के रूप में शब्द क्रमानुसार दिया गया है। अर्वाचीन खण्ड में संकलित पाठों का हिन्दी अनुवाद न देकर उनमें आये हुए विशिष्ट राजस्थानी शब्दों के अर्थ उसी पृष्ठ पर पाद टिप्पणी के रूप में दिये गये हैं। इनके अध्ययन

ेिन स पाठ्य विषय समझन म अध्येताओ को विशेष सहायता मिलेगी। पुस्तक क प्रारभ म राजस्थानी गद्य की विकास-कथा पर एक विस्तृत बना लिखन की योजना थी पर समय की कमी तथा अय कार्यों म व्यस्त क कारण उस इस पुस्तक क साथ प्रकाशित करना सभव नही हो सका। उस अलग स प्रकाशित किया जा रहा है।

पुस्तक को मूर्त रूप देन म मुझ श्रद्धेय गुरुवर श्री नरोत्तमदास स्वामी, ्थान विश्वविद्यालय जयपुर क हिन्दी विभाग के आचार्य एव अध्यक्ष मरनामसिह शर्मा आचाय डा सत्येन्द्र एव राजस्थानी साहित्य क प्रसिद्ध क विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा स सतत प्रेरणा और मार्ग-दर्शन मिलता है। इन सब विद्वानो क प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य रता हू। पुस्तक की सह-सपादिका डा लक्ष्मी कमल का सामग्री-सकलन टिप्पणी-लेखन म मुझे विशेष सहयोग मिला है। श्रीराम मेहरा एण्ड ्नी आगरा न इस महत्त्वपूर्ण व्यय-साध्य कृति क प्रकाशन का भार उठा मेरे काय को बहुत सरल बना दिया इसक लिए वे धयवाद के पात्र हैं। पुस्तक म सकलित पाठो क लेखको एव प्रकाशको के प्रति भी मैं हार्दिक ार प्रकट करता हू। उनके कारण ही यह सकलन अभीष्ट रूप म प्रस्तुत ा जा सका है।

मुझे विश्वास है कि राजस्थानी गद्य के विकासात्मक अध्ययन म यह ्लन लाभदायक सिद्ध होगा और राजस्थानी के अध्ययन क्रम म पाठ्य-ग्रथ रूप म इसका समुचित उपयोग हो सकगा।

—नरेन्द्र भानावत

सूचिका

प्राचीन खंड

प्राचीन खंड

तत्त्व-विचार

(चौदहवीं शताब्दी)

[संकलित अंश एक प्राचीन हस्तलिखित गुटके से लिया गया है। वह चौदहवीं शताब्दी के राजस्थानी गद्य का श्रेष्ठ उदाहरण उपस्थित करता है। उसमें मानव जन्म की दुर्लभता और धर्म की महिमा बताकर धर्म के दो बड़े विभाग किये गये हैं—यति अर्थात साधु का धर्म और श्रावक अर्थात गृहस्थ का धर्म और तदनंतर श्रावक धर्म के द्वादश व्रत नाम से प्रसिद्ध बारह भेदों का परिचय दिया गया है।]

अेउ ससारु असारु खण भंगुरु अणाइ चउ-गइउ अणारु अपारु ससारु अणेग अणादि कम्म संयोगि सुभासुभ कम्म अवष्टित परिवणिढिया पुणु नरक गति, पुणु तिर्यच-गति पुणु मनुष्य गति पुणु देव-गति इम परि परिभमंता जीव जाति कुलादि गुण-संपूर्ण दुलभु माणुसत्तउ जनमु सव ही भव मद्धि महा प्रधानु मन चिंतिताथ-संपादकु कथमपि दैव तणइ यागि पाविय‍इ (? पामइ) तत अति दुलभ परमेस्वर-सवज्ञोक्तु धमु

यह संसार अ-सार क्षण भंगुर, अनादि और चतुर्गतिक (=चार गतियों वाला) (है)। (चार गतियां=नरक गति तिर्यच-गति मनुष्य-गति और देव गति) असीम या अनाक्षा(?) (और) अपार (है) संसार। अनेक अनादि कर्मों के संयोग [redacted] शुभ-अशुभ कर्म से आवष्टित परिवष्टित। फिर नरक-गति फिर तिर्यच (=पशु-पक्षी, गति फिर मनुष्य-गति (और) फिर देव-गति—इस प्रकार भटकते हुओ जीव। जाति कुल आदि गुणों से संपूर्ण। (और) दुर्लभ। मनुष्य-जन्म (मानसत्तउ=मनुष्यत्व)। (जो) सभी जन्मों में मध्य अति श्रेष्ठ (है), (जो) मन में सोचे हुओ अर्थ (=कार्य या इच्छा) का साधक (है)। किसी प्रकार। दैव के योग से। पाते हैं। (फिर) उससे अतीव दुर्लभ परम ईश्वर सर्वज्ञ (=जिन भगवान्) का कहा हुआ (=उपदेश दिया हुआ) धर्म (सिद्ध होता है)।

सोउ धमु किसउ भणियइ ? दुगति पडता प्राणिया धरइ मु धमु भणियइ
कति विधु होइ ? दु विधु—प्रथमु यति धमु बीजउ श्रावक धमु

यति किसा भणियइ ? व्रतिया चारित्रिया अढार सहस्र-सीलांग धारक, महाव्रत-पाळक

श्रावक किसा हुहिं ? श्रवतीति श्रावक व्रतिया पासि धमु साभळहिं दानु त्वरन्तु श्रपहिं अे श्रावक भणिजहिं

ताह तणउ धमु केत भेदे ? बार भदे—पाच अणु-व्रत, तिन्नि गुण-व्रत चारि [illegible]क्षा व्रत

पाच अणु-व्रत किसा ? जाव निरपराध मनि वचनि कायइ न हणउ न गावउ आरभु सापराधु माक्ळउ—अउ पहिलउ अणु-व्रतु जठा न बोलिउ [illegible]ना गा भूमि विषय [illegible]ासापहार न करउ कूडी साखि न देउ—अउ बीजउ [illegible]णु-व्रतु राज निग्रह-कारकु अदत्तु परायउ वस्तु न लेउ—अउ तीजउ अणु-व्रतु

वह धम कौन-सा कहा जाता है ? दुर्गति में पडते हुओ प्राणियो को जो [illegible]ारण करता है (=आधार देता है) वह धम कहा जाता है। वह कितने प्रकार [illegible]ा होता है ? दो प्रकार का—पहला यति धम और दूसरा श्रावक धम।

यति कौन कहे जाते हैं ? व्रत धारी चारित्र्य धारी अठारह हजार शील के अगो को धारण करने वाले पाच महाव्रतो को पालन वाले।

श्रावक कौन होते हैं ? जो श्रवण करता है वह श्रावक होता है। व्रतधारी के पास धम को सुनते हैं निरन्तर दान का प्रवाह बहाते हैं ये (=वे) श्रावक कहे जाते हैं।

उनके धम के कितने भेद होते है ? बारह भेद—पाच अणुव्रत तीन गुण व्रत (और) चार शिक्षा व्रत।

पाच अणु व्रत कौन से (है) ?—(१) मन से वचन से काया से निरपराध जीवो को न मारना (और) न मरवाना अपराध-युक्त उद्योग (=कार्य के आरम) को को त्याग देना—यह (स्थूल प्राणातिपात विरमण या स्थूल अहिंसा नामक) पहला अणुव्रत (है)। (२) कन्या (आदि मनुष्य) गाय आदि पशु) भूमि (आदि सपत्ति) के विषय में झूठ नही बोलना (अपने पास रखी हुइ) धरोहर का अपहरण नही करना झूठी साक्षी (गवाही) न देना—यह स्थूल मृषा वाद विरमण अथवा स्थूल सत्य नामक) दूसरा अणु-व्रत (है)। (३) जिसके लेने से राज्य द्वारा निग्रह हो (=राज्य से दड भोगना पडे) असी बिना दी हुई वस्तु को न लेना—यह (स्थूल अदत्तादान विरमण या स्थूल अस्तेय नामक)

स्त्री पर-पुरिस-परिहारु, पुरुष हुता स्व-दार-सतोषु पर-दार वजनु—अेउ चउत्थउ अणु-व्रतु धनु, धानु खेतु, वत्थु, रूपउ, सोनउ, द्विपदु, चतुष्पदु, कुप्पु—नव विध-परिग्रह-परिमाणु—अेउ पाचमउ अणु-व्रतु

(तिन्नि गुण-व्रत किमा ?) (दिसि-व्रतु)—दस दिसि—च्यारि दिसि च्यारि विदिसि, अेक अध, अेक ऊर्ध्व—इह गमण-परिमाणु कीजइ—अेउ पहिलउ गुण-व्रतु

भोग-परिभोग-व्रतु—भोगु जु अेक वार भोगवियइ—आहारु, तबोलु फूलु विलेपनु परिभोगु जु पुणु-पुणु भोगवियइ—भवन विलया आभरण वस्त्रादिकु सवहि परिभोग निषेधु कीजइ—अेउ बीजउ गुण व्रतु

अनथ-दड-व्रतु चतुर्विधु—अपध्यानाचरितु प्रमादाचरितु, हिंस प्रदानु पापोपदेशु— —अेउ तीजउ गुण व्रतु

(चारि शिक्षा-व्रत किमा ?)—सामाइकु—समइ भाव सावज्ज जोगु परि

तीसरा अणुव्रत (है)। (४) स्त्री का पर-पुरुष का परिहार (और) पुरुष का अपनी पत्नी से सतुष्ट रहना (तथा) पर-स्त्री का वजन करना—यह (स्थूल मथुन विरमण अथवा स्थूल ब्रह्मचय नामक) चौथा अणु व्रत (है)। (५) धन, धान, खेत, वास्तु (=मकान) चाँदी सोना द्विपाय (=दास दासी आदि), चौपाय (और) कुप्य (=कम मूल्य वाली धातुओ अर्थात साधारण धातुओ के बतन-बासन आदि) इस नव प्रकार के परिग्रह की सीमा रखना—यह (स्थूल परिग्रह विरमण अथवा स्थूल अपरिग्रह नामक) पाचवा अणु-व्रत (है)।

(तीन गुण-व्रत कौन-से है ?)—(१) दिशा परिमाण व्रत—दस दिशाएँ (हैं)—चार दिशाएँ, चार विदिशाएँ अेक नीच, (और) अेक ऊपर—इन दिशाओ मे जाने की सीमा की जाय (=कम से कम दूरी तक जाया जाय)—यह पहला गुण व्रत है। (२) भोग-परिभोग (परिमाण)-व्रत—भोग जो अेक (ही) बार भोगा जाय जसे भोजन तांबूल पुष्प (सुगध)विलेपन (और) परिभोग जो बारबार भोगा जाय जसे भवन स्त्री आभूषण वस्त्र आदि—सभी परिभोगो का निषेध किया जाय—यह दूसरा गुण-व्रत (है)। (३) अनथ दड विरमण व्रत—यह चार प्रकार का (होता है)—अपध्यानाचरित (=बुरा ध्यान या चितन करना) प्रमादाचरित (=प्रमादपूण काय करना) हिंस्र प्रदान (=हिंसा या पाप के साधनो का प्रदान करना), (और) (पापोपदेश (=दुष्ट उपदेश देना)—(इन चारो से विरति)—यह तीसरा गुण-व्रत (है)।

चार शिक्षा-व्रत कौन-से है?—(१) सामायिक—सम भाव से सदोष कार्यों का

जेउ पहिलउ सिक्षा व्रतु देसावगासिउ—पूर्व-गृहीत सव हि व्रत-सउ
प—अेउ बीजउ सिक्षा-व्रतु पोसह-व्रतु—आहार, देह-सक्कार, (अ)
ार निवृत्ति कीजइ सुभाभाव पामियहि—जेउ तीजउ सिक्षा-व्रतु
विभाग व्रतु—तिथि-पर्वोत्सव जिंहि परिहरिया ताह फासू अेषणीउ दानु
अउ चउत्थउ सिक्षा-व्रतु
बारह विधु श्रावक धमु होइ धमु सम्यक्त्व मूलु

— ———— ————

ाउ किया जाय—यह पहला शिक्षा-व्रत (है)। (२) देशावकाशिक—पहले
ग्य हुअे सभी व्रतों का संक्षेप किया जाय (=उनकी मर्यादा या सीमा
कम कर दी जाय)—यह दूसरा शिक्षाव्रत (है)। (३) पौषध व्रत—
देह-सत्कार और अब्रह्मचर्य के व्यापार से निवृत्ति तथा शुभ भावों का
किया जाय—यह तीसरा शिक्षा व्रत (है)। (४) अतिथि-संविभाग व्रत—
और पर्वों के उत्सव जिनने छोड़ दिये उनको (=उन साधुओं को)
ऐषणीय दान किया जाय—यह चौथा शिक्षा-व्रत (है)।
ह बारह प्रकार का श्रावक धर्म है। धर्म सम्यक्त्व मूल वाला (होता है)
धर्म का मूल सम्यक्त्व होता है।

द्वितीय व्रत सत्य पर कथा

(पद्रहवी शताब्दी—पूर्वार्ध)

[तरुणप्रभ सूरि]

[तरुणप्रभ सूरि खरतरगच्छ के आचार्य जिनचन्द्र सूरि के शिष्य थे । स० १३६८ म भीमपल्ली (पालनपुर) में इन्होने प्रव्रज्या ग्रहण की। राजेन्द्रचन्द्र सूरि तथा जिनकुशल सूरि के पास इन्होने विविध शास्त्रो का अध्ययन किया। इनकी विद्वत्ता एव योग्यता से प्रभावित होकर श्री जिनकुशल सूरि ने स० १३८८ म इन्हे आचार्य पद प्रदान किया ।

ये राजस्थानी के सर्वप्रथम प्रौढ गद्य लेखक हैं। इन्होने लडखडाते हुए राजस्थानी गद्य को वह शक्ति प्रदान की कि वह उठकर चलने म समर्थ हो गया । ये सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश राजस्थानी के अच्छे ज्ञाता और विद्वान थे । इनकी अधिकाश रचनाएँ स्तवनो के रूप मे है । इनकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति षडावश्यक बालावबोध है जिसकी रचना स० १४११ म हुई । षडावश्यक जन साधना के प्रतिदिन करने के छह आवश्यक कर्म हैं—सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव वन्दना प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान । इनका विवेचन षडावश्यक सूत्र मे हुआ है । तरुणप्रभ ने इस पर बालावबोध नामक सरल भाषाटीका लिखी जिसके साथ दृष्टान्त रूप म कथाएँ भी दी गयी हैं। ये कथाएं ही ग्रथ का मुख्य भाग हैं।

यद्यपि जैन दो बालावबोध इसके पूर्व भी लिखे जा चुके थे पर इस शैली को बल तरुणप्रभ से ही मिला। आगे चलकर अनेक विद्वानो ने तरुणप्रभ के अनुकरण म बालावबोधो की रचना की ।

सकलित अश पद्रहवी शताब्दी के प्रथम चरण के राजस्थानी गद्य का उदाहरण है। इसमे बारह व्रतो म द्वितीय व्रत सत्य की महत्ता म सबधित कथा दी गयी है। राजा हस तीर्थयात्रा के लिए जाते समय कभी परिस्थितियो म पड जाता है जिनमे व्रत की रक्षा करना कठिन हो जाता है पर वह बुद्धिमत्ता-पूर्वक व्रत की रक्षा भी करता है और सब मुनियो तथा धागे के प्राण भी बचाता है। अन्त म सत्य के प्रभाव से वह अपने खोये हुए राज्य को प्राप्त करता है और देह-त्याग करने पर स्वर्ग जाता है।]

—ग्रउ पहिलउ सिक्खा-व्रतु देसावगासिउ—पूर्व-गृहीत सव हि व्रत-संउ ाजइ—ग्रउ बीजउ सिक्खा-व्रतु पासह-व्रतु—आहार, देह-सक्कार (अ) व्यापार निवृत्ति कीजइ सुभाभाव पामियहि—जेउ तीजउ सिक्खा-व्रतु -सविभाग-व्रतु—तिथि-पर्वोत्सव जहि परि रिया साहू काम् ऐषणीउ दानु —अउ चउत्थउ सि ा-व्रतु

उ बारह विधु श्रावक धमु हा धमु सम्यक्त्व मूळ

छाड दिया जाय—यह पहला शिक्षा-व्रत (है)। (२) देशावकाशिक—पहले लिये हुए सभी व्रतों का संक्षेप किया जाय (=उनकी मर्यादा या सीमा भी कम कर दी जाय)—यह दूसरा शिक्षाव्रत (है)। (३) पौषध-व्रत—, देह-सत्कार और अब्रह्मचर्य के व्यापार से निवृत्ति तथा शुभ भावों का किया जाय—यह तीसरा शिक्षा-व्रत (है)। (४) अतिथि-संविभाग-व्रत—ा और पर्वों के उत्सव जिनने छोड दिये उनको (=उन साधुओं को) एषणीय दान किया जाय—यह चौथा शिक्षा-व्रत (है)।

यह बारह प्रकार का श्रावक धर्म है। धर्म सम्यक्त्व मूल वाला (होता है) । धर्म का मूल सम्यक्त्व होता है।

द्वितीय व्रत सत्य पर कथा

(पंद्रहवीं शताब्दी—पूर्वार्ध)

[तरुणप्रभ सूरि]

[तरुणप्रभ सूरि खरतरगच्छ के आचार्य जिनचन्द्र सूरि के शिष्य थे। सं० १३६८ में भीमपल्ली (पालनपुर) में इन्होंने प्रव्रज्या ग्रहण की। राजेन्द्रचन्द्र सूरि तथा जिनकुशल सूरि के पास इन्होंने विविध शास्त्रों का अध्ययन किया। इनकी विद्वत्ता एवं योग्यता से प्रभावित होकर श्री जिनकुशल सूरि ने सं० १३८८ में इन्हें आचार्य पद प्रदान किया।

ये राजस्थानी के सर्वप्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक हैं। इन्होंने लड़खड़ाते हुए राजस्थानी गद्य को वह शक्ति प्रदान की कि वह उठकर चलने में समर्थ हो गया। ये संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी के अच्छे ज्ञाता और विद्वान थे। इनकी अधिकांश रचनाएँ स्तवना के रूप में हैं। इनकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति षडावश्यक बालावबोध है जिसकी रचना सं० १४११ में हुई। षडावश्यक जैन साधना के प्रतिदिन करने के छह आवश्यक कर्म हैं—सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान। इनका विवेचन षडावश्यक सूत्र में हुआ है। तरुणप्रभ ने इस पर बालावबोध नामक सरल भाषाटीका लिखी जिसके साथ दृष्टान्त रूप में कथाएँ भी दी गयी हैं। ये कथाएँ ही ग्रंथ का मुख्य भाग हैं।

यद्यपि एक दो बालावबोध इनके पूर्व भी लिखे जा चुके थे पर इस शैली को बल तरुणप्रभ से ही मिला। आगे चलकर अनेक विद्वानों ने तरुणप्रभ के अनुकरण में बालावबोधों की रचना की।

संकलित अंश पंद्रहवीं शताब्दी के प्रथम चरण के राजस्थानी गद्य का उदाहरण है। इसमें बारह व्रतों में द्वितीय व्रत सत्य की महत्ता से संबंधित कथा दी गयी है। राजा हंस तीर्थयात्रा के लिए जाते समय ऐसी परिस्थितियों में पड़ जाता है जिनमें व्रत की रक्षा करना कठिन हो जाता है पर वह बुद्धिमत्ता-पूर्वक व्रत की रक्षा भी करता है और मृग, मुनियों तथा चोरों के प्राण भी बचाता है। अंत में सत्य के प्रभाव से वह अपने खोये हुए राज्य को प्राप्त करता है और देह-त्याग करने पर स्वर्ग जाता है।]

—१—

राजपुरी नामि पुरी हंस नामि राजा, सम्यक्त्व मूल-श्रावक धर्म धुरा अनेरइ दिवसि मास पक्ष लघ्य मार्गि रत्नशृंगगिरि पूर्वज-कारित ऋषभदेव देवगृहि तीर्थ-यात्रा करिवा सकल-लोक-सहितु सत्य-वचन महितु हितु हूंतउ चालिउ

अर्ध मार्गि सधि गयइ हूंतइ पाछा हूंतउ चर अेकु आविउ राजेन्द्र रइ इ—महाराज ! तुम्हे चालिया पाछइ, दसमइ दिवसि, अर्जुन नामि ळउ पुरी लेवा आविउ तुम्हे जिके रक्षपाळ मेल्हिया हूंता ति सर्वे तिणि राजपुरी आपणी करि वइठउ, भय भीत लोकु वेसासी करी तुम्हारइ मनि उपविष्टु वर्तइ अनेरा नइ घरि नाठउ छइ सुमित्र नामि मंत्री, तिणि तुम्ह कहइ मोकळिउ इणि कारणि जु काइ युक्तु हुयइ सु कीजउ

---

(१)

राजपुरी नाम से (=नाम की) नगरी (था)। हंस नाम से (=नाम का) ा (था)। सम्यक्त्व मूल वाले श्रावक धर्म की धुरी को धारण करता हुआ धारण करने वाला)। (सम्यक्त्व=सत्य मत्य पर श्रद्धा सम्यक दर्शन क धर्म=जैन सद्गृहस्थ धर्म)

अन्य दिन (=एक दिन)। मास पक्ष-लंघनीय=अर्ध मास के दिनों में तीस दिनों में) पार करने योग्य (या दिनों और महीनों में पार करने य)। मार्ग में। रत्नशृंग पर्वत पर। पूर्वजों के कराये हुओ। श्री ऋषभदेव मन्दिर में। तीर्थयात्रा करने को। सब लोगों के साथ। सत्य वचन से मत। गर्व से रहित। होता हुआ=होकर। चला।

आधे मार्ग तक। सधि के जाने पर। पीछे से। चर दूत। अेक। आया। हे)। राजेन्द्र को (=राजा से)। विनती करता है। महाराज। पके चले पाछे रवाना होने के बाद। दसवें दिन। अर्जुन नामक सामा यत राजा। नगरी (को) लेने के लिअे आया। आपने जो रखवाल। ते थे। उन सब को उसने जीत लिया (स॰जित प्रा॰ जित्त)। जपुरी को। अपनी बनाकर अधिकार में करके। बैठ गया (है)। भयभीत गों को। विश्वस्त करके भरोसा देकर। आपके सिंहासन पर बैठा हुआ। दूसरों के घर पर भाग गया (?)। सुमित्र नामक (जो) मंत्री (है) उसने ने आपके पास भेजा है। इस कारण। जो कुछ उचित हो सो कीजिये।

तदा-कालि समीप-गत जि छइ सुभट तेहे कहिउ—महाराज ! हवडा पाछा वळियइ, अम्ह हूता कउण ताहरइ पुरि विस्फुरइ तीह आगइ राजा कहइ—पुण्य प्राप्ति निबधनु यात्रा करणु मल्ही करी पुण्य-लाभ राज्य तणइ कारणि पाछउ वळनु युक्तउ नही, तथा सव नासिहि यात्रा अ-करी हउ वळउ नही

इमउ भणी करि हसु राजा आघउ चालिउ परिवार क्रमि क्रमि सगळउ पाछउ वळिउ अेकु छत्र धर आपणपा पासि दखी करी वस्त्रालकार-तुरगमादि वस्तु समस्तु दे करी पाछउ मोकलिउ लाक पाछउ गयउ तउ तीर्थाभिमुख अेकलउ पाद चारिहि जि चालिउ

—२—

कही-अेक अटवी माहि महीपति रहइ देखताई जि हूता मग अेक परा हूतउ नाठउ आवा करी लता वितान माहि पइठउ तह नइ पगि लागउ भील अेक धनुषि चडाविइ सरि साधिइ आविउ राजेन्द्र कन्हा पूछइ—महापुरुष ! इणि

उस समय । निकट स्थित । जो । है । सुभट वीर योधा । उनन । कहा । महाराज । अब (अधुना) । पीछे वापिस । लौटा जाय । हम=(हमारे) । होते हुअे । कौन । तुम्हारे । नगर म । प्रकाशित होता है तपता है अधिकार कर सकता है । उनके आगे उनके प्रति । राजा कहता है । पुण्यो की प्राप्ति का कारण । यात्रा करना । छोडकर । पुण्या स मिलन वाल । राज्य के । कारण लिअे । पीछे लौटना । युक्त उचित । नहा । और सब नाश होने पर भी । यात्रा न करके यात्रा विना किय । मैं लौटूगा नही । असा कहकर । हस राजा । आगे चला । साथ के लाग धीरे धीरे वापिस लौट गये । अेक छत्रधारक (को) । अपने-आप के पास (पार्श्व) । देखकर । वस्त्र और आभूषण । घोड आदि । वस्तुएँ । समस्त सारी । देकर । वापिस लौटा दिया । लाग वापिस गय तो (राजा) तीर्थ की ओर अकेला पैदल हो चला (स० चल प्रा० चल्ल) ।

(२)

किसी अेक जगल म । राजा के देखते हुअे ही । अेक मृग । दूर से । भागा हुआ=भागता हुआ (स० नश =भागना से नष्ट प्रा० नट्ठ) । आकर । लताओ के मडप म प्रविष्ट हो गया । उसके परा लगा (पर देखकर पीछा करता हुआ (close on heels) । अेक भील । धनुष (स० धनुष्क) चढाये हुए । बाण साधे हुअे । आया । राजेन्द्र के पास (=राजेन्द्र से) । पूछता है । हे महापुरुष । इस पत्तो से छाये हुअे वन म । मृग का पैर (=पैरो का चिह्न) ।

न वनि मम तण‍ पगु दोमइ नही सु पुणि मृगु माहरउ भग्यु किहा

उ पाछइ राजा चिनि चिंतवइ—साच‍ कहिइ मृगु विनासु हुयइ कूडइ
। द्वितीय व्रत भगु हूयइ तिणि कारणि बुद्धि करी अेउ वि प्रतारिवउ
वीतवी करा राजा भणइ—अहो ! माहरउ स्वरूपु पूछइ ? भाग भ्रष्टु
श आविउ भीलु भणइ—मूढ ! नाठउ मगु किहा गयउ ? राजा भणइ
। सु हम नामि पुरुषु आहेडा गाढ‍ स्वरि कहइ—मग-नउ मागु मूख !
इ कहि राजा भणइ—राजपुरी माहरउ थानकु
आहेडा काधि चडिउ भण‍ जु तू रहइ बधिरता-व्याधि माहरउ छ‍ मू
उ हाइजिउ इसउ भणी करी भील अनेरइ मागि गयउ मृग रहइ मति
ग छोडवी करी आपणउ व्रतु अलीक-वचन-परिहार-लक्षणु अखडु प्रतिपाळइ

—३—

तिहा हूतउ आघउ चालिउ सामुहा आवता मुनि रहइ वादा करी मागु
। करी आघउ चालिउ यम किंकर सरीखा भील नि कापारण-साधन

यी नही रहा (म० इदयन)। फिर वह मेरा भग्य मृग। कहा गया।
तव। पीछे इस पर। राजा सोचता है। सत्यक न्न से मृग नाश होता है।
(म० कूट) कहन से। दूसरा व्रत भग होता है। इस कारण (=इसलिअे)।
से। इस को। प्रतारित करना चाहिअे धोखा देना चाहिअे। अैसा
व कर। राजा कहता है। अरे! मेरा स्वरूप (=मैं कौन हू यह) पूछते
? मार्ग भ्रष्ट हुआ (=मार्ग भूलकर) मैं (म० अहम) यहा आ गया हू।
ल कहता है। हे मूर्ख! भागा हुआ मृग कहा गया। राजा कहता है। वह
हम नामक पुरुष हू। शिकारी गाढ (=कठोर) स्वर म कहता है। मृग का
ाने का) मार्ग। हे मूर्ख! मुझे बता। राजा कहता है। राजपुरी मेरा
ान है। शिकारी क्रोध चढा हुआ (=क्रोध म भरकर) कहता है। कि
(० यत अप० जउ)। तर। वहरापन का रोग गहरा है। वह। और गहरा
=पहले स अधिक गहरा)। हूजा हो जाय। अैसा कहकर भील दूसरे मार्ग
र गया। मग को बुद्धि के प्रयोग द्वारा। छुडवा कर बचाकर। अपना व्रत।
ाथ्या वचन-परित्याग रूपी लक्षण वाला। अखड रूप से। पालता हैं
=पाला)।

(३)

वहा स आगे चला। सामने आते हुअे। मुनियो को। वदना करके।

घणुहि चडाविइ मरि साधिइ आवी करी राजेद्र आगइ कहइ—चिर-काळ तणउ चौय निमित्तु मूरू नामि प ली-पति नीमरिउ दूरइ तउ अेह वन माहि मुड पाखडिक अेक रहइ देखी करी 'अ शकुनु जेउ इणि कारणि तेह मारावित्रा कारणि अम्ह माकळिया सु पाखडिकु जइ तउ दीठउ तउ अम्ह आगइ कहि

तउ राउ मनि चीनवइ—जउ हउ मानु करि रहिसु अथवा व्याज वचन भणिसु तउ भील सरलइ मार्गि जायना हूता मुनि रहइ विनास हेतु होइमि", तिणि कारणि माप्रतु असत्यु जइ कहियइ तउ सत्य कहा अधिक पुण्य-कारकु हुयइ इति "ञ्चछलइ तउ सत्यु असत्यु राजा कहइ—जिणि मार्गि तुम्हे जाउ छउ तेह माग हतउ नु वामउ मागु तिणि मार्गि महात्मा जाइ छइ

विश्व जतु जात रक्षणि करी दक्षिणु मुनि तणउ दक्षिणु माग मेल्ही करी वामइ सकल जीव विघात भावि करी वामइ मार्गि जिम पूर्विहि ति भील

माग छोड करके। आग चला। यमदूत जसे (स० सदृश)। दा भील। नाव से नाल नेत्रा वाले। धनुष चढाये। बाण साधे। आकर। राजेन्द्र के। आगे= प्रति। कहत हैं।

चिरकाल की बहुत समय की। चारी क लिये। सूर नामक। पल्लीपति (पल्ली=भीलो की बस्ती पति=राजा)। निकला (स० निस्सर)। इस वन म। दूर से। मुडित सिर वाल। अक पाखडिक (साधु विशेष) को। देखकर। यह अ शकुन (हुआ) इस कारण। उसको मरवाने के लिये। हम भेजे गये (=हमको भेजा है)। वह पाखडिक। यदि तून देखा हो (स० दृष्ट)। ना। हमारे आगे कह=हम से कह, हम बता।

तब। राजा। मन म सोचता है। यदि। मैं। मौन (धारण) करके रहूगा। अथवा। बहान के वचन कहूगा। ता। (व वचन)। भीलो के सीधे माग म जाते हुअे (=जात मे)। मुनि के नाश के कारण हाग (मैं नही बताऊगा तो भील सीधे माग स जायग जिस पर मुनि गये हैं इससे मुनि उनको मिल जायग और वे मुनि को मार डालेंग)। इस कारण। इस समय। असत्य यदि कहा जाय। ता (वह) सत्य की अपक्षा अधिक पुण्यकारक हा (गा)। असा (विचार कर)। नाना के छल से। तब। असत्य सत्य झूठा सच। राजा कहता हैं। जिस माग पर तुम जा रह हा। उस माग मे जा बाया माग है (उस माग की बायी ओर जो माग है)। उस माग पर महात्मा जा रहे हैं।

समस्त जीवा के समूह के रक्षण म दक्षिण (हितकर) जैस मुनि के दक्षिण (दाहिनी ओर जाने वाले) माग का छोडकर। वे भील। सब जावा के विनाश

। तिमहिं जि गया मुनि कुशलि क्षेमि पहुतउ ति भीत विहु
। अ मागि गया राजा वचन-सुधा मेक-समुल्लासित-कीर्ति-कल्पलता-
। आधउ चालिउ

—४—

समइ महा द्रुम अव अधाभागि वासि रहिउ सघि समुद्रि धनवति
सि पडिसिया धन सलिल माहि जिलसिया दरिद्रध धूलि उतारिसिया
न करता वना तरिल चार राजइ तिहां जाणिया किसी परि जे
प्रघात कारक नहा हुइइ— जतळहिं मन माहि राजइ, इसी परि
तळ" दीपिका गपिताणावकाश उत्पयुध महायाघ तिहा आविया
ाइ भणइ—तउ कउणु? वद-अेक चार सघ विघान कारक हरवइ अम्ह
वहिया छइ जइ तउ जाणइ तउ कहि जिम ति चार मारी करी

स (प्रतिकूल अहितकर) जस वाम (बाय) माग पर। जम पहल व
हे थ वम ही। चले गय। मुनि। कुशल क्षेम से। (अपने स्थान पर)।
(स० प्र+भू स प्रभूत अप० पहुत)। व भीत। (भौतिक और
क) दोनो प्रकारो स। पुमाग म गय। राजा। वचन रूपी अमृत व
। जिसकी कीर्ति रूपी कल्पलता का विकास समुल्लसित (प्रफुल्लित)
अमृत जस वचन म सिचन स प्रफुल्लित कीर्ति रूपी कल्पलता क
ाता। होता हुआ=होकर। आग चला।

(४)

ा क समय। अेक विशाल वृक्ष के नीच क भाग म (=नीच)। निवास
(ताथयात्रिया क) सघ रूपी धनशाली समुद्र पर। चौथ दिन। पडेंग
करेंग। धन रूपी जल म आनद करेंगे। दरिद्रता रूपी धून को (मन का)
। अमी बात करते। वनम छिपे हुअ। चार चारो का। राजइ ने। वहा।
सभा त्वा। किस प्रकार। य चार। सघ का नाशकारी न हो=सघ का
र सर्वे। जितन=जव। मन म। राजा। इम प्रकार। सोचता है। उतन
। दीपिकाओ (मशालो) म आकाश का प्रकाशित करन वाले। शस्त्र
अ। वड योधा। वहा आय। (व) राजा क प्रति। कहत हैं। तू कौन
ई-अेक चार। सघ के नाश करने वाले। हेरक न खबर दन वाल
ार आम=हम का। कहा। कह है बताय हैं। यदि। तू जानता है
सूम है। तो बता। ज्यो=ता कि। उन चारो का मारकर। सघ की

सघ रक्षा करी यश अनइ पुण्य बि वस्तु उपार्जा, जिणि कारणि श्रीपुर नगर-नायकि श्रीगाधि-नामकि जिन शासन तीह चोरह मारिवा निमित्त अम्हे मोकलिया छा राजा पुनरपि चित्ति चीतवइ—साचइ भणिइ चार घात-पातकु लागइ कूडइ भणिइ सघ-लूटणु दूमणु लागइ इसउ चीतवी करी राउ भणइ—तुम्ह मधि जावउ तिहा गया हूता तुम्ह रहइ सघ रक्षा पुण्यु अनइ यशु व वाल हासिइ ति पुरुष राजा-नइ वचनि करी रजिया सघ माहि गया

लता वितानि हूता चोर नीसरिया राजेंद्र न पग आवी करी पडिया इसउ वीनवइ—अहो ! महापुरुष ! तइ अम्हे इहा छता जाणिया पुण अम्हारी दया करी तइ न कहियाः तिणि कारणि तउ अम्ह रहइ जीवतव्य-दाता परोपकारी पिता इसउ भणी प्रणमी करी वळी गया

—५—

प्रभाति राजा आघउ चालिउ केतला काल गया हूता उतावळा असवार केअेक राय रहइ मिलिया राय आगइ कहइ—जिणि अम्हारउ ठाकुर दडिउ

रक्षा करके। यश और पुण्य। दो (स० द्वि०)। वस्तु (अ)। उपार्जन कर प्राप्त करे। जिसके लिये। श्रीपुर नगर के स्वामी। श्री गाधि नामक न। जिन धर्म (?)। उन चोरो को मारने के लिये। हमको। भेजा है।

राजा। फिर भी=फिर। मन मे विचारता है। सत्य कहने पर। चोरो की हत्या का पाप लगता है। झूठ कहने पर सघ के लूटने का पाप लगता है। असा विचार कर। राजा कहता है। तुम सघ मे। जाओ। वहा। गये हुअे=जाने पर। तुमको सघ की रक्षा का पुण्य। और (स० अयश)। यश। दो (नो)। बातें। (प्राप्त) होगी। वे पुरुष। राजा के कहने से। प्रसन्न हुअे=प्रसन्न होकर। सघ मे गये।

(तब)। लता के मडप से। चोर। (बाहर) निकले। आकर राजा के पैर मे पडे। असे निवेदन करते है (=विनय के साथ कहते हैं)। अहो महा पुरुष। तुमने। हम। यहा होते हुअे=यहा विद्यमान। जान लिये। पर। हमारी दया से। तुमने नहीं बताये। इस कारण। तुम हमारे जीवन दाता परोपकारी पिता (हो)। असा कहकर प्रणाम करके लौट गये।

(५)

सवेरे। राजा। आगे चला। कितनी दूर कुछ दूर। गये हुअे जाने पर। उतावले। सवार। कई-अेक। मिले। (वे)। राजा के प्रति। कहते हैं। जिसने हमारे मालिक को दड दिया। उसे हम ने यहा कहीं देखा

ग किहा ई गीठउ ? जउ गीठउ तउ कहि जिमि सू मारी करी आपणा
गउ वैर सोधउ

उ साभळा करी राजा मन माहि चीनवइ—आपणा जीवितव्य तणइ
कउणु विचक्षणु बूडउ वानद ? इसउ चीतवी राउ भणइ—हउ सु हम
ायुध ग्र करी आगइ ऊभउ हुयउ

अेक गमइ अनेकि अश्वारिहल प्रौढ सुभट, बीजइ गमइ अेकु हमु
उ पाछइ धम प्रभावइलउ युद्ध करतउ राजा घणेई असवारे पाछउ करी
। किंतु पच परमेष्ठि महामंत्र समरण-परमाणु तऊ जु अेकु सर्वे निर्जिणी
ाम भूमि पीठि रहिउ

यवाग्नि ! जय जयति वाद पूर्वक देव दुदुभि नाद-करण-समगाल
कुसुम नी वृष्टि राजेंद्र नइ मस्तकि करतउ तेह वन तणउ अध्यक्ष,
ामि यक्षु प्रत्यक्षु आगिलइ गमइ हुयउ—रत्नशृं गाभिधानि गिरि जिणि
ाना हुयइ आजु सु दिवसु तिणि कारणि इणि विमाणि माहरइ चडि,
वटाद जि तिहा जाइयइ

ष्ट) । (क्या) । यदि ऐसा । तो वता । मार्कि । उसे मारकर । अपने
का वर शोधन करें (उस का बदला लें) ।

ह सुनकर राजा मन म विचारता है । अपने जीवन क । कारण
कौन । चतुर समझदार ज्ञानी । झूठ । बोले (था) । यह विचारकर ।
कहता है । मैं वह राजा हूम (हू) । (फिर) शस्त्र लेकर । सामने
आ गया । (ऊभउ< स० उत्थ प्रा० उभ) ।

तब । अेक ओर । अनेक । घोडों पर चढ़े हुअे । प्रौढ शक्तिशाली । योधा ।
ओर । अेक अकेला । राजा हूम । तब पीछे । धम के प्रभाव स । युद्ध
। हुआ । राजा । बहुत स । सवारो स भी । पीछा पश्चात्पद पराजित ।
किया जा सका । पर तु । पंच परमेष्ठी नामक महामंत्र का स्मरण करता
। अकेला । उन सभी को । जीतकर । (स निर्जि प्रा० निर्जिण
जण) । युद्ध भूमि की पीठ पर युद्ध के मैदान पर । (खडा) रहा ।

ने सत्यवादी ! जय हो जय हो—इस वचनो के साथ देवताओ के नगाडो
नाद करने के साथ ही । पाच रगो के फूलो की वर्षा राजा के सिर पर
ा हुआ । उस वन का अध्यक्ष । यक्ष । नामक यक्ष । आगे की ओर
सामने) । प्रत्यक्ष हुआ । (और उसने कहा—) रत्नशृंग नामक पर्वत की
दिन यात्रा होती है वह दिन आज है । इसलिअे मेरे इस विमान पर चढो ।

तउ राजा विमानि चडिउ गुह्य कनइ अर्धासनि समासीनु हूतउ हंस देव-गृहि आविउ दिव्य कुसुम मघमार घनसार कस्तूरिका अगुर वारह करी जिन बिंब रहइ महा-पूज करी यात्रा सपूण करइ

विमानाधिरूढु राजपुरी परिसरोद्यानि आविउ यक्षि अजुन रिपु बाधी करा पग आणि घातिउ हंसु राजा राजपुरी माहि आवि राजि बइठउ यक्ष आपणइ थानकि पहुतउ हंसु राजेन्द्र राजपुरा-जन रहइ महा हर्षु ऊपजावतउ सत्य-प्रभावि पुरन्दर जिम प्राज्यु राज्यु प्रतिपाळी करी देवलोकि गयउ

तावि अभी (इसी समय) वहा जाया जाय।

तब राजा विमान पर चढा। यक्ष के पास आधे आसन पर बठा हुआ। हस। देवगृह म, मदिर म। आया। दिव्य पुष्प। मघसार। घनसार। कस्तूरी। अगर। स। जिन बिंब की जिन प्रतिमा की। महापूजा करके। यात्रा सपूण करता है (=पूरी की)।

(फिर)। विमान पर चढा हुआ। राजपुरी के निकट क उद्यान म। आया। यक्ष ने। अजुन नामक शत्रु को बाधकर। लाकर पर म (=परा पर) डाला। (फिर) राजा हस। राजपुरी म आकर। राज्य पर बठा। यक्ष अपने स्थान को पहुचा (=गया)। राजा हस। राजपुरी के लोगो को महान हर्ष। उपजाता हुआ उत्पन्न करता हुआ। सत्य के प्रभाव स। इन्द्र के समान। श्रेष्ठ राज्य की प्रतिपालना करके। देवलोक को गया।

गुरु-महिमा पर कथा

(पंद्रहवीं शताब्दी—उत्तरार्ध)

[सोमसुंदर सूरि]

सोमसुन्दर सूरि तपागच्छ के प्रभावशाली आचार्य थे। इनका जन्म सं० ० में प्रह्लादनपुर (पाल्हणपुर) में हुआ। इनके पिता का नाम सज्जन श्रेष्ठि माता का नाम माल्हणदेवी था। सं० १४३७ में इन्होंने जयानंद सूरि से प्रव्रज्या ग्रहण की। सं० १४५० में वाचक पद पर तथा सं० १४५७ में सूरि पद पर प्रतिष्ठित हुए।

साहित्य के क्षेत्र में सोमसुंदर सूरि की सेवाएँ बहुमूल्य हैं। इन्होंने स्वयं प्रचुर परिमाण में साहित्य रचा और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित किया। इनकी शिष्य मंडली बहुत बड़ी थी जिसमें संस्कृत प्राकृत राजस्थानी के अनेक महत्वपूर्ण लेखक हुए। इन्होंने ताड़पत्र पर लिखी हुई अनेक प्राचीन कृतियों का जीर्णोद्धार किया और नवीन प्रतिलिपियाँ तैयार करवाकर उनकी सुरक्षा की व्यवस्था करवायी। खंभात के प्रसिद्ध प्राचीन पुस्तक भंडारों की रक्षा एवं व्यवस्था में इन्हीं की मूल प्रेरणा थी।

ये संस्कृत प्राकृत राजस्थानी के अच्छे विद्वान थे। संस्कृत के अतिरिक्त राजस्थानी गद्य-पद्य में इन्होंने अनेक रचनाएँ लिखीं। रंगसागर नेमि फागु इनकी महत्वपूर्ण पद्य-कृति है। राजस्थानी गद्य में लिखे गये इनके आठ बालावबोध प्राप्त हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—१ उपदेशमाला बालावबोध (सं० १४८५) २ षडावश्यक बालावबोध (सं० १४९६) ३ योगशास्त्र बालावबोध ४ भक्तामर स्तोत्र बालावबोध ५ नवतत्व बालावबोध ६ पर्यंताराधना-आराधनापताका बालावबोध ७ षडावश्यक बालावबोध ८ विचार ग्रंथ बालावबोध।

संकलित अंश पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के गद्य का नमूना है। इसके प्रथम अंश में राजा श्रेणिक और चांडाल की कथा के माध्यम से ध्वनित किया गया है कि विनय के बिना विद्या की प्राप्ति नहीं हो सकती। दूसरे अंश में त्रिदंडी का उदाहरण देकर व्यंजित किया गया है कि गुरु का अपलाप करने से प्राप्त विद्या भी नष्ट हो जाती है।]

—१—

राजगृह नगरि श्रेणिक राजा, चिल्लणा पट्ट राणी तेह-हइ अेक-स्तभ आवास-नु डोहलु ऊपनु ते अभयकुमारि देवता ओवराधी तेह पाहि सवतुरु वन सहित अेक स्तभ-आवास कराबी पूरिउ

इसि अेक मातग-नइ कळत्र हुइ अकालि आबा-नु डोहलु ऊपनु तीणइ मातगि अवनामिनी विद्या-नइ बळि सवतुक वन ना आबा नी डाळ नमाडी आबा लेई डोहलु पूरिउ

ते ओबा-नु चार अभयकुमारि वृहत-कुमारी नी कथा कही बुद्धि-नइ बळि प्रगट कीधु तेह हुइ श्रेणिक राइ कहिउ—जइ विद्या दिइ तु मूकउ तीणइ मानिउ

श्रेणिक सिंहासणि बइठउ विद्या पढइ घणी वारि मातगि विद्या कही, पुण आवइ नही अभयकुमारि कहिउ—मातग हुइ सिंहासनि बइसारि विद्या लिओ

---

(१)

राजगृह नगर म । श्रेणिक (नाम का) राजा । (था) । चेलणा (नाम की) पटरानी । (थी) । उसके । अेक थभे वाल घर का । दोहद । उत्पन्न हुआ । उस (राजा) न । अभयकुमार के द्वारा । देवता का आराध कर देवता की आराधना करके । उसके पास से, उसके द्वारा उससे । सब ऋतुओ के वन से युक्त । अेक थभे वाला घर । कराकर बनवाकर । दोहद पूरा किया ।

जसे म इतने म तभी । अेक चाडाल की भार्या के । अकाल म, बिना मौसम के । आम का दोहद । उत्पन्न हुआ । उस चाडाल न । अवनामिनी (झुकाने वाली) विद्या के बल से । सब ऋतुओ वाले वन के आम्रवृक्ष की डाली को । झुकाकर (नम धातु म) । (और) । आम लेकर । दोहद पूरा किया ।

उस आम के चोर को । अभयकुमार न । वृहत् कुमारी की कथा कहकर । बुद्धि के बल से । प्रकट कर दिया । उसको उस चाडाल से । श्रेणिक राजा ने कहा । जो विद्या(मुझे) दे (=सिखावे) । तो । मुक्त करू छोड दू । उसने । (इस बात को) माना स्वीकार किया ।

राजा श्रेणिक । सिंहासन पर बैठा हुआ । विद्या पढता है । बहुत बार चाडाल ने विद्या कही । पर (राजा को) आती नही । अभयकुमार ने कहा । चाडाल को सिंहासन पर बिठाकर विद्या लो तो आवे(गी) । पीछे (<पश्च) । चाडाल को सिंहासन पर बिठाकर । दोनो हाथ जोडकर । महाराजा श्रेणिक ।

पछइ मातग सिंहासनि वइसारी व हाथ जाडी श्रेणिक महा राय आगळि
द्या लिद अेक वार-ना पन्‍ा ने विद्या आवा इम अनेर-ऊ विद्या लत
रिवु

(२)

र नापित विद्या नइ ग्रठि आपणउ छरपनु आकाश मडळि राखइ ते
नवइ त्रिदण्डि त विद्या नीधी त्रिदडिउ विदगिइ जइ तीणि विद्याइ
त्रिदउ आकाश मडळि राखइ ते देखा विस्मय हुतु लोक सह हुइ पूजा
रइ
क वार लाक पूछिउ—अ विद्या-नउ तुम्हारइ गुरु कुण ? तीणइ लाजतइ
न कहिउ इम कहिउ—हिमवत-वासी माहर विद्या नु गुर तीणइ गुर
लविवइ करी त्रिदड खडखडाट करतउ भुइ पडिउ लोक सहूअे हसिउ
इ भणी वाज (?बीजे ऊ) गुरु-नउ निह्नव न करिवु

पड़ा हुआ (उ भ < ऊर्ध्व)। विद्या। लना है पन्‍ता है। अेक बार की पन्‍ा
=अेक बार पढन स ही)। वह विद्या। आयी (=आ गयी)। या इम
। दूसरा को भी। विद्या लत हुअ विद्या पन्‍ने समय। विनय नम्रता।
ण) करना चाहिये।

(२)

अेक नाइ। विद्या के बल स। अपनी रछानी। आकाश मडल म। रखता
उसके पास स। अेक त्रिदडी (सयासी) न। वह विद्या। ली सीखी।
न। परन्तु म जाकर। उस विद्या (क बल) म। अपने त्रिदड का।
ाश मडल म रखता है। यह दखकर विस्मय म हाना हुआ जन-समूह।
ी पूजा भक्ति करता है (=लाग उसकी पूजा और भक्ति करन लग)।
अेक वार लोगा न पूछा। इस विद्या का तुम्हारे गुरु कौन ? उसन लज्जित
हुअे लज्जा क मारे। नाइ को नहा कहा (नाई का नाम नहीं लिया)। यों
। (कि)। हिमालय निवासी। मेरा विद्या-गुरु (विद्या देन वाला गुरु)।
। उसक। गुरु को छिपाने के कारण (आलविउ < अपलाप)। त्रिदड।
खड शब्द करता हुआ। (पृथ्वी पर) गिरा गिर पना। सब लोगों से
। गया (=सब लाग हस पड, सब लोगा न उसकी हसी उडायी)।
इस कारण दूसरो को भा (?) गुरु का निह्नव नही करना चाहिये
ह का नाम छिपाना नही चाहिये)।

वाग-विलास

(पद्रहवी शताब्दी—उत्तराध)

[माणिक्यसुदर सूरि]

[श्री माणिक्यसुदर सूरि का सम्बन्ध आचलगच्छ से था। ये आचार्य श्री मेरुतुग के शिष्य थे। श्री जयशेखर सूरि (स १४०० १४६२) इनके गुरु भाई थे। इनकी उल्लेखनीय रचनाओ मे 'गुणवर्मा चरित्र' 'सत्तरभेदी पूजा कथा' 'चतु पर्वी कथा', 'शुकराज कथा', 'मलयसुदरी कथा' 'सविभाग व्रत कथा' 'पृथ्वीचद्र चरित' आदि के नाम गिनाये जा सकते है। इनमे 'पृथ्वीचद्र चरित' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसका निर्माण स १४७८ मे पाच उल्लासो मे हुआ। 'वागविलास' इसका दूसरा नाम है। राजस्थानी कलात्मक गद्य का यह सर्वप्रथम उदाहरण है। पृथ्वीचद्र चरित मे महाराष्ट्र के पइठाणपुर पट्टण के राजा पृथ्वीचद्र तथा अयोध्या के राजा सोमदेव की पुत्री रत्नमजरी की प्रणय कथा है। वस्तुवर्णन इस रचना की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। काव्यमय शैली के कारण कथा मे अत तक रोचकता का निर्वाह हुआ है।

सकलित अशो मे से प्रथम मे सज्जनत्व की महत्ता का वर्णन है दूसरे अश मे बताया गया है कि किस वस्तु का किससे नाश होता है तीसरे मे पुण्य की महिमा का कथन किया गया है चौथे मे बताया गया है कि कौन वस्तु किससे युक्त होने पर श्रेष्ठ गिनी जाती है पाचवें मे महाराष्ट्र देश का छठे मे वसन्त ऋतु का और सातवें मे वर्षा ऋतु का वर्णन है। ये वर्णन वर्णक सग्रह ग्रथो मे दिये गये वर्णनो के प्रकार के हैं। आतरिक तुक, अनुप्रासमयी झकार शैली भाषागत प्रवाह और घरेलूपन के कारण ये वर्णन बडे सुदर बन पडे है।]

—१—

अहो महाभागउ ! हीया न लोचने जागउ जेतलू अतर राणी अनइ दासि, जेतलू अतर दही नइ छासि जेतलू अतर मधुर ध्वनि नइ षासि, जेतलू अतर

---

(१)

हे महाभागो ! हृदय की आखो से जागो। जितना अतर (=फर्क) रानी और दासी मे। दही और छाछ मे। मीठी आवाज और खासी (घासवाले वचन ?)

पढइ मातग सिंहासनि वइसारा व हाथ जोडी श्रेणिक महा राय आगळि
ग्रा निद अेक वार-ना पढा न विद्या आवी इम अनेर ऊ विद्या लत
रिवु

(२)

क नापित विद्या-नइ वळि आपणउ छरपलु आकाश मडळि राखइ त
नवर त्रिन्डिइ ले विद्या नीधी त्रिदडिउ विदेशिइ जइ लोणि विद्याइ
त्रिन्ड आकाश मडळि राखइ त दखी विस्मय हुतु लोक तइ हुइ पूजा
करइ

क वार लाक पूछिउ—अे विद्या-नउ तुम्हारइ गुरु कुण ? तीणइ लाजतउ
न कहिउ इम कहिउ—हिमवत वासी माहर विद्या नु गुर तीणइ गुरु
लविवइ करी त्रिदड खम्खडाट करतउ भुइ पडिउ लाक महूजे हसिउ
इ भणी बीज (?बीज ऊ) गुर नउ निह्नव न करिवु

पढा हुआ (ऊभ<ऊध्व)। विद्या। सना है पढना है। अक वार की पढा
=अक वार पढने से ही)। वह विद्या। आयी (=आ गयी)। या इम
। दूसरा का भी। विद्या लन हुअे विद्या पढते समय। विनय नम्रता।
ण) करना चाहिअ।

(२)

अेक नाइ। विद्या क बल स। अपनी रछानी। आकाश मडल म। रखता
उसके पास स। अेक त्रिन्डी (सन्यासी) न। वह विद्या। ली सीखा।
नी। परदेश म जाकर। उस विद्या (के बल) म। अपने त्रिदड का।
श मडल म रखता है। यह दखकर विस्मय म होता हुआ जन-समूह।
पूजा भक्ति करता है (=लाग उसकी पूजा और भक्ति करन लग)।
अक बार लागा न पूछा। इस विद्या का तुम्हार गुरु कौन ? उसन लज्जित
हुअ लज्जा क मार। नाइ को नहा कहा (नाई का नाम नहीं लिया)। यो
। (नि)। हिमालय निवासी। मेरा विद्या गुरु (विद्या का दाता गुरु)।
। उसन। गुरु को छिपाने क कारण (आलविउ<अपलाप)। त्रिदड।
खड करता हुआ। (पृथ्वी पर) गिरा गिर पडा। सब लागा स
गया (=सब लाग हस पडे सब लोगो न उसका हसी उडायी)।
इस कारण दूसरा को भी (?) गुरु का निह्नव नही करना चाहिअ
गुरु का नाम छिपाना नहीं चाहिअे)।

वाग-विलास

(पद्रहवी शताब्दी—उत्तराघ)

[माणिक्यसुदर सूरि]

[श्री माणिक्यसुदर सूरि का सम्बन्ध आचलगच्छ मे था। ये आचाय श्री मेरुतुग के शिष्य थे। श्री जयशेखर सूरि (स १४०० १४६२) इनके गुरु भाई थे। इनकी उल्लेखनीय रचनाओ मे 'गुणवर्मा चरित्र' 'सत्तरभेदी पूजा कथा' 'चतुपर्वी कथा' 'शुकराज कथा', 'मलयसुदरी कथा', 'सविभाग व्रत कथा' 'पृथ्वीचन्द्र चरित' आदि के नाम गिनाये जा सकते है। इनमे 'पृथ्वीचन्द्र चरित' सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना है। इसका निर्माण स १४७८ मे पाच उल्लासो मे हुआ। 'वागविलास' इसका दूसरा नाम है। राजस्थानी कलात्मक गद्य का यह सवप्रथम उदाहरण है। पृथ्वीचन्द्र चरित मे महाराष्ट्र के पइठाणपुर पट्टण के राजा पृथ्वीचन्द्र तथा अयोध्या के राजा सोमदेव की पुत्री रत्नमजरी की प्रणय कथा है। वस्तुवणन इस रचना की महत्वपूर्ण विशेषता है। काव्यमय शैली के कारण कथा मे अन्त तक रोचकता का निर्वाह हुआ है।

सकलित अशो मे से प्रथम मे सवनदेव की महत्ता का वणन है, दूसरे अश मे बताया गया है कि किस वस्तु का किससे नाश होता है, तीसरे मे पुण्य की महिमा का कथन किया गया है चौथे मे बताया गया है कि कौन वस्तु किससे युक्त होने पर श्रेष्ठ गिनी जाती है, पाचवें मे महाराष्ट्र देश का, छठे मे वसन्त ऋतु का और सातवें मे वर्षा ऋतु का वणन है। ये वणन 'वणक' सज्ञक ग्रथो मे निये गये वणनो के प्रकार के है। आन्तरिक तुक अनुप्रासमयी झकार शैली भाषागत प्रवाह और घरेलूपन के कारण ये वणन बडे सुदर बन पडे है।]

—१—

अहो महाभागउ ! हीयान्न लोचन जागउ जेतलउ अतर राणी अनइ दासि जेतलू अतर दही नइ छासि जेतलउ अतर मधुर ध्वनि नइ खासि जेतलू अतर

---

(१)

हे महाभागो ! हृदय की आखो से जागो। जितना अतर (=फक) रानी और दासी मे। दही और छाछ मे। मीठी आवाज और खासी (धीमवाने वचन ?)

१ कूया जेतळू अतर मानड्या नइ रूया जेतळू अतर बाप नइ फूया तर नरेश्वर नइ आहीर जेतळू अतर रूपा नइ कथीर जेतळू अतर इ माटी जतळू अतर वारू मानि नइ माटी, जतळू अतर पटउळा गी जेतळू अतर पडसूत नइ सूतळो, जेतळू अतर जीवता माणस नइ जेतळू अतर खग नइ छुरी जेतळू अतर तदुळ नइ बुरी जेतळू अतर १ तारा, जेतळू अतर माकर नइ खारा, जेतळ अतर मा नइ सीआळ अतर प्रभात नइ विआळ जेत अतर रूगा नइ राग जेतळू अतर नइ साग जेतळू अतर अळसळा नइ नाग जेतळू अतर हस नइ काग लूण नइ कपूर जेतळइ खजूआ न मूर जेतळइ डाकिली नइ तूर खाळ नइ गगा पूर जेतळइ साधु नइ चोर जेतळइ हार नइ दोर गजेंद्र न समा जतळइ गुरुड नइ ममा जेतळइ कोडि नइ मवा जेतळइ हाविका घाट न गाहीम जेतळइ माटा वक्ष नइ राहीस १ व्यवसाय नइ कु ठाकुर सेव तेतळू अतर अपर दवत अन श्रीसवन-देव

—२—

जम विलव विणसइ काज कु ठाकुरि विणसइ राज, माजारि प्रचारि

मुग और कुव म। सोने के सिक्के और रुपए (=चादी के सिक्के) म। पिता फूफा म। राजा और अहीर म। चादी और रागे म। मान और मिट्टी म। की भीत और टाटी म। पट्टकूल (=रेशमी वस्त्र) और छाटी (=रूढी का वस्त्र) म। प्रतिसूत्र (=मगलसूत्र) और सुतली म। जीते हुए मनुष्य पुतली म। खड्ग और छुरी म। चावल और बूर म। सूय और तार म। र और खार (नमक) म। सिंह और सियार म (गधान)। प्रभात और साझ (राग)। रूगा और राग म। छामी (गिम्यो)(?) और साग म। अळसळे नाग म। हस और कौवे म। नमक और कपूर म। खद्योत (जुगनू) और म। डाकिली और तुरही म। गडहे और गगा के प्रवाह म। साधु और म। हार और डोर म। गजराज और खरगोश म। गरुड और मच्छर म (व)। करोड और सवा बीस (बिन्द?) म। कपिरा घाग और गोहीस (?) माटे वृक्ष और राहीडा वृक्ष (राही?) म। व्यवसाय और बुरे स्वामी की सवा उतना (ही) अतर दूसरे देवताओ और श्री सवन देव (=भगवान जिन) म (है)।

(२)

जैम। देरी से। नष्ट होता है बिगडता है। काम। दुष्ट ठाकुर (=राजा)

विणसइ छाज, अणबोलिइ विणसइ ध्याज, पर्डपि विणसइ दान, कुसगति विणसइ सतान, स्वर पाखइ विणसइ गान, लूइ विणसइ मइ पान, व्याधिइ विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवमान, कुपडित विणसइ छात्र, क्षयणि विणसइ गात्र पीपळि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद आक-दूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र, चामडी विणसइ कणक-नु वाक, विषइ प्रयोगि विणसइ रसवती तणउ पाक, वरसाळइ विणसइ शस्त्र खपरी विणसइ वस्त्र, जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कम निम जीवहिंसा विणसइ धम

—३—

पुण्य लगइ पृथ्वी-पीठि प्रसिद्धि, पुण्य लगइ मनवाछित सिद्धि, पुण्य लगइ निमल बुद्धि, पुण्य लगइ घरि ऋद्धि वद्धि, पुण्य लगइ शरीर नीराग पुण्य लगइ अभगुर भोग, पुण्य लगइ कुटुब-परिवार तणा सयाग, पुण्य लगइ पलाणीयइ तुरग, पुण्य लगइ नव-नवा रग पुण्य लगइ घरि गज घटा चालता

से नष्ट होता है राज्य । । बिना बोले नष्ट होता है व्याज । प्रशसा से (?) नष्ट होता है दान । बुरी सगति से नष्ट होती है सतान । स्वर के बिना नष्ट होता है गान । लू से नष्ट होता है पान (?) । बीमारी से नष्ट होता है रग (वण वण्ण) । बुरे मरण से नष्ट होता है अन्त । बुरे पडित (=गुरु) से नष्ट होता है विद्यार्थी । क्षय से (?) नष्ट होता है शरीर । पीपल (के उग आने) से नष्ट होता है महल । सिंदूर से नष्ट होता है स्वर आक के दूध से नष्ट होते हैं नेत्र। टिड्डी (=समूह) के नष्ट होता है निष्पन्न (=निपजा हुआ फसल युक्त) खेत । छिरमुई से नष्ट होता है कनक का तेज । विष के प्रयोग से नष्ट होता है रसोई का पाक । वर्षाकाल में नष्ट होता है (लोहे का) हथियार । कीट (?) से नष्ट होता है कपडा । जैसे बुरे व्यसन से नष्ट होता है अच्छा कम । वैसे जीव हिंसा से नष्ट होता है धम ।

(३)

पुण्य से पृथ्वीतल पर ख्याति (होती है) । पुण्य से मनचाही सिद्धि (=सफलता) । पुण्य से निमल बुद्धि। पुण्य से घर में सपत्ति की समृद्धि (या सपत्ति और वढती)। पुण्य से देह रोग रहित । पुण्य से नाश न होने वाले भोग (प्राप्त होते हैं)। पुण्य से कुटुब और परिवार के संमिलन। पुण्य से पलान जाते हैं घोडे (=घोडो पर जीन कसे जाते हैं घोडो की सवारी प्राप्त होती है)। पुण्य से नये नये रग (=आनन्दोत्सव)। पुण्य से घर में हाथियो

'न छटा, पुण्य लगइ निरुपम रूप अनन्य स्वरूप पुण्य लगइ वसिवा वास, तुरगम-तणी लास पूजइ मन चीतव्री आस, पुण्य लगइ आनन्द र्ति अद्भुत स्फूर्ति पुण्य लगइ भला आहार अद्भुत शृंगार पुण्य ञ बहुमान घणू किस्यू वर्ण्यिइ, पामियइ केवळज्ञान

—४—

ते वणथाइ जे वखवत नगी त जे नारवत कटक त ज वीरवत त ज कमळवत मय त ज समावन महात्मा ते ज क्षमावत प्रामाद ध्वजावन वाट त ज यूथवत हाट जे वस्तुवत भाट ते ज वचनवत मुनिवत गढ ते जे अभगवत दव त ज अरागवत गुरु त जे क्रियावन जे सत्यवत शिष्य त ज विनयवत मनुष्य ते ज धमवत तुरगम ते ज

। चलन हुअ (=चलन समय) दी जाती है चदन की छटा। पुण्य स सुदर आकार। अलदय स्वरूप। पुण्य म रहने को प्रधान (=श्रेष्ठ) घोडा की घुडसाल। पूजना है (=पूरी होती है) मन म विचारी आशा इच्छा। पुण्य स आनन्द देनवाली मूर्ति (=रूप शरीर)। फुर्ती। पुण्य म अच्छे भोजन। अद्भुत शृगार (के पदार्थ)। पुण्य जगहा म बहुत सम्मान। अधिक क्या कहा जाय। पाया जाता है लता है) (पाम<प्राप)। कवल्य ज्ञान।

(४)

सन वह बखाना जाता है (या बखानना चाहिअ) जो पेडा म युक्त। नदी वह जो पानी मे युक्त। स य वह जो वीरो से युक्त। सरोवर वह मला स युक्त। वादन वह जो समय वाला=मुकाल करने वाला या समय रमन वाला (?)। महात्मा वह जो क्षमा युक्त। महल वह जो ध्वजा युक्त। वह जो (पथिको के) समूह स युक्त (वाट<वत्म वट्ट)। दुकान वह जो ी का) वस्तुओ स युक्त। घाट=शरीर का गठन (?) वह जो सुवण सुदर वण) म युक्त। भाट वह जो वचनो वाला (=वावदूक या काव्य वाला)। मठ वह जो मुनिया से युक्त। दुग वह जो पराजित न होन वाला स युक्त (अभग=अपराजय)। देवता वह जो राग से युक्त नही। गुरु जो क्रिया जानने वाला (कोर सिद्धात का उपदेश करने वाला नही किंतु श या शिक्षा का कायरूप म परिणत करके दिखानवाला)। वचन वह जो स युक्त। शिष्य वह जो विनय से युक्त। मनुष्य वह जो धम से युक्त।

तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चायवंत राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारिया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत

–५–

तीह माहि वखाणीयइ मरहट्ठदेस जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम भला नगर, जिहा न मागीयइ कर दुर्ग, जिस्या हुइ स्वर्ग धान्य न नीपजइ सामान्य आगर सोना रुपा-तणा सागर जेह देस माहि नदी वहइ लोक सुखइ निवहइ इसिउ देस, पुण्यतणउ निवेस, गरूअउ प्रदेस

तीणि देसि पइठाणपुर पाटण वत्तइ जिहा अन्याय न वत्तइ जीणइ नगरि कउसीसे करी सदाकार, पाखलि पोढउ प्राकार, उदार प्रतोळी-द्वार पाताळ भणी धाई, महाकाय खाई समुद्र जेहनु भाई जे निइ कैलास-पर्वत सिउ वाद, इस्या सर्वज्ञ तणा प्रासाद करइ उल्लास लक्षेश्वरी कोटीध्वज तणा आवास आनन्दइ मन, गरूउ राज भवन ऊपरि अखंड, सुवर्णमय दंड,

---

घोडा वह जो तेज से युक्त। हाथी वह जो भद्र जाति का। मंत्री वह जो बुद्धि से युक्त। हाथ वह जो त्याग से युक्त। राजा वह जो न्यायशील। व्यापारी वह जो द्रव्य (?) से युक्त। धर्मात्मा वह जो दया से युक्त।

(५)

उनके अंदर, उनमें। बखाना जाता है (सं व्याख्यान, प्रा वक्खाण से)। महाराष्ट्र देश (वर्णव्यत्यय)। जिस देश में। गांव (है) बहुत-ही सुंदर। (जहां हैं) अच्छे नगर, जहां नहीं मांगे जाते राज्यकर। दुर्ग (=किले) ऐसे (हैं) कि जैसे हों स्वर्ग। (वहां) धान मामूली नहीं पैदा होता। खानें सोने चांदी की सागर (हैं)। जिस देश में नदियां बहती हैं। लोक सुख से निर्वाह करते हैं। ऐसा देश (है)। जो पुण्य का निधान। गौरवशाली प्रदेश। (है)।

उस देश में पइठनपुर (प्रतिष्ठानपुर) नामक नगर है। जहां अन्याय नहीं होता। जिस नगर में कंगूरों से श्रेष्ठ आकार वाला (कासीस=कपिशीर्ष, कंगूरा, बुर्ज)। चारों ओर। पोढ़ा (प्रौढ़ पुष्ट मजबूत)। परकोटा, चहारदीवारी (है)। बड़ा पौरी का दरवाजा (है)। पाताल की ओर दौड़ी (=दौड़ती हुई पहुंचती हुई) विशाल काया वाली (=बहुत बड़ी) खाई (है)। समुद्र जिसका भाई (है)। जो कैलास पर्वत से वाद लेते हैं (=प्रतिद्वंद्विता करते हैं) ऐसे सर्वज्ञ देवता के (=भगवान जिन के) मन्दिर (है)। करते हैं आनंद, लखपतियों (और) करोड़पतियों के भवन। आनंदित करता है मन को बड़ा (<गुरुक) राज

रमइ धाराधर पाणी तणा प्रवाह खळहळइ, वाडि ऊपरि वेला वळई, घालता चमक स्पर्‍द्धइ, लोकह्णा मन धर्म-ऊपरि वळइ नदी महापूरि पृथ्वी-पीठि प्लावइ नवा विमळय गहगहइ, वल्ली वितान लहलहइ लोक माचइ, महात्मा बैठा पुस्तक वाचइ पथिक-तउ नीभरण भरिया सरोवर फूटइ

बरसते हैं। सुन्दर धाराधर बरसते (=बरसते) हैं। पानी के प्रवाह बहते हैं (कलकल शब्द करते हुए बहते हैं)। बाड़ के ऊपर बेलें फैलती हैं। चमक में चमकते हुए मोर स्पर्धित होते हैं। लोगों के मन धर्म की ओर हैं (प्रवृत्ति होते हैं)। नदियाँ बड़े प्रवाह में आती हैं। पृथ्वी के तल प्लावित करती हैं। नये विमलय गहगहाते हैं। बेलों के मंडप लहलहाते हैं। कुटुंबी लोक मग्न होते हैं (?)। महात्मा लोग बैठ पुस्तक बाँचते हैं। बिना से भरने छूटते हैं। भरे हुए सरोवर फूट पड़ते हैं।

वचनिका खीची अचळदास-री

(पद्रहवी शताब्दी—उत्तरार्ध)

[गाडण शिवदास]

[शिवदास गाडण शाखा के चारण थे। गागरोणगढ़ (कोटा मडल के अतर्गत) के राजा अचलदास खीची इनके आश्रयदाता थे। मालवे (माडू) के सुलतान आलमशाह गोरी (हुशगशाह नाम भी मिलता है) ने स० १४८५ के आसपास गागरोणगढ़ पर चढाई की तब वहा जौहर हुआ और अचलदास लडते हुए वीर गति को प्राप्त हुए। कहा जाता है कि शिवदास चारण भी युद्ध के समय मे उपस्थित थे पर राजकुमारो की सुरक्षा के लिए वे जौहर मे शामिल नही हुए। उन्होने सम्पूर्ण युद्ध को अपनी आखो से देखा तथा अपने आश्रयदाता को अमर करने के लिए प्रस्तुत वचनिका की रचना की।

यह वचनिका वीर रस की श्रेष्ठ कृति है। इसमे गद्य और पद्य दोनो का सफल प्रयोग हुआ है। यद्यपि पद्य की तुलना मे गद्य कम प्रयुक्त हुआ है तथापि वह प्रौढ और परिमार्जित है। गद्य वचनिका शैली (तुकात युक्त गद्य शैली) मे लिखा गया है।

सकलित अश मे आलमशाह गोरी के सैन्य समूह और उसके आक्रमण का वर्णन करते हुए उसके विरुद्ध खडग उठाने वाले अचलदास खीची के वीर व्यक्तित्व की व्यजना की गयी है।]

-१-

इसी परि त्या खउदाळम गोरी राजा बारह लख माळवा रउ चक्रवरती तइ रइ तेवाणू लाख माळवा रा कटक-बध तइ कटक-बध रउ आरभ पारभ

---

(१)

इस भाति (का) वह लाखो का भार उठाने वाला (=आरम्भ) गोरी-वशीय राजा। बारह लाख (अर्थात बारह लाख की आय वाले) मालवा खड

ान गडावरउ
इ क्टक वधि माहि तउ क्हइ दिसाळउ महाधर तउ क्वण-क्वण ? वान फ्तेखान गजनीखान उमरखान हइवतिखा। खान तउ मुगीस सारिखा ट्दू राजा क्वण-क्वण ? सक्ळ ही सक-वधी सक्ळ-क्ळा-सपूरण, नरसिंघ सारीखा तइ नरसिंघदास-का क्टक बध चालिता सातरि आगलइ पाणी पाछिलइ दळि काम्म तइ कादम कइ ठाहि खेह उडता जाइ विक्रमाईत

दूहा

अवइ वनि वसतडा अवेड अतर काइ ।
सीह ववडडी नह लहइ गइवर लखिव विका ॥

चक्रवर्ती (है)।[1] उसके तिरानवे लाख मानवा का सेना समूह (है)। उस समूह का आरभ प्रारभ बल्प्पन (है)।
उस सेना समूह मे (जो योधा है उनका) ता क्म्कर (=वणन करके) ता हू। महाधर (वडे स्तम) ता कौन कौन ? उमराखान फ्तेखान नीखान उमरखान हैबतखान। खान तो मुगीसखान सरीखे।[2]
न्दू राजा कौन कौन। सारे ही शक्वधी (=साका बाधन वाल युग प्रवतक पराक्रम करने वाल)। सारी कलाओ स परिपूण। राजा सिंहदास सरीखे। उस नरसिंहदास क सेना समूह क चलत हुअ (=चलने य)। अगल भाग को (=सेना के अग्रभाग को) पानी (मिलता है तो)। त सेना का (=पिछले भाग को) कीचड (काम्म<कदम)। उस कीचड स्थान म (?) धूल उडती जाती है। (वह) दूसरा विक्रमादित्य है।

दोहा

(दाना) एक ही वन म रहन वाल है फिर इतना फ्क क्या ? सिंह (ता) भी भा नहीं लता (=पाता) जबकि सिंह का माल तो कौडी भी नहीं लता (जब कि) हाथी लाख म विकता है (=उसका मोल अेक लाख रुपय लता है)।

बादशाह का नाम होशगशाह था और वह गारी वंशीय था। अलपखा साहि आलम या आलमशाह उसके दूसरे नाम थ।
मुगीसखा होशगशाह का फुफेरा भाई था गजनीखा उमरखा फ्तेहखा हैबतखा उसक पुत्र थे।

कुडळिया

गइवर गळइ गळत्थियउ, जह खचइ तह जाइ ।
सीह गळत्थण जइ सहइ तउ दह लक्खि विकाय ॥
तउ दह लक्खि विकाइ, मोल जाणवि मुहगरा ।
कडया कारणि कथिन कोपि सउदाळिम करा ॥
वद कोध पडियार, निहमि कट्टारउ दुहु करि ।
राइ न ग्रहउ नरसिंघ गळइ गळहथ जउ गइवरि ॥

ते राजा नरसिंघदास सारीखा बत्तीस सहस साहण रिण खेति मेल्हि चाल्यउ मदानमत्त हस्ती मेल्हि चालमउ आपण जाइ समदइ घाल्यउ समद जाइ खाडउ पखाळयउ अनक राइ मद गळित कर मेल्ह्या

ते राजा नरसिंघदास मारीखा ते राजा नरसिंहदास का कुवर तउ चादजी खेमजी सारिखा मातगपुरी का चक्रवती लखमराव सारिखा दलीसाह

कुडलिया

हाथी के गले में गलबधन है, उसे जहा खीचते है (वह) वही चला जाता है। सिंह यदि गल-बधन को सह सके तो एक नही दस लाख में बिके। तो (वह) दस लाख में बिके। उसका मूल्य महगा समझा। (मुहगेरा=मुहगा <महाघ+अेरा स्वार्थिक प्रत्यय)। बादशाह के कडवे कथन के कारण कोप करके पडिहार (नरसिंहदास) ने युद्ध किया। दोनो हाथो से कटार (=तलवार) पकडा (?)। राजा नरसिंहदास को नही पकडा। हाथी की भांति गले मे गलबधन (डालकर)।

उस राजा नरसिंहदास[3] सरीखे। बत्तीस हजार घोडे (>स० साधन) रणक्षेत्र में रखकर चला। मदामत्त हाथी रखकर चला। स्वय जाकर (कटक को) समुद्र में (=तक) पहुचा दिया। समुद्र में जाकर खड्ग धोया (स० प्रस्वल अप० पक्खाल)। अनेक राजा गलितमद कर डाले (=अनेक राजाओ का गर्व उतार दिया)।

वे राजा नरसिंहदास सरीखे (स० सदृक्ष)। वे राजा नरसिंहदास के कुमार तो चान्दजी खेमजी सरीखे। मातगपुरी के चक्रवर्ती लखमराव (लक्ष्मराज) सरीखे। दलीशाह सरीखे। बूदी के छत्रपति (चक्रवर्ती) और देवडा सरीखे

३ मालवा क्षेत्र का अेक प्रसिद्ध राजा।

बूदी का चक्रवर्ती अवर देवडा हिदू राद वदि छोड दूसरा मालदे ह मारिग्या

। तउ कउण कउण ? सतियामी नमियाड, जुग मानधाता, आसेरि, मिलारपुर नगद-का कटकिव ध मभ दम तउ माडव धार उजीण, , खड-खड का नगर नगर-का खान मीर अमराव चतुरग दळ चढि पातसाह आपुणपउ थारया

-२-

मउ हिंदू राजा उपकठि कउण छइ जिकइ मनि पातिसाह-की रीस कउण का माथा तइ खिसा ? कउण हइ दई रुठउ ? कउण की माई ो जू सामउ रहइ अणी-थाणी ? आजु तउ माम मातल का हम्दे नही, ऊपरि गहिन-उत नही, मोहउरि रउळु नही हठ कउ राउ हमीर आथम्यउ

राजाओ को वशीभत मे छुपाने वाले। दूसर मालदेव और ममरसिह ।[४]

ेग तो कौन कौन। (कउण<स० क पुन अप०कउणु) । सतियामी ाड युग माधाता आसरि दुगपुर सिनारपुर तक के कमर बाधन वाले। ग तो माडवगढ धार उज्जन सीहोर। खड-खड के (खड=प्रदेश, ।)। नगर नगर के। खान अमीर। चतुरगिणी सना के समूह (हाथी घोडे पदल य सेना के चार अग है)। चढकर चल। बादशाह ने स्वय ? (?)।

(२)

ऐसा हिंदू राजा निकट म कौन है जिसके मन म बादशाह की बराबरी न का बात) बसा। किसके सिर स (सद्बुद्धि) खिसक गयी (किसका सिर गया)। किस स भाग्य रूठ गया (<रुष्ट)। किसकी माता ने (ऐसा) जना (वियाणा=प्रसूता हुई)। कि। सामन रहे मुकाबले म ठहर। ता। साम मातल और का हन्दव (तीन चौहान-वशीय वीर जो अला न से लड थ) नहा। तिलकछापर म तो गुहिलात   नहा। सीहार उळ नहा। हठ का (=हठ वाला) राजा हम्मीर (रणथभोर का प्रसिद्ध ान-वशाय राजा जिसने अलाउद्दीन से युद्ध किया था) अस्त हो गया (अस्त हुवा है)।

जालोर के प्रसिद्ध चौहान वशाय राजा।

अउर पातिसाह हुआ आला आगिलेरा, अर भला भलरा त्या तउ चउरासी द्रुग लिया था न्हिाडइ पाडइ यउ नउ सुरताण दूसरउ अलाउदीन जिणी चउरासी द्रुग लिया था अेक्इ दिहाडइ

तणि पातिसाहि आया मातरि कुण महइ ? कुणइ सहिजइ ? कुण-की जुक्ती ? कुण की प्राप्ती ? कुण-की माइ वियाणी, जु सामउ रहइ भणी पाणी ?

यउ तउ पातिसाह उत्तर दक्खिण पूरब-पच्छिम कउ जइतबार इ-का पुरुखारथ प्रवाडा नाहि पार धन धन हो राजा अचळेसर ! थारउ जियउ जिणि पातिसाह-सउ खाडउ नियउ

तणि पातिसाह आया मातरि मन छाडइ नही, खत्र खाडइ नही दीण न भाखइ, पागार लघित न हायइ त राजा अचळेसर सारिखा अचळ नइ अचळेस-ही हायइ

अचळेसर तउ किसउ ? उत्तर दक्खिण-पूरब-पच्छिम-कउ भड किंवाड,

और (दूसरे) बादशाह हुअे। आला (=प्रथम कोटि के)। (और) आगे वाले अग्रणी श्रेष्ठ (अगला+अेरा =स्वार्थिक प्रत्यय)। और। भले भलेर (=भले भले) (भलरा=भला+अेरा)। उन्होने तो चौरासी दुर्ग लिये थे दिन । यह सुरतान तो दूसरा अलाउद्दीन (है) जिसने चौरासी दुर्ग लिये थ अकही दिन मे।

उस बादशाह के। आय आने पर। कौन भार सहता है। किससे सहा जाता है। किसकी युक्ति। किसकी प्राप्ति। किसकी माता ने पुत्र जना जो सामने ठहरे। यह तो बादशाह उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम का जीतने वाला (है)। इसके पुरुषार्थ (पराक्रम) के वीर कार्यों का पार नही। धन्य धन्य हे राजा अचलेश्वर ! तेरा जी। जिसने बादशाह से खडग लिया (=युद्ध मे सामना किया)। (खाडा<खडक अेक प्रकार का खडग)।

उस बादशाह के आये (=आने पर) मन को नही छोडता। क्षत्रियत्व को खडित नही करता। दीन (वचन) नही बोलता। परकोटा लघित नही होता, (=दुर्ग को छोडकर भागता नही)। वह राजा अचलेश्वर सरीखा अचल अचलसिंह ही है (=हो सकता है)।

अचलेश्वर तो कैसा। उत्तर दक्षिण, पूर्व पश्चिम का भड किंवाड (=शत्रु का किंवाड के समान बाहर ही रोक देने वाला वीर)।

मे अजयपाल। अहकार मे रावण (के समान)। दूसरा धारू (अेक चौहान वीर)। तीसरा सिंधण (अेक और चौहान वीर)। छह दर्शन (=छह

त्र सह नी भार्या विजयादेवी कूखिइ पुत्र ऊपना अमरसेन वइरसेन नामिइ वत्रइ हूया क्रमि क्रमि यौवनावस्था पामी सकळ कळा नइ विखइ हूया जन नइ प्रीय गुण-ना जेक थानक जेहवा ते बिहुइ पुत्र देखी माता मन माहि चीतवइ—जा अे बेवइ जीवइ ता माहरा पुत्र नइ राज इ पछइ माया लगा राजा नइ कहिवा लागी—राजन्! अे ताहरा पुत्र शील जनइ रागाध थकाइ ज न्विस तोनू (?) कटक चालिउ हुनउ ते दिन माहरी प्रार्थना अनेके प्रकारे करता पणि मइ मोटइ कष्टिइ करी शील नी कीधी न्विइ ज काई ताहरा कुळ नइ उचित हुवइ ते करि इत्यादि माभळी अजाणतइ परमार्थ अणविमासिइ ग्राम नउ मूळगु मातग तेडी । दीधउ जे बिहु पुत्र ना मस्तक लेइ आवि

पछइ मातग आदेस पामी जिहा अमरसेन छइ तिहा आवी राजा-नु आदेश । जु मुझ नइ राजाइ अेहवु आदेश दीधउ छइ पछइ बेवइ पुत्र कहिवा —अम्हारा मस्तक लइ राजा-नु आदेस प्रमाण करि पछइ मातग चीतवइ राजा नु आदेस साचउ हुउ किम करउ जे ए महापुरुष पछइ कुमार नइ

अब उनकी पत्नी विजयादेवी की कोख से । पुत्र उत्पन्न हुअे । अमरसेन वयरसेन असे नामो से दोनो (प्रसिद्ध) हुअे । धीरे धीरे युवावस्था पायी । कलाओ के विषय मे (=कलाओ मे) निपुण हुअे । जनता के प्रिय गुणो के मात्र स्थान अेसे उन दोनो पुत्रो को देखकर । सौतेली माता (सौत=) मन मे विचारती है । जहा तक=जब तक । ये दोनो पुत्र जीते हैं । तब तक=तब तक । मेरे पुत्र को राज्य नही (प्राप्त) होगा । पीछे माया से कपट से) राजा को (=राजा से) कहने लगी । हे राजा! ये तेरे पुत्र दुशील रागी और राग से अंध हुअे । जिस दिन । तुम्हारी सेना चली थी उस दिन मेरी प्रार्थना (=अभिलाषा) । अनेक प्रकारो से करते रहे । पर मैंने बडे कष्ट से शील की (=आचार की धर्म की) रक्षा की । अब जो कुछ तुम्हारे कुल के उचित हो वह करो । इत्यादि वचन सुनकर राजा ने वास्तविक बात न जानते हुअे बिना सोचे विचारे (स० विमृश) गाव के प्रधान चाडाल को बुलाकर आज्ञा दी कि दोनो पुत्रो के सिर (स० मस्तक) (काटकर) ले आ । पीछे चाडाल ने आज्ञा पाकर जहा अमरसेन है (=था) वहा आकर राजा की आज्ञा कही कि राजा ने मुझे असी आज्ञा दी है । पीछे दोनो पुत्र कहने लगे— हमारे सिर ले राजा की आज्ञा सत्य (प्रमाण) कर । पीछे चाडाल सोचता है । राजा की आज्ञा सत्य हुई । क्या करू ? ये तो महापुरुष (हैं) । पीछे कुमार

कहिवा लागउ—अेहवउ कम हू किम करू ? पणि तुम्ह मया करी देशातरि पहुचउ हू चित्रकार पाहइ ते माथा करावी चीतरावी राजा-नइ देखाडसु इसिउ साभळी बन्नइ बाधव दशातर भणी चाल्या पछइ मातगि माथा तिम करी राजा-नइ देखाडया जिम राजाइ जाणी न सक्या हिव ते वात साभळी मात्रई माता हरखी

-२-

हिव अमरसेन-वयरसेन माता मात्रेईनू विलमित जाणी आश्चर्य जोवा-नइ काजि देशातर भणी चाल्या इसिइ सध्या-नइ काळि अेक अटवी माहि गया रात्रइ वृक्षअे तळइ सूता अटवी माहि भय जाणी अमरसेन सूनउ वइरसेन पुहरइ बइठु

अेतळइ प्रस्तावि सूडी भूमिका स्थित सूडा नइ कहिवा लागी—भो स्वामिन् ! अे बेन्नइ महापुरुष आव्या छइ, वृक्षा तळइ सूता छइ तेह नइ काईक उपगार कीजइ सूडइ कहिउ—आपण पक्षी अेह नइ केहउ उपकार कीजइ ? तिमइ

को कहने लगा। असा काम मैं कस करू ? पर तुम दया करके देशातर (=परदेश) पहुचो (=चले जाओ)। मैं चित्रकार के पास से क (=कस) सिर बनवाकर राजा को दिखा दूगा।

असा (=यह) सुनकर दोनो भाई परदेश को चले। पीछे चाडाल ने सिर इस प्रकार बनवाकर राजा को दिखाये जिस प्रकार कि (=जसे कि) राजा न जान न जा सके (राजा नही जान सका)। अब यह वात सुनकर सौतेली माता प्रसन्न हुई।

(२)

अब। अमरसेन और वयरसेन। सौतेली माता का जानकर। आश्चर्यों को देखने के लिये। परदेश की ओर चले। असे मे। सध्या के समय। अक वन मे। गये (=पहुचे)। रात मे वृक्ष के तले सोये (स० सुप्त)। जगल मे भय समभकर। अमरसेन सो गया। (और) वयरसेन पहरे पर बठा (=पहरा देने लगा)।

असे समय सुग्गी भूमि पर बठ सुग्गे को कहने लगी। हे स्वामी ! ये दो महापुरुष आये हैं। वृक्ष के तले सोये है। उनको (=उनका) कुछ उपकार कीजिये (=किया जाय=करना चाहिअे)। सुग्गे ने कहा। अपन (=हम) पक्षी

हिउ—स्वामी ! मामठ मुकुन्दा र पवत तिहां विद्याधर आपणा विद्या
ता भणी विद्या अभिमन्त्रि वि आजा वाव्या छह, तेह माहि वड़ा आंबा
जिरा मा तेह नइ मान दिन मांहि राज हुइ अनइ लघु आंबा-ना
" नक्षिणि प्रभाति कुरळा करता पाच मइ दीनार मुख हूंता पडइ
वहा वडइ पगी उडा आवा-ना फळ वि आणी वयरसेन-नइ उत्सगि
पण वयरसेन राज अणवाछतइ प्रभाव विण वहिइ बहू फळ अमरसेन
थ लघु फळ आपणइ साथु
छी बीजइ दिन अबाकी बइसा मळाति जइ कुरळा करिवा लागउ
, पाच मइ दीनार मुख हूता पडिया नि बार पछी तीणइ द्रव्यइ भाजन
स्त्र लई सुख भोगवता अवणि नगरि जाता मुख विलसता वयरसेन
माहि वस्या नइ घरि जई रहिउ अमरसेन नगरी-ना परिसरि

अनउइ नगर-नु राजा मूउ पाच दिव्य अधिवास्या अमरसेन काचननगर
उद्यान-वनि वृ र मूळि सूतउ देखी पाच दिव्य राजि बइसारिउ

। बवा (=करवा) मभा (=क्या) उपचार किया जाय ? तब सुग्गी ने
। ह स्वामी ! सुना । मुकुन्द नाल (नामक) पवत (है) । वहाँ विद्याधर ने
ने विद्या की परीक्षा के लिये मत्रित कर ना आम लाय हैं । उनमें बड़े आम
न जो खाये उसको मात दिन के भीतर राज्य (प्राप्त) हो। और छोटे आम
न के प्रभात में सवेरे कुल्ला करते हुए (=करते समय) पाच सौ दीनार मुह
र । ऐसा कहकर । तोता पक्षियों ने । उडकर । आम के दो फल लाकर ।
सेन की गोद में डाल दिये (=डाल दिया) (स० मुक्त प्रा० मुक्क म) ।
वयरसेन ने राज्य की इच्छा न करते हुए बडा फल बिना प्रभाव बनाये
रसेन को दिया और छोटा फल स्वय लिया ।
पाछे दूसरे (स० द्वितीय) दिन । अवाकी (=अवना बेला तम) बैठकर ।
गाव पर जाकर । कु ने करने लगा । तभी पाच सौ दीनार मुख से गिरे ।
समय के पश्चात् । उस द्रव्य से । भोजन वस्त्र आदि लेकर । सुख भोगने लगा ।
र अवन्ती नगरी में जाकर सुख भोगता हुआ । वयरसेन । पुरी में वेश्या के घर
कर रहा । अमरसेन पुरी के पडोस में रहा ।
इतने में नगर का राजा मर गया (स० मृत) । पाच दिव्य अधिवासित
ये गये । अमरसेन को काञ्चननगर के उद्यान वन में वृक्ष के मूल में सोया
(स० सुप्त) देखकर । पाच दिव्यों ने । उसे राज्य पर बिठा दिया ।

–३–

वयरसेन कौतुकी हूतु वेश्या-नइ घरि रहिउ भाइइ जायाविउ पणि लाधउ नही अन्यदा मागधिकी कुट्टिनी वयरसेन व्यापार रहित धन-व्यय करतु त्तरी पूछिउ—ज प्रियतम ! व्यापार विण अेतडउ खरचिवउ किम पहुचइ छइ मुग्ध-स्वभाविइ आम्रा-नू भक्षण कहिउ जू आम्र ना भक्षण लगी पाच सइ दीनार-नी प्राप्ति

तिस्यइ वेश्याअे जोमाडी वमना (?) आवध न्ई आम्र फल-नी गुठिली पाछी वमावी पछ्य वयरसेन नि द्रव्य जाणी घर हूतु काढिउ फल वेश्याइ लीधउ निस्य वयरसन नार छाडी उद्यान-वनि आविउ, विनक्ष्य हूतइ (? हूतउ)।

इसिइ रात्रिइ त्रिणि वस्तु चारी च्यार चोर भाग-नइ कीध कलह करिवा लागा पणि जे त्रिणि वस्तु अनइ च्यारि चोर, त भाग मेलि किम-ही न पडइ इसिइ वयरसेन चार थई माहि मिलिउ कलह-स्वरूप पूछिवा लागउ ते कहिवा लागा—अम्ह च्यारि चार अनइ कथा नकुट पादुका अे वस्तु त्रिणि विहची

---

(३)

वयरसेन कौतुकी होता हुआ (=कौतुक के कारण) वेश्या के घर म रहा (=रहने लगा)। भाई न ढुंढवाया पर मिला नही। अेक दिन मागधिकी कुट्टनी न वयरसेन को विना व्यापार के धन खच करता हुआ देखकर पूछा कि हे प्रियतम ! व्यापार के विना इतना खच करना कस पहुचना है (पूरा पडता है)। (वयरसेन न) भोले स्वभाव के कारण आम का खाना कहा (=आम खान की बात बनायी) कि आम के खान स पाच सौ दीनार की प्राप्ति (होती है)।

अैस म (=तव) वेश्या न (उसको) जिमाकर (=भोजन कराकर) वमन की औषधि दकर गुठली वापिस वमन करवा ली। पीछे वयरसेन को द्रव्यहीन जानकर घर से निकाल दिया। फल वेश्या न ल लिया। तब वयरसेन नगर को छोडकर उदास होता हुआ उद्यानवन म आ गया।

असे म रात म तीन(स०त्रीणि) वस्तुए चुराकर चार चार भाग(=बटवारा) के लिअे (आपस म) कलह करन लगे। क्योकि वे तीन वस्तुअे और चार चार। उनके बँटवारे का मेल किसी प्रकार नही बैठता (था)।

इतने म वयरसेन चोर बनकर (उन) चार चोरो म (आ) मिला। कलह का रूप पूछने लगा। व कहन लग। हम चार चोर (हैं)। और अेक कथा

रका वयरसेन कहिउ—कउण प्रभाव वस्तु-नु ते कहिवा लागा—अेक द्र-पुरुष तिणि छ मास ताई देवता-नू आराधन कीधू तिणि तूठइ दयताइ अणि वस्तु आपी तेह-नू अे प्रभाव—कथा माटकियइ अनइ पाच सइ दीनार लकुट-ना प्रभाव-नु शस्त्र न लागइ पाऊया-नइ प्रभावि जिम आकाश रनी विद्याइ आकासि उडीइ (उडियइ) तिम अे पाऊया-नइ प्रभावि उडीइ इयइ) अहवउ प्रभाव साभळी कुमार कहिउ—मइ पुरा-पूर्वि अ योगा-नू पहिरिउ नथी तेह भणी अेक वार कहउ तउ पहिरी जोवउ तीअे कहिउ—वार पहिरि पछइ कुमारि कथा पहिरी लकुट हाथि कीधउ, पाऊया पगि या अनइ आकासि ऊडिउ कुमार चोर वच्या हूता यथा-स्थानकि पहूता

—६—

यथा वयरसेन वळी त्रिणि वस्तु-नइ प्रभावि नगर माहि भोग भोगवइ ळे दिने तिणि कुट्टिनीइ त वयरसेन भाग भागवतु दखी वळी प्रपच करि णइ घरि आण्यउ केतलइ कालि व्यापार रहित धन-व्यय करतु कुमार

नी) अक लाठी (अक) पादुका य तीन वस्तुअें (है)। तीनो बाट नही सक्त। रसन न कहा। क्या प्रभाव है वस्तुओ का ? वे कहने लग। अक सिद्ध र (था)। उसन छह महीन तक देवता का आराधन किया। उस तुष्ट हुअे ता न य तीन वस्तुअें दी (स० अप)। उनका यह प्रभाव (है कि) कथा वारी जाती है और (=तो) पाच सौ दीनार (नाचे) गिरते है। लाठी क व स शस्त्र नही लगता। पादुका क प्रभाव स। जसे आकाशगामिनी विद्या आकाश मे उडा जाता है। वस ही। इन पादुका के प्रभाव स उडा जा सकता असा प्रभाव सुनकर कुमार न कहा।
मैंन पहन (कभी) यह योगी का वेश नही पहना (स परिधा ध्वनि यय)। इसलिअ अकबार कहो तो पहन देखू। उनन कहा। अकबार पहन)। पीछ कुमार ने कथा पहनी। लाठी हाथ मे की (=ली)। पादुकाअ म डाली। और आकाश म उड गया कुमार। ठग गये चोर यथास्थान वे (=अपनी-अपनी जगह चले गये)।

(४)

वयरसेन फिर तीनो वस्तुओ के प्रभाव स। नगर म भोग भोगता है। तन ही दिनो म वह कुट्टनी उस वयरसेन को भाग भोगता हुआ देखकर फिर च करके अपन घर ले आयी। कितन ही समय (तक) बिना व्यापार के

फेवी वळी वेश्याइ प्रीति लगी पूछिउ तिस्यइ मुग्ध-स्वभाव लगी कुमारि कहिउ—पाऊया-नइ प्रभावि देशांतर हूंतउ धन आणी विळसउं तेतलइ ते माया रची कहइ—वत्स ! तइ गयइ मइ ताहरइ वियोगि विधुरावटी ना सुख नइ काजि समुद्र माहि यक्ष तेह-नइ यात्रा काई भेटणउ मानउ छइ ते पाउया नइ प्रभावि अनइ ताहरइ प्रसादिइ तु यात्रा करउं कुमारि कहिउ—तिम हुउ

तेतलइ कुमार पादुका नइ बलि वेश्या-सहित समुद्र माहि यक्ष नइ भुवनि आविउ पहिलउं पाउया ऊतारी फेहरा माहि पइठु तेतलइ वेश्या पादुका निवरा पामी पगि घाली आपणइ नगरि आवी कुमार जु पाछउ जोइ तु पादुका सहित वेश्या-नइ न देखइ पछइ भयिइ चकिउ हूंतउ कुमार जिहां जेतइ उभउ रहिउ तेतइ काई अेक विद्याधर तिहां आविउ तिणि कुमार-नइ कहिउ—तइ माहरा परोधि(?) पक्ष अेक यक्ष-नी पूजा करिवी पणि जे पासती वि वृक्ष छइ ते तळहारि तइ न जाइवू अेहवी सीख देई मादकादि सामग्री पनर दिन नी तिहां मूकी विद्याधर आकाशि उडिउ

धन का खर्च करते हुअे कुमार को देखकर फिर वेश्या ने प्रीति से पूछा। तब भोले स्वभाव से कुमार ने कहा। पादुकाओं के प्रभाव से परदेश से धन लाकर भोगता हूं। तब वह कपट रचकर कहती है। हे वत्स। तेरे गये बाद मैंने तेरे वियोग में विधुरावटी=विधुरावस्था (?) के सुख के लिअे समुद्र में यक्ष (रहता है) उसकी यात्रा (करके) कुछ (=कोई वस्तु) भेंट करना मान रखा है (=मानता कर रखी है)। सो पादुका के प्रभाव से और तुम्हारी कृपा से यात्रा करूं। कुमार ने कहा असा (ही) हो।

तब कुमार पादुका के बल से वेश्या सहित समुद्र में (स्थित) यक्ष के मंदिर में आया। पहले पादुका उतारकर मंदिर के भीतर गया। इतने में वेश्या। पादुका को अकेला (=खाली) पाकर। पैरों में डालकर। अपने नगर में आ गया। कुमार जब पीछे देखता है तो। पादुका सहित वेश्या को नहीं देखता। पीछे भय से चकित होता हुआ (=सुध बुध खोया हुआ)। कुमार ज्यों ही खड़ा रहा। त्यों ही कोई अेक विद्याधर वहां आया। उसने कुमार से कहा। तुझे मेरे उपरोध (=आग्रह) से अेक पक्ष तक यक्ष की पूजा स्वीकार करनी चाहिअे (=पूजा का व्रत ग्रहण करना चाहिअे)। परंतु जो पास में दो पेड़ हैं उनके नीचे तुझे नहीं जाना चाहिअे (=तू मत जाना)। असी सीख देकर मादक आदि सामग्री पंद्रह दिनों की वहां रखकर विद्याधर आकाश में उड़ गया।

यदा कुमार कौतुकीयाळ हुतउ वृक्ष तळइ आविउ फूल देखी सूंघियउ कुमार फूल ना प्रभाव-नु गदभ हुउ पछइ पनर दिन नइ प्राति तिहा खेचर त तहअउ स्वरूप कुमार नु दखी वाजा वृक्ष नउ फूल सूघाडिउ कुमार मनुष्य हुउ आश्चय तु कवण कारण खेचर कहइ—खर विद्या मनुष्य विद्या करी अधिष्ठित कारण लगी वृक्ष बिनइ पछइ कुमारि ते वृक्ष ना फूल जूजूआ गाठडीइ बाध्या ततः विद्याधर त्या लगी पाचमइ कुमार काचनपुर नई मूकिउ

—८—

पछइ त कुमार पूर्व रीतिइ कथा नइ प्रभावि सुख भोगवइ वळी तिणि द दीठउ वळी तिणि प्रपच करी घरि आणिउ कुमर पूछइ—तू किम इहा ? यउ वश्या कहइ—तू जतळइ पादुका मूकी देव कुळ माहि पइठ तलळइ सिद्ध-पुरुष पादुका लई नासिवा लागउ हु तेह नइ पगि विलगी तिणि

दूसर दिन (=अक दिन) कुमार कौतुक युक्त होता हुआ (=होकर) वृक्ष न आया। फूल को देखकर गधा। इतन म (=तभी) कुमार फूल के प्रभाव धा हो गया। पीछे पन्द्रह दिन क उपरात विद्याधर वहा आया। उसने र का वह स्वरूप देखकर। दूसर वृक्ष का फूल सुघाया। कुमार फिर व्य हो गया। आश्चय कौन (स० क पुन, अप० कउणु,) कारण। याधर कहता है। खर विद्या और मनुष्य विद्या स अधिष्ठित (होन के) रण स (?)। वृक्ष दोना क। पाछ कुमार न उन दोनो हो वृक्षा के फूल ग अलग (=जुग जुग स० युत युत=अप० जूजुवउ) गठडी म बाध द। तब विद्याधर न दया के कारण पाचवें दिन कुमार को काचनपुर ल ना (=ले जाकर छोड दिया)।

(४)

पीछे वह कुमार पहले की रीति स कथा क प्रभाव से सुख भोगता है। फिर स वेश्या न देखा। फिर वह प्रपच करके घर ले आयी। कुमार पूछता है—तू स यहा आया। यह वेश्या कहती है। तू जब पादुका मानकर देवकुल म =मन्दिर म) प्रविष्ट हो गया। तब अेक सिद्ध पुरुष पादुका लेकर भागन गा (स० नग=भागता)। मैं उसक पर स लिपट गयी। उसन यहा (लाकर) ड दा। पर हे वत्स ! वह तू कस आया। कुमार कहता है। यम की कृपा । मैं यहा आया।

इहा मूकी, पणि वच्छ ! कहि तू आविउ किम ? कुमार कहइ—पभ ना प्रमाद लगी हू इहा आविउ

वेश्या पूछइ—तुभ नइ का. दीधउ ? कुमार कहइ—मुभनइ आनष दाधउ जिणि जरा जाइ यौवन आवइ अइयइ वेश्या लाभ लगी कहिवा लागी—मुभ नइ ते ऊनधी आपि कुमार तत्काळ त पूरा सूघाड्या ततळइ मगधा फीटी रासभी हुइ कुमार लकुट लइ रासभीइ चडिउ पछइ ऊभा चहुटइ लकुटइ कूटइ लोक मिल्या कहइ—अहो कुमार ! मूकि कुमार तउ न मूकइ तेतलइ सब वेश्या पोकार करिवा लागी ततळइ तलार आया पराण करवा लागा तिस्यइ कुमार लकुटइ त तिम हण्या जिम तीजे जइ राजा वीनविउ पछइ राजा सपरिवार कटक लेई जु आविउ ततळइ आळखिउ—भाई राजा पछइ प्रपच जाणी कुट्टिनी मूकावी

बेवे भाइ मिल्या म० प्रमाद ऊपनउ पछइ माता पिता ग्राम हुता अणावी राज करवा लागा

वश्या पूछती है। तुझे कुछ दिया ह ? कुमार कहता है। मुझको औषधि री जिससे बुढापा जाता है और यौवन आता है। तब वश्या लाभ क कारण कहन लगी। मुझको वह औषधि द। कुमार ने तुरन्त व फूल सुघाय। तब (वह) वश्या न रहकर गधी बन गयी। कुमार लकडी लकर गधी पर चढ गया। पाछे खडे बाजार म (=सब के सामन) (चतुहट्ट=बाजार या चौराहा)। लकडी स पीटता है (=पीटन लगा)। लोग इकट्ठे हो गय। कहते है। अर कुमार ! छोड दे। कुमार तो नही छोडता। तब सब वेश्याएँ पुकार करन लगी। तब नगर रक्षक आय। जबदस्ती (प्राण=शक्ति बल) करन लग। तब कुमार न लकडी स उनको अस मारा कि। उनन राजा के पास जाकर राजा स विनती की (स० विज्ञप्ति प्रा० विण्णत्ती)। पीछ राजा परिजन क साथ, सना लेकर ज्यो ही आया। त्यो ही पहचाना। (यह तो) भाई (है)। राजा न पीछ प्रपच की बात जान कर। कुट्टनी को छुडाया।

दोनो भाई मिल। बडा आनद उत्पन्न हुआ। पीछ माता पिता को गाव स बुलवाकर राज्य करन लग।

दळपत-विलास

(सत्रहवी शताब्दी)

[दलपत विलास राजस्थानी गद्य का जीवनी ग्रंथ है जो अपूर्ण है। इसके का नाम अज्ञात है। इस ग्रंथ में बीकानेर के महाराजा रायसिंह के पुत्र महाराजकुमार दलपतसिंह का विवरण है जो आगे चलकर र के राजा हुए। ग्रंथ के आरंभिक दो पृष्ठों में सृष्टि की उत्पत्ति नि राव सीहाजी से लेकर राव जोधाजी तक तथा राव बीकाजी से लेकर सिंह तक की वंशावली का उल्लेख है। दलपतसिंह की किशोरावस्था ह के दीवान कर्मचन्द बच्छावत के साथ रायसिंह के पुत्र भोपत का जाना दलपतसिंह को मारने का षडयन्त्र उनके द्वारा बचपन में प्रदर्शित ी वीरता अकबर के दरबार में की गयी उनकी सेवाएँ आदि इसके हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रंथ बहुत महत्त्वपूर्ण है। सकलित अंश में ह और राव मालदेव के बीच हुए युद्ध के तथा हेमू एवं अकबर के बीच ानीपत के युद्ध के सम्बन्ध में कई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचनाएँ ी हैं। समकालीन रचना होने के कारण इसमें वर्णित घटनाएँ अधिक मनीय हैं।]

–१–

अथ प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमल विक्रमनगरि राज त्र तिण समय दिल्ली पातिसाह श्री सेरसाह राज करै छै तिण रै पुत्र ामाह साहिजादो वडो अमली हुवा

---

(१)

इस समय महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमल बीकानेर में राज्य त हैं। उस समय दिल्ली में बादशाह श्री शेरशाह राज्य करता है। उसका सलेमशाह शाहजादा बड़ा नामी हुआ।

तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करै छै विस्तार आगे लिखीजसी, पिण संक्षेप थोड़ो-सो लिखिये छै इण प्रस्तावि राव मालदे कटक करि बीकानेर आयो राव जैतसिंघ युद्ध करि वैकुंठ सिधायो राव कल्याणमलजी-नूं ठाकुरियासर ग्राम टीका हुवो पछै विखो हुवो

राव कल्याणमल आप दिली पातिसाह श्री सेरसाह कन्है सिधाया पातिसाह नूं मिलिया आप कटक करि गुड़ो साथि ले अर सरस सिधाया गुड़ो सरसै कियो तिण प्रस्तावि पातिसाह कन्है परधान मेल्हिया हुता सू आया तिवारै पातिसाहजी सरसो पाटण वास गांव दिया, बयाणो, हिंसार मेवात रेवाड़ी समेत पड़गना मूकिया बहुत दिलासा मुंकी अेकणि प्रस्तावि पातिसाह श्री सेरसाह सलेमसाह बाप-बेटा दोनूं विखै पड़ियै राव लूणकरण कन्है चाकरी बीकानेर आय रहिया हुता तिण वात रा विस्तार आगे लिखीजसी तिणि उपगार किय राय श्री कल्याणमलजी रो उपगार करिनै श्री सेरसाह राव श्री जैतसिंघजी रै वैर वाळण रै कियै राव मालदे ऊपरि आप पधारि अर राव मालदे रा रजपूत

उस समय जोधपुर में राव मालदे राज्य करता है। विस्तार आगे लिखा जायगा। पर संक्षेप थोड़ा-सा लिखा जाता है। इस समय राव मालदे सेन्य (सेना) कर बीकानेर आया। राव जैतसिंह युद्ध करके बैकुंठ गया (सिधाना—सिद्ध करना से)। राव कल्याणमलजी का ठाकुरियासर गांव में टीका (राजतिलक) हुआ। पर विखा हुआ (विखा=ऐसा विपत्तिकाल जिसमें देश-त्याग करना पड़े)।

राव कल्याणमल स्वयं दिल्ली बादशाह श्री शेरशाह के पास गये। बादशाह को (=बादशाह से) मिले। आप सेना बनाकर परिजनों का साथ लेकर सिरसे गये। डेरा सिरसे में किया।

उस समय बादशाह के पास (जो) प्रधान (=मंत्री) भेजे थे वे आये। उस समय बादशाहजी ने सिरसा पट्टन (=नगर) रहने को गांव दिया। बयाना, हिसार, मेवात, रिवाड़ी सहित परगने छोड़े (=दिये)। बहुत दिलासा (=आश्वासन) दी।

अेक बार बादशाह श्री शेरशाह और सलेमशाह पिता-पुत्र दोनों विपत्ति पड़ने पर राव लूणकर्ण के पास नौकरी के लिये बीकानेर में आकर रहे थे। उस बात का विस्तार आगे लिखा जायगा। उस उपकार के कारण राज श्री कल्याणमलजी का उपकार करके श्री शेरशाह राव श्री जैतसिंह का बैर लेने के लिये राव मालदे के ऊपर स्वयं पधारे (=आये) और राव मालदे के

। पणा मारिया अर राव मान भागो भाज-करि पीपळोद र पाहड
बीकानेर वडे राव कल्याणमल आय राज विराजण लागा
ण समयै पातिसाह सेरसाह वरस आठ दिली राज करि अर कालिंजर
ना तठे नाळि गोळा चलायता अर नाळि फाटि पाछी पडी तिवार
वाह नाळि हूता निसाव हुना तिणि सूं पातिसाह वाळि मारिया

—२—

साहरा दिली टाकै सलेमसाह पातसाह बैठा वरस मात पातिसाही करि
ताचि मूवा तिण र पाट अदल साह बैठा पातिसाह दिली माहे हुवा
अदाई तिण पातिसाह रा मामा ममरेजखान तिणि अदल नूं मारि-अर
लिया दिली रा वरस अर राज किया पातिसाह सता लूण हराम किया
विसासि ममरजखान आप गहिला हुवा ताहरा तिण र उवीनि कालिंजर
रालि-न ममरज नू आप हमू पातिसाह री रालि ना

पुत्र और उमराव (=मन्त्रि और सरदार) युद्ध में मारे। और राव मालदेव
भागकर पीपलोद के पहाड़ों में चला गया (पणा=प्रविष्ट में)। बीकानेर
फिर राव कल्याणमल आकर राज विराजने लगे (=राव कल्याणमल
र बीकानेर आकर गद्दी पर बैठे और फिर राज्य करने लगे)।
इस समय बादशाह शेरशाह आठ वर्ष दिल्ली में राज्य करके कालिंजर
गया था। वहाँ तोप के गोले चलाते समय एक तोप फटकर पीछे गिर पड़ी।
उस समय बादशाह तोप से (=तोप के) नजदीक थे। उस बारूद ने बादशाह
जला मारा (=जलाकर मार डाला)।

(२)

तब दिल्ली में सलेमशाह टाक बैठा (=गद्दी पर बैठा)। सात वर्ष बादशाही
कर मौत से मर गया (मौच < मृत्यु मिच्चु)। उसके सिंहासन पर बैठा अदिल
=आदिलशाह) बैठा। वह दिल्ली में ढाई दिन बादशाह हुआ (अदाई < अर्ध
तीय)। उस बादशाह का मामा ममरेजखां (=मुबारिज खां) (था)। उसने
आदिल को मारकर दिल्ली को ले लिया। और वर्ष राज्य किया। बादशाह
। नमक-हरामी की इस कारण से ममरेजखान भी पागल हो गया (विससि
< विशेष=विशेषता से कारण से आप < अपि=भी गहिला < ग्रहिल्ल)।
तब उसके वजीर हेमू ने ममरेज को कालिंजर में रखकर स्वयं बादशाहत रख
ली (=अपने अधिकार में कर ली)।

इय ममदय हमाऊ पातिसाह कायिल हुता आया आपम म ममरजमाह रा फोज हुता वि हुयो फाज भागी पठाण विचळिया पजाव ला हमाऊ पातिसाह सीहनद आया पातिमाह हमाउ रै माथि अक्बर वरम तरह मास छह रा हुता अक्बर र माथि फाज द अर वलानार नू मतिह अर पातिसाह हमाऊ दिला आया पातिसाही करता थका अक दिन मुणार पातिमाह हमाउ चढिया हुता तिहा थी पडिया अर हक हुया पातिमाह अक्बर क्लानूर माह राज बैठो उठा हुती दिल्ली नू हालिया

ताहरा हमू पूरव कालिजर हुता दिली आया आय-न दिली ली तठ दिली माह पातिमाह अक्बर रा उमराव तुरतीबग हुता सु नासि-अर अक्बर पातिमाह पासि गया ताहरा उमराव भरवबग अन वलीवग या बुलाय तुरतीवग नू कहिया—र तुरतीवग ! था माथ अक्बर पातिमाह मलामत हुता अर तू वाणिय आगै भाजि-अर आया मू क्यू ? इसा जवाब करता ममान तुरतीबग जाणिया जू म्हारी अदब पड इमड कापिया तिम पातिसाह र हुकम करि अरि उमरावै सहथि मारिया अर गाडिया

इस समय हुमायू बादशाह काबुल म आया। परस्पर ममरजगा की सना स लडाइ हुई। सना भागा। पठान विचलित हो गय। (हमायू न) पजाब ल ली। हुमायू बादशाह सिहनद आया। तरह वष और छह महीन का अक्बर (बादशाह हुमायू क साथ) था। अक्बर के साथ सना देकर और उस कलानूर भेजकर बादशाह हुमायू दिल्ली आया। बादशाहत करत हुए बादशाह अक दिन मीनार पर चढ थ। वहा स गिर और हक हो गय (=मर गय) (हक<अरबी हक=सत्य)। बादशाह अक्बर कलानूर म राजगद्दी बैठा। वहा से दिल्ली को चल।

तब हमू पूव (म स्थित) कालिंजर स दिल्ली आया। आकर दिल्ली ली। वहा दिल्ली म बादशाह अक्बर का उमराव तुरतीबेग था। वह भागकर अक्बर बादशाह क पास गया। तब उमराव भरवबग और बलीबग थ। इन्होन तुरतीबग को बुलाकर कहा—अर तुरतीबग! तरे ऊपर बादशाह अक्बर सलामत था और तू बनिय के आग (स) भागकर चला आया! यह क्या? असा जवाब करत ही तुरतीबग न समझा कि मेरी अदब नष्ट होता है यह समझ कर कापन लगा (?)। इतन म बादशाह के हुक्म स करके (=हुक्म स) उमरावो न(उस) अपन हाथो स मार डाला और गाड दिया (सहथ= स्वय के हाथो स)।

ो आप रा वेगा-नू ले रिणथभोर गयी रतनसी री छाती माहे रिणथभोर नही पूरबिया पूरणमल नू रिणथभोर मेलिया कह्यो—थ विक्रमादित थ-नू तेड लाव तर ओ रिणथभार गया तर हाडी करमेती कह्यो—अै तो ा नान्हा छ इणा रा जवाव सूरजमलजी करसी तर आ बूदी सूरजमन न गयो जाय नै कह्यो—राण रतनसी विक्रमादित उदसिंघ नू तेडाया वै कहै छ माहरो जवाब सूरजमलजी करसी तरै सूरजमल कह्यो— आसा छा तर दीवाण सू हकीकत मानम करस्या

तर पूरणमल चीताड आयो राण हकीकत पूछी तर इण कह्यो—व तो नै आवै पिण सूरजमल आवण द नही तर रतनसी र डील आग लागी पिण टीका रो सूरजमन हाथी अेक घाडो अेक न आयो थो सू रतनसी या नही कह्या—राण सांग ता-नू लाल लसकर घाडा मेघनाद हाथी दिया सू मा नू द इण कह्या—हू कयू जाट-पटल थो नही सू चारण दिया सू हूम पाछा मागिया दू ? वात कराडा वार हुयी राणा रतनसी मल नू मारण रा दाव घाव कर छ

ा (=स्वगवास किया)। रतनसी राजा हुआ। हाडी करमैती अपने बेटो लेकर रणथभोर गया। रतनसी की छाती म रणथभौर अच्छा नही लगना खटकता है)। पूरबिय (=चौहान) पूरणमल को रणथभौर भजा। कहा। विक्रमादित्य और उदयसिंह को बुला ला। तब यह रणथभौर गया। तब ो करमती न कहा। ये तो छोटे बच्चे हैं इनका (=इनकी ओर से) ाब सूरजमलजी करेंगे। तब यह बूदी सूरजमलजी के पास गया। जाकर कहा। णा रतनसी न विक्रमादित्य और उदयसिंह को बुलाया है आप वे कहते है हमारी ओर स जवाब सूरजमलजी करेंगे। तब सूरजमल न कहा—हम भी ते हैं तब दीवान से हकीकत मालूम करायेंगे (=निवेदन करेंगे)।

तब पूरणमल चित्तौड आया। राणा ने हकीकत पूछी। तब इसने कहा— तो बहुत आते हैं पर सूरजमल आने नही देता। तब रतनसी के शरीर म ाग लग गयी। पहले भी सूरजमल राजतिलक का (=राजतिलक के समय भेट लिये) अेक हाथी और अेक घोडा ले आया था। व रतनसी न रख नहीं। हा—राणा सांगा ने तुझे लाल-लश्कर घोडा और मेघनाद हाथी तिलक के ये थ वे मुझे दे। इसन कहा—मैं कोई जाट-पटेल तो था नही कि (राणा) चराने को दिय थे और अब मागने पर लौटा दू। बात सीमा के बाहर हो यी। (अब) राणा रतनसी सूरजमल को मारने के दाव घात कर रहा है।

-३-

तिण मम चारण भाणो मीमण जात रा, गोडा रो बारहठ, चीताड र गाव गढ-कोदमियँ रहे छै सू नावजादी चारण छै वडो आखरा रा करणहार छै

सू भाणा रा जजमान गोड छै बूदी रा चाकर छ तिणा कनै जाय छ माम अेक दुय माम उठ रहै तर भाणो हाडा सूरजमल र पिण उठ जाव नर मुजरो कर गुणे गीता गावै सद सूरजमल घणो मया कर छै

अेक दिन सूरजमलजी कह्या—भाणाजी ! हालो, सूरा री सिकार जावा ! भाणा नै सूरजमल सिकार सूरा रा गया बाजा माय हाक मेलियो भाणा न सूरजमल दोय जणा हीज हुता सूर तो हाथ नाया न दोय रीछ आजाजीत आग पीछ आया इमडा कदे आखिया ही दीठा नही जिणा दाठा मरीजै स सूरजमल उण सू बाथा हुवो अेक कटारी सू मार पाडियो तितर दूजो आयो उण-नू ही उण-हीज भाति मारियो भाण-नू वडा इचरज आया सू भाण कह्या—थे कासू किया ? तरै कह्यो—कासू करा ? माडा गळ पडिया पछ पाछा

---

(३)

उस समय गौड राजपूतो का बारहठ (<द्वारभट्ट) मीसण शाखा का चारण भाणा चित्तौड के गाव गढ कोदमिय म रहता है। वह नामवर (=ख्याति प्राप्त) चारण है। बडा अक्षरो का रचने वाला (=कविता करने वाला) है।

सो भाणा के यजमान गौड राजपूत है जो बूदी के सवक हैं। भाणा उनके पास जाया करता है। अेक महीने या दो महीने वहा रहता है। उस समय भाणा हाडा सूरजमल के यहा भी जाता है। तब मुजरा (=अभिवादन) करता है गुणो (=गुण वणन की कविता) और गीतो से यश गाता है। तब (=इससे) सूरजमल (उसपर) बहुत ममता करता है (स्नेह रखता है)।

अेक दिन सूरजमलजी ने कहा। भाणाजी ! चलो सुअरो की शिकार को चलें। (तब) भाणा और सूरजमल सुअरो की शिकार का गये। दूसरे साथ (के लोगो) को हल्ले म (=हल्ला करने के लिये) भेज दिया। भाणा और सूरजमल दो व्यक्ति ही थे। सुअर तो हाथ नही आये। पर दो रीछ अजेय (?) अचानक (?) आगे-पीछे (=अेक पहले अेक पीछे) आये (मिले)। असे कभी आखो में भी नही देखे थे (दीठा<दृष्ट)। (अस कि) जिनके देखते ही (आदमी) मरे (=प्राण छोड दे)। सो सूरजमल उनसे भुजाओ से भिड गया। अेक को कटारी से मार गिराया। इतने म दूसरा आया। उसको भी उसी तरह मार लिया। भाणा को बडा आश्चय आया (=हुआ)। सो भाणा ने

नाण गीत गुणे सूरजमल नू रीझावियो तरै सूरजमल जाणियो—लाल घोडा न मेघनाद हाथी लार राणो पडिया छ सु माहरा परधान रजपूत बाम न राणा-नू ग्रिावसी, ता ▯ भाणा मरीखा पात्र-न दे-न अमर गोडा हाथी ग्नू भाणा-नू दिया भाण्य नू वडी मौज दे लाख ने विदा

राणा रो डेरा चीतोड थी काम ग्स सिकार रमण र मिस किया छ यह सूरजम न मारण रो मतो छ राणी पवार रावत करमचद री बनी है सू भाणा उग आयो दीवाण रै मुजर तर दीवाण पूछी—कठ हुना ? अरज कीवा—बूदी हुना तर रतनसी कहा—सूरजमन री बात कहो गणा सूरजमल रा वखाण किया तर राणा नू सुहाणो नही भाणो घो नही जू राणा इण-मू इतरी कु मया कर छ तर राण पूछियो—इतरा मन रा वखाण करो छो मू इतरा सूरजमल म कामू दीठा ? तर भाण

। आपने यह क्या किया (आ ग्नसे भिड गये) । तब सूरजमल ने कहा—करें (कासू <कीदृग्म) । जबदस्ता गल आ पडे (माडा <अप० मडड-) । । वापिस आय। भाणा न गीता और गुणा (=गुण-वणन की कविताओ) सूरजमल का रिझाया (=प्रसन्न किया)। तब सूरजमल न जाना =विचार किया)—राणा लाल-लश्कर घाडे और मेघनाद हाथी के पीछे पडा मा मर मत्री और सरग्दार मुझे दवाकर राणा को दिखा देंग ता फिर मैं णा सरीखे पात्र (दान के योग्य ग्यत्ति कवि) को देकर (अपना नाम) र कर । (फिर) घोडा और हाथी दाना भाणा का दे दिय। भाणा को बडी क देकर लाख-पसाव नामक दान दकर विदा किया।

सा राणा का डेरा चित्तौड म इम बात पर शिकार खेलन के बहान ग्या हुआ है। मन म सूरजमल को मारन का विचार है। पवार (=वशाय) नी रावत कमचद को वेगा साथ है। सो भाणा दीवान क मुजर पर =अभिवादन के लिये) वहा आया। तब दीवान ने (बात) पूछी—हा थ ? भाणा न निवदन किया—बूदी था। तब रतनसी न कहा—सूरजमन की बात कहो। तब (उसन) सूरजमल के बहुत बखान किय (स० याख्यान प्रा० वक्खाण)। तब राणा को अच्छा नहीं लगा। (उधर) भाणा समझा नही कि राणा इसम (=सूरजमन म) इतनी अकृपा (=द्वेष बुद्धि) रखता है। तब राणा ने पूछा—सूरजमन के इतन बखान करते हो मो इतना सूरजमन म क्या देखा। तब भाणा न रीढा की बात विस्तार स कही। और

रीछा री वात माड कही न कह्यो—दीवाण ! सूरजमल इसडो रजपूत छ, जिको उण-नू मार सू कुसळे न जाय तरै राणै इण वात ऊपर बोहत भाणा-सू बुरो मानियो

तितर किणी-अेक भाणा-नू पूछियो—थे इतरो सूरजमल रो जस करो सू हमार था-नू कासू दियो ? तर कह्यो—मा नू लाल-लसकर घोडो मघनाद हाथी न लाख पसाव दिया तर राणा र वळै जोर आग लागी भाणा नू कह्यो —थ माहरी हद म मत रहो थ बूदी जावो

तरै भाणो पूछ भाटक उठियो पाछो बूदी-न हालियो तठा पहली आ खबर सूरजमल-नू पाहती सूरजमल सामा आदमी भाणा र मेलिया घणो आदर कर तेड हिरणामा गाव सासण कियो, घाडा हाथी लाख-पसाव घणोई द्रव्य दियो कह्यो—म्हारो भाग ! दीवाण मो-स्यो वडी मया करी, भाण सरीखो पात दियो

—४—

सू राणो सिकार खेलतो-खेलतो बूदी दिसा आव छै सूरजमल कन आदमिया

कहा—हे दीवाण ! सूरजमल असा राजपूत है कि जो उसको मारे (=मारने का प्रयत्न करे) वह कुशल से न लौटे । तब राणा ने इस बात पर भाणा से बहुत बुरा माना ।

इतने मे किसी ने भाणा को पूछा । आप सूरजमल का इतना यश (प्रशसा) करते हैं सो अभी आप को क्या दिया ? तब भाणा ने कहा—मुझे लाल-लश्कर घोडा और मेघनाद हाथी और लाख-पसाव (अर्थात लाख रुपया का प्रसाद= पुरस्कार) दिया । तब(=यह सुनकर)राणा के फिर बहुत जोर से आग लगी । (उसने) भाणा से कहा । तुम मेरी सीमा म मत रहो, तुम बूदी चले जाओ ।

तब भाणा पूछ फटकारकर उठा (और) वापिस बूदी को चला । उसके पहले ही यह खबर सूरजमल को पहुची । सूरजमल ने भाणा के सामने आदमी भेजे । बहुत आदर करके बुलाकर हिरणामा गाव (शासनपत्र देकर) दान म दिया । (सासण—स० शासन ब्राह्मणो चारणो आदि को दिया जाने वाला भूमि या गाव का दान जिस पर कर नही लिया जाता था) । घोडे हाथी लाख पसाव आदि के रूप म बहुत द्रव्य दिया । (और) कहा—मेरा(बडा) भाग्य ! दीवान ने मेरे साथ (=पर) बडा दया की (जो) भाण जसा पात्र (=कवीजन कवि) दिया ।

(४)

सो राणा शिकार खेलता-खेलता बूदी की दिशा म आ रहा है । सूरजमल

ग्मी आय छ—सताव आवो सूरजमल जाण छै—जाऊ क न जाऊ ?
अेक दिन माजी सतू राटोड़नै पूछियो—मो नू राणा रा आदमियां
दमी तेडा आय छ मो-सूं राणा बुरो मो-नू मारसी कहा ता
र राणा-नू हाथ दिखाऊ ? तर मा कहा—इसड़ी वात क्यू कीज ?
गा रा सदा चाकर छा इसड़ी ता आज पहली आपा-सू बुरी कोई हुई
ो राणा तो-नू मारसी तो-ही सताव राणा कन जाओ धणी चाकरी
र सूरजमल राणा कन गया
ांव रै तीरथआळो वाजणा गाव बूदी चीतोड री गडासध छ तठ आय
ा राणो मन म घणो खाट राख छ न सूरजमल रा आदर घणा किया
मल भाई कह बतळाया
छ अेकण दिन कह्या—म्हे अेक हाथी लिया छ तिण म्हे भेळी असवारी
पछ उण हाथी राणा चढ़िया सूरजमल-ही घोड़ चढ़ आयो अेकण ठौड
ो रिसी सूरजमल उपर हाथी बहतो थो रतनसी आप चढ़िया था

ास आदमी-पर-आदमी आ रहे हैं कि जल्दी आओ। सूरजमल विचारता
जाऊ कि न जाऊ।
तब अेक दिन माजी (=राजमाता) सेतू राठोड को पूछा—मुझे राणा
ादमी-पर-आदमी बुलावे (बुलाने के लिअ) आ रहे है। मेरे प्रति राणा
है (द्वेषभाव रखता है)। मुझे मारेगा। (आप) कहे तो जिसा करवे
विद्रोही बनकर और राज्य त्याग करके) राणा को हाथ दिखाऊ। तब
ने कहा। असी बात क्या कीजिये। हम इनके सदा से सेवक हैं। असी तो
बुराई हममे आज के पूर्व हुई नहीं। जो राणा तुम्हे मारेगा तो भी
र राणा के पास जाओ। खूब सेवा करो। तब सूरजमल राणा के पास गया।
गोकण के तीर्थ वाला वाजणा गाव बूदी और चित्तोड की ठीक साम
है। वहां आकर मिला। राणा मन में बहुत द्वेष रखता है (खोट=
पन दुष्टता, द्वेष कपट)। और सूरजमल का आदर बहुत किया। भाई
जमल कहकर बुलाया।
पीछे अेक दिन कहा। हमने अेक हाथी लिया है। अत हम साथ-साथ
ारी करें। पीछे उस हाथी पर राणा चढ़ा। सूरजमल भी घोडे पर चढ़कर
या। अेक सकडी (तंग) जगह की ओर (?) सूरजमल की ओर हाथी चल
ा था। रतनसी स्वय उस पर चढ़ा हुआ था। सो सूरजमल के ऊपर
थी भोक दिया (=ठेल दिया)। सूरजमल ने घोडा लात मारकर, निकाल

सूरजमल ऊपर हाथी झोकियो सू सूरजमल घाडो लात मार काढ दियो दाव टाळियो सूरजमल रीस करी राणै कह्यो—हाथी माडा आयो घणी हळमळ की

दिन अेक आडो घात-न कह्यो—आपै सिकार सूअरा री मूळा री खेलस्या तर सूरजमल कहचो—भली वात

—५—

अेक दिन री वात छै राणो पवार राणी आग कहै छ—अब म्हे सासतो सूअर जेकल मारस्या था-नू तमासो दिखावस्या

तीरथ गोकळ्ह र पवार राणी सिनान करण गयी थी तथा पहली सूरजमल सिनान करण गया था सू पवार आयी तर धानिया हीज पहर कन हुय नीसरियो तर पवार सूरजमल-नू दीठा किण ही नू पूछियो—ओ कुण ? तर कह्यो—आ सूरजमल हाडो बूदी रो धणी जिण सू दीवाण कु मया कर छ तर पवार समधा—राणो सूअर-सूअर कर छ सू इण नू मारण मत छै रात पवार गयी तर राणै वळ वात सूअर री चलायी तर पवार कह्यो—आ सूअर म्हे दीठा उण रो नाव थ मत ल्या तर राणै कह्यो—तू कासू जाणै ? तर

लिया। दाव टाल दिया। सूरजमल ने रोष किया। राणा ने कहा—हाथी जबरदस्ती आ गया। बहुत हलभल (=मीठी बातें खुशामद) की।

अेक दिन बीच में देकर कहा—हम लोग सिकार सुअरा की पेडा का खोह में छिपकर (?) खेलेंगे। तब सूरजमल ने कहा—अच्छी बात (है)।

(५)

अेक दिन की बात है। राणा पवार रानी के आगे कहता है—हम अेक प्रचंड सुअर अेक दात वाला मारेंगे। आपको तमाशा दिखायेंगे।

पवार रानी गोकण के तीर्थ में स्नान करने गयी थी। और सूरजमल पहले स्नान करने गया था। सो पवार रानी आयी तब केवल धोती ही पहन कर (=पहन हुए) पास होकर निकला। तब पवार ने सूरजमल को देखा। किसी को पूछा—यह कौन है। तब कहा—यह सूरजमल हाडा बूंदी का मालिक है जिससे दीवान द्वेष रखते है। तब पवार रानी समझी (कि) राणा सुअर-सुअर करता है सो इसी को मारने का विचार करता है। रात को पवार रानी राणा के पास गयी तब राणा ने फिर सुअर की बात चलायी (=शुरू की)। तब पवार रानी ने कहा। यह सुअर हमने देखा है उसका नाम आप मत लें (=उसे न छेड़ें)। तब राणा ने कहा। तू क्या जानती है। तब पवार रानी ने कहा।

ड़ियो—उण-नू देहरी सू कुमळे न आय तद राणे बुरो मानियो
ड सवार राणो सूरजमल-न ले मिवार गया मूळे बैठा दूजो साथ
पारको दूरो किया राणो ने पूरणमल पूरबियो छ सूरजमल नै
न री अेक रावत छ तिण समै राणे पूरणमल-नू कह्यो—तू सूरजमल-न
र सू इण-नू नोह किया न गया तद राणे घोडे चढ सूरजमल-नू
बाथा सू माथा री आपरी न गया सूरजमल ऊभा छ तितरै
न सेल री वाहयो सू सूरजमल री साथळ लागो सूरजमल दाढ-न
न-नू पाडियो उण कूकवा किया तद राणो उण रा ऊपर-नू वळ आयो
न-नू लाह वाह्यो सूरजमल वाग री जड भाल-न कटारी गळा नीचा-सू
सू राणा रा सूटा आवता रही राणो घोडा-सू हूटो पडियो पडत-हीज
मागियो तद सूरजमल कह्यो—वाळ रा-न्हाखा हम पाणी पी सक नही
छ सूरजमल राणो बेहू मुवा पवार सती हुई राणा रा दाग पाटण हुवा
ती र वेन्ो कोई न हुतो तद रजपूत सारे मिळ-न करमेती हाडी न

। दरगा तक सही सलामत लौटकर नहीं आवेगा। तब राणा ने बुरा माना।
पीछे सवेरे राणा सूरजमल को लेकर मिवार को गया। लूणो में छिप
?) बैठ। दूसरा सारा साथ अपना और पराया दूर कर दिया। (एक ओर)
और पूरणमल चौहान हैं। (दूसरी ओर) सूरजमल और सूरजमल का एक
है। उस समय राणा ने पूरणमल को कहा। तू सूरजमल पर शस्त्र से प्रहार
मा न्सिम (=पूरणमल से) प्रहार किया नहीं गया। (=उसकी हिम्मत नहीं
। तब राणा ने घोडे पर चढकर सूरजमल को भटका चलाया (=आघात
)। वह माथ की आपरी न गया। सूरजमल खड़ा है। इतने में पूरणमल
छेर (=बरछा) चलाया। सो सूरजमल की जाघ में लगा। सूरजमल ने
कर पूरणमल को गिरा लिया। उसने पुकारें कीं।
तब राणा उसकी सहायता को फिर (वहां) आया। सूरजमल का (=पर)
चलाया। सूरजमल ने लगाम का सिरा पकड़कर कटारी (पकड़कर
। क) गले के नीचे से चलाया। सो राणा की नाभि पर आता रहा
नाभि पर आकर रुकी)। राणा घोडे से नीचे गिर पड़ा। गिरते ही पानी
गा। तब सूरजमल ने कहा। बात के साथ हुए। अब पानी नहीं पी सकते।
पीछे सूरजमल और राणा दोनों मर गये। पवार (रानी) सती हुई।
ा का दाह-कर्म पाटण में हुआ। रतनसी के कोई नहीं था। तब सारे
पूतों ने मिलकर हाडी करमती और विक्रमादित्य और उदयसिंह को

विक्रमादित-उदैसिंघ-नू रिणथंभोर-सू तेड लिया अै आया विक्रमादित-नू टीको हुवो विक्रमादित-उदैसिंघ सूरजमल रा वेटा सुरताण-नू बूंदी रो टीको दियो

रणथंभोर से बुला लिये। ये आये। विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ। विक्रमादित्य और उदयसिंह ने सूरजमल के बेटे सुरताण को बूंदी का राजतिलक दिया।

वचनिका राठोड रतन-री

(अठारहवा शताब्दी—पूर्वार्ध)

[खिडियो जग्गो]

[जग्गाजी खिडिया शाखा के चारण थे । इनके पिता रतलाम-नरेश सिंह के राजकवि थे । कहा जाता है कि उज्जैन की लडाई से पूर्व जग्गा र-नरेश जसवंतसिंह के दरबार में थे । वहीं इनके पूर्वजों की आकडा (ग्राम) जागीर थी । पर जग्गा का जसवंतसिंह के दरबार में रहना संदिग्ध है ।

वचनिका राठोड रतनसिंघजी री महेसदासोत री जग्गा की महत्त्वपूर्ण सात्मक ऐतिहासिक कृति है । इसमें जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह मुगल-सम्राट शाहजहाँ के दो विद्रोही राजकुमारों—औरंगजेब और मुराद—थ लडे गये धरमत (उज्जैन) के युद्ध का वर्णन है । यह युद्ध सं १७१५ आ था जिसमें जसवंतसिंह की ओर से लडते हुए रतलाम-नरेश रतनसिंह गति को प्राप्त हुए । ये ही रतनसिंह इस वचनिका के नायक हैं ।

अचळदास खीची री वचनिका की भाँति यद्यपि इसमें भी पद्य की तुलना द्य बहुत कम प्रयुक्त हुआ है तथापि वह अधिक प्रौढ और विकासोन्मुख है । संकलित अंश में रतलाम-नरेश रतनसिंह और उनके सहयोगी सैनिकों—हठ जसराज रतन भगवान अमर गिरधर साहिब रायसिंह आदि—उत्साहवर्धिनी वीरदर्पपूर्ण उक्तियों का चित्रण है ।]

–१–

तिण वेळा दातार झूभार राजा रतन मूछां कर घाति बोले तरवार ।—आग लंका कुरखेत महाभारथ हुवा देव-दाणव लडि मुवा च्यारि जुग रही वेदव्यास वालमीक कहा जो तीसरो महाभारथ आगम कहता

---

(१)

उस समय । दाता दानशील । झूझने वाला वीर योद्धा (युद्धकार) । रतनसिंह । मोछों में हाथ डालकर बोलता है । तलवार को । तोलता है ता है । पहले पूर्वकाल में । लंका और कुरुक्षेत्र में महाभारत (महायुद्ध) । देवता और दानव लडकर मरे । चारों युगों में उनकी कहानी रही । व्यास और वाल्मीकि ने कहा । यह तीसरा महाभारत । शास्त्रों के

उजणि खेत अगनि-मोर गाजमी, पवन वाजमी गजबध छत्रबध गजराज गुडसी, हिंद्-असुरायण लडसी तिका तो वात आय साकाबध मिर चढी

दुइ राह पातिसाहा री फौजा अडी दिली रा भर भारथ भुज दिया कमधज मुन किया, वेद-सासत्र वताया, सू अवसाण आया उजेणि खेत, धारा तीरथ, धणी रो काम खित्री रो धरम साचवीज लाहा रा वाह सेला रा धमका लीजै न दीजै खाडा री खटाखडि भटाभडि डडाहडि खेलीज पातिसाहा री गज घटा पन्नीजै औभण मारि ठेलीजै पातिसाहा-र छत्र घाव वीज पुरजा-पुरजा हुइ भडा तो वैकुठ चढीज क्यू बारहठ जसराज !

हा महाराज ! महाराज रा मनोरथ श्रीमहाराज पूरैं अखियात ऊवर, महाराज रा मुहडा आगै लडा, टूक टूक होय पडा

—२—

जतरा माह साचोरा मछरीक माहिम रा गाडा फौजा रा लाडा काल्ही-रा कळस मती रा नाळेर सादूळ रा सादूळ भगवान अमर बोलिया बहादर

आगम-कथन (भविष्यवाणी) के अनुसार। उज्जन के क्षेत्र म। (होगा)। (तोपो म) अग्नि और बारूद गरजेंग। पवन (वग स) बहेगा। गजपति (=राजा), छत्रधारी (=राजा), (और) गजराज गिरेंग। हिन्दू और असुरा के समूह लडेंगे। वह बात तो आकर। । सिरे चढी (=पूरी हुई, घटित हुइ)।

दोनो धर्मों के बादशाहो (अधिपतियो) की सेनाए आमने-सामने खडी हुइ। दिल्ली के वीरो ने (भर <भट) युद्ध का भुजाओ का सहारा दिया। कबधजा (राठोडो) ने प्रमाण किया। वेद शास्त्रो ने बताये सो अवसर आये। उज्जयिनी क्षेत्र खडग धारा का तीर्थ, (फिर) स्वामी का काम। अत क्षत्रिय का धर्म सभाला जाय। शस्त्रो के प्रहार भालो के आघात। लिये जाय और दिये जाय। तलवारों की खडाखड झडाझड से डडो का (डाडियो का) खेल खेला जाय। बादशाह की हाथियो की घटा (घटा जसी सेना) मारकर हटा दी जाय। बादशाहा के राजछत्रो पर आघात किये जाय। पुर्जे पुर्जे होकर गिरा जाय। तो वकुठ को चढा जाय (पहुचा जाय)। क्यो बारहठ जसराज !

हा महाराज ! महाराज के मनोरथो को श्री महाराज (=भगवान) पूरा करें। पीछे अमर ख्याति रहे। (हम) महाराज के मुह के सामने लडें और टुकड-टुकडे होकर गिरें।

(२)

इतने म साचोर वाल अभिमान (?) के गाडे (=अत्यन्त अभिमानी)

नो कहै—) गोळा सर बाणा री मारि लापि हाथिया रा कुभायळा खग वजाडा, गज-ढाल पाडा पातिसाहा रा खासा झडा जाडा थडा आडा । जायस्या रूक पियाला पीयस्या-पायस्या चाचरि विहडस्या-विहडाय रिणमेत र विखे रगियै बाणासि मतवाळा ज्यू घूमता थका हाथिया-मू ।। घायस्या महारुद्र-न सिर पेस करा अपछरा वरा देवता स्याबास ऱ्सी च्यार जुग बात रहिसा

इतरा माहे बोलियो गिरधर गागावत राजना पति राजन—पातिसाहा री हैंवर वूजर थडा पछाडा चद जसनामो चाडा

इतरा माहे बोलियो साहिबो कूभाणा मुरधरा रो अणी-पाणी (औ तो —) माहरै ता भगवानदास बाघोत कहता—

अप्रमाण मरण खग धारा सामि-कामि भजिय दहा ।
सौचित चित नित नित्त पाइज्ज पुन रेहा ।।

गाओं के प्यारे बावली क कलश, सती के नारियल [1] सिहो क सिंह । बहादुर रन भगवान और अमर । बोले । व तो कहत हैं । भाला की, सरो की(?)और णो की मार को लापकर हाथिया के कुम्भस्थलो पर खडग बजावेंगे । हाथिया की लें गिरा देंगे । बादशाहो क खास झडा वाल सघन समूहो के खडगो के सामने(?) वेंगे । तलवारो के प्याले पियेंगे और पिलायेंगे । मस्तक खडित करेंगे और खडित रवावेंगे । रणक्षेत्र म रगे हुअे खडग के साथ मतवाला की भाति घूमते हुअ (नगे । विभान हुअे) हाथिया मे टक्करें खावेंगे । महारुद्र को सिर भेंट करेंगे । प्सरा वरण करेंगे । देवता शाबाश कहेंग । चारो युगा मे कथा रहगी ।

इतने म बोला । गागा का बटा गिरधर । राजाओ का पति राजा । बादशाहो के । आदमियो और घोडा तथा हाथिया की घटा को। पछाडेंगे । चद्रमा तक यशनामा (कीर्ति) चढावेंगे ।

इतन म बोला कूभा का बटा साहिब जो मरुभूमि का पराक्रम (?) था । यह ना कहना है । मेरे तो बाघ के बटे भगवानदास कहते थ—मरण के अवसर पर खडग की धारा म स्वामी के काम म शरीर का भग कर दीजिय । सुचित (स्वस्थ) चित्त से सदा सत्य पुण्य की रेखा को प्राप्त कीजिय ।

अभी यह तो बडा अवसर आया है । गहर मरातब म किलकिला की

[1] पगला सिर पर घडा लेकर चले तो वह अवश्य ही फूट जाता है । इसी प्रकार सती का नारियल भी निश्चित रूप से फूटता है । अत इन मुहावरो का अर्थ है अवश्य मरने वाले ।

जस ओ तो वडो अवसाण आयो ऊडै ब्रहि किलकिला ज्यू फूलधारा विच उडि पडा पातिसाहा री फौजा सू लडा, महाभारथ करि मरा, बगडी जोधाण ऊजळा करा

इतरा माहे बोलिया रासो कुवर दूसरा मधुकर (ओ तो कहै—) जळाबोळ रिण समद माहे अमि जिहाज धरा किलवा घडा मारि पारि करा मरा तो अपछरा वरा नही ता जीवित सिभ हुइ ऊबरा

—३—

बारहठ कहै—बाप हो बाप! बाप र जोड अतुळीवळ भला नाडियो बाळ धमळ महाराज विमाह र आगम मगळ धवळ खभाइची कीजै पिण ओ महाभारथ रो आगम अेक वार सूरा पूरा रा अवसाण सिद्ध खत्रिया रा वडा राग माहे वडा दूहा गवाडो ज्यू सूरा पूरा रा चाचरा रा वस चणणाह न ऊभा हुवै, पोरिस चड सीग ब्रह्मड अड, कायरा रा धडा पड विहाण

भाति फूलो की धारा क बीच म उडकर पडेंगे। बादशाहो की फौजा से लडेंगे। महाभारत करके मरेंगे। बगडी और जोधपुर को उज्ज्वल करेंगे।[1]

इतने म बोला रायसिंह कुमार (जो) दूसरा मधुकर (=महेशदास)[2] था। यह तो कहता है। गहरे जल से भरे युद्ध रूपी समुद्र मे तलवार रूपी जहाज रखेंगे। यवनो की सेना को मारकर उस समुद्र को पार करेंगे। मरेंगे तो अप्सराओ को वरेंगे। नही तो जीते जी शभु बनकर उबरेंगे (=अमर होंगे)।

(३)

(तब) बारहठ (द्वारभट्ट) कहता है। बाप रे बाप (प्रशसात्मक उद्गारक)। पिता के पास म। अतुल बल वाला यह बालक धवल (श्वेतवृषभ) खूब दहाडा। हे महाराज! युद्ध रूप विवाह के पूर्व मगल-गीत खभायची (खम्माच) राग मे कीजिये (गवाइये)। परन्तु यह महाभारत का आरभ है। अेक बार पूरे और शूर अवसान सिद्ध (अवसर पर पूरे उतरने वाले) क्षत्रियो के बडे दोहे बडे राग मे गवाओ। जिससे (=ताकि) पूरे और शूर क्षत्रियो के माथे (=सिर) के केश चनाटे के साथ खडे हो जाय। पौरुष चढे। सीग (अर्थात सिर) ब्रह्माड (=आकाश) से जा अडे। कायरो के समूह नीचे पडें।

[1] बगडी जोधपुर राज्य का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था। जोधपुर राठोडो का प्रमुख स्थान था।

[2] मधुकर या महेशदास रायसिंह का दादा था। रायसिंह रतनसिंह का दूसरा पुत्र था और महेशदास रतनसिंह का पिता था।

त-लोक-तैं सग-लोक जायस्या, मूरा-पूरा खित्रियां री वात सुणो आपणा वेई-अेक सुणसी

वाह-वाह बारहठजी ! भली कही मन री नही हुकम किया जागडियै ग राग माह दूहा न्यिा

परिजाऊ दूहा वगड माड धवळ रा दूना अेकन गिड वाराह रा दूहा ज मारवणी रा दूहा राव रिणमल रा दूहा राव अमर रा दूहा कल्याणमल यमलोत रा दूहा करण रामात रा दूहा तजमा डूगरसायात रा दूहा जमन ता रा दूहा जना-कूपा रा दूहा प्रियीराज जतावत रा दूहा, गागा डूगरात ा दूहा अखैराज सानिगरा रा दूहा नग भारमलात रा दूहा अमर धरमावत ा दूहा ईसर जीवावत रा दूहा सोभा साचारा वीकमसी रा दूहा अवर ही तीस वस अवमाण सिद्ध खित्रिया रा दूहा गाया अर सुणाया

प्रात काल (विमान स) मृत्युलोक स स्वगलाक जावेंगे । शूरवीर पूर =सच्चे) क्षत्रियो की कथा सुनो । अपनी भी कई-अक (बहुत-से) सुनेंग ।
वाह वाह बारहट जी ! खूब कही। मन की (इच्छा) प्राप्त की (=पूरी इ सहम लभ्) । तव हुक्म दिया । ढाली न बडे राग म दोह दिय (=कह) । आग दोहा क नाम गिनाय गय हैं)—परिजाऊ दोह दा मीणा वान धवल सा नाह (वृषभ वीर का प्रतीक माना गया है) अकनगिड नामक वराह क ाहे (वराह भी वीर का प्रतीक कहा गया है) मुज और मारवणी के दा ाव रणमल क दाह, राव अमरसिह राठाड के दाह रायमल क पुत्र कल्याणमल दाहे राम क बटे करन के दा डूगरसी क पुत्र तजसी क दोहे जयमल गौर पत्ता क दाह जता और कूपा क दाह पृथ्वीराज जतावत के दाह डूगर बट गागा के दोह अखराज सानगरा क दाहे भारमल क बटे नगा के दा रमा के बटे अमरा क दा जीवा के बटे इसर क दाहे सोभा क वशज (?) ाचार क वीकमसी के दाह । और भी राजपूतो क छत्तीस वशो क अवमान सद्ध क्षत्रियो (वीरो) क दोहे गाये और सुनाये।

राठोड दुरादवास-रो कागद

(अठारहवीं शताब्दी—मध्य भाग)

[सकलित अश राजस्थानी के पत्र साहित्य का उदाहरण उपस्थित करता है। इसका समय अठारहवीं शताब्दी का मध्य भाग है। पत्र सुप्रसिद्ध राठोड वीर दुर्गादास की ओर से डायलाणा के चौधरी राजसिंह को लिखा गया है। इसमे औरगजेब द्वारा अपने विद्रोही पुत्र अकबर तथा शिवाजी के पुत्र राजाराम के विरुद्ध भेजे गये सम्पदल सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण अतिहासिक तथ्यों का उल्लेख किया गया है।]

श्री श्री परमम्वर जी सत्य छै

स्वस्ति श्री गाम डायलाणा सुथाने चौधरीजी श्री राजसिंघजी ज्योग लस्कर था राज श्री दुरगादासजी लिखावत जुहार अवधारजो जी अठा रा समाचार श्री महाराजाजी रा तज प्रताप कर भला है राज रा कागळ समाचार सदा भला चाहाज राज उपरात म्हार काई वात न छ अठा लारू काम काज हुव सू लिखिया करजो, किणी वात री जुदायगी मत जाणजो अठा उठा रा अेक वात कर जाणजो जी

अप्रच राज रा कागळ आया समाचार पाछिया आव[?] गे लापसी मल्ही था सू पाहती छ

श्री परमस्वर जी सत्य हैं।

स्वस्ति श्री गाव डायलाणा शुभ स्थान मे। चौधरीजी श्री राजसिंहजी योग्य। लश्कर से, छावनी से। राज श्री दुर्गादासजी ने लिखाया। जुहार स्वीकार कीजियेगा जी। यहा के समाचार श्री महाराजाजी के तेज और प्रताप स अच्छे हैं। आपके पत्र समाचार सदा अच्छे चाहिअे। आपसे बढकर हमारे कोई बात नहा है। यहा के लिअे (=योग्य) काम-काज हो सो लिखा कीजियेगा (=लिखते रहियेगा)। किसी बात का अलगाव मत समझियेगा। यहा-वहा की अेक बात करके समझियेगा जी।

और आपका पत्र आया। समाचार पहुचे (पोछिया=पाछिया)। आमो

अप्रच श्री अक्बरजी री हुजूर था कासीद आग आया था आ साथ समाचार ा था मू म्हे राज-नू पहला तिसियो छ न दिखण री ग्वबर आया यो ी छ—मु० काबुल-था अमीरखा पातसाह-नू वाका म लिखियो छ जू बरजी रो थाणा कधार आयो छ न असवारी हुयी छ सताव हिंदुसथान गाजसी तिण ऊपर आजम तारा-नू विदा कियो छ

राजा रामसिंघ रा पोतरा-नू न्येय हजारी चार हजार असवार नै अेक रोड दाम इनाम देनै राजाराम ऊपर विदा किया छ

और समाचार आवसी सू राज-न लिखसा समस्य साथ रो जुहार अव रजो वळता कागद-समाचार वेगा देजा

आसाढ सुदि १३ रविवार मुकाम कोटडा

। लपसी (मीठा व्यजन विशेष ? छबडी ?)। भेजी थी सो पहुची है =पहुच गयी है)।

और श्री अक्बर जी के हुजूर स (अकबर औरगजेब का पुत्र था जिसने रगजेब से विद्रोह किया था)। दूत पहले आय थे। इनके साथ समाचार य थ। सो यह हमने आपको पहले लिखा था। और दक्षिण की ग्वबर मी। यह आयी है (कि) मुकाम काबुल से अमीरखा ने बादशाह (औरगजेब) । वाक्आत (घटनाओ के सवाद-पत्र) म लिखा है कि। अकबरजी का थाना धार आया है और सवारी (=चढाई) हुई है। शीघ्र (फारसी सिताब) दुस्थान को आवेंगे। उनके ऊपर आजम (औरगजेब का दूसरा पुत्र) तारा ो विदा किया है (=भेजा है)।

राजा रामसिंह के पोता (=वशजा) को दो हजारी चार हजार सवार ौर अेक करोड दाम (=अेक सिक्का) इनाम देकर राजाराम (=शिवाजी पुत्र) (के) ऊपर विदा किया है।

और समाचार आवेंगे सो आपका लिखेंग। समस्त साथ का अभिवादन ीकार कीजियेगा। लौटते हुअे (=वापिस) पत्र-समाचार शीघ्र दीजियगा।

आषाढ सुदि १३ रविवार मुकाम कोटडा।

अदालती न्याय

(अठारहवीं शताब्दी—उत्तरार्ध)

[मूहणोत संग्रामसिंघ]

[मुहणोत संग्रामसिंह प्रसिद्ध ख्यात लेखक मुहणोत नैंणसी के पौत्र थे। इनका समय अठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध है।

फारसी मे राज शिक्षा पर 'अखलाक-अल मोहसनी' नामक एक बहुत सुन्दर ग्रंथ है। संग्रामसिंह ने 'नीति प्रकास' नाम से उसका राजस्थानी गद्य में भाषान्तर किया। ग्रंथ में बादशाहों में अपेक्षित ४० गुणों का विस्तार के साथ वर्णन है। इन गुणों को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में अनेक कथाओं दृष्टान्तों और पुराने राजाओं की जीवन घटनाओं को उद्धृत किया गया है।

यह ग्रंथ राजस्थानी गद्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। अनुवादक ने मूल ग्रंथ का हू-ब-हू अनुवाद न करके उसे कहीं-कहीं पर संक्षिप्त भी कर दिया है। ग्रंथ की शैली बहुत प्रौढ़ है। राजस्थानी के ठेठ शब्दों मुहावरों आदि के प्रयोग से शैली निखर उठी है।

संकलित अंश 'नीति प्रकास' से लिया गया है। यह अंश अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के गद्य का नमूना है। इसमें न्याय की महत्ता न्याय करने की विधि न्याय का प्रभाव तथा अन्याय के दुष्परिणामों का वर्णन किया गया है। बीच बीच में रोचक और प्रेरणादायी दृष्टान्त देकर प्रमाणित किया गया है कि न्याय का महत्व ईश्वरीय सेवा से किंचित भी कम नहीं है। न्याय करना सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ी तपस्या है। नौशेरवां मलिकशाह, बहराम गोरी मामू जैसे न्यायपरायण बादशाहों के उदाहरण इस प्रसंग में द्रष्टव्य हैं।]

—१—

अदालता न्याय-नूं अदल गहणा कहज मुल्क रा न नूर री आ सवारणहार जात छ प्रभू री माटा वदा न आनी आग्या छै—अदल करा अहसाण करो

---

(१)

अदालती न्याय को अदल (न्याय) नामक आभूषण कहिये (=कहा जाता है)। यह मुल्क की और नूर की संवारने वाली (=शोभा बढ़ाने वाली)

रून आ छ—याद दोहरां-दूबळां-नू सबळा करै निरास अन्याव ओ त दोहरा-दूबळा निरासा ऊपर दया कर उण री मनसा पूरण करै बडा छ—अेक साधन न्याय री बादसाहां-नू सान मैं साठ वरस री बन्दगी ज्यू छ बदगी रो नफा करणवाळा सिवाय किणी दूजा-नू न पगाव न फायदो रा खास-आम साना मोटा-नू पगाव धरम करण रा भलाई अच्छ-सू ! कायम दीस न्याय रा धरम सगा सू घणा छ मन रै विचार-सू र छ

—२—

अेक बादसाह-नू इच्छा हुई ज मक्का-सरीफ री जात्रा करूं तर वजीर सरदारां अरज करी—गरीब-परवर ! मक्का सरीफ री जात्रा मैं चैन चाहीज बादसाहां रै वैरी घणा होय सो-सू साथ-सामान-सू पधारो थोड़ै सामान-सू रण मैं भय छ दूजा इण मैं चोर आगै छ जो आप रा साथा रस्तन सू अळगा होय तर फिसाद होय मगार मैं सराबी होय ना बादसाह

ाति है। बड़े लोगों का ईश्वर की यही आज्ञा है कि न्याय करो अहसान (उपकार) करो।

न्याय यह है कि न्याय दुनिया-दुबला को सबलों के पास से (=बलवानों से) दिलावे। अहसान यह है कि दुनिया दुबला निराश्रितों पर दया करके उनकी इच्छा पूरी करें। बड़ा न (दान) बड़ी है। न्याय की अेक घड़ी बादशाह के लिअे शान में (=परिमाण में) साठ बरस की (ईश्वर की) सेवा के समान की (=मूल्यवान) है। सेवा का लाभ सेवा करने वाले के अतिरिक्त और किसी को नहीं पहुंचता (=प्राप्त होता)। और न्याय का लाभ खास (=विशिष्ट लोग) और आम (=सर्वसाधारण) तथा बड़े और छोटे सबको पहुंचता है। धर्म कर्म की अच्छता न्याय (के होने) से अच्छी स्थायी दिखायी देती है। न्याय का धर्म (=पुण्य) हिसाब से अधिक है (उसका हिसाब नहीं किया जा सकता)। मन के विचार से बाहर है (=अचिंतनीय अकल्पनीय है)।

(२)

अेक बादशाह की इच्छा हुई कि मक्का शरीफ की यात्रा करूं। तब वजीरों और सरदारों ने निवेदन किया। हे दीन प्रतिपालक ! मक्का शरीफ की यात्रा में आराम (शान्ति) चाहिअे। बादशाहों के शत्रु बहुत होते हैं। इस कारण साथ और सामान से पधारिये (=पर्याप्त साथियों और सामान को साथ लेकर जाइये)। थोड़े सामान के साथ जाने में भय है। दूसरे (दूसरी ओर)

फुरमायो—जे आ न वण तो किण भात सवाव मक्का री हज रो पाऊ ? जणा उजीर अरज कीवी—अठ अक दरवेस छ, उण माठ हज किया छ मक्का मैं मुद्दता रहिया छै हमै गोम वठो छै मही मवाव हज रो उण सू मोल लय लो जिण मू जात्रा रो फळ अठ ही पावो

वादसाह उण दरवेस कने गया कितरी अेक वळा पाछै कही ज म्हा नू चाह हज मक्का री पदा हुयी छ पण वजीर-उमराव सलाह ढील री दवै छ म्हैं सुणी छै—ये हज घणी कीवी छ जे थ अेक हज रो फळ मा-नू वचा तो था नू सपत्ति मिळ म्हा-नू धरम जुड दरवम कही—हू तो तमाम हज वेचू छू वादसाह पूछी—हर-अेक हज कितर मैं वचो छो ? दरवेस कही—उण जात्रा र अेक पावडा री कीमत मैं सगळी प्रथवी लेऊ छू वादसाह कही—दुनिया न दुनिया री मता म्हार कन है थोनी घणी प्रथवी छ सो अेक पावडा रा माल नही वण तो पछ हज कयूकर लऊ न मारी हजा री कयूकर मन मैं गुजाऊ ? दरवेस कही—हे वादसाह ! सारी हजा रा मोल तो नू आसान छ वादसाह

न्ना म प्रजा का जीवन आलिम मे है (=होगा)। जब आपकी छाया (आश्रय) प्रजा पर से दूर हो जायगी तब उपद्रव होंगे अेक म खराबी होगी। तब बादशाह न कहा कि यह (बात) न बन तो मक्का क हज का पुण्य किस प्रकार प्राप्त करू। जब (=तब) वजीर न निवेदन किया। यहा अेक दरवेश (साधु) है। उसने साठ हज किय हू। मक्का म बहुत समय रहा है। अब घर के कोने मे (=अेकान्त म) बठा है। हज का उचित पुण्य उससे मोल ले लें जिससे यात्रा का फल यही (बठे) प्राप्त करें।

बादशाह उस साधु के पास गय। कितने अेक (=कुछ) समय के बाद कहा कि हमको मक्का के हज की इच्छा उत्पन्न हुई है। पर वजीर और उमराव ढील की सलाह देत हैं। मैंने (यह बात) सुना है (कि) आपने हज बहुत किय हैं। यदि आप अेक हज का फल मुझ बचें तो आपको सपत्ति मिले और मुझे धर्म जुट (=पुण्य प्राप्त हो)। साधु न कहा। मैं तो सभी हजो को बेच रहा हू। बादशाह ने पूछा। प्रत्यक हज कितने म बेचते हैं ? साधु ने कहा। उस यात्रा के अेक पांव (=पर) के मूल्य म सारी पृथ्वी लेता हू। बादशाह न कहा। मेरे पास थोडा बहुत पृथ्वी है। सो अेक पर का मूल्य भी न ही बनता। तो पीछे हज क्या कर (मोल) लू। और सब हजो का बान मन म कस लाऊ (=साचू)। साधु न कहा। हे बादशाह ! सब हजो का मूल्य (देना) तेरे लिअे सहज है। बादशाह ने कहा कि किस प्रकार से सहज होगा यह बताइय। तब

जे किण भात-स आसान हायस मो वताय तर दरवम कही—जद गरीव जिया मैं याय कर जिका वळा उण वाम-नू नगाव उण रो धरम मो नू ा ता हू साठ हजा रो पुण्य तो नू देव तिण मैं मो-नू नफो अत घणा छ तो वादसाह नू मालम हुवा जे नीनी रा जप तप सिवाय दूजी कोई तपस्या छ प्रभू रा वदा री प्रतिपाळणा करण सू वसो कोई धरम नहा है ायन अन्न री ज नही होव तो निजळा नू मार सूखार कर जिवाई मसार ापस मै भिळी छ मिनखा र हान री सवार याय विना नहा दरवस ा रा मसा पूरण किया न याव किया जिकी मन मैं हाय मा ही मौसर छ ैलत अन्लन री मैं आ ही नुक्तो दाव छ अदन प्यारा सारा मिनखा छ

—३—

दण भात री वात नमरवा अदली री न हजाज जालम री छ नमरवा अगनीहोत्रा थो न हजाज मुसळमान था जद नसरवा अदला री वात चाल सारा स्यावास धय धय कर उणर याय-न अर हजाज री वात न तर उण नू अयाय र कारण सारा धक धक कर न साप दव तिण-सू

ु ने कहा । जब (तू) गरीब क झगड म (मुकदमे म) याय करता है तब स म म जितना समय लगाता है उसका धम (=पुण्य) मुझे प्रदान कर । तब मैं ठ हजो का पुण्य तुझे दूगा । स (मौ) म मुझ नाभ बहुत अधिक है ।

नब बादशाह को ज्ञात हुआ कि नीति क (=नीति रूपा) जप-तप क तरिक्त दूसरी कोइ तपस्या नहा है । दवर क वदा की प्रतिपालना करन स कर कोइ धम नहा है । याय की हिमायत (=पृष्ठपोषण) यदि नहीं होता बना को लूमार लोग मार डाल । ससार का जीवन परस्पर मिला हुआ है =अेक दूसर पर निभर है) । मनुष्यो की दशा का सुधार याय क विना ा (हो सकता) । भूखे साधुओ की इच्छा पूरी करने म और याय करन म ा मन म हो वही अवसर है । याय की प्रतिष्ठा श्रेष्ठता यही नुक्त का =मुख्य सूक्ष्म भीतरी) दाव है । याय सब मनुष्यो को प्यारा है ।

(३)

इस प्रकार की कथा यायी नौशरवा और जालिम हजाज की है । नौशरवा दू अग्निहोत्री (=अग्निपूजक पारसी) था और हजाज मुसलमान । जब ायी नौशरवा की बात चलती है तब सब लोग उसके याय को शाबाश ! य धय ! (कहकर प्रशसा) करते हैं । और हजाज की बात चलती है तब

किणी न दुख नहीं दखणा न दुखिया रो याय करणा जिण सू अठ दौलत, जस अर राजस थिर रहै आग वडी गत रा कारण छै

अदुल अेक दिन आप र बेटा नू कही—" पुत्र ! आपणा घराणा मैं दौलत व राज कठा ताई रहस ? जो याय नहीं करस उण री खराबी हास वडा कही छ—बादसाह नू अल्ला साया प्रभू कपा रो छ तिण कहै आया अ यायी री लगायो जळण मिट ठंडी हाय हकीमा कही छै—अदल बराबरी राखणी छ ममार रै माही काई सबळो निबळा ऊपर जोर न कर, हर-अेक तफा नू आप रै पाया म राख बादसाह र चार तफा छ—प्रथम तरवार रो साथ उमराव सिपाही अ ता अगनी समान छै बीजो कलम रा साथ वजीर नवीसदा जे पवन ज्या जाणजे तीजो सौदागर न सिफरी अै पाणी सम जाणजे चौथी खतेड आ ठौड खाक री छै जिण भात प्रकत च्यारा न आदमी रा सरीर मैं रखवाळी उपज तिण भात आइ दण च्यारा मैं अेक तफ प्रकत देस राज री

उसको, अयाय के कारण सब लोग धिक्कार धिक्कार ! करके शाप देते है। इससे (=इसलिये) किसी को दुख नही देना और दुखी लोगों का याय करना। जिससे यहा (=इस लोक म) यश और राज्य स्थायी रहे। आगे (=परलोक म) यही परम गति (=श्रेष्ठ गति) का कारण है।

अदुल न अेक दिन अपने बेटे को कहा। हे पुत्र ! अपने घराने म सपत्ति और राज्य कहा तक (=कब तक) रहेंगे। जो याय नही करेंगे उनकी खराबी होगी। बडो ने कहा है। बादशाह के लिये याय ईश्वर-कृपा की छाया है उसके पास आने से अयाय की लगाई हुइ जलन (=सताप) मिटकर ठण्डी हो जाती है। हकीमो ने (=बुद्धिमानो ने विद्वानो ने) कहा है। याय सबल निबल सब को बराबर रखना है ससार के अन्दर कोई सबल निबलो पर जोर (=जबदस्ती जुल्म) न करे। हरेक तफा को अपने स्थान म रखे। बादशाह के चार तफाऐं हैं। प्रथम तलवार का साथ अर्थात सरदार और सनिक (=क्षत्रिय वग)। य तो अग्नि (तत्त्व) के समान है। दूसरा कलम का साथ अर्थात मत्री और लेखक (=ब्राह्मण वग)। इनको पवन (तत्त्व) के समान समझिये। तीसरा सौदागर और शिल्पी (=वश्य वग)। इनको पानी (तत्त्व) के समान जानिये। चौथा खेतीहर (किसान)। यह धूल (पृथ्वी तत्त्व) के स्थान पर है।

प्रकृति चारो को जिस प्रकार मनुष्य के शरीर मे रखवाली (=सुरक्षा) उत्पन्न हो उस प्रकार जोडती है (=उनका सयोग करती है)। इन चारो

वी ऊपर जाव ससार रा काम विगाड़ तिण वास्ते सारा-नू आप री हद्द
वयां राजस रा जापता रहै

—४—

तमाम न्याय री रीत मैं विसम फरियादा रा वचन सुणण रा सरियत छ—
लासा देय सुण जे कोई घणा वक ओळभा देय तौ वेराजी नहीं हाय रीस
न कर जठ बादसाह वद री ठौड राग छ फरियादी रोगी री जायगा छ
ती चाहे तमाम हवाक्त रोग री कहै सो वैद तमाम वात रोगी री सुण न
ग ऊपर खबरदार हाय विचार कर तद उण री बात-सू नाडी सू रोग
प ठाहरा आलाज कर रोग गमाव

अक दिन अक सखस वडा मिनख र क है आप री विध कही उण नहीं
गी जणा पर कभी फेर नहीं सुणी तो तीजा वार कही सो घणी दबाय कर
ही तर उण कहा—किनरा क दुख माथ-नू देयस ? जणा फरियादी कहा—
थो तू छ दरद न कठ ल जाऊ ? जद उण री वात सुहाया सो उण रो काम
ो जिका कर दिया प्रभू पहाच दीन्ही छै तो पटिया रा हाथ पकड न उठाय

। अक तफा प्रकृति देग और राज्य की खराबी पर आती है तो ससार का
ाम बिगाडता है। इसलिअे सबको अपनी मर्यादा म रखन ■ राज्य की
यवस्था रहती है।

(४)

समस्त न्याय का विधि म विशेष (महत्व की वात) प्रार्थी के वचन सुनने
की विधि (?) है। दिलासा (=आश्वासन) देकर सुन। यदि कोई बहुत वक
(=वक्ता जाय) उपालभ (=उलाहन) दे ता क्रुद्ध न हो रोष न कर।
यहा बादशाह वद्य की जगह रहता है प्रार्थी रोगी की जगह है। रोगी
(यदि) चाहे (कि) सारा विवरण रोग का कह तो वद्य सारी बात रोगी की
सुनता है और उस पर सावधान होकर विचार करता है। तब उसकी बात
स नाडी ■ रोग का निश्चय करता है (थरप<स्थाप=थप्प)। तब दवा
करक रोग का दूर करता है।

अेक दिन अक व्यक्ति न बड़े आदमी क पास (=स) अपना विधि
(=रोना) कहा। उसन नहा सुनी तब फिर कही। फिर नहीं सुनी तो तीसरी
बार कहा। वह बहुत दबाकर (आग्रह क साथ) कही। तब उसन कहा (मर)
सिर का कितन दुख देगा ? तब प्रार्थी न कहा—सिर तू है अब दर्द को (और)
कहां ल जाऊ (=तू ता सिर म हो रहेगा)। तब उसका बात अच्छी लगी।

अब बादसाह अेक महापुरख न कही जे हर वसत री जागात छ पण बादसाह री जागात कासू छ ? तो उण जवाब दियो—बादसाह री जागात आ छ जो फरियादी आय पुकार कर तो उण रा वचन सुण उणनू दिलासा सू वचन कहे करडो जबाब नहीं दय वात करण मैं दोहरा दूबळा स जाळ नहीं राखै छोटा नू वात रा जबाव दणो वडा रा सुभाव छ देखो हजरत सुलेमान बादसाही न पगबरी छता वचन निरवळ कीडी रो सुणियो

अेक बादसाह चीण देस रो थो सो न्याय सू नाम पायो थो तिण सू प्रभू न प्रजा दानू ही राजी था बुढापा मैं माथो दूख कानां सू बहरा हो गया था तर वजीर उमरावा न् भळा कर नैं रोया सो सगळा दिलगीर हुवा पछ बादसाह री तसल्ली नू उपाय करण लागिया बादसाह फुरमायो—थे आ मत जाणो जे हू काना री कमी रै ऊपर रोऊ छू निस्च जाणू छू अत सगळा सरीर नास हायस तिणनू जाण सो मरद क्यूकर दिलगीर होय ? म्हारे रोवण रो कारण आ छै कर कोई दुखी फरियादी फरियाद कर ता हू सुण नहीं सक

सो उसको जो काम था वह कर दिया। ईश्वर ने पहच (=सामर्थ्य) दी है तो गिरे हुओ के हाथ पकडकर उनको उठा।

अब बादशाह ने अेक महापुरुष को कहा कि प्रत्येक वस्तु की है पर बादशाह की क्या है ? तब उसने उत्तर दिया। बादशाह की यह है कि फर्यादी (=प्रार्थी) आकर पुकार करे तो उसकी बात सुन। उसको आश्वासन के साथ बात कहे। कडा उत्तर न दे। बात करने में दुखियों और दुबलों से कपट न रखे। छोटो की बात का उत्तर देना बडो का स्वभाव है। देखो। हजरत सुलेमान ने बादशाही और पगंबरी (के) होते हुअे भी, निर्बल चींटी की बात सुनी।

चीन देश का अेक बादशाह था। उसने न्याय द्वारा नाम प्राप्त किया था। इससे ईश्वर और प्रजा दोनों ही (उससे) प्रसन्न थे। बुढापे में सिर दुखकर कानो से बहरा हो गया। तब वजीरो और उमरावो को इकट्ठे करके रोया। सो सब लोग दुखी हुअे। पीछे बादशाह की तसल्ली (संतोष) के लिअे उपाय करने लगे। बादशाह ने कहा। तुम लोग यह मत समझो कि मैं कानो की कमी पर रोता हू क्योंकि निश्चय जानता हू कि सारा शरीर नाश होगा। इस बात को जो समझता है (=जो समझदार है) वह मनुष्य क्योंकर दुखी होगा ? मेरे रोने का कारण यह है (कि) कभी कोई दुखी फर्यादी फर्याद करेगा तो मैं सुन नहीं सकूगा और तब वह निराश होकर जायगा। मैं ईश्वर का

निरास जायम हू प्रभु री दरगाह चिंता करस्यू वजीर-उमराव पूछी—
ो रो मारग फुरमावो तर बादसाह फुरमायी जे इण दम मैं ढिंढोरा
विगर परियान्ना काई माथ ऊपर नाज कपडा न पहरै मा तिण सहनाण
मा नू खबर पडस्य जणा हू न्याय करस्यू

—३—

गाजी बादसाह अेक न्याय र कारण यम रा दुखा सू छूट अकर न

दसाह मदनसाह मसजाद अेक दिन नदी किनार सिकार खेल थी तर
र कारण अेक बाग मैं ठहरिया थो चाकरा मैं-स अेक गुलाम खास हजूरी
गया उण अेक बकरी नू चरती देख मार बान खाधी बकरी रा मालिक
ा नू खबर पडी मा मारग री पूठ र ऊपर आय बैठी बादसाह उठा
ठियो ताहरा डावरा घोडा री बाग पकडी उण ही गुलाम मारण नू
ो उठाया तर बादसाह फुरमायो—मार मत ना आ तो फरियाद करण

(दरबार) म चिंता करूंगा (=मुझ चिंता करनी पडेगी)। वजीरों और
वो ने पूछा। निश्चिनता का माग कहिये (=बताइये)। तब बादशाह ने
कि इस दम म ढिंढोरा फरो (=घोषणा कराओ) कि फरियादी के सिवाय
ा) कोई माथे पर नाज कपडा न पहने। सो इस पहचान (सहनाण
नान) को देखकर मुझे खबर पड जायगी (पता लग जायगा) और तब
ाय करूंगा।

(४)

बहुत-स बादशाह अेकमात्र न्याय (करने) के कारण यम के दु खा स
र बचे का गये हैं।

बादशाह मदनशाह मसजीद अेक दिन नदी के किनारे शिकार खेलता
—खेल रहा था)। तब धूप के कारण अेक बाग म ठहरा था। सबका म
र दास जो खास हजूरी (सेवक) था बाग म गया। उसने अेक बकरी
रती हुई देखकर मारकर और बाटकर खा डाला (खाधी < अप खद)।
ी की मालिक बुढिया को पता लगा। वह मार्ग के पुत पर आकर बठ
। बादशाह उधर स आया। तब बुढिया ने घोडे की लगाम पकड ली।
लाम ने मारने के लिए चाबुक उठाया। तब बादशाह ने कहा। मारना
(मत ना=मत) यह तो फरियाद करनेवाली फरियादी लगती है (दीस <
ा)। मैं इसका वृत्तान्त पूछा। किस ऊपर पुकार करती है। तब

वाली दीम छ, दखा इण नू हाल पूछ्या, किण ऊपर पुकार छ ? तरै बादसाह डाकरी नू पूछी—फरियाद कर ! डाकरी कही—हे बादसाह ! जो याव ण नदी ऊपर नहीं किया तो मोटा प्रभू री आण छ ता नू वैतरणी र तीर ऊपर याव किया विगर नही छाडसू भलो विचार दोनू ठौड मैं-म कठ याव करसै ? बादसाह इण रा वचन री धाक म तुरत पयादा होय कही—हे माता ! उठ जवाब देवण री पहाच मा मं हरगिज नही छै तू आपणा दुख कह तो-मू किण भूडी कीवी छ ? सा उण-मू याव दिराऊ डोकरी कही—हे बादसाह ! ओ ही गुलाम मो नू जबरा ताजणा मारिया म्हारी बकरी मार खाधी तिण बकरी सू मैं अर नि बापा म्हारा दोय दाहितरा गुजराण कर था तरै मलकसाह उण गुलाम रा हाथ कटायो अर अेक बकरी र बदळ सत्तर बकरी दिरायी

कितरा-अेक दिन पछ बादसाह काळ कियो डाकरी जीव थी सा डाकरी आधारात मैं बादसाह री गोर ऊपर जाय घणी दीनता सू प्रभू नू वीनती कही—हे प्रभू ! ओ बन्दो थारा घोर मैं छ अेक समै म्हारै मैं विपत पडी तर इण म्हारा हाथ भाल मदद कावी, हमार उण मैं वेळा पडी छ तू इण पर दया कर उण बन्द धक मा ऊपर क्रपा करी थी तू वडो छै उण रा गुनाह बकस

बादशाह ने डाकरी को कहा—फरियाद कर। डाकरी न कहा—यदि इस नदी पर याय नहा किया ता बडे प्रभु (=ईश्वर) की आन है। तुझे वैतरणी (=परलोक की नदी) क तीर पर याय किय बिना नही छोडूगी। भलीभाति विचार ले। दोनो जगहो मे से कहा याय करेगा। बादशाह न इसके वचनो की धाक मे तुर त पदल होकर कहा। हे माता ! वहा जवाब देन की सामथ्य मुझ म बिलकुल नही है। तू अपना दुख कह। तुझ से (=तेरे साथ) किसन बुरी (=बुराई) की है। ताकि उसस याय दिलाऊ। बुढिया ने कहा—इसी दास न मुझे जोर के चाबुक मार। मेरी बकरी को मारकर खा गया। उस बकरी से मैं और मेरे दो पितहीन दौहित्र निर्वाह करते थे। तब मलकशाह न उस दास का हाथ कटवा दिया और अेक बकरी क बदल सत्तर बकरी (=बकरिया) दिलाया।

कितन अेक दिनो बाद बादशाह न काल किया (=मर गया)। डाकरी जीती थी। उस डोकरी न आधी रात का बादशाह की कब्र पर जाकर बहुत दीनता के साथ ईश्वर स प्राथना की। ह इश्वर ! यह तेरा सेवक कब्र म है। अेक समय मुझ पर विपत्ति पडी थी तब इसने मेरा हाथ पकडकर (मेरी) मदद की। इस समय उस पर विपत्ति की वेला पडी है। तू इस पर कृपा कर।

री दमूध आर तो घणा हासल वध अर रय्यत री पण को विगड नहीं राग रो हासल मगळा मू नेयमा

बागवान नू कह्यो—अेक पियालो अनार रो फेर भर लाव माळी घणा मैं पियालो नेय आवियो बहराम पूछी—पहली वार मैं ता वेगो आया अबर रे र मू आदयो अर पियालो भी उतरो नहीं भरियो माळी जाण नहा औ ही वहराम छ मो कहण लागियो—हे जवान ! आ चूक म्हारी नहीं पार वादसाह री छ तिण आप री नीयत फेरी छ अन्याय करण री विचारो ो कारण मू पहला री बरकत दूर हुयी मैं पहली वार अेकहा दाडम मू ला भरियो था अबकी वार दस दाडमा स्यू ओ पियालो भरियो नहा

बहरामसाह नू वचन भिन्यिा विचार किया था सो मन मू परो निमारियो बूढै माळी नू कह्यो—अेक पियालो और लय आव सो माळी बाग मैं जाय पियालो भर हमतो ही आवियो अर पियालो बहराम र हाथ माही लियो कह्यो—हे मवार ! इचरज रो समयो छ फेर बादसाह री नजर नेकी पर छ मो मवा मैं बरकत जाहिर हुयी अेक हा दाडम मू अबक पियालो फर

बहुत है । यदि बाग का दसवा हिस्सा (कर म) आवे तो लगान बहुत बडे प्रजा का भी कुछ बिगडे नहीं । अब बाग का लगान सबस लग ।

(फिर) बागवान को कहा—अनार (के रस) का अेक प्याला फिर भर ला । ी बहुत देर से प्याला नजर आया । बहराम न पूछा—पहली बार मे तो ी आ गया था अब की देर स आया और प्याला भी उतना नहा भरा । माली जानता नहीं था कि यही बहराम है । सो कहने लगा । हे जवान ! बाप मेरा नहीं है मेरे बादशाह का है । उसने अपना नीयत बदली है । याय करने की सोची है । इस कारण स पहले की बरकत दूर हुई । मैंने ली बार अेक ही अनार से प्याला भरा था । अब की बार दस अनारों से) यह प्याला भरा नहीं ।

बहरामशाह को वचन चुभे । जो विचार किया था वह मन से दूर निकाला =निकाल दूर किया) । और बूढ़े माली को कहा । अेक प्याला और ले आ । माली बाग में जाकर तुरन्त प्याला भर कर हमता हुआ ही आया । और ाला बहराम के हाथ मे लिया ।

तब कहा । हे सवार ! आश्चर्य का समय है । बादशाह की नजर फिर ाई पर हुई है । सो सेवा मे बरकत प्रकट हुई । अेक ही अनार से अबकी र प्याला फिर भर गया है । बहरामशाह ने मौजूदा सूरत (=वर्तमान

भरियो छ बहरामसाह मूरत हाल री माळी नू कही—कजिया आप री नीयत भूंडी करण रा न फेर भली विचारण रो कहिया

सो आ वचना-सू सीख माना नीयत रय्यत रै ऊपर ऋपा री करा हकीमा कहा छ—अदल भला खरा गुण छ न अन्याय खरा बुरी सुवारी छ अदल रा गुण थिरता दम री न तरक्की राजम री छ फळ अन्याय रा नास दम रा न खराबी राजम री छ

—७—

हुसगसाह आप रा बटा-नू कही थी सो मजकूर छ—रै बटा ! अन्याय रो नाम छाड न न्याय अर अहसान घणा करै फरयाद्यिा री दुरासीस स घणा डरणा बडा कही छ—अेक दुरासीस बुडिया राड री करै सो हजार तीरन्तर वार नही करै अत अन्याय रा विचार कर ता अन्याय सू दौलत जाय माल रा इच्छा मैं सू माल ता घणा रै पगा हेट हाथा म थमिया छ तिण र वास्तै रय्यत-सू झगडा मता कर

आ निम्मदह छ—जिण बादसाह रय्यत री माया लीनी तिण भात री नाव खाता नैं मडी नाखी

स्थिति की बात) माली स कही। अपनी नीयत बुरी करन का और फिर भला विचारने का झगडा बताया।

इसलिअ इन वचना स सीख मानो। प्रजा पर कृपा की नीयत करो। विद्वाना ने कहा है। न्याय वस्तुत अच्छा गुण है। और अन्याय वास्तव म बुरी सवारी (सवारी) है। न्याय का गुण (लाभ) दम की स्थिरता और राज्य की तरक्की है। अन्याय का फल दम का नाश और राज्य की खराबी है।

(७)

हाशगसाह न अपन बटे का कहा था। वह निम्नोक्त (=इस प्रकार) है। हे बटे। अन्याय का नाम छोड दना और उपकार सब करना। फरयादिया का दुरासीस (अभिशाप) स बहुत डरना। बडा न कहा है। बुढिया राड की अर दुरासीस जो (अपकार) करती है वह हजार तीर और तलवारें नही कर सकत। अन्याय क परिणाम का विचार करें तो अन्याय म सपत्ति चली जाती है। धन की इच्छा म सो धन तो बहुत से पगो के नीचे (और) हाथो म आया है। उसके लिअ प्रजा से झगडा मत करना। यह (बात) निस्सन्दिग्ध है (कि) जिस बादशाह न प्रजा की सपत्ति ली उसन भीत की नींव खोद डाली और उसमें मेडी (ऊपर का कमरा अटारी) रोपी।

म॰ लागा प्रयी री ल्द्धद्र भागो दादुरा ट्हट्है मावण आवण रा मध कै

ऱ्मो समऱ्यो वण रह्या छ वरसा मडनै रही छ विजळी भिनामिन रन्न रहा छ वादळा भ॰ लाया छ महरा मट्रा वाज चमकनै रही छै जाण ट्टा नायका घरसू नीमर अग न्विाय दूमरै घर प्रवेम करै छ

मार कुहुवे छ, डडरा टहक छ भाम्वरा रा माळा वानन्न रह्या छ पाणी नाडा भरन्न रह्या छै चातन्मियाळ वहवन्न रही छै वनसपतीसू वना रफन्न रही ट

परभात रो पार छ गाज-आवाज हुयन्न रही छ, जाण घणा घण ऱ्मा मू ममासू मिनण आयो छ

भरा नागी। पृथ्वी का न्रिद्र माग गया=पृथ्वी हरियाली अब धन धान्य स सम्पन्न हो गया। दद्दुर मण्ड। टहन्हान हैं हुनभर होत हैं पुनर्जीवित हान है। श्रावण मास (व) आन का। मिद्धि कहत हैं सूचना न्त हैं।

ऐसा समय बन रहा है। वषा मड रहा है (वर्षा का समा बन रहा है)। बिजली झलमलाट कर रही है। बान्ना न। मडी लगाया है=मडा लगा नी है। निवरा निमरा (पर) बिजली चमक रही है। माना कुलटा (असती) नायिका घर स निकलकर। अग न्विान्कर=अगा का न्विाता हुई। दूसर घर म (पर-पुरुष क घर म)। प्रवश। करता है=कर रही है।

मोर कूकत हैं। मन्क बालत हैं। पतंगा क नाल बोल रह हैं (नाद कर रह हैं)। नाना तलयाओं म भर रह हैं। सागिनिया चीन्कार (?)। न्न कर रहा हैं। वनस्पति म व ता आदि म। वर्वे (वल्लि बल्लि)। निपर रहा हैं।

प्रभात का पहर (=समय) है। गाज (=मघ-गजना) का न ज श रहा है। माना। घना। घन (=बहुत) हृप स। जमान म पृथ्वी म। मिलन आया है।

डोकरी-री वात

(अठारहवीं शताब्दी)

[लोक कथा]

[संकलित लोककथा अठारहवीं शताब्दी के गद्य का नमूना उपस्थित करती है। इस कथा के कई रूपान्तर मिलते हैं पर सब का मूल कथ्य प्रायः एक ही है। रास्ता भूले हुए राजा भोज और माघ पंडित बातचीत के क्रम में बुढ़िया को बटाऊ, पाहुन, राजा, भारक्षम, साधु, उजल, परदेशी, गरीब, धवल, भरे हुए, चतुर, निस्सग, हारे हुए आदि विविध रूपों में आत्म-परिचय देते हैं और बुढ़िया प्रत्येक बार अपने अनुभव एवं ज्ञान-बल से उनका खंडन कर दोनों को निरुत्तर कर देती है।

बुढ़िया के दिये गये उत्तर तत्कालीन लोक विश्वासों, मानवीय मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं के परिचायक हैं।]

अेक दिन समाजोग रै विसै राजा भोज तथा माघ पिंडत सले सिकार गया था। सू आवतां मारग भूल्या। सु आपस में माघ पिंडत राजा भोज दोनूं विचार करण लागा—आपां मारग भूल्या किण नै पूछां? इतरै माघ पिंडत अरज कीवी—महाराजाधिराजाजी! अेक खेत गवां रो डोकरी रूखाळै छै, तिकनै पूछां तारै राजा भोज फुरमायो—हालो पूछां तारै दोनूं असवार घोड़ा दउडाय नै गया जाय नै कह्यो—राम राम डोकरी!

अेक दिन के संयोग में (समाजोग=संयोग या समय योग, विसै=विषय में) अेकबार। राजा भोज और माघ पण्डित। सले और शिकार (को)। गये थे। सो। आते हुअे लौटते हुअे। रास्ता भूल गये। सो। आपस में राजा भोज और माघ पंडित दोनों विचार करने लगे। आपन (=हम) मार्ग भूल गये। किसको (=किससे) पूछें। इतने में (=तब) माघ पंडित ने अर्ज की। महाराजाधिराजाजी! गहुओं का अेक खेत बुढ़िया रखा रही है (=निगरानी कर रही है, रूखवाळना=रखवाली करना, निगरानी रखना)। उसको पूछें। तब राजा भोज ने कहा—चलो पूछें। तब दोनों सवार घोड़े दौड़ाकर (वहां) गये (असवार=सं० अश्ववार)। जाकर कहा। राम राम बुढ़िया!

बह्या—आओ बीरा ! राम राम! नार न्नू बानिया—बाइ ! ओ मारग जासी ?

तार डावरी वह्यो—ओ मारग ता इठ-ही-ज रसी ऊपर फिर छ तिके री बारा ! थ कुण छा ?

बाई ! म्हे ता वटाऊ छा

नार बह्या—बटाऊ ता दाय तिके किसा ? अक ता सूरज दूसरा चद्रमा किसा वटाऊ छा ? बीराजी ! थ साच बाना, थ कुण छा ?

बाई ! म्हे तो छा प्राहुणा

प्राहुणा ता दोय तिके किसा ? अक ता ध दूसरा जोवन थ किसा ण्णा छो ? बारा ! थ साच बानो थ कुण छो ?

बाई ! म्हे ता राजा छा

राजा ता दोय तिके किसा ? अेक ता इन्द्र दूजा यम थे किसा राजा ! ? बीरा ! थ साच बाना थे कुण छा ?

बाई ! म्हे तो छा भर-खमा

भरखमा ता दाय तिके किसा ? अक तो धरता दूजी अस्त्री ? बीरा ! किसा भरखमा छो ? बीरा ! थ साच बानो थे कुण छा ?

(बुनिया ने कहा) । आओ भाई ! राम राम । तब दाना बाले ।बहन ! ह मार्ग कहा जायगा ? तब बुनिया ने कहा । यह मार्ग तो यही रहेगा जो पर चलते हैं वे जायगे । भाई ! तुम कौन हो ? बहन ! हम तो बटाऊ =पथिक) हैं । तब (बुनिया ने कहा) । बटाऊ तो दो हैं । वे कौन-से ? क तो सूर्य और दूसरा चन्द्रमा (क्योंकि ये बराबर मार्ग पर चलते रहते हैं) । तुम कौन-से बटाऊ हो ? भाईजी ? तुम सच बताओ कि तुम कौन हो ?

बहन ! हम तो हैं पाहुन (स प्राघूणक) । पाहुन तो दो हैं । वे कौन से ? अक तो धन और दूसरा यौवन (क्यो कि ये पाहुने की भाति थोड़े ही दिन रहते हैं) । तुम कौन-से पाहुने हो ? भाई ! तुम सच बोलो तुम कौन हो ? बहन ! हम तो राजा हैं । राजा तो दो हैं । वे कौन से ? अक तो इन्द्र और दूसरा यम (इन्द्र वर्षा के द्वारा समस्त प्रजा का पालन करता है यम का अधिकार सब पर है) । तुम कौन से राजा हो ? भाई ! तुम सच बोलो तुम कौन हो ? बहन ! हम तो हैं भारक्षम (=बोझ सहने या ढोने वाले) । भारक्षम तो दो हैं । वे कौन-से ? अक तो पृथ्वी और दूसरी स्त्री । भाई ! तुम कौन से भारक्षम हो ? भाई ! तुम सच बोलो तुम कौन हो ?

बाई ! म्हे तो साध छा

साध तो दोय तिके किसा ? अेक तो सीळ बीजो सतोख थे किसा साध छो ? वीरा ! थे साच बोलो, थे कुण छो ?

बाई ! म्हे तो छा ऊजळा

ऊजळा तो दोय तिके किसा ? अेक तो पाणी बीजो साबू थे किसा ऊजळा छो ? वीरा ! थे साच बोलो, थे कुण छो ?

बाई ! म्हे तो परदेसी छा

परदेसी तो दोय तिके किसा ? अेक तो जीव बीजो पान थे किसा परदेसी छो ? वीरा ! साच बोलो थे कुण छो ?

बाई ! म्हे तो छा गरीब

गरीब तो दोय तिके किसा ? अेक तो छाळी रो जायो बकरो दूसरी डाकरा । थे किसा गरीब छो ? वीरा ! साच कहो थे कुण छो ?

बाई ! म्हे तो धवळा छा

धवळा तो दोय तिके किसा ? अेक तो बळध दूसरी कपास थे किसा धवळा छो ? वीरा ! साच बोलो थे कुण छो ?

बाई ! म्हे तो भरिया छा

भरिया तो दोय तिके किसा ? अेक तो बादळ दूजी अस्त्री थे किसा भरिया छो ? वीरा ! थे साच कहो थे कुण छो ?

बहन ! हम तो साधु है । साधु तो दो है । वे कौन से ? अेक तो शील और दूसरा संतोष । तुम कौन से साधु हो ? भाई ! तुम सच बोलो तुम कौन हो ? बहन ! हम तो हैं उजले । उजले तो दो है । वे कौन से ? अेक तो पानी और दूसरा साबुन । तुम कौन से उजले हो ? भाई ! तुम सच बोलो, तुम कौन हो ? बहन ! हम तो परदेशी हैं । परदेशी तो दो है । वे कौन से ? अेक तो जीव दूसरा पत्ता (पान<पण) । तुम कौन से परदेशी हो ? भाई ! सच बोलो, तुम कौन हो ? हम तो है गरीब । गरीब तो दो हैं । वे कौन से ? अेक तो बकरी का जाया बकरा दूसरी कन्या । तुम कौन-से गरीब हो ? भाई ! सच कहो तुम कौन हो ? बहन ! हम तो धवल (सफेद) है । धवल तो दो है । वे कौन से ? अेक तो बैल दूसरी कपास । तुम कौन-से धवल हो ? भाई ! सच बोलो तुम कौन हो ? बहन ! हम तो भरे हुअे हैं । भरे हुअे तो दो हैं । वे कौन-से ? अेक तो बादल दूसरी स्त्री । तुम कौन-से भरे हुअे हो ? हे भाई ! तुम सच कहो तुम कौन हो ?

वाई ! म्हे तो चतर छा

चतर तो दोय तिके किसा ? अेक तो अन, दूसरो पाणी थे किसा चतर ? वीरा ! साच वाला, थे कुण छो ?

वाई ! म्हे तो छा निसग

निसग तो दोय तिके किसा ? अेक तो इन्द्र, दूसरो अडूरडी थे किसा सग छो ? वीरा ! साच वाला थे कुण छो ?

वाइ ! म्हे तो हारिया छा

हारिया तो दोय तिके किसा ? अेक तो माथ देणो दूसरो वेटी रो वाप किसा हारिया छो ? वाराजा ! थे साच वाला थे कुण छो ?

वाई ! म्हे तो न जाणा छा जाणै सू तू ही जाण छ

तारे डोकरी कह्यो—ओ राजा भोज छ तू माघ पिंडत छ ओ हो तारग जावो

वहन ! हम तो चतुर है। चतुर तो दो हैं। वे कौन से ? अेक तो अन्न दूसरा पानी (दाना के विना कोई चतुराई काम नहीं करती)। तुम कौन से चतुर हो ? भाई ! सच वाला तुम कौन हो ? बहन ! हम तो निस्सग (=आसक्ति से रहित) हैं। निस्सग तो दो है। वे कौन से ? अेक तो इन्द्र दूसरा घूरा। तुम कौन से निस्सग हो ? भाई ! सच वाला तुम कौन हो ? वहन ! हम तो हारे हुअे (=पराजित) हैं। हारे हुअे तो दो हैं। अेक तो जिसके सिर पर देना है (=ऋण-ग्रस्त) दूसरा लड़की का पिता। तुम कौन-से हारे हुअे हो ? भाई जी ! तुम सच वाले तुम कौन हो ?

वहन ! हम तो नहीं जानते। जानता है सो तू ही जानती है।

तब बुढ़िया ने कहा—यह राजा भोज है तू माघ पंडित है यहां मार्ग है जाओ।

१४

खुदाय बावळी री बात

(अठारहवीं शताब्दी)

[लोक कथा]

[संकलित लोककथा अठारहवीं शताब्दी में लिपिबद्ध की गयी थी। राजस्थानी की हास्य रस की रचनाओं में इसका ऊंचा स्थान है। खुदाय बावळी का अर्थ है बावली खुदा। यहां खुदा को बावला ही नहीं कहा है पर उसे स्त्री भी बना दिया है—खुदाय राजस्थानी की वेमाता (=विधि माता=विधाता) का प्रतिशब्द है।

इस कथा में परिस्थिति और संयोग के सहारे खुदा के बावलेपन की व्यंजना की है—जैसी खुदाय बावळी किसी का उठाय किसी को देय। पैसे-पैसे के लिए मोहताज रहनेवाले मुल्ला अब्दुल्ला और सिपाही अलदाद कथा के अन्त में संयोगजन्य परिस्थिति के कारण ही चोरों द्वारा चुरायी हुई अपार धनराशि के स्वामी बन जाते हैं। कब्रगाह में मृत्यु का बहाना बनाकर मुल्ला अब्दुल्ला का जीवित सोना, अलदाद का वहीं मकबरे में बैठकर तसबीह (माला) फेरना, चोरों द्वारा नये पीर की मनौती करना आदि ऐसे प्रसंग हैं जिनसे कथा में हास्य विनोद का पुट आ गया है। कहानी बड़ी सजीव है। मुसलमान पात्र होने के कारण संवादों की भाषा राजस्थानी मिश्रित खड़ीबोली है]

—१—

दिली सहर में मुल्ला अबदल्ला रहै अर दुसरै माहलै में सिपाई अलदाद रहै सू दिल्ली बडा तख्त सहर तै में आदमिया री किसी गिणत ? सू इयां दानां-री रै कमाला कुमख्या काई नहीं तद आप रै घर सू मुल्ला कुमावण-नै हालियो सिपाई आप रै घर सू कुमावण-नै हालियो सो आगिलै गाव में दोन भेळा हुय गया आपस में रात भेळा रह्या दस्त-पासी हुय जायगा मोहला

---

(१)

दिल्ली शहर में मुल्ला अबदुल्ला रहता है। और दूसरे मुहल्ले में सिपाही अलदाद रहता है। सो दिल्ली बडा राजधानी का शहर है। उसमें आदमियों की क्या गिनती ? सो इन दानों के ही तंगी। कमाई काई नहीं। तब मुल्ला कमाने के लिअे अपने घर से चला। सिपाही (भी) कमाने के लिअे अपने घर से चला। सो अगले गांव में दोनों इकट्ठे हो गये। रात को परस्पर साथ रहे।

कुभार सोदो लेवै छै जितर काई जागीरदार आइ नीसरियो जागीरी नवी हूयी थी सू सिपाही-चाकर राखण लागो सू अलदाद न महीनदार कर ऊ ल गयो मुल्ला कुभार रै साथै वहीर हुवो दोन दुवा-सलामी कर बीछडण लागा तद सिपाई कह्यो—मियाजी! अधेला मेरा है सू घरा देणा मुल्ला कह्यो—बहोत खूब

अ तो दोना तरफा गया कुभार रै विहा म घणा-सा कुछ आया नही जागीरदार रै जागीर कवजै मै नही दादनी चढती गयी जितर अेक गाव मै जमीदारा-सू जागीरदार रै लडाई हूयी जागीरदार काम आयो दादनी महीना छ री बाथ रही खराब हाय अलदाद घरा आया मुल्ला अबदुल्ला पण फिर भटक घरा आयो करम-छाहडी साथ फिरै हाथ दोना ही र कुछ चढिया नहा बहोत कसाला

—२—

अेक दिन अलदाद र तमाकू नही विना पइस दिली म कोई कुछ द नहा तद सार ही जाय रह्या हाथ कयू पड नही इतर मुल्ला रा अधेला याद आया तद उठि मुल्ला र घरै गया आगै मुल्ला मिलिया दस्त-बोसी करी अगना

कुम्हार सौदा लता है इतने म कोई जागीरदार आ निकला। जागीर नयी हुइ थी। सो सिपाहियो को नौकर रखने लगा था। सो अलदाद को महीनदार (माहवारी वेतन पाने वाला नौकर) बनाकर वह ले गया। इधर मुल्ला कुम्हार के साथ विदा हुआ। दोनो दुआ-सलाम करके बिछुडने लगे। तब सिपाही ने कहा। मियाजी! मेरा अधेला आप म लेना है सो घर पर दे देना। मुल्ला ने कहा। बहुत अच्छा।

ये दोनो दोनो ओर गये। कुम्हार के विवाह म मुल्ला के कुछ अधिक हाथ नही आया। जागीरदार के जागीर कब्जे म नही थी दना (=ऋण) चढता गया। जितने म अेक गाव म जमीदारो के साथ जागीरदार की लडाई हुइ। जागीरदार काम आया। तनख्वाह छ महीने की बाकी रही। अलदाद खराब होकर घर आया। मुल्ला अबदुल्ला भी फिर भटक कर घर आया। कर्म की छाया साथ मे फिरती है। दोनो के ही हाथ कुछ चढा नही। बहुत तगी (है)।

(२)

अेक दिन अलदाद के तमाखू नही। पैसे के विना दिल्ली म कोई कुछ दे नही। तब सब जगह खोज चुका। हाथ कुछ पडता नही। इतने म मुल्ला का अधेला याद आया। तब उठकर मुल्ला के घर गया। आगे (वहा) मुल्ला मिला। हाथ चूमे। अगली पिछली बाते की। फिर कहा। कही भी कुछ राजी लगा

ईरी वाता करी कहयो—कठा-ही कुछ रोजी नहीं फिर भटक पाछै आयै घडी बैठ अलदाद बोल्यो—मियाजी ! अधेलो दिराओ आज तमाकू न थी और कठी-ही हाथ पुर नही, तद इतनी भूम आया हूं मुल्ला ही कहयो—हवाल देवत ही हो पण सुवा परमू कर देऊंगा इण तरै कहि सीख दीनी

अब निदान राजीना वार पाच सात फिरियो पण मुल्ला र अमा बसानो अधेलो सिर मू उतरणो जरू हुआ भला मरम रो माणस वार-वार अलदाद मागण आव ज मू बहोत सरमायो अर अलदाद पण भलो मरम रो आदमी मू र दे माग नही अर घर मैं बोल नादारी मू मागण न तो आव पण स्मावतो-सो आव

तद मुल्ला आप री जोरू-मू कहै—अलदाद हमेसा अधेला मागण आव अधेलो जुडै नही आ मागणा गल छाड नही बहोत खराब हुय तिण-सू मैं कहू कर ज्यू गल छूटै तद लुगाई कहयो—तुम कहोगे सू करगा तद मुल्ला कहयो —जद आज अलदाद मागण कू आवै तद तुम मरे ऊपर चादर डाल देयो ताजत मनियो—मुल्लाजी फौत हुय तब आप ही बैठ रहेगा तद लुगाई कहयो—अच्छी

ही । फिर भटककर लौट आये । अब घडी बैठकर अलदाद ने कहा । मियाजी ! अधेला दिलाओ । आज तमाखू नही थी । और कहीं हाथ चलता नहीं (और कहीं से कुछ हाथ मे नही आता) । तब इतनी दूर आया हू । मुल्ला ने कहा । हाल तो तुम देखते ही हो । परतु कल या परसो दूगा । इस प्रकार कहकर बिदा दी ।

अब निदान प्रतिदिन पाच सात बार फिरा । परतु मुल्ला के असी लगी कि अधेला सिर से उतरना कठिन हो गया । भला शर्म का आदमी था । अलदाद बार बार मागने आता है जिमसे बहुत शरमाया । और अलदाद भी भला शर्म वाला आदमी । सो जोर देकर मागता नहीं । और घर मे बहुत नादारी (गरीबी) । सो मागने तो आता है पर शरमाता सा आता है ।

तब मुल्ला ने अपनी स्त्री से कहा । अलदाद सदा अधेला मागने आता है । अपने अधेला जुडता (इकट्ठा होना) नही । और यह मागना हुआ पीछा नहीं छोडता । बहुत खराब हुअे । इसलिअ मैं कहू सो कर । जिससे पीछा छूटे । तब स्त्री ने कहा । तुम कहोगे सो करेंगे । तब मुल्ला ने कहा । आज जब अलदाद मागने को आवे तब तुम मुझ पर चद्दर डाल देना और शोक मनाना (ताजियत =गमी मातमपुर्सी) कि मुल्लाजी मर गये । तब अपने आप ही बैठ रहेगा । तब स्त्री ने कहा । अच्छी बात है । परतु कदाचित् या कहेगा कि दफनाकर जावेंगे ।

वात है, पण कराच यू कहैगा—दफनाय कर जावेंगे तद मुल्ला कह्यो—ता क्या है ? तो गोर थान ले जाइयो, अपण तो कबर-क पडदा होना है तिम वीच धर रखे, कोइ खतरा नही तद मुल्ला माच ऊपर माय रह्यो

जितर अलदाद आयो तद मुल्ला री लुगाई रावण न लाग गयी अलदाद कह्यो—है क्या ? तद कह्यो—मुल्लाजी फौत हुय लोक आण भेळा हुवा मुल्ला न उठाया अलैदाद कह्यो—मियाजी हमारे बडे दोसत थे हम भी साथै हुवेंगे अलैदाद पण माथै हुवो गोर-मयाना मैं जाय कबर खुणी पडदा कर मुल्ला न भीतर रख ऊपरा रेत दय सारा घरा न फिरिया तद अलदाद खडा रह्यो लोका कह्यो—क्यू भाइ ! तुम क्या खडे ? आवो डेर कू तद अलदाद कह्यो—मियाजी हमारे बडे असनाव थे च्यार दिन जीवता वात मजकूर किया था ना अेक रात फौत हुवा पास रहाग तब लोक तो सब घरा-कू गये और अलदाद वहा गोर-मथान-क पास अेक मकबरो थो उण मैं जाय बठो ढाल तरवार कनै ही बैठो तसबी फेरै है—

तन मकसती मन गरीबी हाल मोरा तोबदानी आलमा ।

दस्तगीर दरमादगा कारसार वि कारमा ॥

इण नाव री बत री तसबी फेरै है

तब मुल्ला ने कहा । तो क्या है ? तब कब्र गाह म ले जाना । अपन ता कब्र के पर्दा होता है । उसके बीच म रखे रहे । कोई खतरा नही । तब मुल्ला खाट पर सो रहा ।

जितने मे अलदाद आया । तब मुल्ला की स्त्री रोने लग गयी । अलदाद ने कहा । है क्या? तब कहा । मुल्लाजी फौत हो गय । लोग आकर इकट्ठे हुअे । मुल्ला को उठाया । अलैदाद ने कहा । मियाजी हमारे बडे दोस्त थ । हम भी साथ चलेंगे । अलदाद भी साथ हो गया । कब्र गाह म जाकर कब्र खोदी । पर्दा करके मुल्ला को भीतर रखकर ऊपर मिट्टी देकर सारे घरो की ओर मुडे । तब अलदाद खडा रहा । लोगो ने कहा । क्या भाई ! तुम क्या खडे हो ? डेरे को चलो । तब अलदाद ने कहा । मियाजी हमारे बडे प्रेमी थ । जीते हुअे चार दिन बातचीत की थी । तो अेक रात मरने पर साथ रहेंगे । तब लोग तो सारे घरो को गय । और अलैदाद वहा कब्र गाह के पास अेक मकबरा था सो उसमे जा बैठा । ढाल-तलवार पास म थी । बैठा इस नाम के वन की माला फेरता है ।—

–३–

जितन आधीरात गयी च्यार चोर आय सदा ही उसी मारग आवता
आय गार-सयाना मैं खडा रहया जितर नवी कवर देखी कहया—आज
नवी कवर दीसती है काई नवा पीर हुवा तद अेक चोर कहयो—नवा
[illegible] ! जो मरे हाथ चारी अच्छी-सी लग तो पाच रुपिया सीरणी चगाऊ
र सलाम कर कहया—नवा पीर ! जो मर दस्त अच्छी सी लग तो बाफ्ता
[illegible] चादर का चगाऊ तीमर कहयो—नवा पीर ! जो मर हाथ कुछ अच्छी-
भली लग तो पाच सेर सीरणी चगाऊ चौथे कहयो—नवा पीर ! जो मरे
[illegible] चारी लग तो तर नाक-कान काटू इण भात बछना कर च्यार वहार
[illegible] सू उस नी ज रात पातस्याह र पूरब का खजाना आया था गाडा रती
[illegible] था चार उठ जाय लागा चौकीदार सोय रहया गाडा फाडिया
नी दस मोहरा रुपिया री लावी गाठ अेक कपड री लीनी छावडा अक मिठाई
हाथ आयी बडा गजब कर हालिया जाय कवर ऊपर खडा रहया
जद हेक ता रुपिया पाच चगाया दूज गाठ माय-सू बाफ्ता चगाया तीसर

---

(३)

जितन म आधी रात बीत गयी । और चार चोर आय । सदा उसी मार्ग
[illegible] थे । सो आकर कब्रगाह म खड रहे । जितन म नयी कब्र देखी । बोल । आज
[illegible] नया कब्र दिखायी पडती है । कोई नया पीर हुआ । तब अेक चोर न कहा ।
नय पीर ! जो मर अच्छी-सी चोरी हाथ लग ता पाच रुपय सीरनी
[illegible]ढाऊ । दूसर न सलाम करक कहा ह नय पीर ! जो मरे हाथ अच्छी मा
[illegible] लग ता बाफ्त की अेक चद्दर चढाऊ । तीसरे न कहा । नय पीर !
[illegible] मेर हाथ कुछ अच्छा सी भली (अर्थात मनमता) लग ता पाच सेर (मिठाई)
[illegible] (=प्रसाद) चढाऊ । चौथ न कहा । नय पीर ! जो मरे हाथ चोरी लग
[illegible] तर नाक-कान काटू । इस प्रकार कामना कर (=मनौता मानकर) चारो
[illegible] हुअे ।

[illegible] उसी रात बादशाह के पूरब का खजाना आया था । गाडिया रेती म
[illegible] हुई थी । चार वहा जा लग । चौकीदार सो रहे थे । इनन गाडिया को
[illegible] । मुहरा रुपया की दस थलिया ली और अेक कपडे [illegible] । मिठाई
[illegible] अेक छबडा हाथ आयी । बडी खुशी (?) करक [illegible] पर
[illegible] हुअे (ठहर) ।

तब अेक न ता पाच [illegible] न [illegible]

छावडीम य-सू मिठाई चगायी तद चोथो गार खुणन लागा तद वली वहण लागा—गवार ! गोर क्यू खुणे ? तद उण कही—तुम ता तुम्हारा चढावा क्बूल्या था सू चाढया मैं कह्या है सू मैं ही करूगा तद उवा कह्यो—त क्या कबूल्या था ? तद दूवे कह्या—मैं नाक-कान पीर-के काटणे कबून थे सो गार खुण काटूगा तद वलिया कह्या—व कुटण ! असा-ही काई काम करै है ? जिम पीर न अमी फतै करी सू वडा अवलिया है तद उवै कह्या—क्या जाण मेरी-ही कबूलात ऊपर मह्रबान हुय है ता मैं कबूल्या है सा करूगा वनिया वरजियो घणो हो पण ओ ता रह्यो नहीं गार खुण परदम हाथ घात नाक पकडिया तद मुल्ला हाथ झाल लालिया—है व काई "हा ? तद मुल्ला री हाक सुणत सूवा अलदाद बाल उठिया—हाजर साहब ! ढाल-तरवार लिया आया चार भार नाख नाठा सू चलता रह्या मुल्ला पण कबर सू बाहर आया देखै ता मता वात पडी तद मुल्ला दूहा कहै—

अलदाद ! अल्ला-की वाता क्या करता क्या न कर ? ।
हसती मार गरद मैं डार रका न सिर छत्र धर ॥२॥

तीसरे ने छबडी म से मिठाई चगायी। तब चौथा कब्र खोदन लगा। तब साथी कहने लगे। रे गवार ! कब्र क्या खोदता है ? तब उसने कहा। तुमने तो अपने चढावे जो कबूल थे सो चढा दिये। मैंने कहा है सो मैं भी करूगा। तब उनने कहा। तूने क्या कबूला था। तब इसने कहा। मैंने पीर के नाक-कान काटना कबूला था सो कब्र खोदकर काटूगा। तब साथियो ने कहा। ब कुटन (या कूटन योग्य) ! कोई ऐसा भी काम करता है ? जिस पीर ने अभी फतह की सो बडा औलिया (सिद्ध) है। तब उसने कहा। क्या जाने मेरी ही कबूलियत (मनौती) पर महरबान हुये हो। सो मैंने जो कबूला है सो करूगा। साथियो ने बहुत बरजा। पर यह तो माना नहीं। कब्र खोदकर पर्दे म हाथ डालकर नाक पकडी। तब मुल्ला ने उसका हाथ पकड लिया और बोला। है व ! कौन यहा ? तब मुल्ला की हाक सुनते ही अलदाद बोल उठा। हाजिर साहब ! और ढाल तलवार लिये हुये आ पहुचा। चोर बोझ को पटक कर भाग सो चलते हुये।

मुल्ला कब्र म बाहर आया। देखता है तो बहुत माल पडा है। तब मुल्ला दोहा कहता है—

हे अलदाद ! अल्लाह की बातें देखो। क्या करता हुआ वह क्या नहीं कर डालता ? हाथी को मारकर धूल म मिला देता है। और गरीबो के सिर पर छत्र रखता है (उनको राजा बना देता है) ॥२॥

तद अलदाद कहयो—हा, मियाजी ! माई अस-हीज है मान मुल्ला देखण
तद अलदाद कहै—

दूहो—देख क्या मीया अबल्ला ! लेणा होय सो लय।
अभी खुदाय वाळो किसी का उठाय किसी-कू देय ॥३॥

इसी वहि माल समट भेळो कर गाठ बाध मुकबर म जाय बाटण बठा
आधो आध बाट लीनी हम अलदाद अधेलो मागियो तद मुल्ला दीठा
र बदळ रुपया दिया जाय नही अधेला कहै नही सू कहै—बडे फजर देंगे
दाद कहै—मेरे फेर कुण फिर ? अब देवो इय तर झगड छ

—४—

अर चोरा कह्या—रे ! बडो माल हाथ आयो थी पण इस कुटण-की
यी गयी पण खबर तो करो देखा केते हैं ? तद चोर अेक इया माय निकळ
बर आयो आग मुकबर मैं बोलाळा सुणिया तद जाय मुकबर र बारी थी
सिर घाल देखण लागो मुल्ला उणै बारी हेठ बठो थो अधारा मुकबर
रणो सूझ क्यू नही बोलनो सुणीज सू अधेल रो झगडो हुय रह्यो छ
बारी मैं सिर घालिया सुण छै इस मैं मुल्ला न उवासी आयी आळस मोड

तब अलदाद ने कहा। हा मियाजी ! मानिए असे ही हैं। मुल्ला माल
देखने लगा। तब अलदाद कहता है—
हे मिया अब्दुल्ला ! क्या देखता है ? जो लेना है तो ले ले। खुदा असी
धनी है कि किसी का उठाकर किसी को द देती है ॥३॥

(४)

इस प्रकार कहकर माल का समेटकर गाठ बाधकर बाटने के लिए मकबरे
जा बठे। सब आधा आधा बाट लिया। अब अलदाद ने अधेला मागा। तब
ल्ला ने सोचा—अधले क बदले म रुपया नही दिया जा सकता और अधेला
म नही। सो कहता है—सवेरे देंगे। अलदाद ने कहा—मेरे फिर कौन
देगा (देने को आवेगा) ? अभी दो। इस प्रकार झगड रहे हैं।
और (उधर) चारो ने कहा। अरे ! बडा माल हाथ आया था पर इस
टन का कमाई (करतूत) से चला गया। पर पता तो लगाओ देखें कितने
। तब उनमें से अेक चोर निकलकर मकबरे आया। आगे मकबरे म
बातचीत सुनी। तब मकबरे म खिडकी थी उसम सिर डालकर देखने
लगा। मुल्ला उसी खिडकी के नीचे बठा था। अधेरा मकबरे म बहुत
था। दिखायी कुछ देता नहीं। केवल आदमी बोलता सुनाई देता है।

हाय ऊचा किया सू चार रो सिर मुल्ला र हाथ म आय गया सू चार ता सिर काट लिया पाघ मुल्ला र हाथ माय रही मुल्ला लेय अलदाद र खाळ म नाखी—यट् ले तर अधेलै मैं

चोर नास जाय साथिया नै कह्या—इतन पीर भेळे हुय ह अधला-अधेला वाटिया आया जक कू अधला नाया था सू मरी पाघ खास दीवी मै ता जीव ल भागा सू साईन्साइ करता नीठ तुम ताई आया तद चार ता साम पाळ उठि गया मुल्लाजी अर अलदाद दोन धन कपड री पाडा कर घरा आया मुख सू खाधी विळसी असी खुदाय बावळी छ

सा अधेल का झगडा हो रहा है। चार खिडकी म सिर डाल सुन रहा है। इतने म मुल्ला को जम्हाई आयी। आलस माडकर हाथ ऊचे किय। सा चोर का सिर मुल्ला के हाथ मे आ गया। सा चार न ता सिर निकाल लिया पर पगडी मुल्ला के हाथ म रह गयी। मुल्ला न लेकर अलदाद की गोद म डाली। और कहा। यह ले तर अधल म।

चार न भागकर जाकर साथिया स कहा। इतन पीर इकटठे हुअ है कि अधेला अधेला बटवारे म आया। जक का अधला नहा मिला था सा उस मरी पगडी छीनकर दे दी। मैं तो जी लेकर भागा। मा खुदा खुदा करता वडी कठिनता म तुम तक आ पाया हू। तव चार ता सागध निकालकर उठकर चले गय। मुल्ला और अलदाद दोना धन की और कपडें की गाठे बाधकर घरा का आय। धन का सुख से खाया आर भागा। खुदा असी बावली है।

धनुष-भग

(अगारहवा गनाग्ने)

[राजस्थाना म रामायण भागवत जेव अन्याय पुराणो के अनेको अनुवाद रूपान्तर प्रस्तुत हुअ गद्य और पद्य दाना म। अधिकाश अनुवाद चारण ब्राह्मणा आदि क किय हुअे है। अमा ही अेक रूपान्तर रामचरित उसका धनुष भग प्रसग यहा उपस्थित किया गया है। रामचरित की कथा म स्थान-स्थान पर कथा के सात्विक रूप के दशन होते हैं।]

—१—

अेकरा प्रस्ताव श्रीपरसरामजी राजा जनक र प्राहुणा आया था तिवारइ परसरामजी नू भोजन हुवता था तिवारइ परसरामजी राजा जनक-न कह्यो गाळ गिरावा श्री महादेवजी रइ हाथ रा धनुष छ तिण री पूजा करि पछ जीमन करा निवारइ राजा जनक सीताजी न कह्यो—थ ढाळ गिरावो जिम परसरामजी धनुष री पूजा करइ तिवारइ सीताजी गोळ गिरावता थका डाबा हाथ सू धनुष उठायो अनै ढाळ दे नइ जीमणा हाथ-सू नीचो मनियो तर परसरामजी दीठा देख न अचरिज पायो—अ कन्या महाबळवत

तर राजा जनक परसरामजी नू पूछियो जू म्हारी पुत्री वर प्राप्त हुयी सो

---

(१)

अेक समय की बात (है) कि श्री परशुरामजी राजा जनक के पाहुन (होकर) आये थे। उस समय श्री परशुरामजी को भोजन होने वाला था (=भोजन किया जाने वाला था)। उस समय परशुरामजी ने राजा जनक से कहा कि गारा नाख्य (=आगन म गारा लिपवा दीजिये) श्री महादेवजी के हाथ का धनुष है उसकी पूजा करके पीछे भोजन कर (ग)। उस समय राजा जनक ने सीताजी को कहा। तुम गारा लिपवाओ (=लीपो) ताकि परशुरामजी धनुष की पूजा करें। उस समय सीताजी ने गारा देते हुअे बाये हाथ से धनुष को उठाया और दाये हाथ से ढाळ देकर (गारा लीप कर) नीचे रख दिया। तब परशुरामजी ने देखा। देखकर आश्चर्य पाया (=अचभित हुअे)। (मन म कहा—) यह कन्या बडी बलवान है।

किण-नू पाणि ग्रहण कराऊ? तिवारइ परसरामजी कहिया जू अे म्हारो धनुष चढावै तिण-नू पाणिग्रहण करावे तिवारइ राजा जनक कहिया—थे कह्यो सू परमाण, जिको ओ धनुष चढावसी तिण-न परणायीस

हिव उसा-हीज प्रतग्या भाली, जो अे धनुष चढावै तिण नू परणाऊ तिण वास्त सभा मडप रचायो छै अनेक देस-देस-ना वडा वडा राजवी आय मिलिया छ राणो रावण पिण आयो छै बीजा पिण राजा दुर्जधन युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम इत्यादिक अनेक राजवी आया छै पिण धनुष किण ही राजवी सती खिसइ नही राजा रावण-सो तो पिण खिस्या नही हाथ हेठ आयो सू निटठ काढियो राजा रावण खिसाणा पडि घरै गया आप रा मत्री राख कर कह्यो—अ कन्या कुण परणै, तिण री निगाह राखिज्या इम कहि घर गयो बीजा ही राजवी पिण खिसाणा पडिया

तरह राजा जनक विस्वामित्र रिखीस्वर-नू तडा मलिया तरइ विस्वामित्रजी श्रीरामचद्रजी-लखमणजी-नू साथ लनै आव छ तिवारइ गोतम रिखीसर री अस्त्री अहिल्या, सो गोतम रिखी र श्राप करि सिल हुयी पडी छइ तिण

तब राजा जनक ने परशुरामजी का पूछा कि मेरी पुत्री वर प्राप्ति के योग्य हुई (=विवाह योग्य अवस्था को प्राप्त हो गयी)। सो किसको पाणिग्रहण कराऊ (=किससे विवाह करू)। उस समय परशुराम जी ने कहा कि जो यह मेरा धनुष चढा दे उसका पाणिग्रहण कराना। उस समय राजा जनक ने कहा। आपने कहा सो प्रमाण। जो यह धनुष चढावेगा उसको ब्याहूगा।

अब (उन्होंने) यही प्रतिज्ञा पकडी (=ग्रहण की) कि जो यह धनुष चढावे (गा) उसको ब्याहू (गा)। इसके लिये सभा मडप सजाया है। अनेक देश-देशो के बडे बडे राजवी (राजवी=राजपति) आकर एकत्र हुए हैं। राजा रावण भी आया है। और भी राजा दुर्योधन युधिष्ठिर अर्जुन भीम इत्यादिक अनेक राजवी आये हैं। पर धनुष किसी राजा से खिसकता नहीं। राजा रावण से भी खिसका नहीं। (उसका) हाथ नीचे आ गया सो मुश्किल से निकाला (निटठ<अनिष्ट, निटठद)। राजा रावण खिसियाना होकर घर गया। अपने मत्री (वहा) रखकर (उनसे) कहा। इस कन्या को कौन ब्याहता है इसकी खबर रखना। यो कहकर घर गया। दूसरे राजवी भी खिसियाने पडे (=लज्जित हुए)।

तब राजा जनक ने ऋषीश्वर विश्वामित्र को बुलावा भेजा। तब विश्वामित्रजी श्री रामचद्रजी और लक्ष्मणजी को साथ लेकर आते हैं। उस

ानम गिमि श्राप दीयो तिवार अस्त्री कह्या—स्वामी ! म्हारो कदि उद्धार
मी ? तिवारद श्रीरामचद्रजी खेह पगा री लागी ति बार खह
ागत समा। दिव्य देह धरि न मिल आकाम-नू ऊगी
मो यू करता आग नदी आयी मु धीवर सिल उडता देखि न नावा ल न
ाठा पूठ सू साद घणा-ही किया पिण नावटिया नाव पाछी आण नहा
ावडिया कहै—थाहरा पग लागा सिल उडी छ ता माहरी नावा उड ता माहरा
कुटव भूखा मरइ म्ह माहरा हाथ-सू थाहरा पग धोय न नावा उपरि
ग्रमाणिस्या नदी पर उतारिस्या ति वार पग धाय न नदी पार ऊतरिया
धीवर-न कुटव सूधो ऊधरिया
पछ राजा जनक र नगर आया पछ राजा जनक विश्वामित्र रिख-नू घणो
आदर मान दिया हिव राजा जनक विश्वामित्रजी नू पूछ छ—अ बालक कुण रा
छ ? तर विश्वामित्र रिख कहिया—अ राजा दसरथ रा दीकरा छ बीजा
राजवी धनुष नू खस छ, पिण खिस नही तर श्रीरामचद्रजी विश्वामित्र-नू

समय ऋषीश्वर गौतम की स्त्री अहिल्या थी वह गौतम ऋषि के शाप स शिला
हुई पडी है। उन गौतम ऋषि ने शाप दिया उस समय स्त्री (=अहिल्या) न
कहा (था)। ह स्वामी ! मरा उद्धार कब हागा ?

उस समय श्री रामचद्रजी के परो की धल लगी। धूल के लगने के साथ
ही शिला दिव्य शरीर धारण करक आकाश को उड गयी।

सा अस करते (=इस प्रकार चलते चलते) आग नदी आयी। सो धीवर
(केवट) शिला को उडती देखकर नावा को लकर भाग गय। पीछ से शाद
बहुत हा किय (=आवाज बहुत ही दी) पर नाववाले नाव वापिस लाते नहीं
(पूठ<पृष्ठ साद<शब्द)। नाववाले कहत है। आपक पर लगन से शिला उड
गयी है तो हमारा नाव उड जाय तो हमारा कुटुब भूखा मर। हम अपन हाथ
स आपक पर धाकर नावा पर बिठायग और नदी क पार उतारग। तब
(श्रीराम) पर धाकर नदी पार उतर। धीवर का कुटुब सहित उधारा
(=उद्धार किया)।

पाछ राजा जनक क नगर म आय। पीछ राजा जनक न विश्वामित्र
ऋषि का बहुत आदर मान दिया। अब राजा जनक विश्वामित्र का पूछते हैं। य
बालक किसक है ? तब विश्वामित्र ऋषि न कहा—य राजा दशरथ क लडक हैं।

दूसर राजा धनुष म श्रमत हैं (=धनुष पर जार लगाते हैं) पर धनुष
खिसकता नहीं। तब रामचद्रजी न विश्वामित्रजी स पूछा है। यदि आप आना

पूछिया छै—जे थे आग्या दया ता म्हं ई धनुप जोवा ? तिवार विश्वामित्र कह्यो—जावा तिवारै राजा जनक कहिया—जे वाळक काम् आवसी ? तर विश्वामित्र कहियो—अ बाळक राजा दसरथ रा छ राजि जोवण द्या थाह रा मनारथ जै पूरण करमा

तर श्रीरामचद्रजी पळवट बाधि नै धनुप चाढण नू तयार हुवा तिवार लखमणजी नू कह्यो जू इतरा राजवी बठा छ तिहा म काई वीर न छ जू धनुप चढाव तिवारै लखमणजी कहियो—राजि यू कहीजै नही जा वीर कोई न छ, पिण धनुप बोदो छ राजि हुक्म द्या धनुप भाजि कुटका करू तर श्रीरामचद्रजी कहिया—तू शेपनाग रा अवतार छै पिण औ धनुप मो नू चाढणो सीता परणवी

तर श्री रघुनाथजी पाघडी रा पेच समारि काठा किया, पीतावर कडियै बाधिया अन बाहा दोऊ ऊची चाढी तर लखमणजी शेपनाग नू सारत दीवी जू त सावचेत हुजे प्रिथवी मता डुलण देज्यो पछै कूम नू कहिया—तू सावधान हुजे पछ दस दिगपाळा नू कहिया—थे सावधान हुज्यो प्रिथवी डुलण मता दयो

द तो हम भी धनुप देख । तब विश्वामित्र न कहा देखो । तब राजा जनक ने कहा । ये बालक क्या देखेंगे ? तब विश्वामित्र ने कहा । य बालक राजा दशरथ के है । आप देखन दे (राज=आप, श्रीमान) । आपके मनोरथ य पूर करगे ।

तब रामचद्रजी कमर बाध कर धनुप चढाने का तयार हुअे । पळवट= कमरबद (?) । उस समय लक्ष्मणजी स कहा कि इतन राजवशी बठ हैं । उनम कोइ वीर नही है जो धनुप को चढावे ? उस समय लक्ष्मणजी न कहा । आप असे मत कहिय कि काई वीर नही है। पर धनुप पुराना है । आप हुक्म दें तो धनुप का ताडकर (उसके) टुकडे कर दू । तब श्रीरामचद्रजी ने कहा । तू शेपनाग का अवतार है । पर यह धनुप मुझे चढाना है (चाढणा =चढाना) । (और) सीता को ब्याहना है ।

तब श्रीरामचद्रजी न पगडी के पेच सभालकर (ठीक करके) दृढ किय । पीताबर कमर म बाधा (कडि<कटि) । और दाना बाहे ऊचा चढायी । तब लक्ष्मणजी न शेपनाग का इशारा किया कि तू (=तुम) सावधान हो जाना । पृथ्वी को हिलन मत दो (=दना) । पीछे कच्छप म कहा । तुम सावधान हो जाना । पीछे दसो दिक्पालो को कहा । तुम सावधान हो जाना । पृथ्वी को हिलन मत दो (=दना) ।

इण मम श्री मीताजी गोग्व बठा देख छ श्री रघुनाथजी उठि जाय न विश्वामित्रजी-नू नमस्कार किया नमस्कार करि पग लागि माथ हाथ दिराय आय-न श्री रामचद्रजी डावा हाथ-सू धनुष उठाय लियो उठाय ल-न नमाया, नाय-न चढाया चढाय-न खाचिया खाचि न भाजिया सू धनुष नमाया तर सीता री लाज नमाया अनै जिवार धनुष खाचिया तिवार मीता रा मन खाचिया, इ धनुष भागा जिवार मीता रा मन रा सासा भागा

हिवै धनुष भाजता समय अरडाट हूवा सा परसराम तपस्या करता था जाणिया—औ कासू सबद हुआ ? गोख-थी मीताजी उतरी श्रीरामचद्रजी वरमाळ घाती देवताजे देव-दुदुभी बजायी फूला री वरखा कीवी राजा जनक र घर अनेक वाजा वाजिया जै जैकार सबद हुवा विश्वामित्रजी खुसी हुआ राजा जनक खुसी हुया अथ इण समीजे राणे रावण मत्री वीर राख्या था सो जाय रावण नू कहियो जू श्रीरामचद्रजी धनुष भागो मीता परणी

—४—

हिव राजा जनक विश्वामित्रजी नू कह्यो—थे लगन थापि दसरथजी वगा

उस समय म श्री सीताजी झरोखे म बठी देख रही है (गोख < गवाक्ष)। श्रीरामचद्रजी ने उठकर (और पास) जाकर विश्वामित्रजी को नमस्कार किया। नमस्कार करके परो म नत मस्तक कर सिर पर हाथ रखवा कर (और) आकर श्रीरामचद्रजी ने बाये हाथ से धनुष उठा लिया। उठाकर नमा कर झुका दिया। झुका कर चढा दिया (=प्रत्यचा चढा दी)। चढाकर खाचा। खीच कर तोड डाला। वह धनुष झुकाया तब सीता की लज्जा को झुकाया। और जब धनुष को खीचा तब सीता के मन को खीच लिया। और धनुष टूटा तब सीता के मन के सशय टूट गये (सासा < सशय सन्देह आशकाये दूर हुई)।

अब धनुष को तोडते समय जमा अरडाट (जोर का शब्द) हुआ कि परशुराम तपस्या करता था उसने जाना (=सोचा) यह क्या शब्द हुआ ?

सीताजी झरोखे से उतरी और उसने श्रीरामचद्रजी के वरमाला डाली। देवताओ ने देव-दुदुभी बजायी। फूलो की वर्षा की। राजा जनक के घर अनेक बाजे बजे। जयजयकार शब्द हुआ। विश्वामित्र जी प्रसन्न हुए। राजा जनक प्रसन्न हुआ। अब इस समय राणा रावण ने मत्री वीर (वहा) रखे थे उनने जाकर रावण को कहा कि श्रीरामचद्रजी ने धनुष तोडा सीता को ब्याहा।

(४)

अब राजा जनक ने विश्वामित्रजी से कहा—आप लग्न (मुहूर्त) स्थापित

तडाव्रो जू जान करि आवो तिवार श्री विश्वामित्रजी लगन थापि वधाईहार मल्हिया जू जान करि वेगा पधारो हिव राजा दसरथ बटा साथि ले सबळी जान करि मिथुला नगरी आय डेरा किया राजा जनक साम्हो आय मिलिया श्रीरामचद्रजी लखमणजी राजा दसरथ र पावै आय लागा राजा जनक राजा दसरथ रा च्यार बटा आप री बेटी भतीजी करि च्यारे चवरी बाधि न परणाया घणी भगति कीन्नी घणे पक्वाने करि घणा भात दिया घणी पहिरावणी कीन्नी घणो दायजा दीया घणा हाथी, घोडा बहिल सुखपाळ मझवाळा प्रमुख घणा, दास दासी खवास प्रमुख घणा देन हलाणा किया राजा जनक घणी भुय ताइ पुहचावण नू आया राजा जनक राजा दसरथ सू प्रणाम करि जुहार करि पाछो वळिया वसिष्ट रिखि विश्वामित्र रिखि रथा बठा साथ वहै छै राजा दसरथ रा रथ आगै छै वास श्री रामचद्रजी रो रथ छ घणा साथ घूमरै सू उछव करता वहै छै

करके दशरथजी को शीघ्र बुलावें कि बरात बनाकर आइये। तब श्री विश्वामित्रजी ने लग्न स्थापित कर बधाईदार भेजा कि बरात बनाकर शीघ्र पधारिये।

जब राजा दशरथ ने बेटों को साथ लेकर बडी बरात बनाकर (सबळी=सबल), मिथिला नगरी में आकर डेरे किये। राजा जनक सामने आकर मिला। श्रीरामचद्रजी (और) लक्ष्मणजी आकर राजा दशरथ के परो लगे। राजा जनक ने राजा दशरथ के चार पुत्रों को अपनी बेटियों और भतीजियों के साथ चार चौरियां (विवाह-वेदियां) बाधकर ब्याहा (भतीजी<भ्रातृजा)। बहुत सत्कार किया (भगति<भक्ति)। बहुत पक्वान बनाकर बहुत भात दिये (जेवनारें कीं)। बहुत पहिरावना (ओढावनी) की। बहुत दहेज दिया। बहुत हाथी घोडे गाडियां सुखपाल (पालकी) ताने रथ आदि बहुत से दास दासी सेवक आदि बहुत से देकर चलावा किया (=विदाई की)। राजा जनक बहुत दूर तक पहुंचाने को आया (भुय=भूमि, फासला दूरी)। राजा जनक राजा दशरथ से प्रणाम करके जुहार (अभिवादन) करके वापिस लौट गया। वसिष्ठ ऋषि (और) विश्वामित्र ऋषि रथों मे बठे हुअे साथ म चल रहे हैं। राजा दशरथ का रथ आगे है। पीछे रामचद्रजी का रथ है। पीछे महिलाओं का रथ है। बहुत दल साथ है। समारोह (?) के साथ उत्सव करते हुअे (=मनाते हुअे) चल रहे हैं।

—४—

अथ इण समाय परसरामजी माथै जटा गळै जनेऊ, कडिया भाथा हाथ मे र खवा ऊपर फरसी राता नेत्र किया गळगळारव करता गाजता गैर रमणा रूप किया आव छै ज्यू परसराम आवता दीठा ज्यू राजा दसरथ फौज चली जाय थी सो सरब ऊभी रही रथ ऊभा राख्या परसरामजी रामचद्रजी रा रथ आडो जाय ऊभो रह्यो

तिवार परसरामजी कहण लागा—रामचद ! त म्हारो धनुष क्या भागा ? रा म जुद्ध करि परसराम रो रूप देख न राजा दसरथ बीहना जू आ मोटा मचद्र बाळक विढण री सीख किसी ? परसराम आडो ऊभा

तिवार श्रीरामचद्रजी रथ थी उतरि न कहियो—म्हा न था वढ री सीख ई नही म्हे खित्री थ ब्राह्मण तिण वासत म्हे ब्राह्मण रा दास थाह र ठ जनऊ माहर हाथ सस्त्र माहरह हाथ अेक गुण था र गळ नव गुण, । न था समवड किसी ? जी माहरो गळो आ थाहरी फरसी थे जाणो ज्य रो पिण म्हे खित्री ब्राह्मण सामो हाथ न करा

---

(४)

अब इस समय परशुरामजी सिर पर जटा गल म जनेऊ (यज्ञोपवीत ण्णाबद्ध) कमर (कटि) पर तरकस हाथ म धनुष कधो पर परशु लाल लाल किये गभीर नाद करता हुआ गरजता हुआ भयानक डरावना रूप नाय आता है । ज्यो ही परशुराम को आता हुआ देखा त्यो ही राजा शरथ की सेना जो चली जा रही थी वह सारी खडी हो गयी। रथ खडे रख (=ठहरा लिये)। परशुरामजी श्री रामचद्रजी के रथ के सामने आकर खडा हो गया।

तब परशुरामजी कहने लग । रामचद्र ! तून मेरा धनुष क्यो तोडा ? तू मुझ स युद्ध कर। परशुराम का रूप देखकर राजा दशरथ डरा कि यह बच्चा(है) रामचद्र बालक (है) लडने की ममता कैसी ? परशुराम मार्ग रोककर खडा है। उस समय रामचद्रजी न रथ स उतरकर कहा—हम और आपकी युद्ध करने की बराबरी कोई नही। हम क्षत्रिय आप ब्राह्मण इस कारण हम ब्राह्मण के दास। आपके गले म जनेऊ मेरे हाथ म शस्त्र। मेरे हाथ म अक गुण (धनुष की प्रत्यचा) आपके गल म नौ गुण (नौ सूता वाला जनऊ)। हम और आपकी बराबरी कैसी ?- यह मेरा गला यह आपकी फरसी, आप (ठीक) समझे सा कर। परन्तु हम क्षत्रिय हैं। ब्राह्मण के सामने हाथ

ज्यू-ज्यू श्रीरामचद्रजी गुण मीननि करै त्यू-त्यू फरसरामजी घण बळ चढया त्यू-त्यू दसरथजी बीहै परसराम घणो बळ करण लागो तरै रामचद्रजी कहियो—परसरामजी ! आन्रा आप मिला परसरामजी मिलिया तरै रामचद्रजी तेज खाच लियो परसरामजी बाभण रो बाभण हुय गयो तिवारै परसराम रो धनुष भाथा उरहो लियो परसराम-नू कहियो—हिवद्द पर जाय वनखड रद विन्है तप करो परसराम नदी-तटै ब्राह्मण हुय तप करण लागो

राजा दसरथजी श्रीरामचद्रजी अजोध्या पधारिया राजा दसरथ राज्य करइ छ हिव विश्वामित्र-नू सीख दीधी

नही करते (=ब्राह्मण पर शस्त्र नही चलाते)।

ज्यों-ज्यो श्रीरामचद्रजी गुण विनती करते हैं त्यो-त्यो परशुरामजी अधिक बल म चढा त्यो त्यो दशरथजी भयभीत होते हैं (बीहै<विभेति)। परशुराम बहुत बल करने लगा। तब रामचद्रजी ने कहा। परशुरामजी ! आइये, अपन (=हम लोग) मिलें। परशुरामजी मिले। तब रामचद्रजी ने तेज खीच लिया। परशुरामजी ब्राह्मण-का-ब्राह्मण (ईश्वरीय तेज स रहित) हो गया। उस समय उनने परशुराम क धनुष और तरकस को ले लिया (उरहो=उरो, उरो लेणो मुहावरा है=ले लेना, इसी प्रकार परहो या परो देवणो=द देना)। परशुराम से कहा। अब दूर जाकर वनखड म तप कीजिय। परशुराम नदी के किनार ब्राह्मण होकर (=क्षत्रियत्व को छोडकर) तप करने लगा।

राजा दशरथजी और रामचद्रजी अयोध्या पधारे। राजा दशरथ राज्य करत हैं (=राज्य करने लग)। अब विश्वामित्र को विदा दी।

राव मालदे

(उन्नीसवा शताब्दी—उत्तराध)

(आसियो वांकीदास)

[वाकीदास आसिया शाखा के चारण थे। इनका जन्म स १८३८ म भियावास गाव म हुआ। सवत १८६० म ये जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह गुरु आयस देवनाथ के सपक म आये। उन्होंने इन्हें महाराजा के सामने उपस्थित किया। महाराजा इनकी विद्या और कवित्व-शक्ति से अत्यन्त प्रसन्न और इन्हें लाखपसाव पुरस्कार दिया। इनकी मृत्यु स १८६० म सावन ३ को जोधपुर म हुई।

वाकीदास बडे स्वाभिमानी और स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति थे। कवि के म इनका व्यक्तित्व बडा प्रभावशाली था। स १८७० म जयपुर नरेश मानसिंह के साथ आये हुए कविवर पद्माकर का इनके साथ शास्त्रार्थ हुआ सम ये विजयी हुए। महाराजा मानसिंह के व्यवहार से प्रसन्न होकर इन्होंने याची व्रत अर्थात महाराजा को छोडकर और किसी से न मागने का व्रत ण कर लिया। एक बार उदयपुर के गुणग्राही महाराणा भीमसिंह ने इन्हें रस्कृत करने के लिए अपने सरदारों को भेजकर बुलाया पर इन्होंने क्षमा ाथना कर ली। ये आशु कवि होने के साथ साथ डिंगल व्रजभाषा सस्कृत ारसी के विद्वान् और इतिहास के अच्छे ज्ञाता थे।

इनकी पद्य रचनाओं का सग्रह नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से वाकीदास थावली नाम से तीन भागों म प्रकाशित हो चुका है। इनका गद्य ग्रथ *वाकीदास री ख्यात* है जो श्री नरोत्तमदास स्वामी के सपादन म राजस्थान ाच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर से छपा है। इसम लगभग २००० बातों का ग्रह है। ये बातें छोटे छोटे फुटकर नोटों के रूप म है। लेखक को जो ात महत्त्वपूर्ण लगी उसे उसने नोट कर लिया। इतिहास की दृष्टि से यह न्थ बडा महत्त्वपूर्ण है।

सकलित अश वाकीदास री ख्यात स लिया गया है। यह अश उन्नीसवी

शताब्दी के उत्तरार्ध के गद्य का नमूना है। इसमें जोधपुर नरेश राव मालदे का इतिहास है जिसमें शेरशाह सूर तथा मिर्जा शरफुद्दीन के साथ के युद्धों का तथा मेड़ते के शासक वीरम और जयमल के साथ के संघर्ष का वर्णन है।]

(१)

राव मालदजीरा सवत १५६८ रा पोस वद १ रो जनम सवत १५८८ रा सावण सुद १५ पाट बैठा राव मालदजी

सवत १५९२ रा माह वद २ नागोर खान नू मारिया नागोर लियो सवत १५९४ रा असाढ वद ८ सिवाणो लियो डूगरसी जैतमाल कना-सू सवत १५९६ रावजी वीरा सीधल नू मार भाद्राजण लिवी सवत १५९८ बीकानेर लियो कूपोजी फौज ले गया हुता चैत वद ५ जैतसी मारियो सवत १५९८ चैत वद १२ रावजी पधारिया बीकानेर झूझण फतपुर कूपाजी नू वधारा म दिया सवत १६०२ रावजी डूगरसी हमीरोत कना-सू लिवी फळोधी सवत १६०८ रावजी पोहकरण लिवी

पचाळी अभा आजावत मालदजी र कामती

(२)

जैतजी कूपजी वीरमद दूदावत नू मेड्त रिया सू अजमेर सू डीडवाना माह

---

(१)

राव मालदेवजी का स. १५६८ के पौष वदि १ को जन्म। स. १५८८ के सावन सुद १५ (को) सिंहासन बैठे राव मालदेवजी।

सवत १५९२ के माघ वदि द्वितीया (को) नागोर के खान को मारा और नागोर लिया। स. १५९४ के आषाढ़ वदि ८ (को) सिवाणा लिया डूगरसी और जैतमाल के पास से। स. १५९६ (में) रावजी ने वीरा सीधल को मारकर भाद्राजण ली। सवत १५९८ (में) बीकानेर लिया। कूपाजी फौज लेकर गये थे। चैत्र वदि ५ को राव जैतसी को मारा। सवत १५९८ चैत वद १२ को रावजी बीकानेर पधारे। झूझणू और फतहपुर कूपाजी को अतिरिक्त (?) दिये। सवत १६०२ में रावजी ने डूगरसी हमीरोत से फळोधी ली। सवत १६०८ में रावजी ने पोकरण ली।

पचाळी अभा आजावत मालदेवजी के कामदार (प्रधान मंत्री) था।

(२)

जैताजी और कूपाजी ने दूदा के बेटे वीरमदे को मेड़ते और रियां से अजमेर से डीडवाने में से और बाळा में से निकाल दिया। बाळा में वीरमदजी

वाठो माट-सू काढियो बोली वारमदजी कह्या—कूपाजी ! अठा-सू ता हरा काढिया नहीं जासू मरसू कूपाजी कह्यो—तो मारसी जद जलाजी राजी-नू कह्यो—वीरमदे-नू मारणा नहीं वारमदे बडा रजपूत है जावतो रयो कयाहिक-नू आण आपणो मरण सुधारसी

उठा-सू वीरमदे माडव रा पातसाह कन गया उण खरची दिवी पछ पूरब म जाय सूर पातसाह नू आणियो सूर पातसाह आया जद वमो सिरोही ना असी हजार घोडा-सू रावजी वावर जाय डेरा किया चापा जसो कदासोत जलाल जलूका रा घाडा पातसाह रा मूडा आगे आयो पछ राव मालदेजी रो साथ पीपळोद गयो भाटी सादूर सूराजन अजमेर रो किलादार ना अजमेर रा गढ छूटो जद मरण माडियो हो पिण सावरा मरण दियो नहीं असुर पातसाह जोधपुर रा गढ लिया जद गढ माथै काम आयो गढ म छतरी राठोड रामसिंघ ऊहड, राठोड सीकर जतसिंघोत ऊनावत इत्यादिक गढ ऊपर काम आया

कहा—कूपाजी ! यहा से तो आपको निकाला नहीं जाऊंगा (=निकलूगा) मरूंगा। कूपाजी ने कहा—तो मारेंगे। तब जलाजी ने कूपाजी से कहा—वीरमदे को मारना नहीं वारमदे बडा राजपूत है जीता रहा तो किसी को लाकर अपना (=हमारा) मरण सुधारेगा (किसी बहुत बडे व्यक्ति को हम पर चढ़ाकर लावेगा जिससे लडकर हम मारे जायेगे और इस प्रकार मारे जाने से हमारा मरण धन्य होगा)।

वहा से वीरमदे माडा के बादशाह के पास गया। उसने खर्च के लिये रकम दी। पीछे पूर्व (देश) में जाकर सूर बादशाह (शेरशाह सूर) को लाया। सूर बादशाह आया तब (राव मालदेव ने) अपने परिवार को सिरोही भेज दिया। अस्सी हजार घोडो के साथ रावजी ने वावरे में जाकर डेरे किये (ठहरे)।

चापा शाखा का भरूदास का बेटा जसा जलाल जलूका का घोडा बादशाह के मुह आगे से (=सामने में) [redacted] आया। पीछे राव मालदेवजी के साथ पीपळोद गया।

भाटी सादूर सूराजन अजमेर का किलेदार था। अजमेर का गढ छूटा (अधिकार से निकला) तब मरने की तयारी की थी। पर सबका ने मरने नहीं दिया। मुसलमान बादशाह (शेरशाह) ने जोधपुर का दुर्ग लिया तब दुर्ग पर (लडता हुआ) काम आया (=मारा गया)। दुर्ग में (उसकी) छत्री (=स्मारक) है। राठोड रामसिंह ऊहड राठोड सीकर जतसिंह का बेटा

सूर पातसाह वरस १ जोधपुर रै गढ रह्यो सवत १६०१ पोस वद ५ देहरो पाड मसीत करायी पछै गोकुळदास पाज बधावी, तळाव री राग भरायी सूर पातसाह गया मारवाड सू जद भीगसर पाच हजार घाडा थाणा राख गयो रावजी जोधपुर आया थाणा नू वेढ करि उगम्या इतरा रावजी र काम आया— राठोड ऊभो वरसिंघात माणस ४०० स मत रहिया रावळ हाफो वरसिंघोत लाठै पर उपडिया राठाड जभो हाफा माणस ८०० घोडा रा असवार ओठी पाळा महेवा-सू साथ लाया हुता जसिंघ भरूदास धापावत रो साहे पड उपडिया

सवत १६०० पातसाह सरसाह सू हार राव मालदेजी सिवाणा री भाखरा गया सवत १६०३ सलेमसाह मुवो जद तुरक जाधपुर रो गढ छोड खवासपुरै नसेदनीखा खवासखा कनै गया मडोवर रा माळी गढ म आया, रावजी नू खबर दिवी रावजी जोधपुर पधारिया

(३)

पछ वरस सात रावजी मडता नू लागा सवत १६१० रा वसाख वद २

ऊदावत शाखा का इत्यादि वीर दुग पर काम आये।

सूर बादशाह अेक वष जोधपुर के दुग मे रहा। स १६०१ पौष वदि ५ (को) मन्दिर को उखाडकर मसजिद बनवायी। पीछे गोकुलदास ने तालाब की पाट बधवायी भरवायी।

सूर बादशाह मारवाड से गया तब भीगसर मे पाच हजार घाडो का थाना (=चौकी) रख गया। रावजी जाधपुर (लौट) आये। थाने का लडाई करके उठा दिया (उद्+गम स)। इतने (लोग) रावजी के मारे गय—वरसिंह का वंश राठाड ऊभा चार सौ आदमियो के साथ खेत रहा (=मारा गया)। वरसिंह का बेटा रावल हापा शस्त्र पर पडकर मारा गया। राठाड जभा और हाफा आठ सौ घुडसवार ऊटसवार पदल महेवा से साथ लाय थे। भेरु दास चपावत का बटा जसिंह शस्त्र पर टूटकर मारा गया।

सवत१६००म बादशाह शेरशाह से हारकर राव मालदेजी सिवाने के पहाडा म गय। सवत १६०३ म सलेमशाह (=शेरशाह का बेटा) मरा तब मुसलमान जोधपुर का दुग छोडकर खवासपुरे म नसरुनीखा खवासखा के पास गय। मडोर के माली दुग म आये। रावजी का खबर दी। रावजी जोधपुर गय।

(३)

पीछे सात वष रावजी मडत का लगे रह (मडता के पीछे लगे रह—मडता स युद्ध करते रह)।

ा ऊपर रावजी आया मडत कुडळ तळाव माथै जमल रावजी-मू राड ो जमल वीरमदेवोत दवजोग-मू जातो रावजी रा हत्ता ठावा मिनख काम ा—धना भारमलोत वानो १ राठोड नगो भारमलोत थानो २ प्रथीराज तिन ३ राठाड जगमाल उदैकरण ४ राठोड मूजा जतमिघोत ५ साहड ो जसवत ६

सवत १६१० रा असाढ वद १३ राठोड देईदास जतावत न कवर चन्द जी-नू मालदेजी मडता माथ विदा किया जमलजी-नू काढि मडता म अमल या

(४)

सवत १६१३ फागण वद १२ हाजीखान मू राणा उदैसिघजी रै अदावदी ी गाजीखान पठाण हा हाजीखान राव मालदेजी मू साधी राव मालदेजी रा ठावा मिनख हाजीखान री मदत मेलिया—राठाड देवीदास जतावत १ राठाड रावळ मेघराज हापावत २ राठाड जगमाल वीरमदेवोत ३ राठाड तमाल जसावत ४ लखमण भादावत ५

राणा-जा रा साथ री विगत—राठोड जमल वीरमदवात १ राव

सवत १६१० के वैशाख वदि २ (को) रावजी मेडते पर आये। मेडते म कुडल तालाब पर जयमल वीरमदेवोत ने रावजी से लडाई की। जयमल वीरमदेवोत दवयोग स जीता। रावजी के खास विश्वास के आदमी काम आये—धना भारमल का बेटा वाला राठाड नगा भारमल का बेटा वाला पृथ्वीराज जतावत राठाड जगमाल उदयकरण राठाड सूजा जतसिंह का बेटा सीहड पीथा जसवत।

सवत १६१० के आषाढ वदि १३ को राठाड देवीदास जतावत और राजकुमार चन्द्रसनजी को मालदेजी ने मेडते पर रवाना किया। (उन्होंने) जयमलजी को निकालकर मेडते पर अधिकार किया।

(४)

सवत १६१३ फागुन वदि १२ को हाजीखान से राणा उदयसिहजी के खटपट हुई। हाजीखान पठान था। (तब) हाजीखान ने राव मालदेवजी से मेल किया। राव मालदेवजी ने खास विश्वासी आदमी हाजीखान की मदद म भेजे—राठोड देवीदास जतावत राठाड रावळ मेघराज हापावत राठोड जगमाल वीरमदेवोत राठाड जैतमाल जसावत और लखमण भादावत।

कल्याणमल बीकानेरिया २, रावळ प्रताप वासवाळा रा ३, रावळ आसकरण डूगरपुर रा ४ रावळ तेजो देवळिया रा ५ सराठा रामा जाजपुर रो धणी ६ सुरजण बूदी रो धणी ८, राव दुरगा रामपुर रा धणी ६ राव रामचद्र तोडरी रो धणी ७ राव नारायणदास इत्यादिक राणा रो सिरदार

अजमेर सू कोस १२ हरमाडो गाव जठ राड मडी १६१३ फागण वद १२ राणाजी रा उमराव वालीसो सूजा जसवतोत राठोड देवीदास जैतावत रे हाथ रह्यो जैतारणियो तेजसी डूगरसी उन्दावत रा राणाजी रा उमराव आछी तरह काम आयो खेत हाजीखान रै हाथ रह्यो

रावजी जतारण हुता जतारण-सू डोढ हजार घोडो हाजीखा री मदत मेलियो हो हाजीखान जीतो ऐ समाचार रावजी सू मालम कराया

(५)

रावजी मेडते पधारण री त्यारी किवी जद जासूसा खबर दिवी—जयमलजी रा कोई आदमी मडता म नही है

राणाजी के साथ का विवरण—राठोड जयमल वीरमदेव का बेटा राव कल्याणमल बीकानेर वाला रावल प्रताप वासवाडे का रावल आसकरण डूगरपुर का रावल तेजा देवलिये का सराठा रामा जहाजपुर का स्वामी राव रामचन्द्र टोडरी का स्वामी राव सुरजन बूदी का स्वामी राव दुर्गा रामपुर का स्वामी राव नारायणदास, इत्यादि सरदार राणा के साथ थे।

अजमेर से १२ कोस पर हरमाडा गाव है वहा लडाई हुई सवत १६१३ फागुन वदि १२ को। राणाजी का सरदार बालीसा शाखा का सूजा जसवत का बेटा राठोड देवीदास जैतावत के हाथ से खेत रहा (=मारा गया)। जैतारण का तेजसी डूगरसी उन्दावत का बेटा राणाजी का सरदार भली भाति (लडकर) काम आया। खेत हाजीखा के हाथ रहा (=विजय हाजीखा की हुई)।

(उस समय) रावजी जतारण मे थे। जतारण से डेढ हजार घोडा (=घोडो का दल घोडे) हाजीखा की मदद को भेजा था। हाजीखा जीता। ये समाचार रावजी से (=रावजी को) मालूम करवाये।

(५)

तब रावजी ने मेडते जाने की तयारी की। तब जासूसो ने खबर दी कि

सवत १६१३ फागण सुद १३ मडत पधारिया जयमलजी रा माणस गिररी ाउर ससेळ केइक दिन रह्या हळ जातीय रावजी मेडतिया री जायगा नाखी

सवत १६१४ मडत मालकोट री नीव दिरायी सवत १६१६ मालकोट पूरण वणिया जद राठोड देईदास जतावत-नू साथ घणा सू मालकोट थाण ाखियो सवत १६१८ रा आसोज वद म राठोड देईदास जतावत राठाड ाना नगावत जाळोरगढ लियो मलिक खूनखा नू काढियो आसोज सुद ५ कवर चदरसेण जाळोरगढ चढिया

पछ जयमलजी बधनोर-सू जाय अकबर पातसाह रा उमराव मिरजा सरफुद्दीन-नू पातसाही लसकर समत मेरत मालदेजी रा साथ साम आणियो सवत १६१८ रा चत सुद ५ रावजी रा साथ-सू लडाई हुई फत मिरजा री हुई, रावजी रा उमराव काम आया मिरजा रो साथ घणो काम आया खेत मिरजा र हाथ रयो मेरतो लियो

जयमलजी का कोई आदमी मेरते म नही है।

सवत १६१३ की फागुन सुदि १३ को (रावजी) मेरते गय। जयमलजी क आदमी गिररी बाखरा और ससेल म कई दिनो तक रहे। रावजी ने मडता वालो की जगह (भूमि) को हल जुतवा कर गिरवा दी (=मकान गिरवा कर हल जुतवा कर भूमि को बराबर कर दी)।

सवत १६१४ म मडते म मालकोट की नीव दिलवायी। सवत १६१६ म मालकोट पूरा बन गया तब राठोड देवीदास जतावत का बहुत सनिक-समूह क साथ मालकोट म चौकी पर रखा।

सवत १६१८ की आसोज वदि म राठोड देवीदास जतावत और राठाड पत्ता नगावत ने जालोरगढ लिया। (वहा के) मलिक खूनखा को निकाल दिया। आसोज सुदि ५ को कुवर चद्रसेन जालोरगढ पर चढा (=चढाई की)।

पीछे जयमलजी बदनोर स अकबर बादशाह क उमराव मिर्जा शरफुद्दीन को बादशाही सेना क साथ राव मालदवजी क साथ के मुकाबले म लाया। सवत १६१८ क चत सुदि ५ को रावजी क साथ स लडाई की। जीत मिर्जा की हुई। रावजी के सरदार काम आये। मिर्जा का साथ बहुत सा काम आया (=मारा गया)। खेत मिर्जा के हाथ रहा। (उसने) मेडता ले लिया।

रावजी न कुवर चद्रसेन को मडत देवीदासजी क पास भेजा। राठोड

रावजी कवर चद्रसेणजी नू मेडत दवीदासजी कनै मलियो राठाड प्रथीराज कूपावत १, सोनगरो मानसिघ अगराजात २ राठाड सावळदास ३ और ही उमराव कुवरजी र साथै मलिया दाय हजार घाडा साथै मलिया रावजी कह्या—व‍ करण रो ढव हुव तो वढ कीज्यो नहा ता दवीदासजी न ल नै उरा आवज्या

अ मेडतै गया पातसाही फौज मवळी देखी आ डेरा पाछा किया देवीदासजी मुरड मालकोट म पठा मुगना मालकाट घेरियो राठाड सावळदास उर्दसिघात मुगना साथै पडिया चाकर काट म घाल ल निसरिया मुगल लार चढिया च्यार नाम माथ आय पडिया सावळदास भली भात काम आयो

मालकाट घेरो मुगल नित होवा कर रावजी निन दईदासजा न लिख—थे तो थारो नाम करो हो पण म्हारी ठकुराई लोवा हो सवत १६१८ रा फागण वद घेरा लागा मालकाट रा बुरज अेक सुरग म उडिया मुगल हल्ला उपर हल्ला कर जद जैमलजी नू सरफुद्दीन वात करी

मालकोट बारै देवीदासजी निसरिया जमलजी सरफुद्दीन मालकोट री

पृथ्वीराज कूपावत, मानगरा मानसिंह अखैराजात राठोड सावळदास तथा और भी सरदार कुवरजी के साथ भेज। दो हजार घोडे साथ भेजे। रावजा ने कहा—लडाई करने का ढब हो तो लडाई करना नही तो दवीदासजी का लेकर चले आना (उरा=इधर, उरा आवणो यह मुहावरा है जिसका अथ है चला आना इसी प्रकार परो जावणा=चला जाना)।

ये लाग मेडते गये। बादशाही फौज मबल देखी। उन्होंने डेरे लौटा लिय (=वापिस आ गय)। दवीदासजी लौटकर मालकोट म पठ गय (पठा < प्रविष्ट)। मुगलो ने मालकोट को घेर लिया। राठोड सावलदास उदसिंहोत मुगलो के साथ (लडता हुआ) गिरा। सेवक कोट मे डालकर लेकर निकल गये। मुगल पीछे चढे। चोर कोस पर आकर टूट पडे। सावलदास भली भांति (लडकर) काम आया।

(मुगलो ने) मालकोट के घेरा (डाल दिया)। मुगल नित्य हमला करते है। रावजी नित्य देवीदासजी को लिखते हैं कि आप तो अपना नाम कर रहे हो पर मेरा राज्य खो रहे हो। सवत १६१८ की फागुन बदि म (मालकोट का) घेरा लगा। मालकाट का अेक बुज सुरग से उड गया। मुगल हल्ले पर हल्ला करते हैं। तब शर्फुद्दीन ने जयमलजा से बात की।

गाळ आग ऊभा देख रावजी देवीदासजी नू दिवी हुती वा रा खिजमतदार र कन हुती जेक मुगल वदूक लेण भूकिया वदूक कडियाळी गडी मुगल र माथ जडी गडी रा लगणा नू नाक म भेजी निसरी मुगल मर गया आ काम देख जमल सरफुद्दीन नू कह्यो—देवीदास जीवतो जोधपुर गयो तो रावजी-नू आपा उपर जरूर ले आवसी इण नू मार लेणो आ सला करी

सरफुद्दीन जमल फौज ले चढिया गाव सातळियावास जाय पोहता आ री फौज रो नगारो आ गोइंददासजी सुण घोडा ठामिया

सवत १६१८ रा चत सुदी १५ राठोड जमल मिरज सरफुद्दीन गाव सातळियावास रावजी मालदेजी री फौज-सू जग कियो राठोड देवीदास जतावत वगर रावजी रा घणा उमराव माराणा देवीदास जतावत कन घोडा पाच स हुता न जमल कन मिरजा सरफुद्दीन कन घणी फौज हूती देवीदास रुस्तम ज्य जग कर काम आयो

(६)

आ वात हुया पछ मडता माथ रावजी कटक किया नही इण राड हुआ

देवीदासजी मालकोट के वाहर निकले। जयमलजी और सरफुद्दीन मालकोट की पौर के सामने खडे देख रहे हैं। रावजी ने देवीदासजी को जो वदूक दी थी। वह उनके खिदमतगार (=सेवक) के पास थी। जेक मुगल बदूक लेने को झपटा तब देवीदासजी ने कडीदार लाठी मुगल के सिर पर मारी। लाठी के लगने से भेजा नाक में जाकर निकला और मुगल मर गया।

यह काम देखकर जयमल ने सरफुद्दीन को कहा—देवीदास जीता हुआ जोधपुर चला गया तो रावजी को अपने पर (=हमारे उपर) जरूर (चढा) ले आवेगा। इसको मार लेना है। यह सलाह की।

तब जयमल (और) शरफुद्दीन फौज लेकर चढे। गाव सातलियावास में जा पहुचे। इनकी फौज का नगारा (नगारे का शब्द) सुनकर इन गोविंददासजी ने घोडो को ठहराया। सवत १६१८ के चैत्र सुदी १५ राठोड जयमल और मिर्जा शरफुद्दीन ने सातलियावास गाव में रावजी मालदेवजी की फौज से युद्ध किया। राठोड देवीदास जैतावत आदि रावजी के बहुत-सारे सरदार मारे गये। देवीदास जैतावत के पास ५०० घोडे थे और जयमल के पास और मिर्जा शरफुद्दीन के पास बहुत फौज थी। देवीदास रुस्तम जैसे युद्ध करके काम आया।

(६)

यह लडाई होने के बाद रावजी ने (फिर) मेडते पर सेना नही भेजी

गढ़ आठवैं महीन राव मानदेजी दवलाक हुवा राव चदरसेण रैं भाइया-सू अणवणत रही जिण सू मेडता रा नाव न लियो सरफुद्दीन दिली गया जैमल रो बटो वीठळदास मेडता री जागीरी मुजब घोडा रजपूत ल पातसाह अकबर री चाकरी म गयो

सवत १६१६ रा काती सुदी १२ जोधपुर राव मालदेजी दवलाक हुवा जोधपुर, सोजत पोहकरण राव चद्रसेण र फळोधी उदसिघ र सिवाणा रायमल र रह्या

(=चढाई नहीं की)। इस लडाई क होन के बाद आठवे महीन म राव मालदव जी दवलोक हुअे (=स्वग सिधार)।

राव चद्रसन की (जो मालदवजी का उत्तराधिकारी हुआ) भाइयो से अनबन रही। जिससे उसन मडता का नाम नहीं लिया। सफुद्दीन दिल्ली गया। जयमल का बटा विट्ठलदास मडता की जागीर के मुजब घोड और राजपूत (=सनिक) लकर बादशाह अकबर की सेवा म गया।

स १६१६ की कार्तिक सुदी १२ को जोधपुर म राव मालदेवजी देवलोक हुअ। जोधपुर सोजत और पोकरण राव चद्रसन के फलौदी उदयसिंह के और सिवाणा रायमल क (अधिकार म) रहे। (चद्रसेन उदयसिंह और रायमल राव मालद के पुत्र थ)।

जेसळमेर-र पटवा-रो सघ
(उनीसवी शताब्दी—चतुथ चरण)

[शिला-लेख]

[सकलित अश उन्नीसवी शताब्दी के उत्तराध के शिलालखीय गद्य का नमूना है। सवत १८६१ मिति आषाढ सुदी ५ को भटटारक श्री जिनमहेन्द्र सूरि की प्रेरणा स जेसळमेर क सुप्रसिद्ध पटवा-परिवार न सपरिवार सिद्धाचल तीथ की यात्रा का सघ निकाला था। इस शिलालेख म उसी का वणन है। सपरिवार सघ की निकासी स्वागत सत्कार रथयात्रा प्रतिष्ठा भोज सघ-व्यय सघ प्रब ध आदि क विवरण बडी बारीकी के साथ दिय गय है।]

सवत १८६१ रा मिति आषाढ सुदि ५ दिन श्री जेसळमेर नगरे महाराजाधिराज महारावलजी श्री१०८ श्री गजसिंघजी राणावत श्रीरूपजी बापजी विजय-राज्य वहत्खरतर भटटारक गच्छ जगम युग प्रधान भटटारक श्रीजिनहष सूरिभि पटप्रभाकर जगम युग प्रधान भटटारक श्री १०८ श्री जिनमहेन्द्रसूरि उपदशात श्रीबाफणा गात्रे देवराजजी तत्पुत्र गुमानचदजी भार्या जेता तत्पुत्र ५—(१) बहादरमल्लजी भार्या चतुरा (२) सवाईरामजी भार्या जीवा (३) मगनीरामजी भार्या परतापा (४) जोरावरमलजी भार्या चौथा (५) प्रताप

सवत १८६१ के मिती आषाढ सुदि ५ क दिन श्री जेसलमेर नगर म महाराजाधिराज महारावलजी श्री १०८ श्री गजसिंघजी राणावशीय रानीजी श्री रूपजी जन पितृ-तुल्य क विजयी राज्य म वृहत खरतर के भट्टारक गच्छ के जगम युग प्रधान भट्टारक श्री जिनहष सूरि के पट्ट प्रभाकर जगम युग प्रधान भट्टारक श्री १०८ श्रीजिनमहेन्द्र सूरि के उपदेश स—

श्री बाफणा गोत्र म देवराज जी। उनक पुत्र गुमानचद जी जिनकी पत्नी जेता। उनक पुत्र पाच—१ बहादुरमलजी पत्नी चतुरा २ सवाईरामजी पत्नी जीवा ३ मगनीरामजी पत्नी प्रतापा ४ जोरावरमलजी पत्नी चौथा ५

ददजी, भार्या माना—सपरिवार महितन मिद्धाचळजा रा सघ काढ्या जिण री विगत—

जेसळमर उदपुर काट-सू कुम-पत्र्या मव दमावरा मे दोनी च्यार च्यार जीमण किया नाळेर दिया पछ मघ पाली भेळो हूवा उठ जीमण च्यार किया मघ तिलक करायो मिति मद्दा सुदि १३ न्नि भट्टारक श्रीजिनमह‌द्रसूरिजी श्रीचतुर्विध सघ-समक्ष दिया पछ मघ प्रयाण किया

माग म दमना सुणता, पूजा पडिकमणादि करता माते क्षेत्रा म द्रव्य लगावता जायगा जायगा सामेळा हाता, रथ जात्रा प्रमुख महाच्छव करता श्री पचतीर्थीजी बाभणवाडजी आवूजी जीरावळाजी तारगाजी सखेश्वरजी पचासरजी गिरनारजी तथा मारग माहे सहरा रा सव देहरा जुहारधा इण भात सब ठिकाणें मदिर मन्दिर दीठ चढापा किया मुगट कुडळ हार कठी भुजवध कण श्रीफळ नगदी चद्रवा पूठिया इत्यादिक माटा तीथ माथ चढापो घणा हुवो गहणो सब जडाऊ हो सब ठिकाण लाहण जीमण किया सहसा व्रन रा पगथिया कराया

प्रतापचदजी पत्नी माना। इहान परिवार सहित सिद्धाचलजी का सघ निकाला। उसका विवरण (नीचे है)।

जेसलमेर उदयपुर कोटे से कुकुम पत्रिया सब बाहर के गावो म दी। चार जीमण (=भोज) किय। नारियल दिये। पीछे सारा सघ पाली म इकटठा हुआ। वहा चार भोज किय। सघ तिलक करवाया मिती माघ सुदि १३ के दिन भट्टारक श्रीजिनमहेद्रसूरिजी ने चारो प्रकार के सघ (साधु साध्वी श्रावक और श्राविका=चतुर्विध सघ) क सामन (तिनक) दिया। पीछे सघ ने प्रस्थान किया।

माग म दशना सुनते पूजा प्रतिक्रमण आदि करते, साता पुण्य क्षेत्रा म द्रव्य खच करते जगह जगह अगवानी (=स्वागत) होने रथ-यात्रा आदि महोत्सव करते श्री पचतीर्थीजी वामनवाडजी आवूजी जीरावलाजी तारगा जी शखेश्वरजी, पचासरजी गिरनारजी का तथा माग म शहरो के और गावो के सब मदिरो का, अभिवन्दन किया। इस प्रकार सभी स्थानो मे प्रत्येक मदिर म चढावा किया। मुकुट, कुडल हार कठी भुजवध कड नारियल नकदा चन्दोव पूठिये इत्यादि। मोटे तीथ पर चढावा बहुत हुआ। गहना सब जडाऊ (=रत्नजटित) था। सब स्थानो पर लाहन और भोज किये। सहसावन की सीढियाँ बनवायी।

उठ सू सात कोस ठर गाम सू श्रीसिद्धगिरिजी मात्या सू वधाय न पालीताणै डा हगाम-सू गाजा-वाजता तळटी रा मन्दिर जुहार डेरा दाखल हुवा

दूजै दिन मिती वसाख सुदी १४ दिन शातिक पुष्टिक हुवा श्रीसिद्धगिरीजी पवत पर चढ्या श्रीमूळनायक चौमुखो जी खरतर वसी रा तथा दूजी वस्या राव जुहारी मास सवा रया उठ चढावो घणो हुवो अढाई लाख जात्री भेळा हुआ—पूरब मारवाड़ मेवाड़ गुजरात ढूढाड़ हाडोती, कच्छ भुज मालवो, दक्खण सिंध पजाब प्रमुख देसा रा उठ लाण रुपियो १ सेर १ मिश्री, घर दीठ दीधी जीमण पाच सघव्या मोटा किया जामण १ बाई बीजू कियो और जीमण पण घणा हुवा श्रीचौमुखाजी र द्वारण आळा म गामुख यक्ष चक्रेश्वरी री प्रतिष्ठा करायन पधराय चौमुखाजी रो सिखर सुधराया अब नवो मदिर करायण वास्त नीव भराया जूना मन्दिरा रा जीर्णोद्धार करायो ज म सुफळ कियो

गुरु भक्ति इण मुजब कीनी—ग्यार श्रीपूज्यजा वा २१०० साधु-साध्वी प्रमुख चोरासी गच्छा रा तिहा प्रथम स्व गच्छ रा श्रीपूज्यजी री भक्ति साचवी

वहा से सात कोस ठर गाव से श्री सिद्धगिरिजी को मोतियो से वधाकर पालीताना वड़ समारोह से गाजे बाजे सहित तलहटी के मदिर का अभिवन्दन कर डेरे मे प्रविष्ट हुअ (=आय)।

दूसरे दिन मिती वसाख सुदि १४ के दिन शातिक-पुष्टिक क होन हुअ श्री सिद्धगिरिजी पवत पर चढ़े। श्री मूलनायक चौमुखजी खरतरा के वसी क तथा दूसरी वसियो के सब को अभिवदन कर सवा महीने रह। धन चढावा बहुत हुआ। ढाई लाख यात्री इकट्ठे हुअ पूरब मारवाड़ मेवाड़ गुजरात ढूढाड़ (जयपुर राज्य) कच्छ भुज मालवा दक्खिन सिध पजाब आदि देशो क। वहा लहान अक रुपया और अेक सेर मिसरी प्रति घर (के हिसाब से) दिया। पाच बड़ी जवनारें (=भोज) सघवियो ने की। अक जेवनार बहन बीजू ने की। और जेवनारें भी बहुत हुइ। श्री चौमुखजी के द्वार पर ताक म गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी की प्रतिष्ठा कराकर पधराकर (स्थापना करके) शिखर को सुधरवाया (=ठीक करवाया)। अक नया मदिर बनवाने के लिअे नीव भरवायी। पुराने मदिरो के जीर्णोद्धार (=मरम्मत) करवाय (जूना<जीर्ण जुण्ण)। ज म को सफल किया।

गुरु भक्ति इस मुजब की। ग्यारह श्रीपूज्य थे चौरासी गच्छो क २१०० साधु साध्वी आदि। वहा पहले अपने गच्छ के श्रीपूज्यजी की भक्ति की।

हजार पाच रो नगद माल दियो दूजो पत्न भर दियो पछै अनुक्रमि मारा दूजा श्रीपूजा री साधु माविया री भक्ति साचवी आहार पाणी, गाडिया रो भाडो तबू चौवरो ठाणै दीठ रु ४१ दिया नगद दुसालावाळा नै दुसाला दिया सेवग ५०० हा, जिणा न जण दीठ रु २१ दिया, रोटीखरच अलग पट्टण रा माजा, ओखध, खरचो माफ रुपया चाहीज्या जिणा-न दिया

पछ भट्टारक श्रीजिनमहेन्द्रसूरिजी पास सिंघव्या इक्तीस सघ माळा पहरी जिण मे माळा दो गुमास्त साळगराम महेश्वरीन पहरायी पछै वडा आडबर सू तळेटी रो मन्दिर जुहार डेरा दाखिल हुवा जाचका नै दान दीनो पछ जीमण अेक कियो सावर्म्या-नै सिरपाव दिया राजा डेरे आयो, जिण न हाथी सिरपाव स दियो दूजा माग म राजवी नवाव प्रमुख आया डेरे जिणा-न राज मुजब सिरपाव दिया श्रीमूलनायकजी र भण्डार र ताळा तीन गुजरातिया रा था सू चौथा ताळो सघव्या आप रा दिया सदावत सरु है ई इसा दो मोटा काम करया

पछै सघ कुशळ क्षेम सू अनुक्रमे राधणपुर आयो जठै अगरेज श्रीगोडाजी रा

पाच हजार का नकद माल दिया। दूसरा खच (भी) भर दिया (=चुका दिया)। पीछे क्रम क्रम स दूसरे सब श्रीपूज्या की और साधु-साध्विया की भक्ति की। भोजन पानी गाडियो का भाडा तबू चौवर और प्रति स्थान रु ४१ नकद दिय। दुशाल वाला का दुशाल दिय। सवक ५०० थ, उनको प्रति व्यक्ति रु २१ दिय। रोटी खच (भोजन खच) अलग (दिया)। पट्टन के मोज औपधि खच के लिओ रुपय जिनको जरूरत थी उनको दिय।

पीछे भट्टारक श्री जिनमहेन्द्र सूरिजी के पास सघवियो ने इक्तीस सघ मालाओं पहनी। उनम दो मालाओं गुमास्ते शालिग्राम माहेश्वरी को पहनायी। पीछे बडे आडबर (=समारोह) म तलहटी के मन्दिर का अभिवन्दन कर डेरा म प्रविष्ट हुओ (=आय)। याचको को दान दिया। पीछे ओक भोज किया। स्वधर्मियो को सरोपाव दिये। राजा डेरे आया। उसको हाथी सरोपाव म दिया।

माग म जो और राजा, नवाव आदि डेरे पर आय उनको राज्य के अनुसार सरोपाव दिये।

श्रीमूल नायकजी के भडार के ताले तीन गुजरात वालो के थ सो चौथा ताला सघवियो ने अपना लगाया। सदावत शुरू है ही (चल ही रहा है)। असे दो बडे काम किय।

दसण करण-न आया उठ पाणी नहा धो, सू मेवाऊ नदी नीसरी श्रीगौडीजा न हाथी र होद विराजमान कर सघ न दरसण दिन सात इकलग कराया चढाप रा सात तीन लाख रुपिया आया सवा महीना रया जीमण घणा हुवा श्रीगौडीजी र विराजण न वडा चौंतडो पक्को करायो ऊपर छतरी वणायी घणा द्रव्य खर्च्यो वडा जस आया अक्षत नाम किया साथ गुमास्ता महेस्वरी साळगराम हो जिण न जन रा शिव रा सव तीथ कराया

पछ अनुक्रम सघ पाली आया जीमण अव कर न दानमलजी कोट गया पछ भाई चार जसळमेर आया डरा दरवाज बाहर किया पछ सामळा वडा ठाठ सू हुवा श्रीरावळजी सामा पधार्या हाथी र होद सघव्या न श्रीरावळ जी आप र पूठ बसाण न सारा सहर म हुय दहरा जुहार उपाश्रय आय हुवेल्या दाखल हुवा

पछ सव मन्हेस्वरी वोर छत्तीस पान न सुगाया समत पाच पकवान सू जिमाया ब्राह्मणा न जण दीठ रुपिया अक दक्षणा रो दिया

पीछे अनुक्रम स सघ कुशल क्षेम से राधनपुर आया जहा अग्रज श्री गौडीजी के दशन करने आय। वहा पानी नही था सो अहश्य नदी निकली (मवाऊ फारसी शब्द स)।

श्री गौडीजी को हाथी के हौदे पर विराजमान करके सघ को सात दिन निरतर दशन कराये। चढावे मे साढ़ तीन लाख रुपये आय। सवा महीन रहे। भोज बहुत से हुअे। श्री गौडीजी के विराजन (बठन) क लिअे बडा चौंतरा पक्का कराया। ऊपर छत्री बनवाया। बहुत द्रव्य खच किया। बडा यश आया (=मिला)। नाम अक्षय किया। साथ म गुमास्ता माहेश्वरी जाति का शालिग्राम (नाम का) था। उसको जन के और शिव के सब तीथ करवाय।

पीछे अनुक्रम स सघ पाली आया। (वहा) अव अवनार करके दानमलजी कोटे गय। पीछे चार भाई जसळमर आय। दरवाजे क बाहर डेर किय। पीछे सामेला (=अगवानी स्वागत) वडे समारोह से हुआ। श्री रावलजी (=जसळमर क महाराजा) सामन आय। सघवियो को हाथियो क हौदे पर अपने पीछे बिठाकर श्री रावळजी सारे शहर म होकर मन्दिरों का अभिवादन कर उपाश्रय म आकर हवेलियो म प्रविष्ट हुअे। पीछे माहेश्वरी सहित छत्तीस वर्णों को (?) स्त्रियो समेत पाच मिठाइयो स भोजन करवाया और ब्राह्मणो को प्रति व्यक्ति (जणा<जन=व्यक्ति दीठ<दृष्टि) रुपया अक दक्षिणा का दिया।

पछै श्रीराउळजी जनानै महित मधव्या रै हवेली पधारधा रुपिया-सू चौंतरा कियो सिर-पेच कठी मोत्या की वडा जडाऊ दुमाला नगदी, हाथी घाडा पालखी निजर किया पाछा श्रीरावळजी इण मुजवही ज सिरपाव दियो अेक लोद्रवाजी गाम ताबा पत्रा पटनै दियो इता इजारो कियो

वागै पिण इणा री हवेली उदपुर राणाजी, कोटै रा महारावजी, बीकानेर-रा किसनगढ रा, बूंदी रा राजाजी इन्दौर रा हुलकरजी प्रमुख सब देसा रा राजवी जनान समेत इणा रै घरे पधार्धा देणा-लणा हजारा रो कियो दिल्ली र पातसाह री अगरेजा रै पातसाह री दियोडी सेठ पदवी है सो विख्यात-हीज है

पछ सघ री लाहण न्यात म दीवी पूतळी मान री थाळी अक, मिश्री सेर अेक घर दीठ दीवी जीमण कियो पछ सैर म ठावा-ठावा-न सिरपाव दिया गढ माहेला मदिरा लोद्रवै ऊपाश्रय वडो चढावो कियो इण मुजब-हीज उदयपुर कोट देणा लेणो किया

मघ म देहासर रो रथ हा जिण रा इकावन सौ लागा ग्रगडा सोनै रुपै

पीछे श्री रावळजी जनाने सहित मघवियो के (यहा) हवेली म पधारे। (उन्होंने) रुपया स चबूतरा बनाया (चौंतरा<चत्वरक)। सिरपेच मोतिया की कठी जडाऊ वडे दुशाले नकदी, हाथी घाडे पालकी नजर किये (=भेंट किय)। पीछे रावळजी ने बदले म इसी मुजब सरोपाव दिया। अेक लोद्रवाजी का गाव ताम्रपत्र के साथ पट्टे मे (जागीर म) दिया। इतना इजारा किया।

पहले भी इनकी हवेली पर उदयपुर के राणाजी, कोटे के महाराव जी बीकानेर किशनगढ और बूंदी के राजाजी, इन्दौर के हुलकरजी आदि सब देशा के राजा जनाने सहित इनके घर पर पधार थ देन-लेन हजारो (रुपया) का किया। दिल्ली के बादशाह की और अग्रेजा के बादशाह की दी हुई सेठ उपाधि है सो प्रसिद्ध ही है।

पीछे सघ की लाहन न्यात म (=बिरादरी म) दी। मान की पुतली अेक थाली अेक सेर मिस्री प्रति घर दी। जोनार की। पीछे शहर म खास-खास लोगो को सरोपाव दिये। गढ के भीतर वाले मदिरा म और लोद्रवे म उपाश्रय म बडा चढावा किया। इसके अनुसार ही उदयपुर और कोटे मे देना लेना किया।

मघ म देहासर का रथ था जिसके इक्यावन सौ (रुपये) लगे। सोने रुपे के दो वगडे थ जिन के दस हजार (रुपये) लगे। मदिर के सोने चादी के

रा दो जिण रा दस हजार लागा मंदिर रा सोन रूपरी कामणा रा पन्द्रह हजार लागा दूजा फुटकर सराजाम रा लाख अक रुपिया लागा

इण संघ म जाबता हो जिण रा विगत—तोपा ४ पलटण रा लोग ४००० असवार १५०० नगार निसाण समेत, उदपुर राणाजी रा असवार ५०० नगार निसाण समेत कोटे रा महारावजी रा असवार १०० नगार निसाण समेत जोधपुर रै राजाजी रा असवार ५० नगार निसाण समेत पायदल १०० जेसळमेर रा रावळजी रा, असवार २०० टूक रै नवाब रा असवार ४०० फुटकर असवार २०० घर और अगरेजी जाबतो चपडासी निदगा सोनरी रूपरी घाटवाळा जायगा २ परवाना वाळा रा अब पालख्या ७ हाथी ४ म्याना ५१ रथ १००, गाड्या ४०० ऊंट १५०० इतरा तो संघव्या रा घरू संघ री गाड्या ऊठ प्रमुख यारा सब खरच रा तेवीस लाख रुपिया लागा

वरतनो के पन्द्रह हजार लगे। दूसरे फुटकर सरजाम के अक लाख रुपये लगे।

अब संघ में जो इंतजाम था उस का विवरण। तोपें चार। पलटन के लोग चार हजार। सवार पन्द्रह सौ नगारे निशान के सहित। उदयपुर के राणाजी के सवार पांच सौ नगारे निशान के सहित। कोटे के महारावजी के सवार अक सौ नगारे निशान सहित। जोधपुर के राजाजी के सवार पचास नगारे निशान सहित। जसलमेर के रावलजी के पैदल अक सौ। टोंक के नवाब के सवार दो सौ। सवार चार सौ फुटकर। सवार दो सौ घर के (=निजी)। और अंग्रेजी इंतजाम निलग चपरासी सुनहरे रुपहरे घोटों वाले जायगा दो परवाना पहुंचाने वाले और पालकियां सात। हाथी चार। म्याना नाम सवारी इक्यावन। रथ अक सौ गाडियां चार सौ ऊंट पन्द्रह सौ। इतने तो संघवियों के निजी। संघ की गाडियां ऊंट आदि अलग। सारे खर्च के तेवीस लाख रुपये लगे।

भीखणजी-रा संस्मरण

(उन्नीसवीं शती का—उत्तरार्ध)

[जयाचार्य]

[श्वेताम्बर जैनों के श्री जयाचार्य स्वामी भीखणजी द्वारा संस्थापित तेरापंथ सम्प्रदाय के चतुर्थ आचार्य हुए। इनका जन्म सं० १८६० में आश्विन शुक्ला १४ को रोहट (मारवाड) में हुआ। इन्होंने ९ वर्ष की अवस्था में सं० १८६९ में प्रव्रज्या ग्रहण की। हेमराजजी स्वामी इनके विद्यागुरु थे। सं० १९०९ में ये आचार्य पद पर आसीन हुए। अपने आचार्य काल में इन्होंने कई नयी योजनाएँ प्रारंभ कीं। संवत १९३८ में इनका देहावसान हुआ।

तेरापंथ सम्प्रदाय में जयाचार्य बहुत बड़े विद्वान हुए। इनका लिखित साहित्य बहुत विशाल है। इनकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'भगवती सूत्र' का राजस्थानी रूपान्तर है जो अनेक राग रागनियों में है।

'भिक्खु दृष्टान्त' जयाचार्य द्वारा संगृहीत ग्रंथ है। इसमें स्वामी भीखणजी के ३१२ जीवन प्रसंगों का संकलन है। ये जीवन प्रसंग मुनि हेमराजजी के लिखाये हुए हैं जो स्वामीजी के अत्यन्त प्रिय शिष्य थे। उनसे सुनकर जयाचार्य ने उन्हें लिपिबद्ध किया।

संकलित अंश 'भिक्खु दृष्टान्त' से लिया गया है। यह अंश उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के गद्य का नमूना है। इसमें तेरापंथ सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य स्वामी भीखणजी के जीवन के संस्मरण हैं। इन संस्मरणों से स्वामीजी के चरित्र और स्वभाव पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। शैली घरेलू होते हुए भी साहित्यिक है।]

–१–

पुर भीलवाड़ विचै स्वामीजी पधारता डूंगर नी तरफ रा अेक भायो

---

(१)

पुर (=मेवाड़ प्रदेश का एक कस्बा) और भीलवाड़े (=मेवाड़ प्रदेश का एक प्रसिद्ध शहर) के बीच में। स्वामी जी (ने)। पधारते (पद धारण से)

रा दो जिण रा दस हजार लागा मदिर रा सोन रुपरी वामणा रा पन्द्रह हजार लागा दूजा फुटकर मराजाम रा लाख अेक रुपिया लागा

इन सघ म जावता हो जिण री विगत—तोपा ४ पळटण रा लाग ४००० असवार १५०० नगारे निसाण समेत उन्दपुर राणाजी रा असवार ५०० नगार निसाण समत कोटे रा महारावजी रा असवार १०० नगार निसाण समत जोधपुर र राजाजी रा असवार ५० नगार निसाण समत पायन्दल १०० जसळमेर रा रावळजी रा असवार २०० टूक र नवाब रा असवार ४०० फुटकर असवार २०० घड और अगरेजी जावतो चपडासी तिनगा सोनरी रुपरी घाटवाळा जायगा २ परवाना वाळावा अव पालख्या ७ हाथी ४ म्याना ५१ रथ १०० गाड्या ४०० ऊट १५०० इतरा तो सघव्या रा घर सघ री गाड्या ऊट प्रमुख न्यारा सव खरच रा तेवीस लाख रुपिया लागा

वस्तना के पद्रह हजार लगे। दूसरे फुटकर सरजाम के अेक लाख रुपये लगे।

अब सघ म जो इन्तजाम था उस का विवरण। तोपें चार। पलटन के लाग चार हजार। सवार पद्रह सौ नगारे निशान के सहित। उदयपुर के राणाजी के सवार पाच सौ नगारे निशान के सहित। कोट के महारावजी के सवार अेक सौ नगारे निशान सहित। जोधपुर के राजाजी के सवार पचास नगारे निशान सहित। जसलमेर के रावलजी के पदल अेक सौ। टोक के नवाब के सवार दो सौ। सवार चार सौ फुटकर। सवार दो सौ घर के (=निजी)। और अग्रेजी इन्तजाम तिनगे चपरासी सुनहर रुपहर घाटो वाल जायगा दो परवाना पहुचाने वाले और पालकिया सात। हाथी चार। म्याना नाम सवारी इक्यावन। रथ अेक सौ गाडिया चार सौ ऊट पद्रह सौ। इतने तो सघवियों के निजी। सघ की गाडिया ऊट आदि अलग। सारे खच के तेवीस लाख रुपये लगे।

भीखणजी-रा संस्मरण

(उन्नीसवीं शताब्दी—उत्तरार्ध)

[जयाचार्य]

[श्वेताम्बर जैनों के श्री जयाचार्य स्वामी भीखणजी द्वारा संस्थापित तेरापंथ सम्प्रदाय के चतुर्थ आचार्य हुए। इनका जन्म सं० १८६० में आश्विन शुक्ला १४ को रोहट (मारवाड़) में हुआ। इन्होंने ९ वर्ष की अवस्था में सं० १८६९ में प्रव्रज्या ग्रहण की। हेमराजजी स्वामी इनके विद्यागुरु थे। सं० १९०९ में ये आचार्य पद पर आसीन हुए। अपने आचार्य काल में इन्होंने कई नयी योजनाएं प्रारंभ कीं। संवत् १९३८ में इनका देहावसान हुआ।

तेरापंथ सम्प्रदाय में जयाचार्य बहुत बड़े विद्वान हुए। इनका लिखित साहित्य बहुत विशाल है। इनकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'भगवती सूत्र' का राजस्थानी रूपान्तर है जो अनेक राग रागनियों में है।

'भिक्खु दृष्टान्त' जयाचार्य द्वारा संगृहीत ग्रंथ है। इसमें स्वामी भीखणजी के ३१२ जीवन प्रसंगों का संकलन है। ये जीवन प्रसंग मुनि हेमराजजी के लिखाये हुए हैं जो स्वामीजी के अत्यन्त प्रिय शिष्य थे। उनसे सुनकर जयाचार्य ने उन्हें लिपिबद्ध किया।

संकलित अंश 'भिक्खु दृष्टान्त' से लिया गया है। यह अंश उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के गद्य का नमूना है। इसमें तेरापंथ सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य स्वामी भीखणजी के जीवन के संस्मरण हैं। इन संस्मरणों से स्वामीजी के चरित्र और स्वभाव पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। शैली घरेलू होते हुए भी साहित्यिक है।]

—१—

पुर भीलवाड़ बिच स्वामीजी पधारता शहर नीं तरफ रा अेक भाया

---

(१)

पुर (=मेवाड़ प्रदेश का अेक कस्बा) अनै भीलवाड़े (=मेवाड़ प्रदेश का अेक प्रसिद्ध शहर) के बीच में। स्वामी जी (के)। पधारता (पद धारण से)

ल्यो तिण पूछ्यो—आप रा नाम काई ? जद स्वामीजी बोल्या—म्हारो नाम भीखण जद ऊ बोल्यो—भीखणजी रा महिमा तो घणी सुणी है सो आप एकला रूख हेठ बैठा हो ? म्हे तो जाण्या साथ आडंबर घणो हुसी, घोड़ा-हाथी रथ पालखी प्रमुख घणा कारखाना हुसी जद स्वामीजी बोल्या—इसो आडंबर न राखां जद हिज महिमा है साधु रो मारग ओ हिज है इम सुण नै राजी हुवो

—२—

केलवा मे परदेश बसता ठाकर मोहकमसिंहजी पूछ्यो—आप नै गाम-गाम विणतियां आवै घणा लोग लुगाई आप-नै चावै नर नारी आप नै देख नै राजी घणा हुवै बाई भायां नै आप वल्लभ घणा लागो सो काई कारण ? आप मे सो काई गुण ? जद स्वामीजी बोल्या—कोई साहूकार परदेस थो तिण घर कासीद मेल्यो खरची मेली सेठाणी कासीद-नै देख नै राजी घणी हुयी ऊन्हा

समय जाते समय यात्रा करते समय। ढूंढाड की (ढूंढाड जयपुर राज्य का प्राचीन नाम था) ओर का अेक भाई (मनुष्य) मिला। उसने पूछा। आपका नाम क्या। तब स्वामीजी बोले। मेरा नाम भीखण। तब वह बोला। भीखणजी की महिमा तो बहुत सुनी है (कि वे बहुत बड़े महात्मा हैं)। व आप अकेले साथ मे सेवक आदि कोई नहीं वृक्ष (के) नीचे बैठे हैं ? हमने तो जाना (था) हम तो समझते थे। साथ मे। आडंबर प्रदर्शन। बहुत। होगा। घोड़े और हाथी। रथ और पालकी। आदि। बहुत। कारखाना (साज-सामग्री जो कारखाने मे सगृहीत रहती है)। होगा। तब स्वामीजी बोले। असा आडम्बर (हम) नहीं (=रखते हैं) तभी महिमा है। साधु का मार्ग यही है। असा सुनकर (वह पुरुष) प्रसन्न हुआ।

(२)

केलवा (=मेवाड का अेक कस्बा) मे बैठे हुअे जब स्वामीजी केलवा मे बैठे हुअे थे। ठाकुर मोहकमसिंहजी ने पूछा। आपको गांव गांव (से) विनतियां (प्रार्थनाअें) आती है। बहुत स्त्री पुरुष आपको चाहते हैं। स्त्री पुरुष आपको देखकर बहुत प्रसन्न होते है। बहनों और भाइयों को आप वल्लभ (प्रिय) बहुत लगते हैं। सो (इसका) क्या कारण (है)। आप मे असा क्या गुण (है)।

तब स्वामीजी बोले। कोई साहूकार परदेश मे था। उसने घर पर सन्देशवाहक भेजा। खर्ची भेजी। सेठानी सन्देशवाहक को देखकर प्रसन्न बहुत हुई। उष्ण (गर्म) पानी से उसके पैर धुलाये। अच्छी तरह भोजन

पाणी-सूं उण रा पग धोवाया आछी तरह भोजन कर-नै जीमावै कनै बैठी समाचार पूछै—साहजी डीलां मैं किसायक है सुख-साता है ? साहजी कठै पौढ़े है ? कठै बैसै है ? कासीद जिम जिम समाचार कहै तिम तिम सुण नै घणी राजी हुवै। पिण कासीद-नै देख नै राजी हुवा रो कारण धणी रा समाचार कहै तिण-सूं। तिम म्हे भगवान रा गुण बताबां छां संसार नैं मोक्ष रा मार्ग बतावां छां तिण कारण लोग लुगाई म्हां सूं राजी हुवै छै

—३—

रजपूत-नै साथ बोळावो लेइ किण ही गाम जाता रजपूत बोल्यो—तमाखू बिना आघा हालीजै नहीं जद स्वामीजी बोल्या—ठाकरां ! आगै चालो दिन थोड़ो है रजपूत बोल्यो—तमाखू बिना अबै तो हालीजै नहीं जद स्वामीजी पाछै रहि नै आरणिया छाण-नैं नाऱ्हो बांटि पुड़ी बांध नै कह्यो—ठाकरां ! तमाखू चोखी तो है नहीं इसड़ी है जद तिण रजपूत चिवठी भर-नैं सूंघी

करके (बनाकर) जिमाती है भोजन कराती है। पास में बैठी हुई समाचार पूछती है। साहजी शरीरों में (=शरीर में) कैसअेक (=कैसे) है। सुख और स्वास्थ्य (तो) है ? साहजी कहां सोते हैं। कहां बैठते हैं। संदेशवाहक जैसे-जैसे समाचार कहता है वैसे वैसे सुनकर बहुत प्रसन्न होती है। परन्तु संदेशवाहक को देखकर प्रसन्न होने का कारण (क्या) ? (वह) पति के समाचार कहता है इससे (इस कारण)। वैसे ही हम भगवान के गुण बताते हैं। संसार को मोक्ष का मार्ग बताते हैं। इस कारण लोग लुगाई हम से प्रसन्न होते हैं।

(३)

(किसी) राजपूत को। साथ में (साथ साथ)। साथ रहकर पहुंचाने वाले व्यक्ति के रूप में। लेकर। किसी गांव (को)। जाते (=जाते समय)। राजपूत बोला—तंबाकू (के) बिना आगे नहीं चला जायगा। तब स्वामीजी बोले। ठाकुरां ! (आदर के लिये बहुवचन) ठाकुर साहब। आगे चलिये। दिन थोड़ा (शेष) है। राजपूत बोला। तंबाकू (के) बिना आगे अब तो नहीं चला जाता। तब स्वामीजी ने पीछे (पाछ>पश्च) रहकर। जंगली कंडे का बारीक (नाऱ्हो>श्लक्ष्ण) पीसकर। पुड़िया बांधकर। कहा। ठाकुरां ! तंबाकू अच्छा तो है नहीं ऐसा है। तब उस राजपूत ने चुटकी भरकर सूंघी। और बोला। ठीक ही है (अर्थात् काम चलने लायक है)। तब स्वामीजी ने पुड़िया

न बोल्यो—ठीक छै जद स्वामीजी पुणी उण-न सूपी इसी चतुराई कर-न म्हे ठिकाण आया

—४—

घर म ऊना कटालिया में कोई रो गहणो चोर ले गयो जद बोरे नगी म यो कुभार न बोलायो कुमार रे डील मैं देवता आवतो तिण सू तह-न गहणा ताबो पुछायो कुभार स्वामीजी न पूछ्यो—भीखणजी ! अठ किण रा भम र जद स्वामीजी उण रो ठागो उघाड करवा कह्यो—भम ता भजन्या रा र है हिव रात्रि आर कुभार देखना डार अणायो घणा लोक देखता हाका र— हाक द र ! हाक द र ! जद लोक बोल्या—नाम बतावो जद बोल्यो —आ आ-आ भजन्यो र मजन्या ! गहणा भजन्य लियो जद अतीत पाटो रा उठ्या— भजन्या तो म्हा रा बकरा रा नाम है म्हा र बकर र माथ चोरी धा ! जद लोका ठागो जाण्यो स्वामीजी लोका न कह्यो—थ सूभतो तो

उसको सौंपी (=दे दी)। इमी चतुराई करके। कुशल से कुशल पूर्वक। ठिकाण (=अपने स्थान को)। आया (=आ गये)।

(४)

घर म होन हुए (भी)। कटालिया (=एक स्थान का नाम) म। किसी का। गहना (=गहने)। चोर (चुरा) ले गया। तब बोरे नदी स अध कुम्हार को बुलाया। कुम्हार के शरीर म देवता आता (=आया करता था)। उसने=उसमे इसलिए। उसको। गहना बताने को। बुलाया। कुम्हार ने स्वामीजी को (=स्वामीजी से) पूछा। हे भीखणजी ! यहां किसको भ्रम धरते हैं (किस पर शक करते हैं)। तब स्वामीजी ने उसकी ठगाई (धोखेबाजी) (को) उघाड़ा (उद्घाटित करना प्रगट) करने के लिए कहा। सन्देह तो। भजनिय का (भजनिया=भजना व्यक्तिवाचक नाम का अनादर वाचक रूप)। धरते हैं। अब। रात म रात के समय। अब कुम्हार ने देवता(को)। शरीर म। आना लाया। बहुत से लोग देखने बहुत से लोगों के देखते हुए बहुत से लोगों के समक्ष। हल्ला (=हल्ला) करता है। डाल दे अरे। डाल दे अरे। तब लोग बोले। नाम बताइये। तब बोला। आ आ ओ ! भजनिया, अरे भजनिया। गहना भजनिये ने लिया (है)। तब अतीत (=साधु) खड़ा होकर उठा। भजनिया तो मेरे बकरे का नाम है। मेरे बकरे के सिर (=ऊपर) चोरी देते है (=लगाते हैं)। तब लोगों ने ठगाई (को) समझा। स्वामीजी ने लोगों को कहा। आप (=तुम) दृष्टि वाला न तो गहना गवाया। और अब

गहणो गमायो अन आवा मना सू कढाओ । सो गहणो कठा-सू आसी ?

—५—

किण ही पूछ्यो—महाराज ! साधां र असाता क्यूं हुवै ? जद स्वामीजी बोल्या—किण ही भाठो उछाळ न हेठो माथो माड्यो अन पछै भाठो उछाळण रा त्याग किया तो आगे भाठो उछाळ्यो तै तो लागै पछै सूंस किया तो पछै न लागै यू आगे पाप कर्म बांध्या है तो भोगवै पछै पाप रा त्याग किया तिण रा दुख न पड़ै

—६—

माहुआ माहे स्वामीजी रात्रि रो वखाण वाचता आमाजी नीद घणी ले जद स्वामीजी कह्यो—नीद आवै है ?

आमाजी बोल्या—नहीं महाराज

बार-बार पूछ्यो—नीद आवै है ?

जद ते कहै—नहीं महाराज !

जद स्वामीजी झूठ रो उघाड़ करवा वास्ते उत्पात बुद्धी सू वळै पूछ्यो—

के पास से (=अपने के द्वारा) निकलवाते हैं। सो अतः। गहना कहां से आवेगा (=मिलेगा)।

(५)

किसी ने पूछा। हे महाराज ! साधुओं के तकलीफ (=बीमारी) क्यों होती है। तब स्वामीजी बोले। किसी ने पत्थर उछालकर नीचे सिर दिया (=लगाया)। और पीछे पत्थर उछालने का त्याग किया। तो। पहले (जो) पत्थर उछाला। वह तो लगता ही है (=लगेगा ही)। पीछे शपथ की तो पीछे नहीं लगेगा। ज्यों ऐसे ही। पहले पाप के कर्म बांधे वे तो भोगते ही हैं। पीछे पाप का त्याग किये (=करने से) उनका दुख नहीं पड़ता है (=प्राप्त होता है)।

(६)

मन्दसौर में। स्वामीजी (का)। रात का। वखान (व्याख्यान) जैन साधु का दिया हुआ धर्मोपदेश। वक्त (समय)। आमाजी आमा नामक व्यक्ति। निद्रा। बहुत। लेता है (=लेता था)। तब। स्वामीजी ने कहा। नीद आती है ? आमाजी बोला—नहीं महाराज ! बारबार पूछा—नीद आती है ? तब वह कहता है—नहीं महाराज !

तब स्वामीजी ने झूठ का उद्घाटन करने के लिये उत्पात-बुद्धि से

े ! जीवो न्हे के ?
ही महाराज !

—७—

रण ही पूछ्यो—भीखणजी ! थ यू कहा अक महाव्रत भागा पाचूई भाग माथ पाच किम भाग ? जन स्वामीजी बोल्या—पाप री उन हुवे जद म ई जीव दुख भोगव जिम अक भिखाचर न सहर म फिरता पाच ो आटा मिल्यो रोटी करवा लागा अक तो रोटी उतार-न चूला लार अेक रोटी तव सिक अेक रोटी खीरा सिक अेक रोटी रो लोयो हाथ । अक रोटी री आटा कठोती म अेक कुत्ता आयो सो कठोती म अेक ो आटो ते ले गयो तिण कुत्ता लार भिखारी दोडयो न्ठ पड़ियो ाहलो लोयो धूड म मिल गयो पाछो आय दख तो चूला लार रोटी ती ते मिनकी ले गयी तवे री तव बळ गयी खीरा री खीरा बळ गयी ते अक महाव्रत भागा पाचू भाग जाव

ारात म) फिर पूछा । आसाजी ! जीते हैं क्या ? (आसाजी न उत्तर । नहीं महाराज !

(७)

नसी ने पूछा । भीखण जी ! आप या कहते हैं (कि) अेक महाव्रत टूटन ाचो ही टूट जाते हैं । असे अक साथ पाचो कसे टूटते हैं ? तब स्वामीजी पाप का उदय होता है तब । ससार म ही जीव दुख भोगता है । जस । भिक्षाचारी को नहर म फिरते हुये पाच रोटी का आटा मिला । रोटी करने लगा । अेक रोटी तो (तवे से) उतारकर चूल्हे के पीछे अक रोटी तव (पर) सिकती है । अेक रोटी अगारा (पर) सिकती है । रोटी का । लवा (==गुथ हुये गाल आट का खड जिसको बेलकर रोटी । जाती है) । हाथ म (है) । और अेक रोटी का आटा कठोती म है (कठोती ठ की परात) । अक कुत्ता आया । वह कठौती म अक रोटी का आटा म ले गया । उस कुत्त क पीछे भिखारी दौडा । (कर) नीचे गिर पड़ा । य म का लवा धूल म मिल गया । वापिस आकर देखता है तो चूल्हे के (जो) रोटी पडी थी उस बिल्ली ले गयी । तब पर की (रोटी) तवे पर *ायी । अगारो पर की अगारो पर जल गयी । इस रीति से अक महाव्रत के* म पाचो टूट जाते है ।

—८—

टीकमजी रा चेला कचराजी जाळार रा वासी सिरयारी में स्वामीजी कनै आयो कहै—भीखणजी कठ ? जद स्वामीजी बोल्या—भीखण म्हारो नाम है जद ते बोल्यो—आप नै देखवा री म्हारै मन में घणी थी स्वामीजी बोल्या—देखो पछै कचरोजी बोल्यो—मो नै चरचा पूछो स्वामीजी बोल्या—थे देखवा नै आया था नै काई चरचा पूछो ? तद ते बोल्यो—कायक तो पूछो जद स्वामीजी बोल्या—था रै तीजा महाव्रत रा द्रव्य क्षेत्र काळ भाव गुण काई है ? जद ते बोल्यो—आ तो मो-नै याद आवै नहीं पाना में मंडी है स्वामीजी कह्यो—पाना फाट गया अथवा गम गया हुवै तो काई करस्यो ? जद ते बोल्यो—म्हारा गुरां था नै चरचा पूछी जिण रा था नै जाब न आयो जद स्वामीजी कह्यो—था रा गुरां चरचा पूछी तिका हीज चरचा थे मो नै पूछो ऊणा-नै जाब दियो है तो था नै ई दयाला जद कचराजी बोल्या—थे ताम्हा-रै लेखा रा दादा गुरु हो सो हूं था सू कठा में जीतू ? जद स्वामीजी बोल्या—म्हा रै तो इसा पाता चेला कोई चाहीजै नहीं

---

(८)

टीकम (<त्रिकम) जी का चेला टीकमजी पहले स्वामी भीखणजी के शिष्य रहे थे। कचराजी। जालोर का रहने वाला। सिरयारी (=अेक स्थान) में स्वामीजी के पास आया। (आकर) कहता है। भीखणजी कहां है ? तब स्वामीजी बोले। भीखण मेरा नाम है। तब वह बोला—आपको देखने की मेरे मन में बहुत (इच्छा) थी। स्वामीजी बोले—देखो। पीछे कचराजी बोला। मुझे चर्चा पूछिये धर्म चर्चा की बात पूछिये। स्वामी जी बोले। आप देखने को आये (है)। आपको क्या चर्चा पूछें। तब वह बोला। कुछ तो पूछिये। तब स्वामी जी बोले। आपके (आपके मत के अनुसार) तीसरे महाव्रत का द्रव्य क्षेत्र काल भाव गुण क्या है ? तब वह बोला। यह तो मुझे आती नहीं (पोथा के) पन्ना में लिखी हुई है। स्वामीजी ने कहा। पन्ना फट गया अथवा गुम गया हो तो क्या करेंगे ? तब वह बोला। मेरे गुरुजी (आदरार्थ बहुवचन) ने आपको चर्चा पूछी जिसका आपको जवाब नहीं आया। तब स्वामीजी ने कहा—आपके गुरुजी ने चर्चा पूछी वही आप मुझे पूछो। उनको जवाब दिया है सो आपको भी देंगे। तब कचराजी बोला। आप तो मेरे हिसाब के दादा गुरु हैं। सो मैं आपसे कहां में जीतूं। तब स्वामीजी बोले—मेरे तो (मुझे तो) असे पाता चेले नहीं चाहिये।

—९—

कोई साधा री निंदा कर अन आप कुत्रन्त कर न अळगो रहै तिण ऊपर [illegible] दृष्टान्त दियो—किण ना गाम म अेक चुगल रहतो मो अेकदा फौज आयो ज्या न लोका रा धन धान बताय दिया फौजवाळा कयक तो अन कयक गया नहीं गाम रा लोक बार हाल गया था, सो कयक पाछा चुगल धन धान बताया री वात सुण न लोका ओळमो दीधो—अरे [illegible] काम कर ? जद ऊ चुगल फौजवाळा न सुणाय न बोल्यो—हू बतावतो [illegible] सिकल्यिा नो खाडो उठ गड्या म बता देवतो फलाणा रो खोडा उठ [illegible] बता देवता उण रा धन फलाणी जाघा गड्या ह तिण बता देवतो [illegible] कर बाकी रह्या न तिण बताय दीया तिम निन्दक कुबद्ध कर न [illegible] करता कूड बात न अळगा रहै

—१०—

वळि ससार ना तथा मोख ना मारग ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो अक साहूकार रे दाय स्त्रिया अेक तो रावण रा त्याग किया धम म घणी

---

(९)

कोई साधुओं की निंदा करता है। और। स्वय। नारारत उत्पात (कुयन्त कुबुद्धि)। करके। अलग रहता है। इसके ऊपर इस पर। स्वामीजी ने। दृष्टान्त दिया। किसी गाव म। अेक चुगलखोर (=निन्दक) रहता (था)। । अेक दिन अक बार। फौजवाले। आये। जिनको लोगो के धन धान्य बता दिये। फौजवाले कई अक तो (चले) गये। और। कई अेक गये नहीं। गाव के लोग बाहर भाग गये थे। सो कई अेक वापिस आये। चुगल के (लोगो को) धन धान बताने की बात सुनकर यह सुनकर कि चुगलखोर ने फौजवालो को लोगो के धन धान बताये थे। लोगो ने (उसे) उपालभ दिया। अरे [illegible] ऐसे (नीच) काम करता है। तब वह चुगलखोर फौजवालो को सुनाकर (=सुनाता हुआ) बोला। मैं (यदि) बताता तो। अमुक का। खजाना यहा गडा है यह भी बता देता। फलाने का खजाना यहा गडा है यह (भी) बता देता। उसका धन अमुक जगह गडा हुआ है यह भी बता देता। असे नारारत [illegible] बाकी रहे वे भी बता दिये। बस (ही)। निंदक कुबुद्धि, नारारती। [illegible] है। वह निंदा करता हुआ (या) झूठ बोलकर अलग रहता है।

(१०)

फिर। ससार के और मोक्ष के मार्ग पर। स्वामीजी ने। दृष्टान्त दिया

समभ अन जेक जणी धम म समभ नही केनळ अेक काळ परदम म भरतार काळ कीधा सुण न धम मे न समभ त तो राव विनापान कर, समभ ते राव नहा ममता धार न बठी लाग लुगाई घणा भळा हुवा ते मव रोव तिण न सराव—अे ध य है पतिव्रता है न रोवै तिण न निंद—आ पापणी ता मूवो इज वाछती थी इण र आसू इ आव नही जनै साधु किण न सराव ? माधु तो न रावै तिण-न सरावै ज प्रत्यक्ष मोक्ष रा मारग यारो अन लाक रो मारग यारो

अेक साहूकार (= व्यापारी वणिक) के दो स्त्रिया (थी)। अक तो राने का त्याग किय हुअे धम के विषय म बहुत समभती है (=थी) और जेक जनी (=जन का नारीजातीय रूप) धम के विषय म (कुछ भी) नहा समभती (था)। और कितन-अेक समय म कुछ समय बीतन पर। पति ने परदेश मे काल किया (=मर गया) यह सुनकर। (जो) धम म नही समभती है वह तो रोती है, विलाप प्रलाप करती है। (और जो) समभती है वह रोती नही (सुख दुख म) समत्व की भावना धारण करके बठी रही। स्त्री-पुरुष बहुत मे इकट्ठे हुअे। व मव। जो रोती है उसे सराहते हैं (स० श्लाघ से)। यह धन्य है पतिव्रता है। जो नही रोती उसकी निंदा करते हैं। यह पापिनी तो (पति का) मरा हा चाहती थी, इसके आसू भी नही आते। और साधु किस सराहेगा ? साधु तो जो नहा रोती उस सराहेगा। इस प्रकार यह प्रत्यक्ष (है कि) मोक्ष का माग अलग और लोक का माग अलग (है)।

ारू वीनती लिख भेजी पीछ प्रोहित साथ फौज हजार चाळीस मन्त फेर ाती तोई भगड री आसग हुया नहा दळपत वडा जस मरद बाहादर दख्यो द जाबदीनखा सूरसिंघजी री परधान मना करी—जो भगडो किया ता पूरवा हा, पण वीकानेर रा सिरदार न लालच देय फोरो

तद लालच देय आप रा किया दळपतजी-सू सिरदार बदळिया ज्या री याद—ठाकर भाजन रो दतीदास जसवतोत रा भाइ तजसी ठाकर किसनसिंघ रायसिंघोत हमीर ठिकाणा मारवू ठाकर मुकन्दमण प्रथीराजोत ठिकाणा ददरेवो ठाकर मनहरदास भगवानदासोत ठिकाणा भूकरको, ठाकर किसनसिंघ अमर सिंघोत ठिकाणा हरदेसर ठाकर किसनसिंघ रायसिंघोत ठिकाणा गारवदेसर हेमादास मादूळोत बाणूट रा वीका ठाकर राजसी गोरधन (?) हमासर रो ठाकर वीरमद बळभद्रोत नारणोत ठिकाणो मैंदसर ठाकर गोरधन केसोदासोत वीदावत ठिकाणो वीदासर ठाकर तजसी गोपाळदासोत ठिकाणा गोपाळपुरो तथा चाडवास वाका गोपाळोत साजतसी वास फोगा रो ठाकर भाण अमरसिंघोत धडसीसर रा मथरादास सुरताणोत पारव रो रावत उदैसिंघ ठिकाणो रावतसर ठाकर गोपीनाथ उदैसिंघोत ठिकाणा जतपुर ठाकर जमल माईदासोत ठिकाणा माहेळो ठाकर भीमसिंघ बळभद्रोत ठिकाणा चूरू

गई। तब बादशाही सेना भागी। और (फारसी व)। दलपतसिंहजी की विजय हुई। तब जाबदीनखा ने दिल्ली को मन्द के लिये विनती (प्रार्थना अर्ज विज्ञप्ति स) लिख भेजी। पीछे पुरोहित के साथ चालीस हजार सेना की मदद फिर भेजी। तो भी लडाई करने की हिम्मत नहीं हुई। दलपतसिंह तो बडा जवामर्द बहादुर देखा। तब आबदीनखा ने सूरजसिंहजी के परिग्रह (=अनुयायीगण) से सलाह की कि लडाई करने से पहुचेंगे नही (सफल नहीं होंगे)। पर बीकानेर के सरदारों का (=सामता को)। लालच देकर बदलो (दूसरे पक्ष से अपने पक्ष मे करो फोडो)।

तब (उनको) लालच देकर अपने (=अपने पक्ष के) किये। दलपतसिंहजी से (जो) सरदार बदल गये जिनकी (उनकी) याददाश्त (यानी नामावली)—(इस प्रकार है)।

नामावली मे कुछ विशेष शब्द—बाणूट रा वीका=बाणूटा गाव का और वीका का वशज। बळभद्रोत नारणोत—बलभद्र का वश, नारण (नारायण) का वशज। वीदावत—वीदा का वशज। वास—छोटा गाव (वास का अर्थ मोहल्ला भी होता है)। फोगा—एक स्थान का नाम। तज

भापतजी नारणोत मगरासर रो, ठाकर महेस इन्द्रभाणोत सारूडै रो, मडळो लखधीर भाग्मलोत माडणोत मिकराळी रो मावळदास जमलोत ठिकाणा तिहाणदेसर, ठाकर लाखणमी रायमलात तजमीयोत वीको तजामर रो, ठाकर जमव्रतसिंघ गोपाळात ठिकाणा माडवा प्रथीराज जमवनोत ठिकाणा ह्रासर ठाकर गिरधर मानसिंघात बीन्दावत ठिकाणो साभामेसर लोद्रव रा बीदावत खगारात, ठाकर भाटी आसकरण कानावत ठिकाणो पूगळ मादूळ अमरसिंघात जमळमर रा भाटी, भाटी मिरग खेतमीयोत बीठणाक रो—इतरा सूरमिघजा र सामल हुवा अरु लारवार र ठाकर तजमाल नू माजी कहाया जा भाटी जिण सू ता थे म्हारा मिलामी छा मू म्हे इनरा रहमा ता थे ई रहमो तद तज मालजी कहाया क म्हारी बटी सूरमिंघजी नू परणावा ता इनवार आव पीछै डोळा मगवाय सूरसिंघ-नू परणाया तद आदमी पाच सौ-सू तजमालजी मामल हुवा

पाछै वद ठाकुरमी जीवणदासोत नू कहायो सू ओ पण हजार तीन *आदमिया रा धणी हो इण-नू भटनर गावा २४२-सू पट हीं तद इण कहाया*

मीयोत बीका—बीका=बीका वग का, तेजमीयात=तेजमी का वशज बीका राठाड राजपूता की अेक शाखा है और तेजमीयात बीका शाखा की अेक उपशाखा। भाटी=यादव वशीय राजपूता की अक शाखा।

इतन (सरदार) सूरसिंह जी के शामिल (=साथ म पक्ष म) हुअे। और लारवार के ठाकुर तजमाल को। माजी (=सूरसिंहजी की माता जी) न कहलाया। कि (आप) भाटी हो जिससे (=जिस कारण से) तो मरे सलामी हो। सो हम इतन (लोग) रहग तो आप भी रहोगे। तब तेजमालजी न कहलाया कि मरी बटी सूरसिंह को ब्याहो मेरी बटी का विवाह सूरसिंह जी स करा दो तो अैतबार (विश्वास) आव। पीछे डोला मगवाकर सूरसिंह का ब्याहा (डोला=राजा महाराजा आदि बडे लोग लडका ब्याहने लडकी के घर नहीं जाते थे या नहीं जा सकते थ तो लडकी वाले लडकी का डोली (पालकी) म बिठाकर वर के यहा पहुचा देते थ जहाँ विवाह की रस्म की जाती थी, इसका डोला देना कहा जाता था)। तब पाच सौ आदमियो से (=के साथ को साथ लेकर)। तेजमाल जी शामिल हुअे (=साथ मे आ मिले)।

पीछे वद (=ओसवाल वश्यो की अेक शाखा) ठाकुरसी जीवनदास क वश को कहलाया। सो यह भी तीन हजार आदमियो का स्वामी था (धनी=धनी मालिक पति)। इसको भटनेर बाईस गावा स (=के साथ) पट्टे (=पट्टे म अथात् जागीर म मिली हुई) थी। (भटनेर=अब इसका नाम हनुमानगढ

▌ तो गादी र धणी रा चाकर छ जिका गादी ऊपर र्हसी जिण री
[?]री करसू अर थे कहो जिण तर घम ता मैं-म वच्या जाय नहा तथा
[?]री जमीरत लय आसू जरूर पण गादाधर र सामल रहसूं अर था सू तो
गा ई मिलिया है अक मैं आया काई थार भारी गरो हुसी ?

पीछ दूज दिन भगडा भलियो दळपतसिघजी हाथी असवार हुवा लार
[?]रासी म चूरू रा ठाकर भीमसिघ बलभद्रोत बठो है और सारा ई सिरदारा
रा घोडा हाथी रै दाळा निजीक है पाछ दून फोजा रा मुहमभ हुवा न तठ
[?]रा ई भन करी तर भीमसिघ चूरू र ठाकर हौर म म्हाराज न हाथ
[?]ालियो पीछ घाड असवार कर आदमा पचास साग दय हमार म्हाराज-नू
[?]गता किया उठ हमार र निवाब पकड फौज साग अजमर म कद किया जा ान
[?]मत अर बीकानेर सूरसिघजी टीक बठा

पीछ जावदीनखा दिनी गयो ग्रा दळपतजी कद म रया ऊपर जावन सार

▌ भट्टिनगर)। तब हमने कहलाया कि मैं तो गद्दी के स्वामी का सेवक हूँ।
जो गद्दी पर रहेगा उसकी सेवा करूँगा। और आप कहते हैं जिस तरह
(=उस तरह) धम तो मुभस बचा जायगा नहीं। और मेरी (=अपनी)
जमयत (=सेना) लेकर आऊँगा जरूर पर गद्दीधर के शामिल रहूँगा। और
आप स तो। घने हो (बहुत-से ही)। मिल हैं (=मिल गये है)। अक मर आन
स (=मैं जेक और आ जाऊंगा तो) आपको क्या भारी गुरुत्व (=अधिकता
वन्नी) होगा (=हो जायगा)।

पीछे दूसरे दिन लडाई हुई (भलाणो—हाथ म लिया जाना अगीकार
किया जाना)। दलपतसिंहजी हाथी (पर) सवार हुए (असवार=स अश्व
वार)। पीछे पाछे की ओर। सेवा में चाकरी में in attendance। चूरू
का ठाकुर भीमसिंह बलभद्र का बेटा बठा है। और सभी सरदारो के घोडे
हाथी के चारो ओर नजदीक है। पीछे दोनो सेनाओ की भिडन्त हुई। और
तब सभा न इशारा किया (सन<सजा सण्णा)। तब चूरू के ठाकुर भीमसिंह
न होदे म महाराज का हाथ टाना (=महाराज को पकड लिया)। पीछे घोडे
पर सवार करके पचास आदमी साथ लेकर महाराज को निस्सार पहुँचते
किय (पहुँचा दिय=पहुँचा दिया)।

वहा निस्सार के नवाब न पकडकर सेना के साथ अजमर म कद किय
जाने के सम्मति। और बीकानेर म सूरसिंहजी टीके बठे (=राजा हुए)।
-पीछे जावदीनखाँ दिल्ली गया। और दलपतजी कद म रहे। (उन पर)

चौकी आदमी सौ री है मास च्यार कद रया

–२–

पोछे सूतै सुभाव चापावत हाथीसिघ गोपाळदासोत सासरै जावता आदमियां दो सौ सूं अजमेर आयो म्हाराज कद हुता तठै डेरौ हुवो तद हाथीसिंह पूछियो—अ डेरा किण रा है ? तद उठै रा लोका कयो—जी ! अै बीकानेर रा राजा दळपतसिंघजी कद मे है तद ठाकर चोपदार मेल मुजरो मालम करायो तारा म्हाराजा ठाकर खन आदमी मेल कहायो जो अेक वार ठाकर मैं मे मिल ज्यावैं तो ठीक है तद ठाकर कहाया कै अबार तो सासरै जाऊ छू वा पाछा आवतो मिलसू तठै म्हाराजा वळै आदमी मेल ठाकर-नूं कहायो क सासरै जाव जिके म्हारा समचार काई सुणसी इसी कही आदमी तद ठाकर आप र भाया राजपूता-सू सला करी अर कयो—जमण मरण तो म्हारो सबध छै पण आछै परब पर मरिया नाम रहै तद भाया सारा ई कयो—जो मोटा परब है तथा घणा राठोडा इणा-नूं इमान बदळ-नै पकडाया है सू आपा

व्यवस्था के लिए। चौकी (पहरा) सौ आदमियो की है। चार महीने कैद मे रहे।

(२)

पीछे। स्वभाव। चापावत शाखा का और गोपाळदास का बेटा हाथीसिंह। ससुराल जाते हुए। दो सौ आदमियो के साथ। अजमेर आया। महाराज कद (मे) थे वहाँ डेरा हुआ पडाव डाला। तब हाथीसिंह ने पूछा। ये डेरे किसके हैं। तब वहा लोगो ने कहा। जी ! ये बीकानेर के राजा दलपतसिंहजी कद मे हैं। तब ठाकुर ने एक चोबदार भेजकर मुजरा मालूम करवाया (=अभिवादन निवेदन करवाया)। तब महाराज ने ठाकुर के पास आदमी (=सेवक) भेजकर कहलाया कि अेक बार ठाकुर मुझ से मिल जावें तो अच्छा है। तब ठाकुर ने कहलाया कि अभी तो ससुराल जाता हू और वापिस आता हुआ (=लौटता हुआ) मिलूगा। इस पर महाराजा ने फिर आदमी को भेजकर ठाकुर को कहलाया कि (जो) ससुराल जाते हो वे मेरे समाचार क्या सुनेंगे। अैसी (बात) आदमी ने (आकर ठाकुर से) कही।

तब ठाकुर ने अपने भाईबंदो राजपूतो से सलाह की। और कहा। जनमना (और) मरना तो देह का सबध है (देह के साथ लगे ही हैं)। पर अच्छे पर्व (=पुण्य दिन) पर मरने से नाम रहता है। तब सारे ही भाईबंदो ने कहा कि बडा पर्व (का अवसर) है ! और बहुत-से राठोडो ने इनको ईमान बदलकर (बेईमानी करके) पकडवाया है सो अपन (=हम) इनके बदले

वदळ मरा तो इसा परव मिलै नही तथा आपण बीकानेर रो रिजक तो
ा है पण जोधपुर रा राजा छ ज्यू ै बीकानर रा धणी छ अर या रो पण
ण विगड है सू ओ वडो परव आयो है अठै मारा काम आसा पीछ या
रा ई काम आवण री निस्च करी अ केईक भाई छा ज्या नू ठाकर कयो—
नीमरो म्हे काम आसा तद वा कयो जा थे ओ परव देख मरो अर म्हान
ो लो म्हान ई ओ परव वळ कठ मिल म्हे ई रजपूत हा सू हम ठाकरा
गय काम आप नू छाड कठ जावा ? जा थार साग काम आसा

पीछ ठाकर म्हाराज नू कहायो जो म्हे त्यार छा अेकाम्मी नू आवा हा
दसमी र िन सर माया सू केसर मगायी सारा ई ठाकर वगर केसरिया
या जो कई पूछिया तो कयो—जान है पीछ इग्यारम र प्रभात रा ज दान-पुन
र आदमी दो सौ तथा असवार दो सौ दळपतसिघजी रा डेरा ऊपर आया
रा म्हाराज ऊपर पातसाही चौको रा आदमी सौ हुता तिणा सारा नू मार

रें तो असा पव (फिर) मिलेगा नहा। और अपने (=हम लागो के) बीकानर
। रिजक (जीविका जागीर) तो नही है पर (जस) जावपुर क राजा हैं वस
वाकानर के स्वामी हैं। और इनका भी मरण विगडता है। सा यह बडा
ा आया है। यहाँ (=इस पर) सब काम आवगे (=प्राण देंगे)। पीछे
न सब ने काम आन का निश्चय किया।

और कइ अक भाईबन्ध थ जिनका ठाकुर न कहा—आप निकलो हम
म आवेंगे। तब उन्होने कहा कि आप यह पव देखकर मरते हैं और हम
ाकालते है तो हम भी यह (=अमा) पव फिर कहा मिलगा हम भी राज
न है सा अब हे ठाकुरा ! (आदर के लिअ बहुवचन) काम आ बनन पर
=विपत्ति आने पर)। आपको छाडकर कहाँ जावें, आपक साथ (ही)
म आवेंगे।

पीछे ठाकुर न महाराज का कहलाया कि हम तय्यार हैं। अेकादशी का
ाते है (=आ रह हैं)। सा दशमी के दिन शहर म स केसर मगवायी।
ार ही ठाकुर आदि न कसरिय किय (=केसरी रग का वेश बनाया केसरी
ग क वस्त्र धारण किय)। जो किसी ने पूछा तो कहा (कि) बरात है
जान<जया)। पोछ ग्यारम क प्रभात क समय य (लाग) दान-पुण्य करक
ो सौ आदमी और दो सौ सवार दलपतसिहजी के डेरे पर आय। और
हाराज के ऊपर बादशाही पहरे क सौ आदमी थ उन सबको मारकर भीतर

भीतर जाय म्हाराज-सू मुजरो कियो वा वडी हथकडी काढी तठ गाबादार-नू खबर लागी तद पातसाही फौज हजार च्यार इणा-नू आय घेर लिया तारा या कबीला काढ, दळपतसिंघजी तथा हाथीसिंघ गोपाळदासोत मारै साथ-सू झगडा कर काम आया संवत १६७० फागण वद ११

म्हाराज रा कबीला किता-अक भटनेर म हा सू फागण सुद ५ नू भटनेर खबर आयी तद म्हाराज री पाग साग इतरी सती हुयी—१ भटियाणी जान्मदे २ भटियाणी नौरंगदे ३ सानगरी मताबदे, ४ भटियाणी कनकदे ५ भटियाणी सदाकवर ६ निरवाण मदनकवर इणा रा हाथ भटनेर र दरवाजे पाखाण म मड्या है

इण चाकरी-सू बीकानेर म जात चापावत हाथी पोळ ताई घोड चढिया आव है

जाकर महाराज को मुजरा किया (=महाराज का अभिवादन किया) और बडी (तथा) हथकडी निकाली (=दूर कर दी)।

तब सूबेदार को खबर लगी। तब चार हजार बादशाही फौज ने आकर घेर लिया। तब इन्होंने राज परिवार को (बाहर) निकाल दिया। दलपतसिंह जी तथा हाथीसिंह गोपाळदास का बेटा सारे साथ के सहित लडाई करके काम आये। संवत १६७० फागुन वदि ११ (को)।

महाराज के परिवार (के लोग) कितने ही भटनेर में थे। सो फागुन सुदी ५ को भटनेर खबर आयी। तब महाराज की पगडी के साथ इतनी सती हुई। भटियानी (भाटी शाखा की) जादमदे भटियानी नौरंगदे सानगरी सताबदे भटियानी कनकदे भटियानी सदाकवर निरवाण (शाखा की) मदनकवर। इनके हाथ (=हाथों के निशान) भटनेर के द्वार पर पत्थर में बने हुये हैं।

इस सेवा के कारण बीकानेर (के दुर्ग) में चापावत जाति (के सब सरदार) हाथीपोल तक घोडे पर चढे हुए जाते हैं (पोळ=पौरी बडा द्वार म० प्रताली)।

उज्जैणी-रो जुद्ध

(बीसवीं शताब्दी—पूर्वार्ध)

[मीसण सूरजमल]

[सूरजमल (सूर्यमल्ल) मीसण शाखा के चारण थे। इनका जन्म सं० ८७२ में बूंदी में हुआ। ये संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश डिंगल पिंगल आदि नेक भाषाओं के जानकार अनेक विषयों के ज्ञाता और बहुश्रुत विद्वान थे। नकी मृत्यु सं० १९२५ में हुई।

इनकी कृतियों में वंश भास्कर और वीर सतसई विशेष रूप से प्रसिद्ध । वंश भास्कर' ऐतिहासिक महाकाव्य है। यह कोई २५०० पृष्ठों का हत्काय ग्रंथ है। इसकी भाषा प्रधानतया व्रजभाषा है जिसे कवि ने व्रज भाषा प्राकृत मिश्रित भाषा कहा है पर बीच बीच में संस्कृत प्राकृत पभ्रंश और राजस्थानी का प्रयोग भी हुआ है। इसमें पद्य की प्रधानता है पर ोच बीच में गद्य भी है जो अधिकांश में वचनिका शैली का अर्थात् तुकांत चन है। ध्यान रखने की बात यह है कि वंश भास्कर इतिहास नहीं वरन् ाव्य है। इसके ऐतिहासिक तथ्य और संवत अधिकांश में अशुद्ध हैं। ग्रंथ की ानी ओजस्विनी है। इसमें स्थान स्थान पर अप्रचलित और अपरिचित शब्दों ा प्रयोग हुआ है जो केवल कोष ग्रंथों में ही देखने को मिलते हैं।

इनका दूसरा ग्रंथ वीर सतसई है जो अपूर्ण है। इसके प्राप्त दोहों की ंख्या ३०० के लगभग है। इसकी भाषा राजस्थानी है। इसमें वीर जीवन के ार्मिक रूप ओजस्वी शैली में चित्रित हुए हैं।

संकलित अंश वंशभास्कर से लिया गया है। यह अंश बीसवीं शताब्दी ्वार्ध के गद्य का नमूना है जो अन्त्यानुप्रास युक्त है। इसमें दिल्ली की ाजगद्दी के लिए हुए शाहजहाँ के पुत्रों के संघर्ष का वर्णन है। उज्जैन का ुद्ध सं० १७१५ में शाही सेना और औरंगजेब तथा मुराद की सम्मिलित ेना के बीच में हुआ जिसमें शाही सेना पराजित हुई। सूर्यमल्ल ने इस युद्ध ें दारा का मौजूद होना कहा है पर यह ऐतिहासिक तथ्य नहीं ै।]

—१—

जिण समय दिल्लीस साहजिहान र महातक री प्रकोप थियो जिक्ण री पीडा र परतन्त्र होद आप रा अधिकार र ऊपर वडा पुत्र दारा नू ग्रहण दियो जिकी वात प्राची रा अधीस दूजा कुमार सुजासाह रा उर म न मायी अर अनामय पूछण रो व्याज करि पिता नू वडा भाई समत मारि साह होण री सकळप करि दिल्ली माथै आप री चतुरग चमू चलायी

तिका मत्र उपह्वर भी चार लोका रा चतुरपणा सी चोड आयो थका पहली ही इसो घाट घडता तीजा साहजादा औरगजव र सहायक वणिया, जिक्ण महापातक माथ न'र आधी पातसाही रो लोभ दे प्रतीची रा पति आप रा अनुज मुरादसाह नू मिलाद पाउस री कादम्बिनी र अनुकार आप रो अनीक तणिया

अठी दूजा साहजादा न आप र ऊपर चलायो जाणि तिक्ण नू पाछो फेरा र काज कुमार दारासाह री कुमार सलमसाह विदा कियो तिक्ण र

---

(१)

जिस समय (=उस समय) दिल्ली पति शाहजहा के महारोग का प्रकोप हुआ (म स्थित)। जिसकी पीडा के परतन्त्र (=आधीन) होकर । अपने अधिकार पर। बडे पुत्र दारा को रहन दिया। जो बात (=यह बात) पूर्व दिशा के (=साम्राज्य के पूर्वी भाग के) शासक दूसरे शाहजादे सुजाशाह (=शूजा) के हृदय म नही समायी (=सहन नहीं हुई)। और उसने आरोग्य पूछने का बहाना करके पिता को बडे भाई सहित मारकर बादशाह होने का सकल्प करके दिल्ली पर अपनी चतुरगिणी सेना को चलाया।

वह मन्त्र (=विचार) गुप्त (होने पर) भी जासूस लोगो के चातुय से प्रकट हुआ (=प्रकट होकर) पहले ही ऐसा घाट घडते हुये (=ऐसा ही विचार या सकल्प करते हुये) तीसरे शाहजादे औरगजेब के (लिये) सहायक बना। जिसने महापाप सिर पर लेकर आधी बादशाही का लोभ देकर पश्चिम दिशा के (=साम्राज्य के पश्चिमी भाग के) शासक अपने छोटे भाइ मुरादशाह को मिलाकर वर्षा (प्रावृप) की मेघघटा के समान अपने सैन्य को ताना (=फैलाया बढाया)।

इधर दूसरे शाहजादे को अपने ऊपर चढा हुआ जानकर। बादशाह ने। उसे वापिस लौटाने के लिये। शाहजादे दाराशाह के बेटे सलमशाह (सुलमान शिकोह) को रवाना किया। उसके साथ कछवाहा जयसिंह गौड अनिरुद्धसिंह

राय कछवाह जयसिंघ गौड अनिरुद्धसिंघ नवाब दलेलखान तीन ही मुख्य सामंत दे र आप रा उद्धत अनीक दिया तीन-ही सामता सलेम रै साथ साम्है जा वाणारसी रै समीप कुमार रा काका नू कोरड़ो लोह चखाया जिण थी पहला ही प्रघात मे पराङ्मुख होय दूजा कुमार दूजा रा प्रहार भी न खाया

साह सुजा गज समर सामता र सलम ।
सर विण पाछो सहियो जिहांग रद विण जम ॥
पिता पितामह था प्रणत लिखि सलम जय साह ।
कळह-जयी मतवारिया पटा दिवाइ सिराह ॥
पच लाख मुद्रा पटा ल जयसिंघ दलेल ।
तीधा गौड दु लाख तग खग्गार रण जय खेल ॥

इण रीति आप रा और भी विसम वीरां नू बधाई काका रा दुवार रा कपाट होय सना समेत सलम उठ ही आडा रहिया अर काक भी पुळियार होय प्राची रा परिकर इकट्ठो करि फेर भी दिल्ली पर चलावण दृढ भाव गहिया

नवाब दलेल खा तीनो प्रमुख सामत देकर अपना उद्धत सैन्य दिया। तीनो ही सामतो ने सलमशाह के साथ सामने जाकर बनारस (वाराणसी) के पास शाहजादे के चाचा (=शुजा) को कोरडा (?) लोहा चखाया (=शस्त्रो का मजा चखाया)। जिससे पहली ही मुठभेड मे पराङमुख होकर दूसरे शाहजादे ने (शुजा ने) दूसरी मुठभेड का वार (प्रहार) भी नही चखा।

शुजाशाह को युद्ध मे पराजित करके सामतो और सलमशाह ने उसे दात रहित साप की भाति मद से रहित करके वापिस लौटा दिया। प्रणत (=विनीत) सलम ने जयलाभ (का समाचार) लिखकर पिता और पितामह से युद्ध को जीतने वाले वीरो को पट्टे (जागीरें) दिलाकर सत्कृत किया।

जयसिंह और दलेल खा ने पाच लाख मुद्रा की जागीर पायी। गौड अनिरुद्ध ने दो लाख की जागीर पायी। तलवारो से युद्धभूमि मे विजय (का खेल) खेलकर।

इस प्रकार से अपने और भी विशिष्ट वीरो को बढाकर। चाचा के दरवाजे का किवाड बनकर (=अवरोधक बनकर) सेना के साथ सलमशाह वही। सामने (=मार्ग रोककर) (अपे अडउ)। बना रहा (=डेरा डाले रहा)। और चाचा ने भी भगोडा (पुळणा=चलना से) होकर पूर्व का कटक इकट्ठा कर फिर भी दिल्ली पर ले जाने का (=चढाई करने का) दृढ भाव (=दृढ निश्चय) ग्रहण किया।

–२–

इण वात रै हुवण पहली ही सितारा, वीजापुर भागनगर प्रमुख दक्खिण रा अधीसां-नूं विजय रा फळ में विभागी बणाइ दक्खिण-पच्छिम रा अधीस दो-ही साहजादा मिळिया, निके दूजा अग्रज रै अनुकार साच संकळप दिल्ली रा दायाद होइ साम्हा चलाया, अर दिल्लीस भी घणा साहस थी आप रा जावण में आडा होइ चलाया इसड़ा वडा कुमार दारा-नूं साम्हे पूगण रो निदेस दे र विदा कीधा जतरै तापी-नूं नांघि नरमदा नदी रै नजीक आया

साह कहियो—म्हा रा अनामय रा उद्देस करि आव तिका-नूं साम्हे जाइ हूं ही ससुभाइ पाछा मोडियाऊं तिका भी तात रो निदेस सनमानि दारा कहियो—पिता रा पधारण में हूं भी पाट रा पुत्र प्रतिष्ठा नूं पाऊं

जरै पातसाह जोधपुर रा अधीस राठौड़ जसवंत च्यारि ही अनुजां सहित कोटा रो अधीस हाडा मुकुंद माळव देस रा पच्छिम प्रांत रो पुहवीस रतळाम

---

(२)

इस बात के होने (=होने) से पहले ही इस बात का होना होने के पहले ही। सतारा बीजापुर भागनगर (हैदराबाद) आदि दक्षिण के शासकों को जीत के (=जीत के होनेवाले) फल में (=लाभ में) हिस्सेदार बनाकर। दक्षिण और पश्चिम के शासक दोनों शाहजादे (परस्पर) मिले। वे (अपने) दूसरे बड़े भाई (=शुजा) के अनुकरण में (=समान)। सच्चे संकल्प के साथ दिल्ली के दायाद (=पैतृक संपत्ति में हिस्सा बटानेवाले कुटुम्बी) होकर सामने चले। और दिल्लीपति ने भी बहुत साहस से अपने जाने में अवरोधक होकर चले (उनको रोकने के लिए बादशाह स्वयं जाना चाहता था पर दारा ने बादशाह को जाने से रोक दिया और स्वयं चला)। उस बड़े शाहजादे दारा को (उनके) सामने पहुंचने की आज्ञा देकर रवाना किया। तब तक (वे दोनों शाहजादे) तापी नदी को पारकर नर्मदा नदी के निकट आ पहुंचे।

बादशाह ने कहा—मेरी बीमारी के उद्देश्य से आते हैं। उनके सामने जाकर मैं ही समझाकर वापिस मोड़ आऊंगा (=लौटा आऊंगा)। वह पिता का हुक्म भी सनमान कर दारा ने कहा। पिता के जाने में सिंहासन का अधिकारी पुत्र(=बड़ा पुत्र) मैं भी प्रतिष्ठा नहीं पाऊं(गा)।

जब (=तब) बादशाह ने जोधपुर का राजा राठौड़ जसवंतसिंह चारों छोटे भाइयों सहित कोटा का राजा हाडा मुकुंदसिंह, मालवा देश के पश्चिमी भाग का राजा (पृथ्वीश) रतलाम नगर का बसानेवाला राठौड़

नगर रो वसावणहार राठोड रतनसिंघ विश्वासघात कर आप रा भाम अमरेस रा चरणा रो छेदणहार गौड नरेस अजुनसिंघ राणाउत राजा रायसिंघ, नवाब कासिमखान करीमखान प्रमुख आप रा मुख्य सामत सहायक करि वडा वरथ र साथ जभण रा साहसी कुमार दारासाह नू औरग मुराद र साम्है विदा कीधो अर इण रा कुमार मनमन्नू पहला सूचिया सहायका समत प्राची रै पथ सुजासाह आगे रहण कीधा

अठी साह र समाधी हुवा पेड दारा साह न अधिकार रा काम भी छाड दाधा तो भी तीन ही भाया रा तख्त साथ चलावणो जाणि प्राची मे पुत्र नू भेजि अवाची रू आवता दो ही पुत्रा नू समुझावण साम्है जावता पातसाह नू यलि वडो पुत्र साहस र सहाय पहलो कहिया कटक र साथ दर कूचा दक्खिण रै अभिमुख चलाया तिकण अवतीपुरी र पर पच कोस र प्रमाण पुगि वीरा री वामठि हजार सेना र साथ मेळ पायो [1]

जद दा ही फौजा र दूज ही दिन काठ काप तोपा रो घोर घमसाण राचियो अर बीच बीच बडो रा वेहडा वज्र वग वानत वीरा र मस्ता रो

रतनसिंह विश्वासघात कर अपने बहनोई अमरसिंह के परो का छेदक गौड राजा अजुनसिंह राणावत (राणावतीय) राजा रायसिंह नवाब कासिम खा करीम खा आदि अपने मुख्य सामतो को सहायक बनाकर बड समूह के साथ जूझने के साहसवाले शाहजादे दाराशाह को औरगजब और मुराद के सामने रवाना किया। और उसके शाहजादे मनमशाह को पहले सूचित किये सहायको सहित पूरब के माग म शुजाशाह के मुकाबले म रहन दिया।

यहा (=इधर) बादशाह के अस्वस्थ होने के बाद। दाराशाह न अधिकार का काम भी छोड दिया। तो भी तीनो भाइयो की सिंहासन पर प्रस्थान (=चढाई या बात) जानकर। पूरब म पुत्र को भजकर। दक्षिण म आते हुए दोनो पुत्रो को समझाने को सामने जाते हुए बादशाह को रोककर। बडा बटा (=दारा) साहस के साथ पहले बताये हुए सय के साथ कूच करता हुआ दक्षिण के सामने (=दक्षिण की ओर) चला। उसने उज्जैन के आगे पाच कोस के प्रमाण (=पाच कोस दूर) पहुच कर वीरो की तीमस हजार सेना के साथ मेल पाया (=इकट्ठा होना)।

वहा दोनो सेनाओ के दूसरे ही दिन काठ कोप तोपो का भयकर घमासान (=युद्ध) हुआ। और बीच बीच म पगनी के वेग जस वज्रतुल्य

[1] तारीख इस युद्ध म सम्मिलित नहीं था।

सपात माचिया

असी सहस सना अठा सहस उठी वासट्ठि ।
भडा आपिया, भीरखा नीर गया मुख नट्ठि ॥ १ ॥
प्रथम गजर तोपा पड गोळा वजर गुडाण ।
मचिया जिण दिन माभिया घार प्रळ घमसाण ॥ २ ॥

—३—

जिण समय दो ही फौजा रा हिलोळा समुद्र र समान प्रमाण मे आया अर तोपा रा गाज हू सस रा सीसा सहत मकराकर मेखळा मही र सचाळा लगाया दिक्पाळा रा गाढ समत दिग्गजा रा मद छूटि आठू ही अनकप चकितपणा रा चीत्कार करण लागा, अर रज धूम रा वितान म मारतड रा मयूख अनर्धान विद्या रो अभ्यास करण लागा दो ही तरफ गाळा री गजर हू आट आस जिता-ही घोडा सिपाहा समत हाथिया रा गोळ उडण लागा अर इळा-आकास रै हागाळी रूप विघ्नकारी डूगरा रा डाहणहार विघन विहीण परिरभ जुडण लागा

वेगवाले वानत वीरा के शस्त्रो का सपात (=प्रहार आघात) मचा ।

अस्सी हजार सना इधर (थी), उधर बासठ हजार । वीरो (क मुखो पर तज) शोभायमान हुअे और कायरा के मुखो पर तज नष्ट हो गय । (नार=पानी=तज) ।

पहन । ताप पड । वज्र जस गोल चल । उस दिन वीरो का भयकर प्रलयकारी घमासान (=युद्ध) मचा ।

(३)

उस समय दोना सनाओ के हिल्लाल । समुद्र की भाति । प्रमाण म आय (=दाना सनाओ म समुद्र की भाति बडा तरगें उठी) । और तोपा की गजना स शपनाग के सिरो सहित मकराकर (=मकरालय=समुद्र) की मेखला वाली (=समुद्र स घिरा हुइ) पृथ्वी के सचक (आघात) लगाय (=पृथ्वी को हिला दिया) । दिशाओ क अधिपति देवताओ क गाढ (=दृढता या गव) क सहित दिग्गजो क मद छूटकर आठो ही हाथी चकितपन के (=आश्चय क) चीत्कार करने लग (=स्तभित होकर चिघाडन लगे) । और धूल के धुअें के मडप म सूय की किरणे अतर्धान होन की विद्या का अभ्यास करने लगा (=सूय किरणें अदृश्य होन लगा) । दोना ओर गोला की गजना स । उनन ही घोडो और सिपाहियो सहित हाथियो के समूह उडन लगे । और

जिण समय महामारी र मचाण लगा रा लाम लगि कार्गि बखता मन रा ललकार आप्र रा अवध मादनर पुनिसा पाडै घतुन री हुन धारि लागामार हाथा रन समर र हरा उगरिया[1] जर घणा रा प्रबह प्रहार र पडिया र पुडिसार हुआ आग माड़ री मरा रा सिपाहा पा मन माग माल्न रा आरभ करिया

जिना रा न्द्र म न्याझ न्नना रा माहजादा रा सना नह आर थपी घणा आग आर गुलाह र उगराए मारा मटै मचाया जर घणा रा कमरनाए म भाग रा अनाह रा र र रा प्रवाह म पडिया नवाब कासिमखान समन कुमार दारासाह भा ठहरण न पाया

जठ ना बड़ा बड़ा अमीरा रा आगाम प्रहार परना ना पड़ना रवि राठाड़ राजा जसवतसिंघ राणावत राजा रायसिंघ प्रमुख हिंदू रा आप जवना रा आप दास री साथ छाडि आप आप रै अमार चालिया अर चलाहि हा भाया

पृथ्वी और आकाश क हायावरा के समान (—हारा की तरह नाभिन) विघ्नकारा गहाड़ा का समूह आन विघ्न रहित परिश्रम जुटन लगा।

उस समय। (युद्ध रूपा) महामारी के आरभ म मनुष्या के नाश का व्यापार बड़ अथवा बन्धा समाह के लिवास। युद्ध के असम्य (=अपरिमित) समाह की (?) घाव (पर) पड़न का। होम धारण कर (=इच्छा करक)। दाराशाह। हाथी तथा राजसिंहासन स नीच उतर गया। तब। (उस) सामन वाला के (=शत्रुओ क) प्रबल प्रहारा स गिरा हुआ (=युद्ध म मारा गया) अथवा भाग गया जानकर। बादशाह का सना क सिपाहिया न अपन अपन माग लगन का (=भागन का) आरभ कर लिया।

दिल्ली क मालिक क उमराव भगवान लगन ना। वह घन म बड़ा हुई शाहजादा का सना न आग आकर। उत्साह के उफान म महाप्रलय मचा दिया। यहा अनका के महानाश म। अपना सना के उफन के प्रवाह म पड़ा हुआ। नवाब कासिम खा सहित शाहजादा दाराशाह भी। ठहरन नहीं पाया (=ठहर नहीं सका)।

जहा ता (=उस समय ता)। उठ बड़ अमीरा क। बल लाकर। प्रहार क पूर हो परत हुए। देखकर। राठोड राजा जसवतसिंह राणावत राजा रायसिंह आदि। जितन हा आय (=हिंदू) (और) मुसलमाना के समूह।

[1] यह घटना उज्जन के युद्ध की नहीं किंतु सामूगढ़ के युद्ध की है जो उज्जन के युद्ध के डेढ़ मास बाद हुआ था।

समेत माधाणी हाडो मुकन्दसिंघ गौड अजुनसिंघ राठाड रतनसिंघ जिसडा जोधार काळौ रा कळस रण—गळियार हाड हाथियां रैं माथ हाथ करता माथियां रैं सूरता रो माण लगावता साहजादा रैं समीप हालिया

घणा घोडा भडां रा घाण काढि बूंदी कोटा दोनूं ऊजळा दिखाड हाडा रा वंस नै वीजां मैं वधता बताइ लाज रूप लगर रा खैंचिया पता रा प्रतिमल्ल मदां लाया मइंद माधाणी मुकन्दसिंघ मोहणसिंघ कन्हीराम जूझारसिंघ च्यारि ही भाई बैरां नूं जय-ससय जणाइ खागां रा खेत मैं खंड विखंड होय विमाणां बैठा नारियां रै गळबांह कीधा सुर लोक पूगा जिकां नूं इन्द्रादिक अमरां वधाइ आघा लीधा तिकां सुधा रूप सौधु रा छाकिया नंदन वन रै निवास सुधर्मा सभा मैं बैठि सुरां रैं साथ विलास कीधा

अठी पाचमो भाई किसोरसिंघ मैं ही हाथियां नूं हटाइ वर वीर वैरियां नूं

शत्रुओं का साथ छोडकर। अपने अपने घर (को) चल दिये और चारों भाइयों समेत माधोसिंह का बेटा हाडा मुकुन्दसिंह गौड अर्जुनसिंह राठौड रतनसिंह जैसे योद्धा। पंक्ति के कलश। युद्ध के बनकर। हाथियों के ऊपर हाथ करते हुए (=शस्त्र प्रहार करते हुए)। साथियों की शूरता (वीरता) की सान लगाते हुए (=साथियों की वीरता को तीक्ष्ण करते हुए)। शाहजादों के पास (=ओर) चले।

अनेक घोडों और वीरों का विनाश कर। बूंदी और कोटा दोनों को उज्ज्वल (=निष्कलंक यशस्वी) बनाकर। हाडा के वंश को दूसरे वंशों में बढ़ता हुआ (श्रेष्ठ) बतलाकर (=दिखाकर)। लज्जा रूपी लंगर से खिंचे हुए (=जिनको लज्जा युद्ध में भागने नहीं देती थी)। शत्रुओं के प्रतिमल्ल। मद चढ़े हुये मृगेन्द्र। माधोसिंह के बेटे मुकुन्दसिंह मोहनसिंह कन्हीराम जुझारसिंह। चारों भाई। शत्रुओं को विजय में सन्देह जताकर। तलवारों के खेत में टुकड़े टुकड़े होकर। विमानों पर बैठे हुए। नारियों के गले में बांह किये हुए (अप्सराओं को आलिंगन किये हुए)। स्वर्गलोक पहुंच गये। उनको इन्द्र आदि देवताओं ने अभिनन्दित कर आगे लिया (=स्वागत किया)। उद्दाम सुधा रूपी मदिरा में छके हुए नन्दनवन के आवास सुधर्मा सभा (देवताओं की सभा का नाम) में बैठकर देवताओं के साथ विलास किये (=भोग भोगने लगे)।

इधर पांचवां भाई किशोरसिंह बड़े हाथियों को हटाकर, श्रेष्ठ वीर शत्रुओं को बड़े भाई के तथा अपने साथी बनाकर, पृथ्वी का विवाद (=रगड़)

अग्रजा रा तथा आप रा साथी वणाइ घरा वढ्राड हाण करवाळ रूप ग्रकचा म अग रा फाचरा उडाइ सरा रा साला करि पाछा जुडाइ खेत पडिया, अर आप री आऊ र वळ उखरिया अग न कवाडपणा म गाढा करण कलव रूप कारा म जडिया

गौड राजा अजुर्नसिंघ वरिया रा थाट विराटि वडा गजा र चाथर चद्रगम चलाइ मकण मूग नू साथी करि महारुद्र री माळा म आप रा मु रा मर चढाइ रुड थका ही धारा मैं तिल तिल पळचरा री पाता पुद्गलन रावि दृष्टतोक पूगिया

इण रीति रतनाम र राजा राठाड रतनसिंघ मारथी समत तरणी नू तमाम लगा" क हा गज रना सहित मुडाण्ड सूना करि दीठा दोयणा र सोणित भद्रकाळी रा खप्पर भराइ वीर वताळा नू गूद रा गाळा जिमाइ विना माथ भी माहजादा-नू मका" लोह छक घूमता गजा री घडा मैं सूर-मज्जा सूत इच्छा र अनुसार परलोक लियो

उठा हाडा रा अधिराज नरेस सनुसाल रो ताजा कुमार भगवतसिंघ

हान क लिअ तलवार रूपी आरो स शरीर क फाचरे (टुकडे) उडाकर। भालो के प्रहार स वापिस जोडकर। युद्धक्षेत्र मे गिर पडा। और अपनी उम्र क वल स वचे हुअ शरीर को काटा म जडा।

गौड राजा अजुर्नसिंह। शत्रुओ के समूहो को विध्वस्त कर। मतवाले हाथिया क सिरा पर तलवार चलाकर। सहगामी वीरा का साथ लकर। महारुद्र की मुडमाला म अपने मुड (सिर) का सुमेरु (=माला का बडा मनका) चढाकर। कवध हुआ हुआ भी। तलवारो की धारा म। तिल तिल मासभक्षका की पक्ति म (=हिस्से म) शरीर को रखकर (=अपना शरीर मासभक्षका को देकर)। अभीष्ट लोक को (=स्वर्ग को) जा पहुचा।

इस प्रकार रतलाम क राजा राठाड रतनसिंह न। सारथी अरुण सहित सूय का तमाम म लगाकर। कई अव। हाथी दातो युक्त मुडा-दडा को सूने करक। दीख हुअे दुजना क (=शत्रुआ क) लहू स भद्रकाली क खप्पर का भरवाकर। वीर वताला को गूद के गोल (=मेद या चर्बी के समूह) जिमा कर। विना सिर क भी (=कवध होकर भी) (दाना) शाहजादा का शकित कर। शस्त्रा म रक्त हुअे मतवाल हाथिया की घटा म। वीर शय्या पर साथ हुअे। इच्छा क अनुसार परलोक लिया (=प्राप्त किया)। उधर हाडा क अधिराज राजा शत्रुसाल का तीसरा कुमार भगवतसिंह औरगजब क आग कई

आरग आग के ही पला पटता नू पौढाइ प्रेत-गीधादिक पळचरा-नू धपाइ चडी रा चसक म आप रो अस्र आसत्र पूरि च्यारि तरवारि लागा जीवतो-ही खेत रहिया, अर दो-ही तरफ हजारा ही सिपाह मरिया तथा घायल करिया तिका म दिल्ली रा दळ र भागवै अठी रो घायल वधुपणा रा दाव मे पडियो थको दूज दिन अेक भी जीवता न लद्दिया

—४—

ऊतरिया गज-सू अठै दारा चूके दाव ।
तदि ऊतरिया तखत-सू भोळा स्व मनि भ्रमाव ॥
गज तजता पुळिया गिणै स्वामी कासिम सग ।
दळ भग्गो दिल्लीस रा जाणे परबळ जग ॥
भागता दळ भाजिया दारा कासिम दोहि ।
पुळिया टोडा-जोधपुर आदि घणा भड आहि ॥

जठ इण रीति हाडा गौडा राठोडा आप-आप रा लूण उजाळिया अर हजारा वरिया नू वसुधा माथै विछाइ ढाला समत के ही गजराज ढाळिया मातू ही सामत खास वाडा नू ताडि गजा रा गोळ मे जावता जग्गिया अर

अेक शत्रु वीरो को सुलाकर। प्रेत गीध आदि मासभोजिया का तृप्त करक। चडी (दुर्गा) के मद्यपात्र म अपने लाहू का मद्य भरकर। चार तलवारें लगन पर। जीता हुआ ही खेत रहा। और दानो तफ हजारो ही सिपाही मर तथा घायल हुअे। उनम दिल्ली की सेना के इधर का। घायल। बन्धुपन के दाव म पडा हुआ (?) दूसर दिन अेक भी जीता नही मिला।

(४)

यहा दारा दाव को चूककर हाथी से उतरा तब भोला दारा अपनी बुद्धि के भ्रम से राजसिंहासन स (भी) उतर गया। हाथी को छाडते ही (=हाथी से उतरत ही) स्वामी का कासिम खा के साथ भाग हुअे जानकर (और) युद्ध को प्रबल जानकर। दिल्लीपति बादशाह की सना भाग चली।

सेना के भागन पर दारा और कासिम खा दानो भाग चल। टाडा और जोधपुर आदि के बहुत स वीर (भा) भाग चल।

यहा (=वहा) इस भाति (ऊपर गिनाये) हाडो, गौडा राठौडा ने अपन अपने नमक उज्ज्वल किय (=नमक-हलाली की)। और हजारा शत्रुआ का पृथ्वी पर विछाकर। ढालो के सहित अनेक गजराजो का गिरा दिया। माता ही सामत (जिनके नाम ऊपर गिनाय गय हैं) खास वाडे का तोडकर हाथियो

ौर भी सीसादिया रावत जगरूप जिमा क हो अछूना अणी रा वाद उठ ही
|गना पड़िया लोह छकिया

बीजा रा वरय म जिका रा मजवी जाणिया तिक ता न्लिी रा दळ रा
घायल जीवता रहिया और हजारां-रा मत सोधण र समय सचेत अचत
प्राणधारी पाया तिक सब ही औरंग रा आदेम रूप अनळ मे दहिया आप रा
घायला रा जीवण रा जतन कराड दक्षिण रा सहाय सहित दो ही साहजादा
अप्रनी र उपकठ के ही मुकाम किया अर आप रा भडा नू नाणा री रीभ
र र क री परायां न पळटावण रा कु काम किया

इण रीति औरंग रा भाग र जार मारग साह रा भडा तजियो अर
तिको भी यो विसाळा पुरी रो कजियो जीति आगरा माथ आवण रा आरभ
म सजियो

उजणी रण जीति इम बीरा मन विक्साम ।
उभ भ्रात रहिया उठ छत ऊपर धक छाम ।।

क समूह म जाते हुअ। और अन्य भी सीसोदिया रावत जगरूप जसे कई
अक (=अनक)। अछूनी सना (=कुआरी सना) क दूल्ह बन हुअ। वहा
पहुचत ही। गस्त्रा स छदे हुअे। गिरे (=मारे गय)।

दूसरा का (=नबुआ की विरोधी) सना म विद्यमान। जिनके सबंधिया
न पहचान लिय। व न्लिी की सना क दूसरे हजारो ही घायल तो जीते रह।
युद्धक्षेत्र की टूटन समय सचेत और अचत प्राणधारी (जीवित) पाय गय। व
सभा औरगजेब की आना रूपी अग्नि म जल गय (=औरगजब की आना स
मार गय)। अपन घायला क जीवन (की रक्षा) का यत्न करावर दक्षिण के
सहायता सहित दानो शाहजादा न उज्जन के पास कर मुकाम किय। और
अपने वीरो का। नाश्वा (के मूल्य) की रीभ (रीभकर दिया हुआ पुरस्कार)
दकर। परायो को (विरोधियो) को पग बदलने क लिये प्रेरित करन के
अनक उपक्रम किय।

इस प्रकार। औरगजब क भाग्य क बल स बादशाह के योधाओ न रग
को छोड दिया। और उसन भी यह विशालापुरी का (=उज्जयिनी को)
युद्ध जानकर आगरे क उपर आन (=चढ़ाई करन) की तय्यारी की।

*इस प्रकार उज्जयिनी म युद्ध का जीतकर (और) वीरो क मनो को।
प्रफुल्लित करक । दोनो भाई (=औरगजब और मुराद) उत्साह के ऊपर
धक (=धाव) छाकर (फहराकर) वहा ठहरे।*

मक चउदह् मत्रह् मम उज्जणी रण अेह ।
हुवा हजारा मरण हद मचि अमि धारा मह ॥

मवत सत्रह सौ चौन्ह् के ममय। उज्जन के इस युद्ध म। हद (=वहद अत्यत) तलवारा की धारा की वर्षा मचकर। हजारो का मरण हुआ।

टिप्पणी—सवत मुद्ध नही है युद्ध स १७१५ की वशाव वदि ६ का हुआ था यहा दिया गया सवत समवत चत्रादि (अर्थात चत्र से आरभ होने वाला) न होकर श्रावणादि हो।

कवळ-प्रसग

(बीसवी शताब्दी—द्वितीय चरण)

[राव बखतावर]

[राव बखतावर जाति के ब्रह्मभट्ट थे। इनका जन्म स १८७० के लगभग मेवाड राज्य के बसी नामक गाव म हुआ। ये जब बालक थे तभी इनके पिता मुखराम की मृत्यु हो गयी। बसी के ठाकुर अर्जुनसिंह की देख रेख म इनकी शिक्षा हुई। स १९०९ म ये उदयपुर आये। तत्कालीन महाराणा स्वरूपसिंह ने दो गाव पाव म सोना दरबार म बैठक और रहने के लिए मकान देकर इनका सम्मान बढाया। महाराणा स्वरूपसिंह के बाद तीन महाराणाओ के शासन काल म भी इनकी प्रतिष्ठा पूर्ववत बनी रही। इनकी मृत्यु स १९५१ म हुई।

ये ब्रजभाषा और राजस्थानी दोनो के अच्छे कवि थ। ब्रजभाषा म इनके बनाये हुए दस ग्रंथ मिलते हैं। राजस्थानी ग्रथो म केहरप्रकाश उल्लेखनीय है। इसकी रचना स १९३७ म हुई थी। यह अेक गद्य-पद्यात्मक प्रेम कथा है। सकलित अश म नायिका के सौदर्य का आलकारिक वणन है। वर्णन भावपूर्ण और सरस है। शैली अनुप्रासमयी है।]

जगउधर जागळू जहाँना जाराथ, रूप री खाण पुगळ सिंघलदीप री भात जिण जागळू पुगळ म पातर जवाहरराय समृद्धी री पोखता अलम री सवाय

कमल प्रसग का प्रसग

कवळ=कमल नायिका का नाम।

जागल भूमि म (जागल प्रदेश म)। जागळू (अेक नगर का नाम)। ससार म प्रसिद्ध (?)। रूप की खान। पूगल नगर (?)। सिंहलद्वीप की भाति। (है)। जिस (=उस) जागळू नगर म जवाहरराय नाम की गणिका है (पातर<पात्र)। (वह)। समृद्धि की पुष्टता (प्रौढ)। इस की सवाई (सबस

पुत्री जिण र कँवळ प्रसण, रूप री निधान सुवेशिया सू सवाई, साव रम्भा रै समान साहित्य श्रृ गार काव्य जबानी पर कहै, रमाताल परिजत सगीत म रहै वीणा धर सहजाइ गावै किण भात तराज पर नह आव नारद वीणा री तान जिण-न सुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जाव कुरग औ भमग वन पाताळ मू आवै जिण न देख जवाहर न्दिल म यू जाण रही कै म्हार रमायण च'तामण जनम ले आण रही जिण न देख पुर पाडास री येक यक यू भाख इ नादानी-न शिव शगताजी चिरजीव राख येक दन कवळ आप अटारी पर ऊभी छा, खुद दूना समीप मतारी मू भरवी री खूबी छी जिण घडी पाडोस री वठीनक जो जाव छो स वो देख सर्वांग सु दरता न सरावै छी

पहली सुधड वायक

सुघड जठ बोली—या नवेली सहल सारै ही सिधावज्यो, पण वाग वन सरावर तो वद भी मत जाव-या जावला बाग नो पिक शुक-अली उड जावसी,

---

बढकर)। (है)। उसने कमरा प्रसन्न नामक पुत्री (है)। जो रूप की निधान (है) सुकेशी अप्सरा से बढकर (है) बिलकुल रभा के समान (है) साहित्य, श्रृगार काव्य (वह) जिह्वा पर कहती है। रमा ताल पर्यन्त सगीत मे रहती है। वीणा लकर सहज-ही किस प्रकार गाती है? उसके सामने नारद की वाणा क तन भी तराजू पर नही आत (=उसकी बराबरी करने का साहस नही करते)। उसको सुनने पर कोयल और मयूर लज्जित होकर भाग जाते है। हरिण और भौंरे वन और पाताल मे (सुनने को) आते है।

उसको देखकर जवाहर मन म या समझ रही है कि मेरे रमायन और चिंतामणि जन्म लेकर आ गयी है। उसको देखकर नगर और पडोस की अेक-अेक (स्त्री) यो कहती है कि इस नादान को (भोली भाली को) शिव और शक्ति जी चिरजीवी रखें।

अेक दिन कमळ आकर अटारी पर खडी थी। खुद दूना (दासी का नाम) पास म (खडी थी)। सितार से भैरवी राग की शोभा (निकल रही) थी। उस समय पडोस की (स्त्रिया) जो किसी ओर (=कही) जा रही थी व सब कोई (उस) देखकर (उस की) सर्वांग सुन्दरता की सराह रही थी (=सराहने लगी)।

प्रथम सुघर (चतुरा) का कथन

(वायक<वाक्य)

वहा (तब) पहली चतुरा बोली—यह सुदरी सैर क लिये सभी जगह जावे। पर बाग वन और सरोवर म तो कभी न आवे। जायगी बाग म तो

न विवफळ श्रीफळ अनाड़ सर्बा जो सुमावमी जाबला जा वन तो खजन क्पोल चाव भूरला भण घर मृग राज गजराज विवर बूरा जाबला सरोवर ता राज हम बूड जावसी, कमठ काळा पन्ला सिवाळ अन्नटाजण आवमा

जठ दूजी सुघड वायक

फर दूमरी बाली—रात न या अटारी माथ क्नेई जो जावला तो चद्रम र भराम राहू म समा हीज लावला राहू क्दाक न आयो ता चकोर ता आवसा जावसी न आग माथ चहरा नैं चूय आवमी सावण आयाँ घरे या र हीन्ग जिका घालला हींडिया छ ता परियाँ धाव परियाँ माँव चालला

जठ तीसरी वायक

जठ तासरी बोली—र छदगाळी विधाता मू कुण छद पाया इ र लायक विधाता-म रायजादा बणावणी आया कन न आवा ? व सर्वांग-सुन्दर न भर-नणा जो निहारमी ता ज हमागमणा हूरजादियां-न निहारण इ हारसी इ पदमण रा परसिया पवन-न ज परस करला ता व फूल वाड्यां भी जाय

(लज्जित होकर) कायलें सुग्ग और मोर उड जावगे, और बिवाफन श्रीफन अनार सेव ये सूख जायगी। आवेगी यदि वन म तो खजन और कपोल जायगे। मणिधर (नाग) मृगराज गजराज भूमि के विवर म गड जायग। जावेगी सरोवर म तो (र्पा क मार) राजन्स डूब जायग कमन काल पड जायगे और सेवार औन्न म आ जायगा (=औन्न जायगा)।

तब दूसरी चतुरा का कथन

फिर दूमरी बाली। रात को कभी जो यह अटारी पर आवेगी ता चद्रमा क भरोम राहु स खता ही खावगी (=धोग्व म पडकर हानि उठावेगी राहु चद्र के धोखे इसको ग्रस लगा)। राहु कदाचित नहीं आया तो चकोर तो आवगा (हा)। आवेगा आर आग पर चहरे का चौ जायगा (?)। सावन आन पर इनके घर भूना यदि डालेंगी और भूनी हैं (=भूनेंगी) तो परिया के धाके परिया खीच ल जायगा।

तब तीमरा का कथन

तब तासरी बोला। इम जादूगरनी न विधाना स क्या छनछद पाय है ? इसके योग्य विधाना ने राजपुत्र बनाने म आया या नहीं (=बनाया जा मका है या नहीं) ? इस सर्वांग-सुदरी का आखे भरकर यदि देखेंगे ता व हसगमनी अप्सराओ का देखना हा भूल जायगे। इस पद्मिनी के परस (=छुओ) हुअ पवन को यदि स्पश करेंगे ता वे पुष्प-वाटिकाआ म जाकर भी नाक म सल

नवमलीक हुवा फरला इ चन्द्र वन्नी रा वदन र चानण जो इणक आय डालला तो व चद्रमा रा चानणा-न वडा अँधारो ईज वालला इ तीखा-नणी रा नणाँ री क्टाच्छ जा कोइ रायजादा खावसी तो जे सल क्टार खाय घूमण भी नहा आवसी इ रसीनी रा य अम्णध्य अधर जो कोई चमरवध चाखसी ता व ऊख रस सुधा रस-न भूंडा खारो ईज भाखसा जा इ वम करणा र वस उमीरजादा होवला जिणा री राज लोकाँ ज्याँरी तसबीरा-न ई जोवैला और इ वाळा न विडूजा प्रद्यूमण रो देखणो जा वणना ता व तलोत्तमा-न तल रती न रत्ती भर हा गणला

जठ चौथी वायक

जठ चौथी मुघड जो वोली क या तो फूलाँ रः भार नुरणी मोतियाँ-मू ई मूघा माली इ री अभिलाषा ता हममा उमीर करता ई होसी हममा जिवाँ रा धमीठ जठ फरता ईज होसी पण पूरव पुण्य रा तरवर ज्याँ रा इ अवसर आय फळला जिका महा मोहणी या कँवळ जाय मिळला

चलाये फिरेंग (=नाक भी सिकोडेंगे)।

इस चन्द्रमुखी के मुख के प्रकाश म यदि अब इग आकर पनेंग ता व चन्द्रमा के प्रकाश को वडा अधेरा ही कहेंग। इस तीक्ष्ण लोचना क लोचना का कटाक्ष यदि काई राजपुत्र खावेंग तो वे भाले क्टारें खाकर मतवाल हान को नहीं आवगे। इस रसमयी के य अरुण अधर यदि काई राजा चखेंगे ता व ऊख रस और अमृत रस को खराब और खारा ही कहग।

जरे! इस रासमी क वश मे जो अमीरजादे हाग उनकी रानिया उनका तसवीरो को ही देखेंगी। और इस वाला को विडौजा (इन्द्र) और प्रद्युम्न (काम का अवतार) का देखना यदि वनेगा (=व इसको यदि देख लेंग) ता व तिलोत्तमा (=स्वग की श्रेष्ठ अप्सरा) का तिल (के बराबर) और रति का रत्ती के बराबर ही समझेंग।

तब चौथी का कथन

तब जो चौथी सुघर (चतुरा) थी वह वाली कि यह ता फूलो क समूह म सुखनवाली है। मोतियो स भी महगे माल वाली है। इसकी अभिलाषा ता अमीर (रईस) सदा करत ही रहगे। उनके दूत सदा यहा फिरत ही रहग। पर जिनके पूव जन्म के पुण्यो क तम्वर इस अवसर पर आकर फलगे उनमे यह मनमोहिनी कमल जाकर मिलगी।

जठ पाँचवीं सुघड़ वायक

वचनका—

चोली जठ पाँचमी वायक बैंगळ प्रमण थ कही जी लायक
पण ज्यां अजपा जपिया ह्वैमी, अबद-पुष्कर तपिया ह्वैमी
ज गंगात्तर झूल्या ह्वैमी सिवन्न सीस कबूल्या ह्वैमी
धाम च्यार पर यहिया ह्वैमी धारा तीरथ लहिया वसी
कासी-करवत कटिया ह्वैमा हमाळ मिळ मिळिया ह्वैमा
जिण नर माही आ जा मिळमी बीजा हूँम लियां ड घर बळमी

जठ छठी वायक

आ बाई राजा राज-कँवार धारला अेकोई निरधार
दई इन्न लायक वर देमी लायक या जिण रा सुख लसी

जठ सातवीं वायक

जिण र आ लायक घर-जामी ऊ लायक दूणा वण आमी
मडमी लखण लखण मोटा रा छडमी बळदाऊ-छोटा रा

तब पाँचवी चतुरा का वचन

तब पाँचवां वचन बोली। कमल प्रसन्न आपने कही उसी योग्य है। पर जिन्होंने अजपा जाप किये होंगे जिन्होंने आबू और पुष्कर में तपस्या की होगी। जो गंगोत्तरी में नहाये होंगे जिन्होंने शिव को मस्तक चढ़ाना कबूला होगा। जो चार धामों में गये (?) होंगे। जिन्होंने धारा-तीर्थ लिये होंगे (=जो युद्ध में तलवार की धार से कटे होंगे)। जो काशी-करवत में कटे होंगे। जो हिमालय में (बर्फ में) मिलकर मिट गये होंगे। उन नरनाथों में यह जाकर मिलेगी। दूसरे लोग होंम निमित्त ही घरों में जलते रहेंगे।

तब छठी का कथन

यह राजकुमारी निश्चय ही किसी राजा को ही अंगीकार करेगी। विधाता इस योग्य वर देगा। यह योग्या उसका सुख प्राप्त करेगी।

सातवीं का कथन

यह योग्या जिसके घर जायगी वह दुगना योग्य बन जायगा। वह लक्ष्मण के बड़े भाई (=राम) के गुणों से मंडित होगा (अनुकूल नायक अर्थात् एक ही नायिका से प्रेम करने वाला बनेगा) और बलदेव के छोटे भाई (=कृष्ण) के लक्षण छोड़ देगा (दक्षिण नायक या अनेक नायिकाओं से प्रेम करने वाला नहीं बनेगा)।

कनक-सुन्दर

(उपन्यास)

[शिवचन्द्र भरतिया]

[श्री शिवचन्द्र भरतिया का जन्म सं० १९१० में डीडवाणा में हुआ लेकिन बाद में ये हैदराबाद के कन्नड गाँव में जा बसे। अन्तिम दिनों में ये इन्दौर में रहने लगे थे। ये राजस्थानी के भारतेन्दु कहे जाते हैं। इन्होंने अनेक सुन्दर रचनाएँ लिखीं और राजस्थानी को लोकप्रिय बनाने और उसकी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने का निरन्तर प्रयत्न किया। ये संस्कृत, हिंदी, मराठी और राजस्थानी के अच्छे ज्ञाता और दर्शनशास्त्र के विद्वान थे। सं० १९७१ में इनका देहान्त हुआ।

श्री भरतिया ने राजस्थानी में नाटक लिखने का सूत्रपात किया। केसर-विलास, बुढ़ापा की सगाई और फाटका जंजाळ इनकी प्रमुख नाटक-कृतियाँ हैं। इनमें मारवाड़ी समाज में प्रचलित रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है। राजस्थानी में उपन्यास लिखने का सूत्रपात भी भरतियाजी ने ही किया। कनकसुन्दर इनका प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास के पूर्वार्ध का प्रकाशन सं० १९६० में हुआ और उत्तरार्ध संभवतः लिखा ही नहीं गया। इसमें मारवाड़ी जीवन और संस्कृति का सुन्दर चित्र अंकित किया गया है। भरतियाजी की भाषा में प्रवाह और शक्ति है।

संकलित अंश लेखक के कनक-सुन्दर उपन्यास का एक अंश है। इसमें उपन्यास के प्रमुख पात्र मुरलीधर की व्यावसायिक ईमानदारी का रोचक वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है।]

(१)

दोपहर दिन-को वखत, च्यारां कानी[1] लू चाल रही छै, हवा का जोर-सूँ बाळू अठी-की उठी-ने उड़-उड़-कर बीं-का नवा-नवा टीबा हो रह्या छै और भोजण भी रह्या छै, मूँ ऊँचो कर सामने चालणो मुश्किल छै, तू कपड़ा माहे

---

१ कानी—ओर। अठी-की उठी-ने—यहाँ से वहाँ। बीं-का—उनके।

घूम-कर सारा सरीर न सिकताय कर रही छ धूप-की जोर की पड रहा छ क जमी ऊपर पग देणो मुस्कल छ रस्ता माहे दूर दूर कठे-हा भाड का नाम नही बालू उड कर जगा जगा नया टीबा होण-सू रस्ता-का ठिकाणा नही आदमी तो दूर रस्ता माहे कोई जीव जिनावर-को भी दरसण नहा ऐसी वखत अेक जवान आदमी जिण-की उमर सोळा सतरा बरस का थी मायो कपडा सू बध्यो हुवो पीठ पर सामान की पोटळी लादयो हुवो हाथ माहे लोटा डोर लटकायो हुवो हुय हुय करता अजमेर कानी चल्यो जा रह्यो छ रेती गरम होण सू पगा क चरका लागकर फोळा आ रह्या छ तो भी जोर सू चाल रह्या छ मन माहे वार वार बोल रह्या छ क भाभी ! साबास तन ! मन थाळी पर-सू जीमता न उठाकर घर छुडायो ! काई हरकत छ ? रामजी म्हा का भी दिन कदे ही लासी जरा आप भी म्हा-क पगा पडता फिरसो ! भाई तो भाई छ ! मैं तो जाणतो थो क म्हार लार कोई कोन्सी पण मा विना कौन पीड जाव ? आज मा होती तो मैं घर बार नीसरतो काई ? इण तरहै का विचार करतो हुवो अजमेर की टेसण ऊपर दाखल हुवो

सटका तरफ की गाडी जावा न हाल पार छ घटा-की देर थी पीठ पर को बोभो उतार न नीच रख्यो पाणी विना मुह सूक रह्यो थो सू बिरामण कन-सू लोटा भर जळ लेकर हाथ मूडो धोकर, थोडो जळ पियो जरा कुछ होस आयो इता माहे अेक जणो आकर इण मुसाफर का हाथ पकड कर बोल्या—जय गोपाळजी-की भाई साहब ! कठी न की तयारी छ ? क्यू इण तरहै काई ? विना मिल्या ही परभारा टेसण पर आया ? साबास ! इण तरहै-का चाहिज !

—कुण भाई बसालालजी ? भला वखत ऊपर मिल्या ! परभारा काई म्हा को वखत ही अबार इण तरहै को छ भाभी भाई घर माहे सू काढ दीनो जरा थ तो खाली हाथ छो था-सू मिलकर काई होणो छ ?—इण

भाजण इ०—(?)। घूमकर—घुमकर। सिकताय—सकना। हुय हुय—ग्रीष्मजनित व्याकुलता से उत्पन्न आवाज। चरका—जलन। फोळा—फफोले। हरकत—हर्ज। दिन—अच्छे दिन। जरा—जब तब। लार—पीछे। टेसण—स्टेशन। दाखल हुवा—दाखिल हुआ भीतर पहुंचा।

बिरामण—ब्राह्मण। मूडो—मुह। होस—चेत। इता माहे—इतने में। कठीन की—किस ओर का। परभारा—परबारे साथ। इण तरहै इ०—इस तरह (=ऐसा) करना ही आपको उचित है (व्यंग)। अबार—अभी इस

तर्‌है मुसाफर उदासी-सू बोल्यो

वसी०—वाह साव वाह ! दुनिया माहे दोस्त-क बराबर और कोई होतो हासी ? मा-बाप-सू भी दोस्त ज्यादा काम आया कर छै और साचा दोस्त-की परीक्षा विपत पड्याज हुवा करै छै ममभ्या मुरळीधरजी ?

मुरळी०—हा भाई ! मैं तो गरीब आदमी छू मैं काइ इसी दोस्ती-कै लायक छू सू कोई मन काम आवै ? दुनिया माहे पैसो वडी चीज छै पैसा-वाळा-का हजार दोस्त सगा-सोई और भाई-बद छै

वसी०—अब आ पोटळी-बोटळी लेकर कठी-नै ? परदेस जाण-को विचार दीसै छै ? ठीक ! पण आज-कै दिन तो म्हा-कै अठै चालो काल-की गाडी माह रवाना हो जायोजो

मुरळी०—नही भाई ! अब मन दोस्ती-का फासा माह मती नाखो अब मनै जावा दो श्रीजी की कृपा-सू अणचीत्यो मिलाप भी हो गयो फेर आप-कै अठै चाल कर काइ करणो छै ?

इण तर्‌है मुरळीधरजी तिरस्कार-युक्त वाल्या खरा पण मित्रता-की मूर्ति सामन खडी रहकर उणका हृदय कपित करवा लगी वसीलालजी-न छोडवा को दिल हावै नही, और उणकै साथ उणकै अठै जाणै-का भी दिल हावै नही सूब धूप माहे घबराता घबराता जोर-सू पाव उठा-कर जाणै गाडी-की टेम मिलसी क नही तिका-सू दौडता-दौडता आया और जाण-की तयारी पक्की हा गयी कठै-ही दिल म्बवा नै जगा रही नही इतना माहे वसीलालजी-को मिलाप हो गया और मन दुगध्या माह पड गयो

वसीलालजी पूरो आग्रह करन आप-का मित्र मुरळीधरजी-न धरा ल गया विचारा मुरळीधरजी धूप-की तीव्रता-सू चित्त-की व्याकुलता-सू और क्षुधा-की आतुरता-सू घणा श्रमी हा गया था जमी पर पग धर-धर उठावणो मुस्कल थो तोभी प्रेम का रस्सी-सू खाचीजता हुवा वसीलालजी-क अठै पूगा ! घरा जाता पाण वसीलालजी मुरळीधरजी-को घणा प्रेम-सू आदर

समय। काइ—क्या। पडघा-ज—पडे ही पडन पर ही। सू—कि जिसमे कि। सगा-सोई—सग-सबधी। हो जायोजो—हो जाइयेगा। अणचीत्यो—अप्रत्याशित। आप-कै अठै—आपके यहा आपके घर।

खरा—सही अवश्य। जाण—न-जाने। टम—वक्त (टाइम)। जगा—जगह। दुगध्या—दुविधा। श्रमी—श्रान्त थका हुआ (थक गय थे)। खाचीजता

सत्कार कीनो भट रसोई तयार कराय न जिमाया शाम-का दो'यू मिलकर हवा खावा न बार गया वसीलालजी मुरळीधरजी न भाभी भाग की हकीकत पूछी सुणकर अचब रह्या रात-का रसोई जीम सुख दुख की वाता कर-न आराम कीनो

(२)

खड़क्ष्मा की रचना ठीक ठीक छ मोटो सहर भी नहीं और छाग्गे गावडो भी नहीं टेसण का गाव होणै स रात दिन लोगा को आणा-जाणो वण्यो रहतो वैपार लबो-सा था नहा तो भी महनत मजूरीवाळा न निभाव की जगा थी मुरळीधरजी उठ अेक छोटी सी कोठडी भाडा सू लेकर रहबा लाग्या चारघा कानी फिरकर गाव देख्यो फेरी सू कपडो बचबा को इरादो कीना किरवोळ कपडो छीटा-का टुकडा वगरा दस पधरा रपिया-का थणी जाव कर न फायदा सू लीना और फेरी देणी सरू कीनी विचार कीनो कै कपडा ऊपर थोडा नफो राखकर गिरायक न अब ज भाव बोलणो, माल विको अथवा मत विको पहलै दिन सारा गाव माहे फेरी दीनी पण अेक भाव कारण सू कुछ बिकरी हुयी नही मुरळीधरजी दिल का पक्का और हीमत का पूरा अेक निश्चय कर लीनो क झूठ तो बालणो ज नही क्यू भी हा सचाबट राखणी छना, भला काइ परिणाम होज ? दो-तीन दिन इण तरहै ही गया पर थोडो थोडो कपडो बिकबा लाग्यो लोगा न मालम हो गयी क ओ वाण्यो अेक बात बोल छ फेर उण माहे कमी ज्यादा कर नही महिना पधरा दिना पाछ बिकरी आछी होबा लाग गयी ऊपर का ऊपर माल बेच-कर जका को कपडो लाता बी न पसा चुका देता इण तरहै थोडा दिना माह मुरळीधरजी की साख खडक्षा माहे आछी पड गयी चार छ महिना माहे तीन चार सौ की पूजी हो गया

हुया—खीचे जात हुअ। बार—बाहर। अचब रहघा—अचभ म पड गये विस्मित रह गय।

२ खडक्षो—मध्यप्रदेश का अेक बडा नहर। वण्यो रहतो—बना रहता। निभाव इ०—निर्वाह की गुजाइश। किरवाळ—फुटकर सब तरह का। पधरा—पनरा पन्द्र। फेरी देणी—फेरी लगाना। गिरायक—ग्राहक। अब-ज—अेक-हा। बिकरी—बिक्री। ओ वाण्यो—यह बनिया। ऊपर को-ऊपर—इधर खरीदकर और तुरत उधर बेचकर।

साच-न आच नही —सचावट दुनिया माहे मोटी चीज छै मच्चा आदमी पर मारा का विश्वास वठ जावै विश्वास वैठया पीछ कोई बात की कमती नहा साच नै कठ भी डर नही धोवा नही, और खराबो नही साच ऊपर सूय चद्र तारा पृथ्वी चाल रह्या छै साच ऊपर सारी दुनिया का कारबार छ साच ही सगळा-का जीवण छै साच ऊपर राज्य को पाया ■ साच ऊपर वैपार-की इमारत छै माच की लछमी बघी हुई छ जिण आदमी-कै पास साच छै उण क सामनै अष्टसिद्धि नवनिधि हाथ जाड कर खड्या छै साच क वशीभूत प्रत्यक्ष नारायण छै माच पुण्य-को मेर धम का मागर नीति की गगा और धाणी का पवित्र क्षेत्र छै साच विना शोभा नही आबरू नही धन नहा मान नही कुछ भी नहीं किसी भी विपत पडा किसो भी परसग आवो— साच न छाडणा नहा राजा हरिश्चन्द्र साच-क वास्त राज गमायो, लुगाई बेटा न गमाया आप विक गया नाना प्रकार का सक्ट भाग्या पण साच छोडी नही । नळ राजा महा-सक्ट भाग्यो पण साच छोडी नही पाडवा राज गमायो वनवास भोग्यो पण साच छोडो नही इण तरहै ही म्हा का मुरळीधरजी साच ऊपर कमर बाधकर साच-को पूरो पूरा आश्रय लीनो

इण सचावट-स खडवा माह सारा ही मुरळीधरजी-की सोभा करवा लाग गया उण पर मारा को पूरो पूरा विश्वास बठ गयो अब कपडा क ताई बराणपुर भुसावळ, जळगाव ताणी जावा-आवा लाग गया हजारा रुपिया को माल उधार मिलवा लाग गयो दुकान पर हर कपडा का थान ऊपर कीमत-की चिट्ठिया मार दीनी अेक फरदी कर नै वार सू हर थान का भाव नमूद कर दीना इण तरहै की साख वँधी क भाव वालण की कीन जरूर रही नही कोई भी गिरायक साबत थान लवै तो थान पर रुपिया मडयाडा देखकर विना बाल्या द जावै और किरकोळवाळा फरदी माहे भाव देखकर दाम दे जावै डेढ दो वरस माहे मुरळीधरजी आठ दस हजार का मालक बण गया

कठ भी—कही भी ।

धाका—धाखा । खराबो—खराबी विगाड होना । सगळा-को—सब का (सस्कृत सकल) । पायो—पाया नीव आधार । मेरु—सुमरु पवत । किसी भी—कसी भी । परसग—प्रसग अवसर । सोभा—प्रशसा । बराणपुर—बुरहानपुर । ताई—तक । हर—प्रत्येक । चिटठिया म०—लेबल लगा दिय । फरदा—सूची । वार-सू—गज पर । नमूद—जाहिर । कीन—किसी को । जरूर—जरूरत । साबत—पूरा । मडयाडा—लिखे हुअे ।

उत्तम खेती, मध्यम वपार कनिष्ट चाकरी और भीक निदान कहवत ■ खेती ऊपर तो आपणा सारो ही देस छ वपार मध्यम कह्यो छ पण पराणा ऋषि-वा कहणा छ क वपार माहे लक्ष्मी पूरी वस ■ बी-सू आधी खेती माह, वा सू आधा राजा की नौकरी माहे और भीख माहे तो कुछ भी नहीं इमी वास्ते वपार मार्रा-सू घणो ऊचो और श्रेष्ठ छ बा-को पार नही अंग्रेज लोगा इत्ती बडी सत्ता और वभव वपार-का कारण-सूज सपान्न कीना छ वपार का मुख्य पायो तथा आधार साच उद्योग और नियमितपणा पर छ टापटीप व्यवस्थितपणो अेक बात वखत की-वखत भुगतावण, मीठी बात नरमाई और गिरायक-को आदर-सत्कार अ वपार-का अग छ अंग्रेज लोग मट्टी-को सोनो कर रह्या छ बै लोग कोई काम माहे फैंम भी जाव ता बी-को पीछो छोडकर निराश होकर बैठे नहीं पूरो पीछो लेकर बी काम न ठीवट स जाव आज सारो दुनिया भर-को वपार उण लोगाँ-क हाथ माह छ

(३)

अेक दिन उठ-का वडा साहब कानी सू कपडा-लत्ता और किरकोळ माल की फेरिस्त आयी तिकी मुरळीधरजी आप-का भाई-न दीना और कह्यो क फेरिस्त मुजब सारो माल आपणा आम्मा-क साथ देकर माल की कीमत वरावर लगाकर बीजक साथ देकर भेज दया तिका परवाण हजारीमलजी सारा माल निकाळकर गुमास्ता कन सू बीजक लिखाय न भेज दीनो शाम का मुरलीधरजी जमा-खरच देखवा लाग्या साहब-का नाव-सू माल नोध्योडा देख्यो सारा माल की कीमत बराबर थी परतु काळी बनात-का थान अका-की कीमत खरच नफा सूधा नौ रुपिया वार-की थी सू हजारीमलजी जाण बूझकर बारा रुपिया वार की भाव लगा दीना थो मुरळीधरजी देखकर चौंक उठ्या ! और

कहवत—कहावत । पार—सीमा अत । इत्ती—इतना । सपान्न—प्राप्त । नियमितपणो—नियमितता नियम-पालन । वखत इ०—उसी समय दाम चुका देना । नरमाई—नम्रता । पाछो लेकर—अत तक पीछे लगे रह कर । ठीवट इ०—अत तक ले जाते हैं पूरा करते हैं ।

उठ का—वहा के । वडा—बडे । कानी—ओर । फेरिस्त—फहरिस्त सूची । तिका परवाण—उसके अनुसार (स० प्रमाण स) । नोध्योडो—लिखा हुआ नोट किया हुआ । सूधा—सहित । वार—गज । बारा—बारह ।

भाई-नै वाल्या क ओ काई कीनो ? नौ क ठिकाणै बारा वियाज लगाया ? आ बात आछी कीनी नही, बात नै बट्टा लगायो !

हजारीमलजी सुणकर बोल्या क काई हुवो ? चार-पान-सौ-को माल गयो जका माहे अेक बनात-का दाम ज्यादा लगाया तो काई हरकत छ ? साहब सोगा-का काम दे किसा देख छ ?

मुरळी०—(दोरा होकर) क किसा देख छ !—नही नही ! नारायण तो देख छ ना ? आदमी-सू तो चोरी कर सका पण श्रीजी-क आग चोरी हो सक काई ? और इसी चोरी सू फायदो भी काई ?

लाभ न होव कपट-सू जो कीजै व्योपार
जैमें हाडी काठ की चढ न दूजी वार

ओ काम आछो नहीं हुवो आज ताई म्हारा नेम पूरा निभ्यो पण आज बी को भग हुवो मरजी नारायण-की !

हजारी०—(नीच भाजकर) भाया ! इण माहे दोरो होबा को काम काई छ ? साहब-न चिट्ठी लिखकर भूल-सू ज्यादा कीमत लगी सू दाम कमती करा स्यो, साहब सा उळटो खुसी हासी आग इण माहे कोई आछी बात होणी छ जरा ओ इसो काम हुवो छ भूल चूक-को काई ? भूल चूक तो सदा सणी णी छ

मुरळी०—(विचार माहे) ठीक छ आज ताई श्रीजी इण तरहै की म्हारा हाथ सू भूल करायी नही आज बडेरा का हाथ सू हुयी छै सू वो-ही नारायण सुधारसी

इण तरहै बोलकर मुरळीधरजी भट अेक अग्रेजी लिखणवाळा न बुलाकर घणा नम्रता सू अेक चिट्ठी साहब-क नाम लिखाकर भेजी क म्हा का भाई का भूल सू थाळी बनात नौ रुपया वार की सू बारा को भाव लगायो गयो छ सू बीजक दुरस्त कर-न उत्ता रुपिया भेज दीजो

साहब-क पास माल पूग गया था दो चार साहब और भी था उणा की

बट्टो—कलक । च्यार पान सौ—चार-पाच सौ । हरकत—हर्ज । किसो—कौन स । दोरा—दुखी । श्रीजी—भगवान । नम—नियम । आग—आगे चलकर इसमे कोई अच्छी बात (भलाई की बात) होन वाली है । जरा—जब तब । बडेरा-का—बडरो के बडा के (=बडे भाइ के आदरार्थ बहुवचन) । दुरस्त—दुरुस्त ठीक । उत्ता—उतन । पूग गयो थो—पहुच गया था ।

मम साहब भी थी माल सारा क पसन्द आया कीमत भी ठीक नजर आयी काळी वनात दम रह्या था आप क पास की वनात इण वनात सू मिनायी अेक वणाण-वाळा अेक कारखानो अक नवर अक रग और अेक वपडो मेम साहेब न भाव पूछ्या तो व बाल्या कै तरा का भाव ना ममाई-मू आयी छ जरा साहब म वडा अचरज आयो क जा चीज ममोई मांह तरा का भाव की बिक मू अठ थारा ना भाव की कियान मिलसी ? इण तरहै सारो ही माल किफायतवार छ जाण बूझकर थाण्या वठ कीमत तो कमी लगायी नन्ही छ ? आजू बाजू का सारा ही नाग वानरा नाग्या क साहब ! नही थाण्या घणाज ईमानदार आदमी छ बी-क पास अेक बान छ आप मोटा साहब छो तो भी बो-ही भाव और कोई गरीब जामी तो भी वा ही भाव कमती ज्यादा को हिसाब थी क पास छ नही बी की सचाइट पर मू दूर दूर का लाग आकर बी क अठ सू माल ल जाव छ की सू पाई अक को फरक नही इमा लोगां माहे इसो वपारी दूजो कोई न्वण माह छ नन्ही इण तरहै रीता हा रही छ

इत्ता माह मुरळीधरजी की चिट्ठी लकर उण को आदमी आयो साहब न चिट्ठी दानी साहेब चिट्ठी बाचकर अचवं रह्या और ममज्या क मन खुशी करबा की थाण्या की आ चालाकी दीस छ इण माहे कोई नक नही फेर आप का सर्इस न बुलाकर बोल्या क तू अ नौ रुपिया थार पास रख और मुरळीधर सठ की दुकान ऊपर जाकर ऊची मू ऊची काळी वनात अक वार माग वार का नौ रुपिया माग तो देकर ल आ ज्यादा दाम बाल तो पीछो आकर कमी रख मू रुपिया लि जाकर फर न आ तू म्हारो सईस छ जिकी पिछाण दीज मता पूछ तो मह-की छावणी-को छू कर न बोलज

सईस झट मुरळीधरजा की दुकान-पर जाकर ऊची-मू ऊची काळी वनात मागी वार भर-का दाम व ही नौ रुपिया माग्या वनात फाड दी आर रुपिया नौ न नीना वनात को टुकडो नकर सईस साहब-क पास आयो साहब पहनी-की वनात-मू मिला लीना उण की खातरी हा गयी थर माह सू सरकारी वार

नजर आयी—दिखायी पडा । ममाई—बम्बई । किफायतवार—किफायत वाला सस्ता । आजू-बाजू—आस पास क निकट रहन वाल ।

अठ-सू—यहा स (=दुकान से) । देखण माहे नन्ही छ—देखने म नन्ही नहीं दिखायी पडता । समज्या—समझे । पाछो=वापिस । कमी रख=कमी रहे । जिका—जो=वह यह । पिछाण—पहचान । खातरी—भरोसा ।

मगाकर नापी बराबर भरी साहब भट आप की डायरी माहे मुरळीधरजी को नाव नाध लीना और लिख रख्यो क रायबहादुर की किताब दण माफक जो वाण्यो छ फर कित्ती ही वार इण-क अठ सू माल मँगायो पण पाई-को फरक पड्यो नही सरकारी काम काज माहे भी मुरळीधरजी न बुलाया परतु सारी बात सू उण की सचावट पायी गयी और सारा लोगा का मू मू इण नर-की वार वार जठ उठै साभा ही सुणी साहब की बाल बाल खातरी हो गयी और 'रायबहादुर' की किताब देणै-कै वास्तै सरकार माहे मुरळीधरजी-की सिफारस कर दीनी

भरी—निकली। नाध लीनो—नोट कर लिया। किताब—खिताब उपाधि, पदवी। जठ उठ—जहा-तहा जगह-जगह। सोभा—प्रशसा। बाल बाल—रोम रोम म पूरी-पूरी।

मन चायँ माया करू, वर कर वरु गुमान ।
साईं हाथ कतरणो, राखगो उनमान ॥

(गोपीराम क नजीक जाकर) बाबूजी ! आज तो गेव्ड मे दस लाख रुपिया पड्या है सो क करणा चाय ?

गोपीराम—अक काम करो बक बगाल हैड आफिस म भेजकर जमा करवा द्यो

रामप्रसाद—भोत चोखो भेज देऊ हू

[सेठ भोळाराम आय है]

भोळाराम—(हाथ उठाकर) जय गोपाळजी की !

गोपीराम—आवो ! जय गोपाळजी की ! ऊपर न बठो

भोळाराम—बाबूजी ! उपर-नाथ सब अेक ई माया है म्हे तो सुणी आजकाल म काळी माई-की कृपा-सें थान दो रुपिया भोत चोखा मिल गया है सो सुण-कर भोत खुशी पदा हुयी, मन म विचार करया चालकर निसच तो करणी चाय देखा साची बात है क झूठी है

गोपीराम—(नम्रता सें) हा ! आपकी दया-सें इधर म चोखी ई प्राप्ती हुयी है या सब रिदो रोपना थारी ई तो है पला पोत पचास गाठ की दलाली का ये म्हूरत करायो था ज-क बाद वारा-न्यारा होता ई चल्या गया

भोळाराम—सब परमात्मा की माया है (धीरा सी) अक काम है

गोपीराम—बोलो फरमाओ ?

भोळाराम—रुपिया पचास हजार मन चाय है भोत भारी अडास लाग रही है आज हुण्डी पूग है नहीं दीणँ-स आबरू जाती रहैगी (आख भरकर) अ बखत थार सिवाय कोई म्हारो नही है इज्जत बच जावगी तो पदावाडी घणी ई हो जायगी और कहा कर है—आओ लाख रहो साख इज्जत-की

करया करता—किया करते थ। मन का इ०—मनोरथ करन से क्या लाभ होना है। चाय—चाहता है। माया—धन (का सचय)। गुमान—गर्व। कतरणी—कैंची। उनमान—सीमा म (अनुमान)। करणी चाय—करना चाहिये। अक—एक। काळीमाई—कलकत्ते की प्रसिद्ध देवी। इधर म—हाल म। रिदोरोपना—मागलिक आरभ। म्हूरत—मुहूर्त। वारा-न्यारा होना—(भाग्य का) निपटारा होना निहाल होना। अडास—सकट काम का अटक जाना। पूग है—पहुचने वाली है। दीण-स—देन स। पदावाडी—कमाई।

गल ई सगळा भला वाना है, इज्जत नहीं वचैगी तो अ वखत माटी म मिल ज्यावागा

गोपीराम—(धीरज बधाता हुयो) घबरावो मत-ना सा ठीक हो ज्यायगी (रामप्रसाद न) रामप्रसाद ! पचास हजार रुपिया भोळारामजी नै दे द भोळाराम भीमराज क पचा खातै नाव माड द

रामप्रसाद—(अेक-अेक हजार का लोट तिजूरी-सूँ निकाळकर) ल्यो ! भोळारामजी !

भोळाराम—(रुपिया लेकर) आच्छयो ! तो म जाऊ हूँ हुडीवाळा बठया है, जिका उणा-नै भुगतान देकर नक्की कर देऊ हूँ

गोपीराम—हा ! जावो (भोळाराम जावै है)

(इतणा म नैणसुख और मगतूराम आवै है)

नैणसुख मगतूराम—(हाथ उठाकर) बाबूजी ! जय गोपाळजी-की !

गोपीराम—जय गोपाळ ! आवो, आज जुगल जोडी क्या आ गयी ?

नैणसुख—के आया हा ! इब स काई म्हान-बी भलो-सो रुजगार बतावो म्हे तो या ई वाट देखै हा, जिको काळी माई सुण ई लयी है

गोपीराम—थान तो जरूर ई बतावागा अेक काम करो य हुडिया की दलाली करण लाग ज्यावो

मगतूराम—भोत ठीक है आज स ई सही दोनो पैला पोत ये के बतावोगा ?

गोपीराम—आवो दो लाख-का कळकत्ता (मुद्दती हुडी कळकत्ता-की) ठीक जचाई कर कर लियावो भाव म कसर नही लाग ज्यावै चोखो चोखी आसामिया की ल्यायो

नैणसुख—ठीक है भाव कानी स और आसामी कानी-सै तो ये सो हाथ की साड म सोवो

(इतणा म रंगलाल आवै है)

गैल—पीछे। सगळा—सारे। भला—अच्छे। वाना—वाने बात रचना दशा। सा—सब सारी बात। पचा— । नाव माड दे—नावे लिख दे उधार लिख द। आच्छयो—अच्छा ठीक।

कया—कैसे। या ई—यही। देख हा—देखते थे देख रह थे। लयी—ली। जचाई—जाच। कसर—त्रुटि, कमी घाटा। आसामी—साहूकार

गोपीराम—(सेठ्या हाकर रंगलाल न) आवो सेठ साब ! जयगोपाळजी की आज क्या पधारया ?

रंगलाल—जयगोपाळजी की ! क्या का सेठ साब ! आपा तो भाई हा ! सब अेक ई माया है

गोपीराम—या तो क्यू कयो हो ! म्हार तो थ सेठ ई हा थारो गुण थोडा ई भूला हा साची पूछो तो ये म्हारा के जाण था पण कितणी मातबरी कर या थे इतणू सहारो नही देता तो अ कळकत्ता म म्हारा पग ई कानी लागता सेठ साब ! थारा गुण म्हे भूलण का नहीं हा गुणा न खराब आदमी होय जिका भूल्या कर है

रंगलाल—बात तो या ई है कही बी तो है—

हरदी जरदी ना तज खटरस तज न आम ।
सीळवन्त गुण ना तज गुण कू तज गुलाम ।।

गोपीराम—आजकल आप क रुजगारवाडी का क हाल चाल है ?

रंगलाल—फीका ई हाल है इबर म म्हे रुपियो भात खो दियो है

गोपीराम—क्या म खो दियो ?

रंगलाल—अेक आदमी-का फेर म आ गया था बी सोना का म्हैन दिखाकर पला लो म्हारा नाम-स खूब सौदो कर लियो पीछ ज्यान्ग घाटा हो गयो जणा नटकर न्यारा हो गया

गोपीराम—थ इतणा हुसियार समजदार होकर क्याऊ-क फेर म आ-गया ?

रंगलाल—फेर म के आ गया ? हूणी क वस हो गया कह्यो भी तो कर है—

जसी हो होतव्यता असी उपज बुद्ध ।
होणहार हिरद बस बिसर जात सब सुद्ध ।।

गोपीराम—या तो ठीक है मर सारू कोई काम होय तो क दिया मकोच मन-ना करियो

दनदार । क जाण था—क्या जानत थ । मातबरी—विश्वसनीयता एतबारी । पग इ०—पर हा नही टिकत । याई—यही । जरदी—पीलापन जो उसका स्वाभाविक गुण है । खटरस—खट्टापन । गुलाम—नीच या दोगला । म्हैल—महल । परा—परे । जणा—जब तब । नटकर—मुकरकर । न्यारा—अलग । हूणी—होनी भावी । सुद्ध—चेत । सारू—निज योग्य ।

रगलाल—रुपिया दो लाख की मदत-की दरकार है

गोपीराम—रुपिया तो थारा ई है ले ज्यावो (रामप्रसाद-नै) रगलालजी न दो लाख रुपिया द द ! रगलाल राधेगोपाळ-कै नाव माड दे

रामप्रसाद—(दो लाख का नोट तिजूरी मा-सैं निकाळकर) रगलालजी साव ! अै ल्यो ।

रगलाल—(रुपिया लकर) गोपीरामजी ! रुब तो म चालू हू (मन म) गुण मानणू नाम अ को है साचा मदत अ-नै कह्या कर है ऊपर-स क्यू ई बोल है, भीतर म क्यू ई घाटा घडिया राख है आत्मा-की चोरी राखकर आत्मा क विरुद्ध बात कर है जिका वी कोई आदमी है क ? व बिना सीग-पूछ का पसू है इसा आदमिया-न चौराव्र ल ज्याकर गाड दीणा चाय

गोपीराम—म वी घरा जाऊगा चालो चालो (दोनू जाव है)

गुण मानणू—उपकार मानना । घाटा घडिया राख—(दूसरो के अनिष्ट के विषय मे) सोचते रहते हैं । चौराव—चौराहे पर, सरे बाजार सरे आम ।

३

मोगरा-कळी

(गद्य काव्य)

[ब्रजलाल बियाणी]

[श्री ब्रजलाल बियाणी विदर्भ के निवासी है। साहित्य सेवा के साथ साथ राजनीति के क्षेत्र में भी इन्होंने देश की बहुमूल्य सेवाएं की हैं।

इन्होंने नाटक, कहानी, निबन्ध, गद्यकाव्य आदि सभी विधाओं में राजस्थानी में रचना की। 'विजयादशमी' और 'बाळरामायण' इनके उल्लेखनीय नाटक हैं। 'सीताहरण' रामायण की कथा के आधार पर लिखी गयी कहानी है जिसका प्रकाशन सं० १९७८ में हुआ। इन्होंने हिन्दी में भी लिखा है।

संकलित गद्यकाव्य सं० १९७३ में 'पंचराज' वर्ष २ अंक ४–५ में प्रकाशित हुआ था। लाक्षणिक शैली और मूर्तिमत्ता के कारण यह रचना बहुत ही प्रभावोत्पादक बन पड़ी है।]

(१)

बडी फजर-की बखत सधि प्रकाश हो गयो छ रात का अंधेरो दिन-का चानणा-न जगा दे रह्या छ तारा आप का सीतल और मंद तेज-न सूरज नारायण-का उष्ण और प्रखर तेज-का सामने लोप कर रह्या छ निरभ्र आकाश में सूर्य भगवान-का आगमन-का प्रभाव-सू लाली छायी हुई है पूर्व दिसा लाल वस्त्र धारण कर-कर पती-का आगमन की बाट जोय रही छ मंद मंद और सीतल-सीतल हवा चाल रही छ पंछी किलकिलाट कर रह्या छै कई जणा आप-का बिछावणा-न छोडकर आप-का कर्तव्य-क वास्ते नित-नेम कर-कर तयार होय रह्या छ कितनाई आळसी भाई हाल-ताई

---

१ बडी फजर—बहुत सवेरा। बखत—वक्त, समय। सधिप्रकाश—दिन रात के सधिकाल का उजाला। चानणो—प्रकाश। जगा—जगह, स्थान। लोप करना—अदृश्य बनाना। निरभ्र—मेघ रहित। पती—पति अर्थात् सूर्य। किलकिलाट—कल-कल शब्द, कलरव। कई जणा—कई व्यक्ति, कई लोग। बिछावणा—बिछौना। कितनाई—कितने ही। हालताई—अभी तक। करवा

निद्रा-देवी की गोद मे ही पड्या छै केई रात का खोटा काम करबावाळा चोर वगेरा सारी रात जागरण कर अब नींद-कै सरणै जाय रह्या छै आज-कल-की धरती का नवयुवक बडी फजर का खट-करम-सू निपट-कर कोट-बूट लगाकर और टोपी-नै हात म लेकर नही तो खूटी पर छोड़कर, हवा खाबा-नै निसर गया छ इसी मनोहर और सुहावणी समय-का मैं भी महाराज-बाग मे जाय पूग्या हाल-ताई सूर्योदय हूयो थो नहा पूरी रीत-सु चादणो पड्यो छै नही फेर महाराज'-बाग सरीखा झाडा-सू लटापट बगीचा मे तो और भी ज्यादा अंधेरो चालतो चालतो चारया कानी निरीक्षण करतो-करतो बगीचा की ठडी-ठडी हवा को सुवाद लेतो लेतो और मारै आनद-कै फूलतो फूलता मैं मोगरा-का कुज कनै जाय पूग्यो!

अहाहा! वी शोभा-को काई वर्णन करणो? जठी-कठी न मोगरा-का झाड दिख रह्या छ धोळा धोळा फूल खिल रह्या छ हवा-क कारण मद मद नाच कर रह्या छै वा न देखकर मखमल का हरया और सफेद फूला सू जड्योडी जाजम की याद आ जावै छै मोगरा सू मस्त मरत मानखा-नै मजा चखा रही छै बठा की वा अतुल और स्वर्गीय शोभा देखकर मैं म्हारो आप-सू बाहेर होवा लाग गयो मोगरा-सू सुगधित हवा-को आस्वाद लेवता ही हाथ आप-क मत्तै ही आगा न चल्यो गयो और अक फूल न धीरज क साथ तोडकर आप-को कर लियो

अहा! वा सपेत और स्वच्छ पाखळ्या सू जड्योडो पुष्प मन अेक गोरी-का मुख-चद्रमा छ इया दिखबा लाग गयो पाखळ्या वी का हसत मुख

वाळा—करने वाले। मरणै—शरण म। फजर—सवेरा। खट करम—धार्मिक जन प्रात काल षटकर्मों की विधिया पूरी करते हैं अर्थात शौच स्नान आदि। नवयुवक—नयी पश्चिमी सभ्यता के भक्त तरुण। निसर—निकल। समय का—समय म। पूग्यो—पहुचा। चादणो—प्रकाश। लटापट—भरे हुअे। चारया कानी—चारो ओर। फूलतो—प्रसन्न होता। जठी कठी न—जहा तहा। जड्योडा—जडे हुअे। जाजम—जाजिम। मरत—पवन।

मैं म्हारो इ०—मैं अपने आपे मे बाहर होने लग गया (अपने आपे को भूल गया)। आप क मत्त ही—अपने आप ही। आगा न—आगे की ओर। आपको इ०—अपना बना लिया अपने अधिकार म कर लिया। सपेत—सफेद। पाखळ्या—पखडिया। गोरी—सुदरी। हसत मुख—हसते हुअे मु—

की शुभ्र बत्तीसी [redacted] ड्या भ्रम होवा लाग गयो पुष्प को वृत नाका ओ मरेठी फशन को गळा ताई परचोड़ा हुयो लूगड़ा छ इण तरह म्हारी खातरी हो गयी इया विचार कर-कर और बी मोगरा-कळी-नै अेक नव-युवती कळपकर मैं बी का सुगध को सुवाद लेवण-क वास्त म्हारा नाक कन ने जावा लाग गयो खुमी सू फूलकर जोर-जोर-सू सास लेवा लाग गयो इ ससार का सगळा दु:खा न भूल गयो निसग देवता की गोदी म आय पूगयो ईश्वर-न तादात्म्य होवा लाग गयो !

(२)

इ स्वर्गीय सुख म मग्न होकर मैं अेक दोय दफ बी-की सुगध-को आनन्द लियो थो कि नही क इत्ता म म्हारा अत्याचारा-क वास्त दड देवा की इच्छा मू कोई म्हारा गाल म अेक उमदा थप्पड की जमा दीनी वा चनपट बठताई म्हारी गूगी गुम हो गयी और दचू छू तो वायरा-सू तथा म्हारी धिगामस्ती सू उड्याडी अेक मोगरा-की कळी म्हारा गाल-क ऊपर उडती दीखी

मन जरा सुध पर आयोड़ा देखकर वा मोगरा की कळी मार क्रोध क मन बोलवा लागी—

खबरदार ! अब आगा-न मूडा-नै करयो तो ! मैं थारा जिया अविचारी नही अेक क्षण भगुर सुख-क माय-न फसकर सदा-क वास्त म्हारा सीळ-न बट्टो लगावावाळी नही !

देख ! मनै विगसवा न इत्ती वार हो गयी और थारा सरीसा न ई म्हारा कना-सू चल्या गया म्हारी बना-न जबरदस्ती पकड़-पकड़कर ले गया पण मैं कोई-क कन गयी काई ? था न मोट्यारा न बिलकुल शरम नही ! आप-का नीळ-की पिछाण नही भूल जायकर कोइ भी अबळा को हाथ पकडवा-न तियार हो जासो पण कदे अेकादी लुगाई भी था-को हाथ पकड्यो छ काई ?

की । बत्तीसी—बत्तीस दातो की पक्तिया । वृन्त—डोडी । नाका—नाक । मरेठी—मराठी । परचोड़ो—पहना हुआ । लूगडो—वस्त्र । इण तरहै—इस प्रकार । खातर—विश्वास । कळप कर—कल्पना करके । सुवाद—स्वाद आनद । लेवणो—लेना । कन—पास । निसग—प्रकृति । तादात्म्य—अन्वय ।

२ चनपट—चपत । बठताई—बठते ही, पटते ही । गूगी गु०—चेतना *गायब हो गयी । वायरा—हवा । उड्याडी—उडी हुई । सुध पर—होश म ।* जिया—समान । बट्टो—कलक । नीळ—समाचार । वार—समय । कना सू—पास से । मोट्यार—मर्द ।

नही ! क्दे भी नही !! म्हे इत्ता काचा दिल की नही अवळा पर जबरदस्ती करणी श्रो काम था नै मोटयारा न ही सूप्या छै धिक्कार छै था-नै !

हे पागल ! जरा विचार दग तू म्हारा म कित्तो दग हो गयो म्हार लार पडकर कित्ती तन मन की सुध भूल गयो, इ ससार-का दु खा सू बिलकुल मुक्त हो गयो, अठी उठी न तन आनद और सुख ही-सुख दिखबा लाग गयो, सू कित्ती प्यार-की नजर-सू म्हारा कानी देखवा लाग गयो मनै कित्ती अधर-अधर नचावा लाग गया पण म्हा री श्रो सुख कित्ती वार ताई ? अेक घडी या दो घडी ! म्हा री सुगध जठया ताइ छ बठया ताइ ! जित्त मैं कुमळाऊ नही कित्ती वार ताइ ! इत्ती वार सुख देवावाळी पर जे तू इत्तो प्यार कर छै और मान-तान-सू राख छ तो फेर तन जनमता इ सुख देवा वाळी पर कित्तो प्यार करणा चाहिजै ? बी नै कया चोखी तरहै-सू राखणो चाहिज ? पण इत्तो ग्यान तन कठै ?

हे अविचारी ! देख, थारा गृह रूपी उद्यान म खिल्योडी स्त्री रूपी पुष्प-कळी पर तन कित्तो प्यार करणो चाहिज ? बी न कित्तो अधर अधर राखणो चाहिज ? बी-का मन को कित्तो विचार करणो चाहिज ? बी-का सुख-दु खा-की कित्ती खबर लणी चाहिजै बी को कित्तो मान-तान राखणो चाहिज ? पण अ सगळा बाता था सू होअै नही

या पुष्प कळी था की जनम भर की सायण छ धरम-पुन मे हिस्सादार छ सुख दु ख म सायण छ बी-का हाथ सुख था की ससार का दु खा सू रक्षा करवा वाळो छ बी को प्यार था का जमारा न सुखी और रहवा क लायक बणावावाळो छ बी-को रहणो उद्यान नै शोभा लावावाळो छ और बा छ जद ही गृह रूपी उद्यान छ नही तो उजाड वन समान छ

पण थ तो सदा राड भगडो करवो करो बी का हसत मुख न सदा

पिछाण—पहचान । तियार—त्य्यार । अेकादी—अेकाध कोई-अेक । दग—चकित । लारै—पीछे । अधर अधर—ऊपर ऊपर आदर के साथ । जठया ताई—जब तक । कित्ती वार ताई—जितनी देर तक है उतनी देर तक । इत्ती वार—इतनी दर । देवावाळी—देन वाला । जे—यदि । मान-तान-सू—समान के साथ । जनमता इ—जन्म होने ही । तरहा-सू—तरह से । पण—परतु । कठ—कहा । चाहिज—चाहिए । पुन—पुण्य । सायण—साथिन, सगिनी । जमारो—जन्म जीवन । रहवा-क लायक—रहन योग्य ।

राड—लडाई । करवा करो—करते रहत हो । रोवणो—रोना रोता

रोवणो करवा री प्रयत्न करबो करो वा-का भान की जगा बा न जूती की ठोड वरतो प्यार की विरखा-क बदळ वी-पर गाळ्या की वरसात करबो करो वी-को विश्वास राखो नहीं और सदा वी पुष्प न कुम्हळावा-की खटपट करबा करो फेर बतावो था नैं सुख किया मिलणो ? वठै सुख नहीं मिलै जरा ही वी स्वर्गीय उद्यान न छोडकर इण उद्यान म आवो धिक्कार !

जा अब तो भी आख्या न खोल और गृह रूपी उद्यान म खिल्योडा पुष्प न आछी तरहा-सू फुलावा को प्रयत्न कर और फेर देख ता कुण-सा सुख की प्राप्ती होव जिको ! समज्यो ?

(३)

मोगरा की कली-का कटु पण साचा वचन सुणकर मैं पागल और अविचारी छू था म्हारी पखडी सातरी हो गयी और या आगा न चाल रही थी तो भी म्हारा हाथ-मा मू आप आप छूटकर हवा की साग कठीन-ही उड गयी

प्रिय वाचक ! राजा कण-की वखत छ झूट कदे वी नही बोलसू, जिसी जिसी हुई सा सारी आप न कह सुणाया ! आप तो भी म्हारा की नाई अविचारी नहीं बणागा इसी आशा छ

हुआ । वरतो—व्यवहार करते हो । वरखा—वर्षा । किया मिलणो—कैसे मिलना कैसे मिले । जरा ही—जभी तभी । फुलावा को—प्रफुल्लित करने का । प्राप्ती होव जिको—प्राप्ति होती है जो (राजस्थानी भाषा का मुहावरा) ।

३ सातरी—अराम । आगा-न—आग । आप आप—अपने आप । साग—साथ । कठीन इ—कहीं । राजा कण की वखत—प्रातःकाल की वेला । झूट—झूठ । जिसी जिसी—जैसी जैसी । आप तोभी—आप भी । म्हारा-की नाई—मेरे वाली तरह मेरी तरह ।

धनवानां-की लक्ष्मी

(विचारात्मक निबंध)

['सत्य-वक्ता']

[श्री 'सत्य-वक्ता' राजस्थानी के नवोत्थान काल के प्रारंभिक लेखक थे। प्रस्तुत निबन्ध सं० १९८८ में पंचराज के वर्ष ४ अंक ■ ६ में प्रकाशित हुआ था। इसमें लक्ष्मी के स्रोत, व्यवहार और उपयोग के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर कल्पना की गयी है।]

(१)

धणा-सा धनवाळा-नैं निर्दयता कठोरता अथवा कंजूसी करता देखकर लोग आश्चर्य किया कर छ कारण कित्ताक लोग हाय हाय करता ही चल्या जावै छ और आगे-लार कोई नहीं हुवै तो भी वां-का खुद का हाथ-सूं न तो सत्कार्य में खरच्या जावै और न खाया जावै छ।

जिण-सूं लक्ष्मी किसा प्रकार-की रया करै छ, यो आज पंचराज का पाठकां नै भी बताण का हेतु-सूं संक्षिप्त में लक्ष्मी का प्रकार बताऊं छूं जिण पर-सूं धनवानां का व्यवहार पर जो लोग आश्चर्य किया करै छ वी को कारण समझ में आ जासी।

लक्ष्मी का वाहन अर्थात बैठवा-का आसण दो प्रकार-का रया करै छ जिण में प्रथम आसण कमळ-को छै जिण रै घर में लक्ष्मी कमळासना होकर आवै छ वी-का हाथ-सूं लक्ष्मी को सदुपयोग भी हुया करै छ और वां में गंभीरता दयालुता उदारता, नम्रता और शांति इत्यादि गुण भी रया करै छ इत्यन्न द्रव्य ने लगाण सूं तथा दयालुता नम्रता आदि गुणां-का होबा सूं वैं परायी आत्मावां-का भी शुभ चिंतन किया करै छ और वे स्वयं भी सुखी पुत्र-पौत्रवान तथा धनवान होकर आनंद भोग्या करै छै और जिण रै घर में लक्ष्मी उलूक-वाहनी होकर आवै छ वे बहुधा कंजूस निर्दयी अविचारी तथा अहंकारी रया करै छ वां का धन को उपयोग सद् मार्ग में होणो दुर्लभ

१ घणा-सा=बहुत-से। कित्ताक=कितने अेक कितने ही। चल्या जावै छ=चल जाते है मर जाते हैं। रया करै छ=हुआ करती है। पंचराज=अेक मासिकपत्र जिसमे यह निबंध छपा था।

छै कारण उल्लू रात-को राजा छ बीने दिन का दीखै नहीं जिण मू इसा धनवाला के ऊपर अहंकार रूपी अंधेरा हमेशा सवार रया कर छ जद इसा धनवाना का धन-को उपयोग भी अंधेरकाम मे ज हुया कर छ जिसा क काम रात-का हुया कर छ वेश्या-नाच आतसबाजी भोग विलास तथा वृद्ध विवाह आदि फिजलखर्ची मे अथवा कोई जबरदस्ती का ठेसण मे परंतु सद् माग मे कदे भी नाग मेल नहीं इसा धनवान आप-को वडपणो बतावण सारू फिजूलखर्ची अथवा पाखंड मे कठै कठै धन लगा भी देव छ परंतु कहावत भी छ क—उल्लू को धन ममकरा खाव

इण न्याय सू इसा धनवाना का धन अक तो ममकरा बदमास वगर खाया कर छ अथवा घत पाखंडी निरुद्योगी लोग मौज किया कर छ कारण क उल्लू-वाहनी लक्ष्मी को यो स्वाभाविक धर्म ही छ

(२)

तीजो अक कारण यो भी छ क विसाक धनवाना क कन धन कई प्रकार को (भला बुरो) आयोडो रया कर छ और बी का प्रायश्चित्त रूप मे बी धन मे सू कुछ थोडो-बहुत भी कोई सत्काय मे खरच्या नहीं आव तो इसा धनवाना की मति (बुद्धि) भ्रष्ट भी हो जाया कर छ इसा धनवाना कन कोई आसामी अथवा छोटा मोटो व्यापारी चल्यो जाव तो बी-का इच्छा या ही रया कर छ क इ न हजम किण युक्ति-सू कर [illegible] की इस्टेट कितीक यो म्हारा डाव पेंच मे की तर आसी इ की इतिश्री तो नहीं हो जावला इत्यादि नाना प्रकार-का तरग लाकर निर्दयता-सू दूसरा को अहित ही सोच्या कर छ इण तर सू निर्दयता कर लोगा-को अनिष्ट सोचणवाला-का भलो करणो ईश्वर भी मंजूर किस तर करसी ? क्षण भगुर सुख प्राप्त भी हो जाव तोभी वो स्थिर

दिन का=दिन मे। दीख नहीं=दिखायी नहीं देना। अंधेरकाम=बुरे काम, अन्याय अंधेरगर्दी। जिसा=जसे। आतसबाजी=आतिशबाजी (के खेल)। वडपणो=बड़प्पन। सारू=निअे। कहावत=कहावत। ममकरा=मसखरे, दिल्लगीबाज। निरुद्योगी=उद्योग रहित, आलसी।

आयोडो=आया हुआ उपार्जित। आसामी=देनदार। इस्टेट=जायदाद। डावपेच=दावपेंच। इतिश्री=समाप्ति अन्त। तरग=मन के तरंग अर्थात

नही रह मन आगरी म आप-का भाग्य-न दोष दिया कर छै परतु आप की करणी-न नही देख तथापि ईश्वर तो करणी प्रमाणे ही फळ दिया करै छ इसा लोगा-न सकट-क समय म राम याद आया कर छ सकट दूर होता-ही फेर भूल जाअ और सकळप कियोडा दान तक हाथ-सू छूट नहा थोडो बहुत भी सुख प्राप्त हुयो कै भट अहकार म फूल जासी काई-सू बात करण-न या सत्सग सभा, व्याख्यानादि-न तो फुरसत भी कोनी पा सक गादी पर पडया ऊधा-सूधा लुटता, ठठोळया करता गप्पा मारता पडया रसी और घणी ज भागवानी हो गयी तो पडदा-की बीबी बणकर बठ जासी बार निकलणो आप री इज्जत क बार समझकर कोइ सत्सग, सभा-सोसायटी का अथवा उत्तम काय म सहायता करया-का मौको आ जाअ तो झट क दसी—म्हाँ-न फुरसत नही छ और पडदा-की बीबी समान घर म-ही बठया रसी

अधाधुध होकर मन-माया काम करवा म अथवा फिजूल नामवरी और मोटापणो बतावण सारू अहकार म फूल्या हुया लक्ष्मी-को दुरुपयोग भी करसी तथा फुरसत भी मिल जासी जद विचारी लक्ष्मी भी आप-का अनादर और दुरुपयोग देख रूस्या बिना किया रसी ? और पछ मात्र इसा अहकारी लोग बुगला भगत बण्या कर छ तथा आखरी म हाय हाय करता ही चल्या जाअ पण हाथ-सू कुछ भी करण नही पाअ

नारायण इ भूमि पर भूपति भया अनेक ।
मैं मेरी करता गया त न गया तृण अेक ॥

विचार । प्रमाणे=अनुसार । सकळप=सकल्प ।

ऊधा सूधा=उलटे सीधे । लुटता=लोटते । ठठोळया=ठिठोलियाँ । भागवानी=सपन्नता । पडदा की बीबी होकर=(रगमहल म) छिपकर । बार=बाहिर ।

नामवरी=यशान्विता प्रतिष्ठा । मोटापणो=बडप्पन । रूस्या=रूठे । किया=कैसे । पछ=पीछे । बुगला भगत=बगुलाभक्त ढोगी । बण्या करै छ=बना करते है । आखरी=आखिर अत । मैं मेरी करता=अहकार व ममता मे फँसे हुअे ।

समाजोन्नति को मूळमन्त्र

(विचारात्मक निबंध)

[अनंतलाल कोठारी]

[श्री अनन्तलाल कोठारी पीपळगाव मे निवासी थे । राजस्थानी के नवा उत्थान काल के विभिन्न लेखकों में इनका उल्लेखनीय स्थान है ।

प्रस्तुत निबन्ध सं. १६७६ मे पंचराज के वर्ष ५ अंक १२ म प्रकाशित हुआ था । इसमें समाज की उन्नति के लिए नारी-जाति को सुशिक्षित बनाने पर बल दिया गया है ।]

(१)

आपणो समाज रोगी छ या बात कबूल करबा-न काई भी इनकार नही करसी रोगी भी इसो विसो नही महान रोगी छ महान रोग तो छै ही परन्तु वी का साथ छोटा छोटा रोग भी अनेक रया कर [illegible] वैद्यराज जठा तक रोगी का मुख्य रोग को पत्तो तथा निदान नही जाणसी, वठा ताई वी की दशा काई कुछ भी काम ऐसो नहीं बस ! इसी ही दशा आपणा समाज की है अनेक विद्वान सुधारक उन्नति साक खटपट कर रया [illegible] पण हाल ताई समाज का मुख्य रोग का निदान पत्तो लागा नही कोई कोई न लागो भी छै तो वी की उचित चिकित्सा आण नही ई का वास्तै उचित चिकित्सा-की घणी जरूर छ अब या बात जाणबा को आवश्यकता छ क समाज न रोग कुण-सो छ वी-को निदान तथा सुधार को मूळ मन्त्र काई छ ?

प्यारा मरुभूमि-का सिरदारा ! आओ जरा शात चित्त होकर आपा बात पर विचार करा भला ! आपणा मुख्य विषय काई छ ? 'समाजो' का मूळमन्त्र ठीक ! प्रथम आपा ई बात-को विचार करा काई चीज छ कुछ लोगा-का मिलजुल कर अेक ढंग सू रहणा खान रीत भात चाल चलण बोल-चाल भाषा वगर जिण छ इ का नाव समाज छ अेक नीती क रीती अेक-ह आचार विचार तथा अेक-सा नियम पर चालवावाळा नाव समाज छ अर्थात प्रत्येक व्यक्ति समाज-का कुछ अंग छ

१ करबा न—करने को । इसो विसो—अैसा वैसा सा रोग नाव । सरदारा—सज्जना ।

विना समाज वण-ही नही सकै छै समाज का हर-अेक व्यक्ति (चाहे स्त्री हो या पुरुष) सुधरयोडो छ तो वो समाज भी सुधरयो तथा उन्नतिशील कहासी, और प्रत्येक का बिगाट-सू बिगडयोडो कहासी प्रत्येक व्यक्ति-को सुधार हुयो क बस समाज सुधार हुयो समजणा चाहिजे

अब या बात विचारणीय छै क प्रत्येक व्यक्ति आवै कठा-सू ? हर-अेक व्यक्ति माह बुराइया कठा सू आव छ ? व्यक्ति समुदाय कोई आकाश सू तो पड नही प्रत्येक व्यक्ति, चाह स्त्री हो या पुरुष मूरख हो अथवा पडित बाळ हो अथवा वृद्ध सारा ही स्त्री द्वारा पदा होवै छ और वी-की गोद माहे ज पळकर मोटा होवै छै, अर्थात व्यक्ति मात्र नै जन्म देवावाळी स्त्री समाज छ

(२)

या बात तो सब मान्य तथा निर्विवाद छ क मनुष्य टाबरपणा माहे जो बाता सीख लेय वी-न वा बडे भी भूल नही जिण जिण बाता-को सस्कार बाळक का कामळ हृदय पर जम जाय व बाता वो आखी उमर भर भूल नही सक बाळपण माह जो आदत पड जावै व कदापि छूट सक नही घाया-सू धुप नहा, काढ्या सू निकळ नही मतलब यो कै बाल्य अवस्था ही अेक इसो समय [redacted] क मनुष्य चाह जिसो उत्तम वण सक छ और चाहे जिसो अधम भी वण सकै छ

बाळ-अवस्था माहे आदमी का गुरु माता हीज होवै छै जिण वगत-सू बाळक गर्भ माहे आव उण वगत सू ज माता को असर बाळक पर पडणो आरभ होवै छै जिण जिण भली अथवा बुरी बाता-को सस्कार बाळक का कोमळ हृदय पर जम जाय व ही सस्कार रूपी बीज बडा होवण-सू वृक्ष-को रूप धारण कर लेव छ अयू क बाळकपणा का सस्कार प्रबळ होयन अन्त करण-न अपणो अधाय नवे छ जिसा आचरण बाळक माता-को देखसी विसो-ही आचरण वो करसी कर जिसा ढाढा या कहावत आपणा माह प्रसिद्ध छ जो बाळक सूरा माता-की गोद माह पळसी, उणम दुगुण तथा

सुधरयोडो—सुधरा हुआ। चाहिजे—चाहिये। कठा सू—कहाँ से।
२ टाबरपणो—बचपन। धुप—धुपता है। कर जिसा ढाढा—जैसा पेड वसी छाल। ढोडा—सूखी छाल क टुकड। जिसो—जितनी। कमाग—कमाचित।

सरदार— अब काई या तो नी कवगा क बहू-बेटी री लाज रै साट मेवाड़ री स्वतन्त्रता न राखी अन्नदाता !

महाराणा—अब मूंडो क्यूकर बतावा ?

सरदार— सब दिन सरीखा नी हुवै पृथ्वीनाथ !

महाराणा—सरदारा ! अब तो मेवाड माता-सू बिछड़णो ही पडला

सरदार— सो जठ ठाकर बठ ही चाकर

महाराणा—जदी लवा विदा ।

[सब जणा हाथ जोड़ न विदा लेव]

जननी ! अब दरसण कद दोगा ?
आणा पतित अणी-न माता ! पाछो कद सुमरोगा ?
वन-वन भटक ऊमरा खाधा जळ भरणा रो दागा ?
दया दृष्टि-सू दख अणी न खोळा म कद लोगा ?
इ कपूत री कुबद-न पण गुण ही आप गणोगा ।
चाकर चूक कर चरणा रो तो पण नी घरछोगा ।।

शक्तिसिंह—अन्नदाता ! देस-अ धरम रा साचा सवक र चरणा म कदीक-न कदीक लिछमा जरूर लोटगा अणी म सदह नी

(सब धीर धीर जाना लाग न दूजी कानी-सू भामाशाह हाफता-हाफता आव)

भामाशाह—चरणा म लिछमी जरूर लोटगा अन्नदाता ! अणी म सदेह नी

महाराणा—(पाछा दख-न) ओ हो ! भामाशाहजी ! आप अणी वगत कठा-सू आय गया ?

बतरो ही—उतना ही । अन्नदाता—बडे लोगो के लिये विशेषत राजाओ क लिअ प्रयुक्त होन वाला अक सबोधन । अणी री—इसकी । पण—(१) परन्तु (२) भी । भी—नही । नी कवगा—नही कहेंग । साट—सट्टे म, बदले म देकर । मूंडो—मुंह । पडगा—पडेगा । ठाकर—मालिक (ठक्कुर) । जदी—अभी तभी तो । कद—कब । अणी-न—इस (सवक) को । दोगा—देंगी, राजस्थानी म आदराथ बहुवचन का प्रयाग होता है और साथ ही नर-जाति (पुंलिंग) का भी । ऊमरा—गूलर क फल । खाधा—खाय (अप० सद्ध) । दागा—(पीने का) मैंगी । खोळो—गोद (क्रोड) । इ—इस । कुबद—नटखटपन उत्पात (कुबुद्धि) । गणोगा—समझेंगी । तो पण—तो भी । घरछोगा—बिछुड़ेंगी क्रुद्ध होगा । कदीक-न कदीक—कभी-न-कभी ।

भामाशाह—मेवाड़ रा खाधा थका लूण नै लखै लगावा न यो भामो वाण्यो पण मालका रा चरणारविंदा मे आय पोंच्यो है पृथ्वीनाथ ।

महाराणा—आछा ! आप आया न म्हा जावा

भामाशाह—आ म्हारा माथा रा मोड ! यो कई होकम करायो ?

महाराणा—सूरमा स मर खूटा, खजानो खाली व्है गयो, न मेवाड़ लोगा रा कबजा म गयो अब है कई ज्यो अठ रवा (आंख्या डब डबायीज जाव)

भामाशाह—भगवान सब आछा करैगा अन्नदाता !

महाराणा—पण ?

भामाशाह—पण कई अन्नदाता !

महाराणा—पण कई ?

धान्यो नाथ धान्यो कूट धान्यो कर किलोळा ।
धान्या-सू सब राजपाट है धान्या बिन सब रोळा ॥

भामाशाह—अणी री कई चिंता है पृथ्वीनाथ !

महाराणा—अणी री हीज तो भारी चिंता है क्यूक आजकल लोग अणा चांदी रा टुकड़ा रै साटै देस धरम रूप जोबन मान-मरजाद न बहन बेटी— सब न बेच रया है

भामाशाह—अन्नदाता ! अणी चिंता न मटवा रो उपाय तो (थली पगा म सरकाय नै) या है

महाराणा—हं-हं हं ! कई आप रा धन स् ।

भामाशाह—अन्नदाता ! यो तो मालका रो हीज माल है

महाराणा—नी साहजी ! या नी है सकै । प्रताप उतरो नीचो नी उतर गया है हाल तक

भामाशाह—ठीक अरज कर है चाकर अन्नदाता ! यो तो मालका रा हीज माल है

महाराणा—या हू क्यूकर मान लू

खाधा थका—खाये हुअ । लूण—नमक । लखै लगाणो—उपयोग म लाना । न—और । म्हा—म्हे हम । जावा—जाते हैं । मोड—मुकुट । होकम—हुक्म । सूरमा—शूरवीर । खूटा—समाप्त हो गये । व्है गयो—हो गया । लोगा रा—(दूसरे) लोगा के । कबज म—अधिकार म । कई—काइ क्या । ज्यो—जो कि । रवा—रह । धान्यो—धान अन्न धन । रोळा—व्यय की बातें । साटै—बदल । क्यूकर—क्याकर ।

भामाशाह—धन काळाजी री सौगद क अेकलिगनाथ री आण । यो तो मालवा रो हीज माल है (ठर न) मवाड रा मालक तो वन वन म भटका खावता फिर न यो आप स्वारथी वाण्या यो मालवा रा होज अन-सू पळयो भामो लूणहरामी वण न घर म बठो सुख भोगव ! राम राम ! (ठर न) म्हारा मालक तो स्वाधीनता र लोधे देश न छोड जावा न तयार व्है न दुख भोगव नै या भामो मला मे मौज माण ! जणा महाराणा रा प्रताप स यो भामो वाण्यो भामाशाह वण्यो वी तो अेक अेक पईसा रै कारण तरछता फिर न भामो भामाशाह वण्यो फिर ! धिक्कार है अस्या सुख-नैं न धिक्कार है अस्या जीवा न !

महाराणा—धन है अस्या परधान न ! भामाशाहजी ! स्वतत्रता न राखवा म साथ देवा रा कारण सू या मेवाड आप रो पूरा-पूरो उपकार मानैगा

जैसो चारण—जी धन कारण जगत मे प्रेम मिलण कर धूर ।
पिता पुत्र पतनी पती बधु बधु सब दूर ॥
वी धन न ही मनिवर समझा धूर समान ।
त्याग रया निज स्वामि हित धन्य धन्य परधान ॥

साची वात तो या है कै—

दूणो अठ अतीव अन्व पत्या री अेकठी ।
साजा रही सदीव कावडिया री कावडा ॥

(सब पाछा फिर जाव)

महाराणा—जय हो मेवाड माता री ! जय हो अकलिगनाथ री !

शक्तिसिंह—जय हो महाराणा प्रताप री ! जय हो अेकलिंग-अवतार री !

[पडदो गिर]

काळाजी—काल भरव । आण—आन । भटका खावता—भटकते । लोधे—लिए । माण—मनाये । तरछता— तरसते । वण्या—बना हुआ । अस्या—असे ।

परधान—प्रधान मत्री । अठ—अभिमान नेरो । अडवपती—अरव द्रव्य के मालिक । साजी—अखडित सहित । कावडिया—भामाशाह क वश का नाम । कावडा—सिद्ध महात्माओ की प्रतिमाओ को दिखाते समय पढ़ा जाने वाली कविताएँ यशगान ।

काबली नसीरुद्दीन

(रेखाचित्र)

[मुरळीधर व्यास]

[श्री मुरलीधर व्यास का जन्म सं० १९५५ में बीकानेर में पुष्करणा परिवार में हुआ। प्रारंभ में ये राज-कर्मचारी रहे। वहाँ से अवकाश ग्रहण करने पर कुछ समय तक बीकानेर के सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट में कार्य किया।

श्री व्यासजी राजस्थानी के प्रौढ गद्यशिल्पी हैं। हिन्दी कहानी में समयानुसार जितने भी नये प्रयोग हुए हैं उन्हें राजस्थानी में लाने का श्रेय व्यासजी को है। लघु कहानियां, संस्मरण, रेखाचित्र आदि लिखने में सिद्धहस्त हैं। 'वरसगांठ' इनकी २३ कहानियों का संकलन है। इनकी रेखाचित्रों और संस्मरणों की रचना का प्रकाशन 'जूना जीवता चितराम' नाम से हुआ है। इन चित्रों में राजस्थान का आंचलिक जीवन बहुविध रूपों में मुखरित हुआ है। व्यासजी की भाषा सरल, मुहावरेदार और प्रभावोत्पादक होती है। शैली घरेलू होते हुए भी साहित्यिक है। इन्होंने राजस्थानी में काव्य रचना भी की है।

संकलित रेखाचित्र 'जूना-जीवता चितराम' में संगृहीत है। इसमें लेखक ने काबुली नसीरुद्दीन की व्यावसायिक वृत्ति के नीचे छिपी हुई बच्चों के प्रति सहज स्नेहशीलता और रखडी बहिन के प्रति दुर्लभ आत्मीयता का बडी मर्मस्पर्शिता के साथ उद्घाटन किया है।]

सळादार मलो मैला घणो ढीला सूथणो घणा ढीलो जाडो अर जागा-जागा चीगटो चोळो, अेक खाध ऊपर ना'रो भूगळो लटकायोडो, बीजे कांधै अेक गाथळी, माथ कुल्ला अर पेची अर पगां में हाथ भर लंबा

सळादार—सला वाला, सिकुडनों से भरा। सूथणो—पाजामा। जाडो—मोटा। चीगटो—चिकट। खाध—कंध। ना'रो—नाहे का। भूगळो—पाइप। गाथळी—थैली। कुल्लो—कुल्लेदार टोपी। पेची—टोपी या पगडी के आगे लगाने का सिरपेच। जूत—बडे जूते। पहियोडा—पहने हुअे।

चरमर चरमर करता जूत परियोगा हिगलतो िगरतो बकता कावली नसीरूदीन आप र बेट साग अर म्हारा गळा म वडता जद आणद रा लर व जावती घर र आगे घरियोड पाट ऊपर परवार री मडळी म विराजियोडा वैदराजजी हरख र हेत-सू हाथ वधाय र कवता—आवो मान बादर ! वठा तो खा-माव ई गुन हो न हकीम जी ! क र पाट ऊपर बठ जावता

तुगाया गाव री आळगियोडी वानी मुण र थार जावती अर अेक-दो जण्या हरखडी दादी-न वधाई देवण नाठती क थारा घावली भाई आयो है

छोरा छडा विलाळ करता उनायना ऊनावना कवता—

मीयो मच्छी मारणो
कागा-न उडावणो
कागै मारी टाच अे
मीया मरग्या अेक सो र पाच अे !

गळी गुवाड रा बडा बूढा छोरा-न तडकता अर कवता—कावली बावोजी है मायो मच्छी मारणा नही कवणा दाकल सुण र छोरा चुपका होय'र पाट खन आय ऊभता कावली बावो कई छोर छोरी-न दो चार काजू कई नै थोडा सा नेजा तो कई-न दो चार बिदाम दे र पूछता—हरखडी सुन हय ? गामा राजी हय ? नाना खुन हय ? जावो सबका सलाम बोलो मजा दूगा जण छोरा ऊनावळा अेक साग ई कवता—हा ! राजी है अर नाठ र आपरी दादी न बुलावण जावता

पछ हरखडी दादी कावली भाई री वास्ता कामा पुरस र लावती जिक म बाजरी रा सोगरा गवारफळी-काकडी रो साग घी-खाड म चूरियोडा चूरमो, अर कटोरो दूध रो भरियोडा होवतो बावो कवतो—लाडू ला बन !

साग—साथ। वडतो—घुसता हुआ। लर इ०—लहर बट जाती। घरियोड—रखे हुअे। पाटा— बहुत बडी और ऊची चौकी जिस पर बहुत-से लाग बट सकें। हेत—प्रेम। वधाय'र—बढाकर। बादर—बहादुर। छोराछडा—बालबच्चे। टाच—चोच का प्रहार। गुवाड—मुहल्ला। तडकना—धमकाते। दाकल—ललकार धमकी। चुपका—शात। खन—पास। ऊभता—खड हो जाते। नेजा—चिलगोजा अेक प्रकार का मवा। बिदाम—बादाम। जण—जब लब। अेक साग इ०—अेक साथ ही कहते। नाठ र—भागकर (स० नष्ट)। वास्ता—वास्ते, निमित्त। कामो इ०—परोसा परोस कर। जिक म—जिसम।

जण रवडी दादी मीठी झिडकी देंवती—लाडू पडिया जाय है ! लाडू कठ-सू नाऊ रे डाकी ? तू तो घाघा गिटणो है लाडू म्हारै इयै भतीजै वगा माभ'र राखिया है

ता भतीजे को दे, जल्दी ना'—कय र बावो जार सू हा' हा कर र हँसतो

बा दिना जीमणा री मिठाइ मोकळी विकणी आवती दादी १-२ रुपिया री लेय र राख मलती थोडी मिठाई टाबरा मारू साग कावल पण भेजती

जीम-जूठ'र बावो गायळी खोलता वन अर वन रै टाबरा-न कावल-सू लायोडा मन्नो अर हीग देंवतो

दादी अब लागती आळमा काढण—कदई निरमाही दा आगळ रो पुरजो ई का भेज नी, डाकी मोह चार है

माफ करा बाई ! अब जरुर भेजूगा खुदा क फजल मे घर पर सब खुश हय—कय र बावो पिंड छोडाकता

पछ्छ जायोडी सगळी लुगाया-सू मीठो बान र कइ-न कई ता कई-नै कई देय र सगळमा न राजी कर र मुनलब री बात छेडतो हींग रा डब्बो खोल'र लागतो माल वेचण

काई कयनी—बाळ बावा ! तू तो नोमी घणा घणा दाम लेय है

ता बावा कयता—अच्चा अच्चा ! जो मरजी आव दे दो

काइ कवता—हींग चोखी कायनी, कोरो मिस्सो आटा बळ है

ता अच्चा ! अच्चा ! दूसरा नमूना दको बाई ! अमारा हिंग माफक दूसरा हिंग नही मिलेगा अमारा हिंग बोत अच्चा है वोत सस्ता है—कय र सादो पराय लेंवतो बावो दानो अर सणो वोपारी हा

सोगरा—रोटिया। जणै—जब तब। पडिया जाय है—पड जाते है रक्वे हैं (व्यग)। डाकी—भक्षक डाकिन का नरजातीय रूप। गिटणो—खानवाला। वगा—लिअे। माभ र—सभालकर। कय र—कहकर। जीमण—जेवनारें। राख मलती—रख छोडता। सारु—लिअे। कावल—कावुल। पण—भा। आळमा काडण—उलहने देन। दो आगळ रो पुरजा—छोटी सी चिटठी। मोहचोर—निर्मोही। फजल—कृपा दया। जायाडी—आयी हुई। कई न कई—किसी को कुछ। सगळया—सबको। बाळ—जलाद। कायनी—नही है। मिस्सो आटा—कई दाला के मल से बना आटा। बळ है—जलता है (गाली)।

काबली नसीरुद्दीन काबल सू हींग अर मञ्ञा लाय'र अठै चोखा पईसा खडा करतो अर अठ री जिनसा कावल म बेच र दूणो चोगणो नफा करतो काबली बाबो पक्को हैंसाबिया हो

काबला बाबो आपरो अधलो ई को छोडतो हो नी, बीजै रो भलाई पईसो क म रैय जातो पाई-पाई री उघराई कर'र पछ कावल दिसी मूडो करता काबली बाबो पूरो लोभी हो

सादो पटावण म बाबा कूड-कपट ई केवट लेंवतो आप रो माल हलाक हावतो तो ई अमारा माल बोत अच्छा हय अम बुडा हय जूट नही बोलता अमारा भाव सस्ता है—कय र सौदो पटाय लेंवता काबला बाबा चोखो घट अर चरियोडो हो

काबली बाब री उमर ७० र अड गड ही पण ता ई चरो लाल बडी-बडी ओख्या, जाडा भवरा मैंदी सू रंगियोडी न्हाडी उफसियोडा जबाडा अर करारा कबाडा हा नही क्यो हुव ? ऊभ खाय मेवा चरतो हो अर चोखो खावतो हो लाघ कर उपाघ आपाँ रै अठ र डाकरा दाइ ब रो मूडो होक दाई पोनो आस्याँ रा खुड्डा वठियोडा जबाडा चिपियोडा, अर कबाडा मिलियोडा को हा नी लाया अठ र डणा-न चोखी खुराक अर धपटवा मेवा कठ मिलण न पडिया है ?

दार। चोखा इ०—अच्छे पसे खड करता (कमाता)। जिनसा—वस्तुअें। नफो—लाभ। हैंसाबिया—हिसावी नाभ-हानि का ध्यान रखन वाला।

अधेलो—अधला आधा पसा। बीज री—दूसर का। भलाई—भन हा चाहे। रैय जातो—(बाकी) रह जाता। पाई—अक बहुत छोटा सिक्का (लगभग आध पस के बराबर)। उघराई—उगराती वसूली। कूड—झूठ। घट—चालाक। चरियोडो—चरा हुआ अनुभवी। अडगट—आसपास। तो ई—तोभी। जाडा—मोट। भवरा—भौंह। उफसियोडा—उठ हुअे।

करारा—कठोर हृष्ट-पुष्ट। ऊभ खाय—रास्त चलत, चलत फिरत (?)। खाय इ०—खाना उत्पात करता है। आपा इ०—अपन यहा के बूढ़ो की तरह। होक दाई—हुक्के की तरह। खुड्डा—खड्डे। चिपियोडा—चिपके हुअे मिल हुअ। को हा नी—नही थ। लाया र०—बेचार यहा के बुड्ढों को। धपटवा—इच्छानुसार जितन जी चाहे उतने। कठ इ०—मिलने को कहा पडे हैं।

काबली बाबो कडकबाळो हो अर बत्तीसी रो अेक दांत ई खाडो को हुयो हो नी

काबली बाबै रो बटो क-सू घणा चोखा अर खरो हो कणै-कणै ई बा अेक लो आवतो जणै सगळै क र खनै बेसो अर मोकळी हीग लेंवता वो कूडो कपटी को हो नी बैदराजजी-न बा खुदाई खिदमतगार' दळ री बाता सुणावतो जिक रो वो अेक मेबर हो

काबली बाबो अर व री बन ठाकुरजी री दरगा म पूग ग्या पण बा री याद हाल ताई काल री सी बात दाई, बणियोडी है

कडक—ताकत सामथ्य । बत्तीसी—बत्तीस दांतो का समूह दत पक्ति । खाडो—खडित । को हुयो इ०—नही हुआ था । कण कण ई—कभी कभी । सगळै—सब (लाग) । खन—पास (स) । कूडो—झूठा ।

खुदाई खिदमतगार—सीमाप्रात (अब पाकिस्तान मे) के प्रसिद्ध नेता अब्दुल गफ्फार खाँ द्वारा सस्थापित अेक राजनीतिक काय करन वाली मडली ।

दरगा—दरगाह दरबार । पूगग्या—पहुच गय (हैं) । पण—पर । काल री इ०—कल की सी बात की भाति । बणियोडी—बनी हुई जीवित ।

नागरपान

(गद्य काव्य)

[विद्याधर शास्त्री]

[श्री विद्याधर शास्त्री का जन्म सं० १९५८ में चूरू में हुआ। इनके पिता पं० देवीप्रसाद शास्त्री उच्चकोटि के शास्त्रज्ञ थे। उन्हीं के पास रहकर शास्त्री जी ने वेद, व्याकरण, धर्मशास्त्र, पुराण, ज्योतिष, न्याय आदि विषयों का सांगोपांग अध्ययन किया। छात्रावस्था से ही इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत में गद्य पद्य की रचना करना प्रारम्भ कर दिया था।

डूंगर कॉलेज बीकानेर में इन्होंने वर्षों तक संस्कृत के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। अनेक सार्वजनिक, सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं के ये अधिकारी एवं सक्रिय सहयोगी रहे। बीकानेर-साहित्य-सम्मेलन एवं राजस्थान संस्कृत-सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में इनकी सेवाएँ अमूल्य रही हैं। इस समय ये बीकानेर की हिन्दी विश्वभारती नामक शोध-संस्था के निदेशक एवं त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वम्भरा' के प्रधान संपादक हैं। संस्कृत में महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक आदि विधाओं में लिखित इनकी अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। सन् १९६८ में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर ने इन्हें 'मनीषी' उपाधि से अलंकृत कर इनकी साहित्य एवं दर्शन के क्षेत्र में की गयी सेवाओं के प्रति सम्मान प्रकट किया।

संकलित गद्यकाव्य 'राजस्थानी' भाग ३ अंक १ में प्रकाशित हुआ था। यह गोधूलि-वेला का संक्षिप्त शब्द चित्र है। इसमें प्रकृति की रमणीयता और संगीत की मोहक स्वर लहरी के बीच मरुप्रदेश की कर्ममय जिंदगी को रूपायित किया गया है।]

सिंझ्या होण-आळी ही, धोरा-की रेत ठंडी हुगी ही, आज मैं अेकलो ही टीबा के बीच-बीच में खींप, सणिया अर बासा-की बहार देखता देखतो

सिंझ्या—संध्या। होण आळी ही—होने वाली थी। धोरा—रेत के टीबे। हुगी ही—हो गयी थी। खींप, सिणिया, बाम—जंगली मरुस्थली पौधे।

दूर ताणी चल्यो आयो मैं जद जद टीबा मे घूमण जाया करू हूं जद ही काई न कोई ऊचो-मो टीवो ढूढ-अर बा-न ऊपर बठ-अर च्यारू कानी की प्राकृति छटा न देख्या करू हू

आज मैं जी धार-न ऊपर बठ्यो हो वी-सें थोडी सी दूर पर अक लाबो चवडो गैला वगे हो मैं बठ्यो-बठ्यो अठीन-बठीन देख ही रयो हो कै इत्त म-ही दूर स टणमण टणमण की अवाज काना म पडी पली तो थाडी सी धूळ उठती दीसी फेर गाया की डार की डार झमती अर तजी स चालती मेर कन-कै निकळगी मैं बठ्या-बठ्यो अकास म उडती चीलरया नै देखण लाग्या अब की वार चाणचक्या ही अक मिट्ठी मिट्ठी गाण की अवाज काना म आयी—
छल मेरा चाव नागर-पान ।

नजर ऊँची कर देख्यो तो दूर स सणिया छाणा अर लकडिया-की भरोटी लिया पाच छव तेलणा आवती दीसी सहर म इसी स्वच्छद अर सुरीली अवाज सुणन न कठ हू मिल ही ? मेरो तो रोव रोव मस्त हो र नाचण लाग्यो

धीर धीर बीच म हँसती अर गाती टीव क नीच कर व आगीन गयी परी चानणो भी कम हुग्यो हो मैं सोटी उग्यायी अर छल मेरा चाव नागर पान गुणगुणावता बगीची कानी चाल पड्यो

बहार—शोभा । दूर ताणी—दूर तक । जद ही—जभी, तभी । बठ अर—बठकर । च्यारू कानी—चारो ओर । जी—जिस । वा स—उससे । लाबा चवडो—लबा चौडा । वगे हो—भाग जाता था । इत्त म—इतने म । अठीन बठीन—इधर उधर । टणमण—टनमन-टनमन । पली—पहल । दीसी—दिखायी पडी । डार—झुड । कन क—पास स । चीलरया न—चीलो का । चाणचक्या—अचानक । मिट्ठी—मीठी । गाण-की—गाने की । चाव—चबाता है । नागरपान—नागरबेल का पत्ता । छाणा—कड । भरोटी—बोझी बोझ । छव—छह । तेलणा—तलिनें । कठ हू—कहाँ स । रोव—रोम । नीच कर—नीचे स । आगीन इ०—आग की ओर चला गया । चानणो—उजाला (मि० चादनी) । सोटी—लकडी छोटी लठिया । गुणगुणावतो—गुनगुनाता हुआ । कानी—ओर ।

प्रेमाश्रम

(भावात्मक निबंध)

[ठाकुर रामसिंह]

[ठाकुर रामसिंह का जन्म संवत् १६५६ में बीकानेर में हुआ । इनके परिवार का संबंध राजस्थान के जोधपुर, जयपुर, बीकानेर आदि अनेक घरानों से था । इनकी बड़ी बहन बीकानेर के महाराजा गंगासिंह को ब्याही गयी थी ।

इनकी शिक्षा काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई । पं० मदनमोहन मालवीय का इन पर विशेष प्रेम था । उन्होंने इन्हें विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक तथा विश्वविद्यालय कोर्ट का सहायक सचिव नियुक्त किया । इन्होंने वहाँ कुछ समय तक कार्य किया था कि बीकानेर महाराज ने इन्हें शिक्षा विभाग का निदेशक बनाकर बीकानेर बुला लिया ।

राजस्थानी साहित्य-सम्मेलन के ये प्रथम सभापति मनोनीत हुए । इनके सभापतित्व में वह सम्मेलन दिनाजपुर में बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ । बीकानेर में सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट की स्थापना हुई तो ये उसके प्रथम निदेशक बनाये गये । बीकानेर की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के ये अध्यक्ष भी रहे ।

प्रारम्भ से ही ये राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित थे । जून १६२२ की गया कांग्रेस में स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी के नेता के रूप में सम्मिलित हुए थे । अपने शिक्षा काल में ही इन्होंने साहित्य सेवा का कार्य आरम्भ कर दिया था । अनुसंधान एवं संपादन और मौलिक सृजन दोनों क्षेत्रों में इनकी प्रतिभा समान रूप से कर्तृत्वशील थी । अनुसंधान और संपादन सम्बन्धी कार्य अधिकांश में श्री सूर्यकरण पारीक और नरोत्तमदास स्वामी के सहयोग में सम्पन्न हुआ । मौलिक सृजन के क्षेत्र में ये प्रधानतया कवि और गद्यकाव्य के लेखक हैं । इन्होंने हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में रचना की है । इनका राजस्थानी में लिखित मातृभाषा का गीत बहुत प्रसिद्ध है ।

संकलित निबंध की रचना सं० १६७६ के लगभग हुई । इसका हिन्दी रूपांतर हिन्दू विश्वविद्यालय के बीकानेर विद्यार्थी-समाज की हस्तलिखित मुखपत्रिका प्रेमाश्रम के प्रथम अंक (नवंबर १६२२) में प्रकाशित हुआ था ।]

मणिकूट पर्वत रै नीचै, सघन कानन रै बीच में भागीरथी गंगा रै तट माथै म्हारी पर्णकुटी है।

मणिकूट रै मुगट माथै मेघ मंडरावै, सघन वन में मदोन्मत्त सिंह और अचपळा मिरग दौड़ै, भागीरथी रै निर्मळ नीर में रंग रंग री माछियां किलोळां करै और म्हारी कुटी में प्रेम बसै।

उठै रा साधु-संत उण तपोवन-नै मुर्गाश्रम कवै है, और हूं म्हारी कुटिया नै प्रेमाश्रम रै नाव-सूं बतळाऊं हूं।

मुर्गाश्रम रा निवासियां कनै कमंडळ, रुद्राक्ष माळा और मृगछाला है, और प्रेमाश्रम में वीणा, सितार, सरोद, बंसी, तंबूरो और मृदंग है।

मुर्गाश्रम रा वासी आप रा दिन रात योग री साधना में बितावै और हूं म्हारा दिन प्रेमाश्रम माथै पुष्पां री बेलां चाढ़ण में, गुलाब-गेंदा, चंपा, चमेली, जुही, मालती, केवड़ा-केतकी, कुंद, कुरबक, मोगरा, मौलसिरी और रजनीगंधा रा झाड़ लगावण में, तथा म्हारी रातां प्रेमानंद में मग्न थको भगवद् भक्ति रा भजन गावण में बिताऊं।

तपस्वियां रै तप रो तेज पसरै और म्हारै फूलां री महक फूटै। तपस्वी ध्यान लगावै, और हूं बंसी री तान उडाऊं।

मुर्गाश्रम में म्हारी कुटी है और प्रेमाश्रम उण रो नाव है।

वसंत में आश्रम रा आम्र-कुंजां पर नव पल्लव और नव मंजरी निकळै और कंठ कंठी कोयल हरख में विभोर बणी थकी प्रति पळ गायो करै, वन में मालती फूलां-सूं लदालूम बण ज्यावै, प्रकृति पुष्पित-सुरभित हु ज्यावै, प्रेमाश्रम रा पुसब उण नै निरख निरख नै हंसै और अंतस रो उल्लास प्रगट करै और उणां री सुरंगी मुसकयान दूर दूर तांई सुगंध रा झकोरा फैला देवै।

ऊनाळै में आप रा भायलां नै मुरझायोड़ा देख नै प्रेमाश्रम रा पुसब भी उदास उदास रवै।

बरसात में वन राजि मन भावन गगन जळ में सिनान कर नै हरी भरी हु ज्यावै जद प्रेमाश्रम रा पुसब भी मंद मंद मुळकै।

शरद ऋतु में प्रेमाश्रम रा फूल रात रा विरह वेदना रा आंसू बवावै और

अचपळा=चंचल। बतळाऊं हूं—पुकारता हूं। चाढ़णा—चढ़ाना। बणी थकी—बनी हुई। लदालूम—लदी हुई, भरी हुई। ऊनाळो—उष्णकाळ, ग्रीष्म ऋतु। भायला—स्नेही मित्र। बवावै—बहाते हैं।

भोर री वखत म उणा र कवळा अर चीकणा कपाना माय ज आसू कण मोतिया ज्यूँ चमक

हेमत म प्रभाश्रम र पुष्पा रा सुकुमार शरीर हिम सीकर वाहिनी शीत समारण र झकारा-सूं थर थर काप और ज भुक भुक न माता मेदिनी री सह भीना गोदी म आ वडन ग होड लगाव

शिशिर म व धरपीनै कुहास मू ढकिया रव और हिम-सूं पिटीज-न, छायावादी कविया ज्यू अनत री शरण लव

सुर्गाश्रम म म्हारा कुटी है और प्रभाश्रम उण रो नाम है

चन्द्र चानणी रात म हू पवत री शिला माथ बैठो थको कदई वीणा कदई सराद कदई सितार कदई बसी बजाया करूँ उण वळा राग म मगन हुया थका मिरग घास चरणो छोड दव शिलावा और भाठा माथ नाचती कूदती मन्दाकिनी रो कल-कल करतो प्रबळ प्रवाह अक वार स्तभित होय-न ठर ज्याव सिकारी सिह मठ जाय-न सो ज्याव माछळिया कूदण लाग ज्याव और भीगुर म्हारो साथ दण लाग

मधु रा लोभी भवरा दिन भर गूँजता थका प्रेमाश्रम र च्यारा कानी मडराया कर और मध माखिया दिन भर फूला माथ फिरती फिर व म्हार डील माथ भी आ बठ व मन कदई डक को मार नी

चपा रा परमळ सूं खिचीजी थकी रग विरगी नागणिया आय न उणा सूं लिपट ज्याव प्रात काळ म व फणा । पसारिया पुरवाई पवन रो पान कर उणा रो विष शान्त हुग्या है और व डसणा भूल चुकी है

भात भात रा फूटरा पखरू रूखा री कवळी अर फूला-सू लदाजियोडी डाळिया माथ वठा थका म्हारो गाणो सुण और आप आप रो मीठा तराणो सुणाय न उड ज्याव

म्हारी कुटा र छपर म भीगुर वस रात रा मन तदूर रा तार छेडतो सुण न सुर म सुर मिलाय-न व भणकार करण लाग ज्याव

कवळा—कोमल । मदिनी—पृथ्वी । वडना—भीतर जाना । कुहासो—कुहरा । पिटीज-नै—पीटी जाकर पिटकर । चटक चाणणी—चटकीली चाँदनी से युक्त । भाठा—पत्थर । डील—शरीर । परमळ—परिमल, सुगन्ध । खिचीजी थका—खीचा जाती हुई खिची हुई । फूटरा—सुन्दर । तराणो—तान, तराना ।

अरण्य रा ऊचा शाल रू खा री शाखावा पर बठा शाखामग सदा कूदता-फादता और किलकारता रैव

सुगंधिम म म्हारी कुटी है और प्रेमाश्रम उण रो नाव है

झरझर झरता फूटरा झरणा भागीरथी-सू हिल मिल ज्यावै अै झरणा कठा सू आवे है ? आ वात जाणण री मनै घणो क्तूहळ है इण वात रो पतो लगावण वास्तै हू ऊँचो चढू पण आखर हार नै झरण री फुटारा-न हीज पूछू भला ! थे कठा-सू आवो हो ? थारो घर कठ है ? व उछळ उछळ नै उत्तर देव—गिरि शिखर, गिरि गह्वर गिरि-अन्तर !

म्हारी वीणा री झण झण झरणा री झर झर हवा री मर मर, पत्ता री खर खर भवरा री भण भण भागीरथी री खळ खळ कोयल री कू-कू और पपइय री पी पी मिल न परमानन्द प्रद चित्र विचित्र ध्वनि न जलम देवै

सुगंधिम म म्हारी कुटी है और प्रमाश्रम उण रो नाव है

मम मर्म पर वादळा रा दळ गिरि माळावा सू नीच उतर उतर प्रेमाश्रम रा रू खडा और पौधा-न गगन रा जळ सीच सूरज उणा न अमत किरणा रो अमर रस पाव समीर उणा पर स्नह री वर्षा कर सिझ्या उणा न मतरगा खेल खिलाव न विलमाव

म्हार चप वाम्त चादा तरसै म्हारी चमेली सू तारा तूट-तूट-न मिलण आव म्हारी जुही न दख न नान्ही नान्ही तारिकावा आकाश-गगा म बह ज्याव म्हारा गुलाब रा फूला-न देख न उपा वादळा म लुक ज्याव म्हारा गदा हजारा-न देख-न सूरज आथूण सागर म डूब ज्याव और म्हारी प्रेमाश्रम री वाडी री सुषमा निरख नै इन्द्रधनख लाजा मर ज्याव

सुगंधिम म म्हारी कुटी है और प्रमाश्रम उण रो नाव है

कद कदास मग शावक भैभीत थका म्हारी कुटी म आ ज्याव चिडिया उठ आळा घात और ईंडा देवै शेर उण री गुफावा मे सूता रवै मणिकूट मेघाच्छन्न हु ज्यावै जद वीच-वीच-म अेकाध जागा खुली र ज्याव उण खुली खिडकी माय-सू रू खडा झाक और मन ऊपर बुलावै और चादै और तारा-म चालती वाता सुणन वास्तै म्हारो मन ललचीज

कठासू—कहा से । सुवासनी निश्वास=सुगन्धी हुई गर्मी । सिझ्या—साझ । आयूण—पश्चिमी । कदे-कदास—कभी-कभी । आळा—घासले । सूता—सोये । जागा—जगह । ललचीज—ललचाता [illegible] ।

प्रभात री वळा म दत्ती देवता, अर साझ पडिया परिया अर अप्सरावा मदाकिनी म जळ क्रीडा करण वास्त आवै

मुर्गाश्रम म म्हारी कुटी है और प्रेमाश्रम उण रो नाव है

तपस्विया इण रो भेद जाण लिया है व सुर्गाश्रम न छाड-न प्रेमाश्रम मे वसुधरा र प्रेम रा गीत सुणन न आवण लागग्या है उणा न धरती रा फूला सू रोही रा पशु पक्षिया सू प्रकृति रा नवा नवा नाटका मू माह हुग्यो है व प्रेमाश्रम रा मग शावका-न कवळा तिण चराव और पखेरुवा-न दाणा चुगाव उणा र भाळ माथ प्रेम री जोत जाग उठी है हू उणा री चरण रज माथ चढाऊ और उणा री आखिया म प्रेम रा बादळ भरीज

नीच गगा चद्रमा-न लहरा र झूल म भुलाव हुलराव ऊपर मणिकूट मयक रो माथो चूम, बीच म म्हारी वाडी री कुसुम कळिया खिल खिल हस और हसाव

प्रेमाश्रम म अब आश्रम है और सुर्गाश्रम उण रो नाव है

राही—जगल वन।

साहित्य-रो प्रयजन

(साहित्यिक निबध)

[नरोतमदास स्वामी]

[श्री नरोत्तमदास स्वामी का जन्म स० १६६१ मे बीकानेर मे हुआ। इनके पिता श्री जयश्रीरामजी कथावाचक थे। स्वामीजी की शिक्षा काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय म हुई जहाँ से इनने सस्कृत और हिन्दी मे एम० ए० किया। ये पहल डूगर कालज बीकानेर मे तथा बाद म महाराणा भूपाल-कॉलेज, उदयपुर म और फिर वनस्थली विद्यापीठ के हिदी प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष रहे। उदयपुर-कालेज म उप प्रधानाचार्य भी रहे। इस समय राजस्थानी ज्ञानपीठ बीकानेर के पीठाधिपति और राजस्थानी भाषा साहित्य सगम बीकानेर, के सभापति हैं।

इनकी बचपन से ही साहित्य की ओर विशेष रुचि रही। बीकानेर की अनेक साहित्यिक और सार्वजनिक सस्थाओ के ये सक्रिय अधिकारी रहे। 'राजस्थान भारती' के प्रथम सम्पादक तथा अनेक पत्रिकाओ के सम्पादक मडलो एव परामर्श मडलो के सदस्य रहे हैं। राजस्थानी भाषा के समुद्धार का काय यद्यपि रामकरणजी आसोपा शिवचद्रजी भरतिया गुलाबचदजी नागोरी आदि द्वारा बहुत पहले आरभ हो चुका था पर इन्होने उसे नये सिरे से प्रेरणा और नवीन गति दी। ये आगरा और राजस्थान विश्वविद्यालयो की सीनेट आर्ट्स फकल्टी तथा हिन्दी बोर्ड आदि के वर्षों तक सदस्य रहे हैं। राजस्थान-सरकार की कई समितियो के सदस्य एव अध्यक्ष भी रहे। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ने इनको प्रथम मानसिह पुरस्कार से सम्मानित किया।

इनका अधिकाश काय अनुसधान सपादन तथा पाठ्यपुस्तको के रूप म है। इनकी उल्लेखनीय कृतियो म राजस्थानी-व्याकरण, रासो-साहित्य और पृथ्वीराजरासो मौलिक कृतियाँ हैं तथा ढोलामारू रा दूहा 'राजस्थान के लोकगीत' राजस्थान रा दूहा' वीररस रा दूहा' क्रिसन रुकमणी री वेलि 'पृथ्वीराजरासो का लघुतम रूपान्तर आदि सम्पादित कृतियाँ हैं। बहुत पहले राजस्थानी हिन्दी-कोष का काय भी इनने आरभ किया था जिसकी सामग्री को आगे चलकर बीकानेर के सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट को सौंप दिया।

सकलित निबध प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया लेखक का नवीनतम निबध है। इसकी भाषा सरल और प्रवाहमयी है। लेखक की दृष्टि म आनद और उपदेश का अद्वैत सम्बन्ध स्थापित करना ही साहित्य का प्रयाजन है।]

(१)

साहित्य रो प्रयोजन काई ? मिनख साहित्य रचना क्या कर ? मिनख साहित्य क्या बाच ? क्या सुण ? और क्या देख ?

साहित्य अक कळा है कई विद्वान कस—कळा रो प्रयोजन कळा हाज, कळा रो काई दूसरा प्रयोजन नहीं दूसरा विद्वान बोल—कळा रो प्रयोजन आनद कळा आनद देव तीसरा विद्वान बताव—नहीं कळा रो प्रयोजन उपदेश कळा जीवण-न आग वधण म मदद देवै साची पूछो तो तीना मता म कोई अन्तर्विरोध नहीं कळा रो सबध मिनख सू मिनख रो सबध जीवण सू कळा मिनख र खातर कळा जीवण र खातर कळा मिनख न आनद देव कळा जीवण नै आगै बधण री प्रेरणा देव

साहित्यकार साहित्य री रचना कर कारण ? साहित्य री रचना कर-न वो आनद प्राप्त कर उण-न आत्म सतोष मिल—तुळसीदासजी र शब्दा म स्वात सुख वाचक साहित्य वाच कारण ? साहित्य वाच न वो आनद रो लाभ कर उण-न अेक न्यारो सुख मिल—मम्मट र शब्दा म ब्रह्मानद सहोदर साहित्य मन-न रमाव साहित्य मन न आपण म लीन कर साहित्य मन-न सुख दुख री स्थिति-सू न्यारो इस लोक म पुगाय देव जठै सगळा दूसरा वेद्य विगलित हु ज्याव साहित्य रो प्रयोजन आनद

पण साहित्य रो आनद सस्तो मनोरजन नहीं साहित्य नौटकी रो खेल नहीं वो वेश्या रो नाच नहीं वो शराब री बोतल नहीं जिण र नश म मिनख आप-न भूल तो जाव पण पतन री दिशा कानी जाता भी वार नहीं लाग हित र सहित हुव जको ही साहित्य है साहित्य जीवण न ऊचो उठाव उण-न उदात्त बणाव साहित्य रो प्रयोजन उपदेश

साहित्य उपदेश देव पण साहित्य नीतिशास्त्र नहीं नीतिशास्त्र उपदेश देव प्रत्यक्ष रूप-सू साहित्य उपदेश देव परोक्ष रूप-सू—इण बात क आपा-न

---

१ देख—हृदय काव्य के रूप म साहित्य का अभिनय देखना है। बधणा—बढना। खातर—खातिर लिअे। वाचक—वाचनवाल पाठक। मम्मट—सस्कृत क अेक बडे साहित्यशास्त्री, काव्यप्रकाश क कर्ता। सहोदर—भाई बधु। पुगावणो—पहुचाना। दूसरा वेद्य ह०—विगलित-वेद्यान्तर। वेद्य—अनुभूति। नस म—नशे म। कानी—ओर। वार—देर। मिळाजो—हित म त्यम्।

मालम नहीं हुवै क उपदेश दे रया है साहित्य प्रत्यक्ष रूप-सू उपदेश देण लाग जद साहित्य साहित्य नहीं रवै, वो नीतिशास्त्र रो प्रचारक बण ज्यावै और साहित्य नीतिशास्त्र रो 'प्रचारक' बण ज्याव जद साहित्य नाव रो अधिकारी नहीं रवै इणी भात साहित्य राजनीति रा पिछलग्गू होय-न राजनीति र प्रचारक रो काम कर लाग जद थो, और भला ही की हुवो साहित्य तो नहीं-होज इस साहित्य-न राजनीति रो दासी-पुत्र राजनीति रो गुलाम नाव देणो उपयुक्त हुसी

(२)

साहित्य परोक्ष रूप-सू उपदेश कियान देवै ? संस्कृत रा साहित्यकारा इण रो बडा सुदर विवेचन करयो है उपदेश तीन भात-सू दिरीज—प्रभु समित तया, सुहृत समिततया और कान्ता समिततया—मालक आळ दाई मित्र आळै दाई और प्रियतमा आळ दाई

पैला पात प्रभु रो उपदेश प्रभु रो उपदेश करण म उपदेश पण असल म आदेश वो मानणो-ही पडै उण म बाध्यता हुवै और जठै बाध्यता हुवै उठ विद्रोह भी हुया विना नहीं रवै आदमी प्रभु रै उपदेश नै मानै तो खरो पण मानण रो उमाह धीम धीमे घटतो जावै और छेकड आवक घट जाव वहा रो उपदेश प्रभु रो उपदेश इस उपदेश रो प्रभाव स्थायी प्राय नहीं हुवै

दूजो मित्र रो उपदेश मित्र रो उपदेश सला उण म बाध्यता कोई नहीं मानो तो मरजी नहीं मानो तो मरजी मिनख री स्वाभाविक प्रवृत्ति प्राय कर नहीं मानण री ही ज पुराणा रो, नीतिशास्त्र रो आधार शास्त्र रो उपदेश मित्र रो उपदेश इसै उपदेश रो प्रभाव भी साधारण रूप-सू स्थायी नहीं हुवै

तीजो कान्ता रो उपदेश कान्ता र साथ भावात्मक सबध हुवै कान्ता म मन रमै कान्ता री बात मन नै घणी भावै उण न मानण री मन री स्वाभाविक प्रवृत्ति हुवै मन उळटो चावै क कान्ता आदेश देवै और हू उण रो पाळन करू कान्ता आज्ञा नहीं देवै पण मन करै क वा आज्ञा देवै वा आज्ञा देव तो भी मालम नहीं हुवै क आज्ञा दे रयी है

---

२ कर लाग—करने लगता है। भला हो—भले ही घाव। कियान—कैसे। पैला पात—सबसे पहले। बाध्यता—अनिवार्यता compulsion। छेकड—अत म। आवक—बिलकुल। सला—सलाह।

साहित्य रो उपदेश कान्ता रो उपदेश वो उपदेश दे पण आपा-न मालम नहा हुव क वो उपदेश दे रयो है आ परोक्ष उपदेश

साहित्य रा उपदेश परोक्ष हुव पण अ नहा सममणा क वा किणी भात कम प्रभावशाळो हुव नहा, उण रो जबरो प्रभाव हुव और घणो स्थायी हिंदी रा मोटा साहित्यकार महावीरप्रसादजी द्विवेदी कयो है—साहित्य म बा शक्ति छिपियोडी है जको तोपा तरवारा अर बम रा गाळा म भी नहीं है विजता जाति पराजित जाति न आपण अधिकार म कर जद पला पात उण री भाषा-न पर भ्रष्ट कर उण रै साहित्य न लाम्बी गळी म न्हाख

साहित्य म आनद-सू उपदेश और उपदेश-सू आनद बण जाव—आनद और उपदेश मे कोई अतर नहा रह जावै आनद अर उपदेश रा ओ अद्वत ही साहित्य रो प्रयोजन है साचो साहित्य मन नै आप म रमाय-न जीवण-न उदात्तता री दिशा म अग्रसर कर वा जीवण-म आनद भरै, उल्लास भरै सजीवता भरै उण म भोग है जठ कम भी है उण म सत्य है चतन्य है आनन्द है वो सत्य है वा शिव है वो सुदर है वो सत्य और ज्ञान रूप अनन्त ब्रह्म रो रूप है

जबरो—जबदस्त । भोग अर कम—मिलाओ—कम का भोग भोग का कम यहा जड का चेतन आनन्द (कामायनी) । सत्य और ज्ञान—मिलाओ—सत्य ज्ञानम अनन्त ब्रह्म (उपनिषद्) ।

राजस्थानी साहित्य और जैन विद्वान

(साहित्यिक निबंध)

[अगरचन्द नाहटा]

[श्री अगरचन्द नाहटा का जन्म सं० १९६७ में बीकानेर में हुआ। पांचवीं कक्षा तक इनको पाठशाला की शिक्षा मिली। पर सतत अभ्यास और निरंतर अध्ययन रत रहकर इन्होंने प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, गुजराती, बंगला, हिन्दी आदि का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। सं० १९८४ में श्री कृपाचन्द्र सूरि ने बीकानेर में चतुर्मास किया। उन्हीं की प्रेरणा से इनका ध्यान राजस्थानी साहित्य की ओर गया। तभी से ये बड़े अध्यवसाय एवं रुचि के साथ प्राचीन साहित्य के अन्वेषण में लगे हुए हैं। भारतीय साहित्य, राजस्थानी साहित्य और लोक साहित्य के विविध प्रसंगों और प्रवृत्तियों पर ये अब तक ढाई हजार से ऊपर लेख लिख चुके हैं। दिन रात ये अनुसंधान के नये क्षितिज खोजने में ही व्यस्त दिखायी देते हैं। अब तक इन्होंने लक्षाधिक हस्तलिखित ग्रंथों का अवलोकन किया है। 'अभय जैन ग्रंथालय' नाम से इनका निजी संग्रहालय है जिसमें बीस हजार से अधिक हस्तलिखित ग्रंथ और सहस्राधिक चित्रादि संग्रहीत हैं।

नाहटाजी कई सार्वजनिक एवं साहित्यिक संस्थाओं के अधिकारी एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं अभिनंदनग्रंथों के सम्पादक-परामर्शक रहे हैं। सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर के निर्देशक एवं त्रैमासिक शोध पत्रिका 'राजस्थान भारती' के सम्पादक ये वर्षों तक रहे।

इनके कई ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। सम्पादित ग्रंथों में 'सीताराम चौपई', 'धर्मवर्धन ग्रंथावली', 'जिनहर्ष ग्रंथावली', 'दम्पति विनोद', 'ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह', 'जिनराजसूरि-कृति-कुसुमांजलि' उल्लेखनीय हैं। 'प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा' इनके निबंधों का संग्रह है। बीकानेर साहित्य-सम्मेलन के रतनगढ़ अधिवेशन में राजस्थानी परिषद के सभापति पद से तथा साहित्य-संस्थान, उदयपुर के तत्त्वावधान में सूर्यमल्ल-व्यासपीठ से राजस्थानी में दिये गये इनके भाषण महत्त्वपूर्ण हैं। हाल में ही कलकत्ता विश्वविद्यालय में दिये गये इनके भाषणों का 'राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परंपरा' नाम से प्रकाशन हुआ है।

संकलित निबंध राजस्थानी निबंधमाला के प्रथम भाग में प्रकाशित हुआ था।]

जन धरम रा तीथंकरां और विद्वानां लोक भाषा रो महत्व मह-सू ही भली भांत समझ लियो हो जनता तांई पूगणरो अेकमात्र साचो साधन लोकभाषा हीज है इण वातन वां आछी तरांसू हृदयंगम कर ली ही ठेटसू ही वा आपणा उपदेश नागारी वालचालरी भाषा म दिया जकी वातन आपणा विद्वान आज समझण लागा है उण वातन जन धरमरा महात्मावां हजारां वरसां पली समझ ली ही भगवान महावीररी इण सूझन पछ आवणवाळा घणकरा धम प्रचारकां और पंथ थापकां साथ राखी और आप आपणा पथांरो साहित्य जन भाषाम—साधारण लोगांरी बोलीम—बणायो

प्राकृतर पछ अपभ्रंशरो घणकरो साहित्य जन विद्वानांरी रचना है अपभ्रंश पछ राजस्थानी गुजराती हिंदी मराठी तेलगू कन्नड वगेरा लोक भाषावांम भी व बराबर साहित्यरी रचना करता रया इण भाषावांरा घणो सो आरम्भिक साहित्य जन लेखकांरो बणायोडो है

लोकभाषाम साहित्य रचनारो काम जन विद्वानां बराबर चालू राख्यो जकं कारण इण भाषावांर क्रमिक विकासरो अध्ययन करणम जन-साहित्यरो अध्ययन घणो जरूरी है जकी शताब्दियांरा लोकभाषारा उदाहरण दूजा साहित्यम जोयां-ही ना लाधे नी वां शताब्दियांरा उदाहरण जन साहित्य म भरपूर लाधसी

राजस्थानीम तो जन-साहित्यरो घणो मोटो भंडार है राजस्थानीर आरम्भस लगा र ठेट आज ताई काई दशाब्दी इसी कोनी हुसी जिणम रचियोडी जन विद्वानांरी रचनावां नहीं मिलसी राजस्थानी भाषारो अखंड इतिहास लिखणो हुवै तो जन साहित्यरी मदतसू सहज ही लिखीज सकसी और जो साहित्य कठण डिंगळम नहीं पण लोगांरा बालचालरी भाषाम है जकन जनता आज भी विना टीका टिप्पणीरी सायतार समझ सकै है

नतिक दृष्टिसू भी जन-साहित्यरो घणो महत्व है राधक हुता थकां भी जन-साहित्य पवित्र भावनान जनम देव जिसो है जन विद्वानां आपर हाज धरमरी कहाण्यां लिखी हुव इसी बात भी कोनी लोगाम चालती लौकिक कथा कहाण्यां साथ भी जनारो घणो मोटो साहित्य है अेक विक्रमाजीत राजारी कथावांसू सम्बंध राखती पचाससू ऊपर जन विद्वानांरी बणायोडी पोथियांरो पतो लाग्यो है

जन विद्वानांरो लिखियोडो राजस्थानी साहित्य गद्य और पद्य दोनू रूकमरो है पद्यरो सबसू मोटो ग्रंथ तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमलजीरी

भगवती-सूत्ररी ढाळा है जवारो विस्तार ६० हजार श्लोक प्रमाण है गद्य प्रधान विस्ताररी दृष्टिसू महत्त्वपूर्ण भगवती सूत्ररी गद्य भाषा टीका है जकैरो विस्तार कोई ८२ हजार श्लोक प्रमाण है राजस्थानीरा घणो महत्त्वपूर्ण इतिहास ग्रंथ मुहणोत नैणसीरी ख्यात है इण ग्रंथरी प्रौढ भाषाशैलीरी प्रशसा राजस्थानीरा जाणीता विद्वाना करी है राजस्थानीरा प्राचीन गद्य लगभग सगळो र-सगळो जैन लेखकारी रचना है

कोई डेढ हजार वरसासू राजस्थान और गुजरातमे जैन धरमरा प्रचार जोर-सोरसू रया है *गाँव गाँवमे ओसवाळ वगैरा जैन श्रावकारा प्रादुर्भाव* हुयो और वारा गुरु जैन मुनि बराबर वठै आवण जावण लाग्या धीरे धीरे कइक जैन यति गाँवाम स्थायी रूपसू वस भी गया आ लोगार उपदेशसू सईकडा ही लोग जैन धरमम दीक्षित हुया विद्वान बण्या और मातभाषारो भडार भरणम तत्पर हुया साथ ही व लोग जठ जठै आछा-आछा ग्रथ देखता वारी नकला भी करता रया हजारा रास चौपाई, भास धवळ सवध प्रबध ढाळ वगैरारी रचना करी जवारो प्रमाण आठ दस लाख श्लोकासू कम कोनी गद्य म भी इण तरा बालावबोध टब्बा वगैरा टीकावा लिखी जकारो प्रमाण भी ■ सात लाख श्लोक जरूर हुसी कई कई विद्वान तो इसा हुया जका अकेला-ही लाख लाख श्लोक प्रमाण रचना करी जिणाम तेरापथी आचार्य श्रीजीतमलजी तथा करतर जिनहर्षजी विशेषकर उल्लेखनीय है जैन सिवाय दूजा विद्वानाम शायद ही कई इत्त परिमाणम राजस्थानी भाषाम रचना करी हुव जैनार वास्त आ घण गौरवरी बात है

रास चौपाई वगैरा बडा ग्रथार सिवाय राजस्थानीम लिखियोडी जैन विद्वानारो फुटकर साहित्य भी लाखा श्लोका प्रमाणरो है स्तवन, सज्झाय पद गीत छन्द, हिमाळो सिलोका पूजा सवाद दूहा वगैरा फुटकर साहित्यरो तो कोई पार ही कोनी समयसुदरजी जिसा कविया ५००-५०० पद बणाया है औ साहित्य सब भातरो है—नीतिरो विनोदरो उपदसरो भक्तिरो जैन विद्वानारी राजस्थानी साहित्यरी सेवा सर्वागीण है कोई इसो विषय कोनी जिण पर जैन लेखका कोई रचना नहीं लिखी हुव

जैन विद्वाना राजस्थानी साहित्यरी कोरी रचना ही को करी नी पण राजस्थानी साहित्यरी रक्षामे भी घणो भाग लियो जैन और जनेतर दोनू विद्वानारा लिखियोडा ग्रथान घण जतन और घणी सम्हाळसू आपरा भडाराम राख्या जनेतर विद्वानारा घणा ग्रथारी प्रत्या आज जैन-भडारार सिवाय

दूसरी जाग्यामे अलभ्य है नरपति नाल्हर बीसळदे रास ग्रन्थने जैन विद्वाना हीज नष्ट हुवणसू बचायो इसा इसा हजारा ग्रंथ है जकान आज ताई कायम राखणरो जस अेकमात्र जैन विद्वानाने है

जैन विद्वाना अेक और मोटो काम कियो वा आपरी रचनाआ बोल चालरी भाषामे लिखी जियान छन्द भी घणा सा लोक-साहित्यस लिया जनतामे चालू गीतारी ढाळा लेयन वा आपणी कविता लिखी आ ढाळारा नाम और पैलडी पंक्तियाँ भी वा सुरक्षित राखी इसी ढाळा अथवा देशियारी अेक सूची मुंबाईरा जैन विद्वान मोहनलाल दलीचन्द देसाईजी बणायी है लोक प्रचलित गीतान लिपि-बद्ध करने सुरक्षित राखणरो काम भी अनेक जैन विद्वाना किया है लोक साहित्यन इण तरा अमर करणरी जैन विद्वानारी सूझबूझ माथो आपइ आदरसू झुक जाय है

घणा साहित्यिक विद्वाना जैन साहित्यन अेक सम्प्रदायरो साहित्य बतायन उणन उपेक्षारी दृष्टिसू देख्यो है पण वारो ओ विचार भ्रान्तिपूर्ण है जैन साहित्यरो अ-परिचय ही वार इण विचारेरा कारण है वास्तवमे जैन साहित्यरो घणो भाग इसो है जको सार्वजनिक साहित्य कहीज सकै है हजारू राजस्थानी जैन कवि और लेखक आज अंधकारमे पड्या है जैन साहित्यर प्रकाशमे आणसू इण कथनरी सत्यता आप ही सिद्ध हु ज्यासी इण वास्त सबसू जरूरी बात जैन साहित्यनै प्रकाशमे लावणरी है आशा है राजस्थानरा विद्वान तथा जैन धनी मानी अठीन ध्यान देसी

हियडो—हृदय अन्तर । ठेटसू—आरम्भ से । घणकरा—बहुत-से । थापक—स्थापक । घणकरो—बहुत-सा अधिकांश । जोया ही—ढूंढे भी । लगा र—लगाकर लेकर । कोनी—नही (काई नहा) । सायता—सहायता । हूता थका—होते हुये । रकम—भांति प्रकार । ढाळ—राग रागिनी म लिखी हुई रचना गान (लय अथ तर्ज) । जाणीता—ख्यातनामा । श्रावक—गृहस्थ अनुयायी । सईकडा—सैकडो । रास आदि—रचनाओ के विविध प्रकार । सज्झाय—स्वाध्याय । लाठ—तर्ज । मुंबाई—बंबई । कहीज सकै—कहा जा सकता है । अठीन—इधर ।

लाभू बावो

(सस्मरण)

[भवरलाल नाहटा]

[श्री भवरलाल नाहटा का जन्म स० १९६८ म बीकानेर म हुआ । ये राजस्थानी क प्रसिद्ध विद्वान और गवरक श्री अगरचन्द नाहटा के भतीजे हैं और साहित्यिक काय म उनके सहयोगी रहे हैं । प्राचीन लिपि एव कला से इन्ह विशेष प्रेम है ।

अनुसधान एव सम्पादन तथा मौलिक साहित्य-सजन दाना क्षेत्रा म इनकी प्रतिभा ने सचरण किया है । इनके द्वारा सम्पादित कृतियो म हम्मीरायण 'पद्मिनी चरित्र चौपई विनयचद-कृति-कुसुमाजलि,' समयसुन्दर रास पचक' आदि प्रमुख हैं। वानगी' इनके द्वारा रचित सस्मरणो, रेखाचित्रो एव लघुकथाओ का सकलन है ।

सकलित सस्मरण सवप्रथम राजस्थानी , भाग १, म प्रकाशित हुआ था । 'वानगी' म भी यह सगृहीत है । इसमें लखक ने बचपन की स्मतियो के आधार पर अपन घरेलू नौकर के प्रसन्न-कोमल स्वभाव और उदात्त चरित्र का बडा मार्मिक अकन किया है ।]

लाभू बाबो ठेठू वासिंदो किसै गाव रो हो आ तो मालम कोनी पण म्हारा बापोनी रा गाव डाडूसर-म परणियो हो जिण-सू म्हे तो उण न उठा रो ही समझता घोळा मूढा रो छोरो जवान हो जद-सू ही म्हारा घर मे रवतो आया हो हो तो वो दो रुपियाँ रो महीनैदार पण म्हारा घर रा लोगा उण न कदई नौकर का समझिया नी काई छाटा अर काई वडा—सगळा उण रो आदर करता वडा लाग लाभू लुगाया लाभूजी और म्ह टावर लाभू बाबो कै र बतळावता बा र रा लोग लाभू बाबा-न म्हारा ही घर रो आदमी समझता लाभू बाबो आप म्हारा घर नै ही आप रो घर समझतो टावरपणा में म्हे उण रै सागै जीमियाडा हा

ठेठू वासिंदो—मूल निवासी । उठा रो—वहा का । घोळा मूढा रो—साफ मुह का । महीनेदार—मासिक वेतन पाने वाला नौकर । पण—पर । कदेई—कभी । को नी—नही । सगळा—सब (सकल) । बार रा—बाहर के । सागै—साथ । जीमियोडा—जीमे हुए ।

लाभू बावो गोरा रंग रो तक्ड़ा सरीर रो अर सपेत दाड़ी रो पसो जवान हो दारुटो री जागे धोती और बडी पैरतो माथा माथ मुलमुल री पाग बांधी रामता गळा में हरढारी कंठी और हाथ में काठ रा मिणिया री माळा हरदम रखतो सीयाळा में दगी ऊन री कामळ ओढतो ओ लाभू बावा रो परेस हो

लाभू बावो जात रो मडीवाळ घना-वसी साध हो बाप रो नाव श्रीकिसनदास बावा रो बुद्धरदास अर भाई रा नाव आणदा हो काको बुद्धरदासजी रामायण महाभारत वगैरा शास्त्रा रा मोटा पिंडत हा लाभू बाव टाबरपणा में उणा कन नाम्त्रा रो ग्यान मीलियो टाबरपणा में सीखियोडा इण ग्यान सू लाभू बावो बिना पन्यिा-हीज पिंडत हुग्या हो उण न शास्त्रा और पुराणा तथा इतिहास री घुण जाणं किती वाता याद ही लाभू बावो भणियोडो काली हो पण ग्यान में बडा-बडा भणियोडा-न छेड बसाणतो लाभू बावा कह्या करतो—नाणो अट रो विद्या कंठ री

लाभू बावो म्हारा घर में चाळीस बरसा-सू कम का रह्यो नी बो अकलो जको काम करता बो आज च्यार आदमिया-सू कोनी हुवै भाखरक च्यार बज्या उठता उठ-न भजन करतो पछ सगळा घर में बुवारी देता पाणी छाणतो विलोवणो करतो पोटा थापता ठाणा री सफाई करतो गाया भस्या न पाणी पावतो अर नीरा नाखतो पछ दूजा काम करतो

म्हार हुंडी चिटठी रो काम हुतो लाट चालिया कोनी हा हजारू रुपिया रोकडी लावण ल ज्याबण रो काम पडता आ सगळो काम लाभू बाबो करता भणियोडो अेक आखर को हो नी पण लाखू रुपिया रो काम भुगता देतो और कदई अेक पइस री ही भूल को पडी नी

तक्टा—तगडा । गोरनी—गादी । जाडी—मोटा । मिणिया—मनके । सीयाळो—शीतकाल । कामळ—कंबल । परम—पहरवेश पहनावा । जात रो—जाति का । माघ—साधु राजस्थान की जाति विशेष । पन्यिा-हीज—पढ़े ही । भणियाडा—पढ़ा लिखा । छेड बसाणतो—दूर बिठाता बनकर था । नाणा—रुपया पमा । अट रो—अंटी का गाठ का जो पास में हो । भाखरक—सवेरे । बुवारी—झाड़ू । विलोवणो—दही मथना । पोटा—गोबर । थापतो—कंडे पाथता । नीरो—चारा । म्हार—हमारे यहाँ । लोट—करमी नोट । चालिया—चलन प्रचलित हुए । गाँव गोठ—देहात । बारगत—लेन-दन महाजनी । बारलो—बाहर का देहात के लोगो का । पंटो—आना-आना ।

गाव-गोठ री वारगत हुण सू म्हारं अठ बारनो फंटो घणो हो, रोज दस पाच आदमी आया-गया रवता उण दिना म कळ री चक्की ता ही कोनी हाथ सू आटो पीसणो पडतो पीसारणिया आटो पीसती लाभू बाव थका अन मोक आटा रा फोडा कदेई को देखणा पडता नी विना कह्या आधी रात रा उठ-नै घमड घमड दूदा नासता दिन ऊगतो जद आध मण आटो त्यार

लाभू बाबो काम करण-न सदा आगै त्यार-हीज रवतो हरेक आदमी रो काम निस्वार्थ भाव सू करतो घर रो तो कांई गवाड रो भी कोई जणो काम वास्तै बकारतो तो ऊतर का दतो नी हेलो सुणता पाण भट बालतो—आयो जीमता हुतो तो थाळी छोड किनार हाथ धोय न आ हाजर हुतो कई काम म रूधियोडो हुतो तो ई आ कदेई को कयतो नी क फलाणो काम करू हूं अेक 'आयो' शब्द होज सदा मूढा-सू निकळता लाभू बाबो कहता—हू फलाणो काम करू हू इयान कणा अेक तरा सू ऊनर देणो है काम रो ऊनर देणो लाभू बाबो जाणतो ही कोनी हो

टाबरा-नै, विशेषकर म्हा तीना न—काकाजी मघराजजी काकोजी अगरचन्दजी और मन—बडी हीयाळी-सू राखतो अेक नै गोदी म दूजा न खाधा माथ अर तीजा न मगरा माथै राखिया काम करतो रतो म्हान घणा ओखाणा अर दूहा सुणावतो सिझ्या पडती जद म्हे लाभू बावा न वात कयण वासतै पकड न बैठाय लता बाबा म्हारी फरमास अर रुचि मुजब वाता सुणावता—कदेई रामायण री कदेई महाभारत री कदेई इतिहास री कदेई धूजी रा कदेई प्रह्लाद रो कदेई नरसीजी रा माहेरा री

लाभू बाबो राम रो भगत कर्त्तव्यशील और निर्लोभी हो शास्त्रा री कथावा रा आदश बाव आप रा जीवण म उतारिया हा दिन रात काम करता थकत भी मूढा म राम नाम हरदम रवतो काम करतो जावतो अर भजन गावतो जाता म्हारा घर-सू लाभू बाबा न दो रुपिया महीनो

लाभू गाव थका—लाभू बावा के होते हुए। फोटा—तकलीफ। दूगा नाखता—घुमा डालता चक्की चलाकर आटा पीस डालता। गवाड—मुहल्ला। बकारता—बुलाता। ऊनर—जवाब, इनकारी। सुणता पाण—सुनते ही। रूधियोडो—रुधा हुआ रुका हुआ। फलाणो—अमुक। हीयाळी—प्रेम। खाधा—कंध। मगर—पीठ। ओखाणा—कहावते। सिझ्या—सध्या। धूजी—ध्रुवजी। नरसी—गुजरात के एक प्रसिद्ध भक्त उनकी पुत्री के यहाँ

मिलता भला भला माहूतारा पनर रपिया महीनो न रोटी-कपडा धामियो पण लाभू बाव दूज घर नौकरी नहा करी स नही करी लाभू बाबा प्रेम रो भूखो हो टका रा लाभी को हो नी

जवानी म नाभू बावा घणा तागतवर हो अक वार बडा दादाजो दानमलजी री हवेली चिणीजती ही जद पथरा री रास चढावण वास्त हमाला न बुलाया दस-दस मण भारी अकलिया देख न हमाला जीभ काढ दी जद सठा लाभू बाबा न वकारियो लाभू वाव अवेल व दस-दस मण रा अकलिया चढा दिया

जतिया री हालत देख-न लाभू बावा कह्या करता—

कई जती मत्रडा मिर मूडा ।

करमा री गत-सू हुया भूडा ॥

लाभू बाव कई भेख जीमण जीवत खच आप रा न आप री सामण रा करिया हिंदू और जन तीरथा री जात्रा करी और मरतो सईकडू रपिया आप री लुगाई मोला र वास्त छोडग्यो दो ध्यार रपिया कमावणआळो आदमी किण भात मुली जीवण विता सक लाभू बावो इण रा परतख उदाहरण हो

नाभू बाव आप रा जीवण रा शेष दिन गाव म गाळिया माचा माथ वठा सूता हरदम भजन करतो रहतो म्हौ टाबरा न दरशण मिवाय कई वात री मन म ही काना ही पिताजी मिलण वास्त गाव गया जद उणा न आया सुणता पाण उभाण पगा सो पोळटा साम्हा आया लोगा-न घणो अचरज हुयो क आज नावा रा बूढा पगा म इती शक्ति कठा सू आयगी

लाभू बाबा न स्वगवासी हुया आज बीस बरस हुया है पण म्हारा मन म बाबा रा गुणा री याद आज ताणी ताजी है

भगवान माहेरा (भात) भरने गये थ । धामिया—देने का कहा offered रास— । अकलिया—पत्थर । जीभ काढ दी—पस्तहिम्मती प्रकट की हिम्मत हार दी । वकारियो—ललकारा । जती—(जन) यती । भूडा—बुरे निकम्मे ।

भेख—(वशधारी) साधुओ के समाजो का मत्यु भोज । जीमण—जवनारें । जीवत खच—जीते-जी किया हुआ मरण भोज । सामण—स्वामिन पत्नी । उभाण—नगे । आज ताणी—आज तक ।

सोप

(गद्य-काव्य)

[चन्द्रसिंह]

[श्री चन्द्रसिंह का जन्म स० १९६६ म बीकानेर राज्यान्तगत नोहर तहसील के बिरकाळी नामक गाव म हुआ। इनकी शिक्षा बीकानेर म हुई। बचपन स ही अन्योक्तियो मुकरियो दूहा आदि बनाने की रुचि विकसित होती हुई राजस्थान क ऋतु-सौन्दय की आर आकृष्ट हुए और बादळी लू डाफर, 'बसत आदि काव्य-कृतिया सामने आयी। बादळी काव्य पर नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी न रत्नाकर-पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इनके द्वारा राजस्थान की प्रकृति का बहुविध सूक्ष्म और मार्मिक वणन हुआ है। कविता क अतिरिक्त इन्होन राजस्थानी गद्य म कई सुन्दर लघु कहानिया एव गद्यकाव्य भी लिखे हैं। रवीन्द्र की चित्रांगदा का इन्होंने राजस्थानी म अनुवाद किया है। राजस्थानी के नव जागरण के कणधारो म इनका महत्त्वपूण स्थान है।

'सोप गद्यकाव्य म प्रकृति के परिप्रेक्ष्य म जीवन और मृत्यु की अथवत्ता समझने का प्रयत्न किया गया है।]

(१)

चिड़कोली भोर म परभाती गाय-न सूत्या लोगा न चेत कराव
मोर बरसाळ-म गुरगो बोल न लोगा रा हिया हुळसाव
कोयल वसत म आप री मीठी राग-सू लोगा रा रू रू नचाव
कूज री कुरळावणो काळज रा चीरा चीरा बणाव
म्हारा कविया ! थान क हुयो ?

१ चिड़कोली—चिड़िया। गाय-न—गाकर। सूत्या—सोये हुए। बरसाळो—वर्षाकाल। हुळसाव—उल्लसित करता है। रू रू—रोम रोम। कूज—क्रौंच पक्षी। कुरळावणो—करुण शब्द करना। चीरा—टुकड़े। के हुयो—क्या हो गया है ?

(२)

विदा लता रात उषा-न क्य—काल अठ-ही भलो !
उड़ती-सी उषा-मू सूरज सुण—काल अठ ही भलो !
आस्या-मू अदीठ हुत सूरज-न साझ अ-ही वचन लय—काल अठ-ही भलो !

(३)

ऊनाळ री तपती तावडी-म ताती वेळवा पर चालता-चालता जद पगथळिया में फाला पड जाय और मूडो लूवा-सू भुळसीज ज्यू चूंधी आंखिया र साम बीत्य बसत री याद आया बिना को नी र'व पण बसत री बा'र लटता आग आवण वाळ उनाळ रो ध्यान क्यू कोनी आव ?

(४)

डाळिया-मू लाग्या हरिया-हरिया पान आमा-सामा भाव चवळ हुय आपत म मिलण-न नळचाय पण आप री ठोड को छोड नी
सूका पान दूर दूर-सू आय-न आपसरी म गळ मिल—साची ! आव भन्ना

(५)

अधार स उजाळ-म आता ही बाळव रोया
इण-म जीवण रो अथ नगाव लाग हमिया
धीर धीर देखादेखी सागी बाळव उजाळ रो आदी वणियो
अब दिन अचाणचक अधारो आवता देख सागी बाळव उजाळ वास्त रोवण लागियो

---

२ काल—कल । भलो—अच्छा (विस्मयादिबोधक अव्यय) । अदीठ—लोप अदृश्य ।

३ उनाळो—उष्णकाल ग्रीष्म । तावडी—धूप । वेळवा—वेतुवा, बालूरेत । पगथळी—पादतली । फाला—फफोले । मूडो—मुह । भुळसीज—भुलसता है । चधी—चकाचौंध खायी हुई चुंधियाई हुई । बीत्य—बीते हुए । कोनी—नहीं । पण—पर । बा'र—बहार ।

४ आमा-सामा—आमन-सामन । ठोड—जगह । आपत म—आपस म । आपसरी म—आपस म । भन्ना—भरें भर जायें टूटकर गिर जाय ।

५ सागी—वही । आदी—अभ्यस्त । अचाणचक—अचानक ।

(६)

तपियोड़ तावड़ री तीखी किरणा री लौ-न आप र गळ-सू नीच उतार काळज-मे फाला उपाड़ दिन भर धूणी रमा रात म इमरत वरसाव
उण चाद-न जगत चोर क्व !

(७)

दानू बाळपण रा साथी
जवानी म अेक दात रोटी टूटी
विरधापण साथै वितायो
मरया पछ अेक गगा-म, दूजो कबर-म
अत म अळगा करण रो ओ साग किसो ?

(८)

हवा रो रूख देख धोळा चूखला उण र साथ उडै
काळो बादळ अड और हवा र सामो हाल
उण-म पाणी है

(९)

आधी आव
फूला और पाना मे खळबळ माच ज्याव
हवा रो रुख देख-अर भुक भुक सलाम कर
सुक डाखळ-न उण-सू काई मतलब ?

---

६ तावडो—धूप। उपाड़—उठाकर। धूणी—धूनी। चोर—सूर्य की रोशनी को लेकर चमकनेवाला।

७ अेक दात रो०—बहुत गहरे मित्र। विरधापण—वृद्धावस्था। अळगा—अलग। साग—स्वाग नकल तमाशा। किसो—कैसा।

८ धोळा—सफेद। चूखला—सफेद बादलो क रुई के जस छोटे-छोटे खड। अड—अड जाना है। सामो हाल—सामने चलता है सामना करता है।

९ खळबळ—सनसनी। डाखळ—छोटी-छोटी और पतली सूखी डालिया। काई—क्या।

पाणिवाद

(ललित निबंध)

[मनोहर शर्मा]

[डा० मनोहर शर्मा का जन्म १६७२ म झूंझणू जिले के बिसाऊ ग्राम म हुआ। बचपन स ही कविता की ओर इनकी विशेष रुचि रही। राजस्थानी काव्य-क्षेत्र म इन्होने भाति भाति के प्रयोग किय। अरावली री आत्मा और गीत-कथा इनकी दो काव्य कृतियाँ हैं। इनके अतिरिक्त धारा रो सगीत कूजा अम्मरफळ गोपीगीत मरवण पछी रसधारा बापू गजमोती बलवध जय जननायक वटावू आदि इनके ऐसे काव्य हैं जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित हुए हैं। मेघदूत उमर खयाम अन्योक्ति शतक गीता धम्मपद और जिनवाणी इनके राजस्थानी म अनुवाद ग्रन्थ हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय ने इन्हें राजस्थानी बात साहित्य एक अध्ययन शीर्षक शोध प्रबन्ध पर पी एच-डी की उपाधि प्रदान की।

डा० शर्मा राजस्थानी लोक-साहित्य और लोक सस्कृति के ख्यातिप्राप्त विद्वान एव गभीर गवेषक हैं। लोकगीतों और लोककथाओं का इनका गहरा अध्ययन है। इनकी प्रत्येक रचना राजस्थानी लोककाव्य से प्रभावित है। पद्य के साथ साथ राजस्थानी गद्य म भी इन्होने कई प्रयोग किय। इनके ललित निबंध राजस्थानी साहित्य म विशेष महत्त्व रखते है। इनके लोक-सस्कृति सबधी निबंधो का एक संग्रह लोक-साहित्य की सास्कृतिक परपरा नाम स छपा है 'व्याख्यान' म इनकी राजस्थानी कहानियां है। इस समय य बीकानेर के राजस्थानी भाषा साहित्य सगम के मानद मत्री हैं। ये बिसाऊ स प्रकाशित होने वाली त्रमासिक शोध पत्रिका वरदा के सम्पादक भी है।

यह निबंध 'जलमभोम' पत्रिका के प्रथम वर्ष म प्रकाशित हुआ था।]

(१)

वद व्यासजी महाभारत म पाणिवाद री महिमा गायी है मिनख रा दोनू हाथ भगवान रो वरदान है हाथ हलावणो मिनख रो धरम है ससार

पाणि—हाथ। मिनख—मनुष्य। वरदान—देन। हाथ हलावणा—हाथ चलाना हाथो से काम करना परिश्रम करना। अठै सिद्धांतता

गी सागी उन्नति री नीव पाणिवाद है वेदव्यासजी रो वचन है—अहो सिद्धार्थता तेषा यषा मन्नीह पाणय ! भारत मे जिको तत्त्व वेद (अर्थात शास्त्र) मे है वो ही तत्त्व लोक (अर्थात लोकजीवण अर लोकसाहित्य) म भी है 'लोके वेद च' भारतीय सस्कृति रो प्रधान लक्षण है भारत रा मनीषिया पाणिवाद अर्थात पुरसारथ री महिमा समझी अर इण रो मरम जन साधारण न भी समझाया फळ ओ हुया क पुरसारथ रा महिमा गान लोकजीवण माय रमग्यो अर आज भी भारत री लोककथाआ म इण रा सुर गूजै है

राजस्थान माय अक लौकिक प्रवाद इण भात है—अेक सेठ परदेस सू मोकळी माया कमाय र म्ह आर्व हो धन सू लादियाडा ऊट घोडा साथै हा अर उण रो परवार भी रथ मे साग ही चाल र्हो बरखा रा दिन हा सेठ रो सारो साथ अेक नदी र सूक पाट माय मौज स चाल्यो आव र्हो इतरै म ही चाणचूकी नदी म पूर आयग्यो अर सारो साथ पाणी मे बयग्यो सजोग-सू अेक लकडा सेठ रै हाथ आयो अर उण र सहार सेठ रा प्राण ऊबरिया सेठ नदी र किनारे पूग र बोलियो—

सौ घोडा, सौ करहला, पूत सपूती जोय ।
मेहा तो बरसत भला होणी हो सो होय ।।

राजस्थान माय पाणी री तगी है अर लोग बादळा न उडीकता ही रव इण कारण सवनाश री स्थिति मे भी सेठ मेहा तो बरसत भला कय-अर

इ०—उनकी सफलता अद्भुत है जिनके इस ससार म हाथ हैं ।

लोकै वेदे च—लोक म और शास्त्र मे भी । मनीषिया—विद्वानो ने चितको ने । पुरसारथ—पुरुषार्थ उद्योग परिश्रम । मरम—रहस्य ।

लौकिक—लोक प्रचलित। प्रवाद—जनोक्ति, जनप्रचलित कथा। मोकळी—बहुत सारी । लादियाडा—लदे हुये । सूक—सूखे । पाट—विस्तार । इतर म—इतने म । चाणचूकी—अचानक । पूर—बाढ । बयग्यो—बह गया । सहारै—सहारे से । ऊबरिया—बचे । पूग र —पहुचकर । सौ घोडा इ०—यद्यपि सौ घोडे सौ ऊँट और पुत्रा वाली सद्गुणवती स्त्री ये सब जाते रहे तो भी पानी तो बरसा हुआ ही अच्छा (पानी का बरसना ही अच्छा) फिर जो होना है सो हो। करहला—ऊँट (स०—करभ) । मेहा—मेघ बादल । सपूती-सुगुणा । जोय—पत्नी ।

तगी—कमी । उडीकता रेवै—प्रतीक्षा करते रहते हैं । कय अर—कह

सताप मानियो तो आ वात ठीक-सी ई लाग पण इण प्रकार माय सार-तत्त्व घोर सकट म फस र भी हिम्मत नही हारणो है हिम्मत म ई जीवण री सफलता है

इण प्रकार माय राजस्थान री अेक दूजी लोककथा भी देखवा जोग है— अक सेठ समुन्दपार र देस-सू बहुत घणो धन कमाय र कई बरसा बाद आप र देस आव हा मान-सू भरियोड जहाज माय ही सेठ रो परवार भी हो जहाज समुन्द न पार करतो-करतो देस री धरती र नेड-सी पूगियो अर चाणचूकी पाणी म लुकियोडी अक चट्टाण-सू टकराय र टूटग्या सारी सम्पति अर सेठ रो परवार पाणी म डूबग्या करम-जोग-सू अक्लो वाणियो ऊबरियो अर किनार आ लाग्यो धरती पर पग टेकतां ही वाणियै आप री मूछां पर ताव दियो कई लोग आ लीला देखता हा उवा न घणो अचरज हुयो अर उवां वाणिय-न इसी विपदा-म भी मूछा पर ताव देवण रो कारण पूछियो। वाणियो बोलियो— जीवंगा तर तो और करगा धर लोग वाणिय री हिम्मत देख र चकित हुयग्या पछ वाणियो अक नगर म आयो अर अेक सेठ र नौकरी करी नौकरी-सू थोडा सा दाम भेळा हुया तो पछ अक दुकान खोली दुकान खूब चाली अर थोड बरसा म ही वाणियो पाछो सेठ बणग्यो पछ आप रो ब्याव करयो अर सम साथ परवार रो धिराणो (धणी) भी हुयग्यो

ऊपर री दोनू वाता अक-ही मूळ चीज रा दोय रूपान्तर-सा लाग है दोनुवा री मूळ भावना अक ही है अेक र समुद्र दूजी माय नदी रो रूप धारण कर राखियो है बस और घणो फरक कोनी आ वात उण जमान री याद दिराव है जद भारत रा व्यापारी समुन्द पार र देसा माय जावता अर अपार सपत्ति कमाय र देस म लाया करता जरूर-जरूर इण समुन्दी व्यापार म घण ही लोका रा प्राण भी गया हुवला पण उवा री हिम्मत सराहना जोग है आज भी उवा री वाता चाल है

कर। फस र—फँसकर।

नडो सी—निकट। चाणचूकी—अचानक। लुकियोडी—छिपी हुई। करम जोग—दवयोग। टेकता ही—रखते ही। जीवला—जियगा जीता रहेगा। और—दूसरा। दाम—पस धन। भेळा—अेकत्र। सम साथ—समय के साथ। धणी—स्वामी। दोनुवा री—दोनो की। घण ही—बहुत से ही। वात चाल है—कहानी चालू है।

(२)

भारत र व्यापार-वीरां री आ गौरव गाथा ऊडो ध्यान दवण री चीज है वात रो सेठ अेक वौद्ध कथा माय भी प्राणवान है कथा घणी पुराणी है अर उण रो सार इसो है—

अेक सेठ रो माल-सू लादियोडो जहाज समुद्र मे वैवतो जावतो हो कम जोग-सू जहाज पाणी मे लुकियोडी अेक चट्टाण-सू टकराय र लोप हुयग्यो सेठ डूबियो कोनी अर तिरवा लागो समुद्र अपार हुतो पण फेर भी वाणियो हाथ हलावं हो अर पार लागण री पूरी चेष्टा कर हो

इतर म ही देवी मणिमेखळा परगट हुयी अर सेठ-न कयो—अरे मिनख ! तू क्यू दुख पाव है ? समुद्र री अ ऊचा तरगा तो देख अ तन कद छोडसी ?

सेठ नरमी सू उत्तर दियो—देवी ! हू तरगा रो विस्तार देखू हू पण फेर भी हाथ हलावणो बद कोनी करू हू मरसू तो भी हाथ हलावता-हलावता ही मरसू

देवी फेरू बोली—अर बावळा ! अ मगरमच्छ तो देख अ थार कानी चाल्या आव है थार उबरणै रो काइ लेखो ? तू काया नै भूठो हो कष्ट देव है

सेठ फेरू उत्तर दियो—देवी ! हू मगरमच्छा न भी देखू हू पण हाथ हलावणा बद कोनी करू हाथ हलावणो म्हारो धरम है

इतरी सुणता ही देवी आप र हाथा सू सेठ-न ऊचो उठाय लियो आग ही उण रो जहाज सारो-साबतो तिरतो हुतो देवी उण माय सेठ-न बठाय दियो सेठ आणद-सू देस आय पूग्या

ऊपरली दोनू राजस्थानी वाता इय पुराणी बौद्ध कथा सू अेक प्राण है इसी लाग है जाणं बौद्ध कथा रो ओ सेठ आज भी भारत री लोक कथावा म

---

२ ऊडो—गहरा । बात रो—कहानी का । प्राणवान—सजीव जीवत । वैवतो—चलता हुआ ।

कोनी—नही । हलावतो—हिलाता हुआ । फेरू —फिर । लेखो—हिसाब गिनती । सारो साबतो—साबुत । तिरतो हो—तर रहा था । ऊपरली—ऊपर वाली ऊपर की । अेक प्राण—अेक जीव वही बिल्कुल समान । हुय सक है—सभव है ।

जीवतो जागतो है त्य सब है क अै कथावा प्राचीन कथा रा रूपातर ही हुव सेठ सगळ है मृगराज सिंह रा सुभाव है क बा वरी-पर अन्त ताइ वार कर थर कद हार नहीं मान आ कथावा रा नायक भी नर सिंह है अ घोर विपत्ति म भी हार नहीं मानें मौत-न आग ऊभी देख र भी बचाव रा पूरा प्रयत्न कर अर अत म सफळ हुवै

इण भात भारतीय सभ्यता अर सस्कृति रो मूळ मत्र पाणिवा (पुरसारथ) है आज री लोक कथावा माय भी ओ मीप है अर जन साधारण न प्रेरणा दन है इसी लोक-कथावा कवणिया अर सुणणिया भाव निरक्षर हुवो निश्चित तो जरूर ही है जै भान धन-न जितरो बांटियो जाव जितरो ही पुन ह पुन री जड सदा हरी

सगळ—सब स्थानो मे, सवत्र। वार—प्रहार आघात। बचाव—बचाव। पुरसारथ—पुरुषाथ। कैवणिया—कहने वाले। सुणणिया—सुनने वाले। भाव—चाहे। निरक्षर—अपढ। जितरो ही—उतना ही।

म्हारी जापान-यात्रा

(यात्रा-वणन)

[रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत]

[रानाजी का जन्म दवगढ (मेवाड) मे स० १९७३ म प्रसिद्ध राजपूत परिवार म हुआ। इनका विवाह बीकानेर के प्रथम श्रेणी के जागीरदार रावत सर के रावतजी क साथ हुआ। राजस्थान के महिला साहित्यकारा मे इनका उल्लेखनीय स्थान है।

माहित्य सेवा के साथ साथ रानीजी विभिन्न सामाजिक सास्कृतिक एव राजनीतिक प्रवत्तियो मे भी अग्रसर रही हैं। इस समय राजस्थान प्रदेश काग्रेस की अध्यक्षा हैं। अफ्रो एशियन सोलिडरिटी ' राजस्थान, की उपाध्यक्षा एव इडो सोवियत कल्चरल सोसायटी राजस्थान की अध्यक्षा के रूप म इनकी सेवाएँ बहुमूल्य रही है।

विदेशा म होन वाली कइ कान्फ्रेन्सो म इन्होने भारत का प्रतिनिधित्व किया। सन १९५९ मे ये जापान म आयोजित एटम हाइड्रोजन बम वर्ल्ड कान्फ्रेंस म सम्मिलित हुई और सन १९६० म वहा की साहित्यिक सस्थाओ का अध्ययन करने के लिए गय हुए भारतीय महिला शिष्टमडल की सदस्या रही। रूम म भारत के साहित्यकारा का प्रतिनिधित्व भी कर चुकी है।

इनकी हिन्दी कृतियो मे अ तध्वनि स्वान्त सुखाय ' राजस्थान का हृदय उल्लेखनीय हैं। राजस्थानी कृतिया मे माझळरात गिर ऊचा ऊचा गढा 'कै रे चकवा वात मूमल' 'अमोलक वाता हुकारो दो सा टावरा री वाता कहानी सग्रह हैं। राजस्थानी लोकगीत' राजस्थानी दोहासग्रह, रवीन्द्र कल्पनता जुगल विलास वीरवाण इनके द्वारा सम्पादित कृतिया हैं। हिन्दूकुश क उस पार' म रूस यात्रा का वणन है।

'म्हारी जापान यात्रा अेक यात्रा-वणन है। लेखिका न जुलाई १९५९ म हिरोशिमा मे आयोजित अणुबम विरोधी विश्व-सम्मेलन म भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की सदस्या के रूप म भाग लिया था। इस निबन्ध म उसी यात्रा का वणन है। रानीजी न अपनी रोचक एव प्रवाहमयी शली म जापानी जन-जीवन की तस्वीर-सी खीच दी है। वहाँ की औद्योगिक प्रगति शाति-स्मारक म्यूजियम के प्रसग से हिरोशिमा की विध्वसक लीला शान्ति मार्च की रगीन दृश्यावली आदि का चित्रात्मक वणन कहानी का-सा आनन्द देता है।]

(१)

जापान रो असली नाम जापान नी है उण रा असली नाम निप्पोन है जापानी आप रा देश न निप्पान कवै परस्मिया रा अशुद्ध उच्चारण सू निप्पान जापान वण गयो

जापान दस चार टापुवा सू वणियोडो है आ म ह्रा सू टापू सब सू मोटो है टोकियो ओसाका क्योटा हिरोसिमा वगरा जापान रा खास खास सहर इण हाज टापू म वसियाडा है क्षीकिनी रा तीन टापू ण मू चिपियोडा है उतराद म हावायडो टापू है दिवणाद म सिकोकू अर क्यूसू इणा र अलावा जापान रै समन्दर म छोटा छोटा हजारा टापू विखरियाडा वसिया है

टोकियो रै हनेडा हवाई टेसण पर उतरता ई घडी साम्ही भाकी कळकत्त र और अठ र टम म तीन घटा रो फरक हो आ वात कवणी पडला क अठै रा कस्टमवाळा भला आदमी हा काई आता काई जाता सामान र हाथ ई नी अडाया, काई पूछताछ ई ना करी पासपोट देख भटपट छाप लगा सीख दे दी

म्हा न प्रिस-होटल म उतारिया ओ तो म टोकियो म पूगता ई देख लियो क अठ नकसा रो जोर है म्हा र कमर म नकसो टगियोडो हो का कँस री ओर-सू म्हा नै कागजात दिया हा उणा म ई नक्सो नत्थी हो गैलै म जिण किणी न ई म गला पूछियो उण भट कागद-पसिल काढ नकसो माड मल गलो वतायो टक्सी ड्राइवर न कठ ई जावा न कहियो तो भट वैनी नकसो ज वसू काढ म्हा र मूडागै राखियो—जिण जागा जावणा हुव नक्स म वता दवो बठ नक्स सिवाय कोई वात ई नी रला मे सफर करवावाळा लार ई नकसा मौजूद

(२)

उण ईज दिन साभ री गाडी सू म्हा न हिरोसिमा जावणो हो टोकियो

---

१ ना=नही। चिपियोडा=सटे हुअे मिले हुअ। ह्र भावी=मन देखा, भावना क्रिया साधारणतया सकमक होती है पर यहा अकमक की भाति प्रयुक्त हुई है। टम=समय टाइम। कवणी पडला=कहनी होगी। कस्टम=जकात विभाग। काई=क्या। आता=आते समय। अडायो=लगाया। पूगता ही= पहुचते ही। नत्थी=सयुक्त साथ लगा हुआ। गला=मार्ग। माड= बनाकर। भट दसी=भट से। मूडाग=मुह के आगे (मूडो=मुह+डा)। जागा=जगह। कठै=वहां। लार=पीछे।

२ उण ईज—उसी। वडिया—प्रविष्ट हुअे भीतर गये। ख्यारू पासी—

टेसण पर पूगिया टेसण-री इमारत म वडिया पण वठै नी ता प्लैटफारम ई दीख्यो, नी गाडी दावी, नी इजन नजर आया अचभ-म पडगी—च्यारू पासा दुकाना ई-दुकाना !

जापान कामल वाळा म्हा नै कयो हो क आप नै हिरोसिमा तक पुगावा-न म्हा रा आदमी साथ दे देवाला वो आप न माभ-न टेसण पर मिल जावैला गाडी छूटण री वेळा नजीक आयगी म्हे उडीकता उकतायीजग्या

टसण पर भीड घणी ही नी ता गाइड म्हा न ओळख नी म्हे गाइड न ओळख्या अन बक्त पर गाइड हाफतो थका आयो आवता ई मनै देख बोलियो—भला हुआ था री इण साडी रो जा इण न दख म था नै ओळखिया

गाइड म्हा-न लेय ऊपर चढियो हू सोचण लागी—आपा-न तो गाडी चढणो है आ ऊपर कठै ल जाव है ? ऊपर आवता ई देखिया कै प्लैटफारम पर आय ग्या हा गाडी मूडागै ऊभी ही समभ म नही आयी क ऊपर चढिया गाडा किण तर आयी नीच भाया बाजार सडक, दुकाना नीचै ही टाकियो म आवाजी घणी गहरी हावा-सू रना दुकाना री छाता पर चाल टाकियो म्हूर-म रला रो जाळ-सो गूथियाडा है—आग-पाछ डाब जीमणै, ऊचै नाच धडधड करती रेला चालती रवै

जापानिया न आप री रेला री टाइम री पावदा रा घणो आजम है वठ रेला नट ना हुव कदई हुवै तो कुछ सकडा मान ईज म्हा री गाडी हिरोसिमा आडी भागा जाव ही रन री पटडी र दाना आडी-न खेता म अर जगळ तक म बिजळी रा तारा रा खभा रुपियाडा बताव हा क अठै उद्याग रा कित्ता विस्तार है धरा माय टेलीविजन रा अेरियला रा खभा साम्ही आगळी दिखाता जापानी सज्जन श्री फूकुसिमा बोलिया—अ अेरियला रा थाक देख-न आप अन्दाजा लगा सिराबो क जापान म कित्ता टेलिविजन है

पारा आर (पार्श्व) । बो—वह । उडीकणो—प्रतीक्षा करना राह देखना । उकतायीजग्या—उकता गये । ओळख—पहचान । अन—और । हाफता थका—हाफता हुआ । गहरी—घना । छान—छत । डाब जीमण—बाय और दायं । आकरा—अभिमान गव । मान-ईज—निश्चित ही । आडी—ओर । आडा-न—ओर का । रुपियाडा—खडे हुये गड हुए । बताव—सूचित करते है । कित्तो—कितना । आगळी दिखाता—अगुली से सकेत करते हुये । लगा सिराबो—लगा सकियेगा (आदर के लिये प्रयोजक क्रिया का प्रयोग) । मुसाफरा—यात्री । आन्ध्र—

सक्डा कोमा री मुसाफरी म देखियो क जापान म अक आगळ धरती बेकार कोनी पडी मान लो कठ ई जमीन खेता र लायक कोनी पाणी रा खाडो ई है तो उण-न ई काम म ल राखियो है बी खाड म कमळ ई वाय दिया कमळ री डाडी बीज पत्ता फून पाम्वडिया रा साग बणाी

(३)

ता० ३१ जुलाई १९५९ न सुवह १० वजिया हिरासिमा म विश्व-सम्मेलन सरू हुया प्रतिनिधि टम सू पहला ही भेळा हुवण लागा

हू वारै वरामद म ऊभो हो अचाणचक अेक लाबी वाढ रा सरन्पर टोप उतार माथो झुकाय मुजरा करियो बोलिया—आप जरूर हिंदुस्तान सू आया हो म आस्ट्रेलियन हू पाच वरस दक्खण भारत म रयोडो हू, आप किस प्रदेश-सू आया हो ?

म कयो—म राजस्थान री हू

आछो ! आछो ! उदपुर तक म ई गयोडो हू, म्हारो नाम अड्रयूज हयूज है, मन मराठी बोलबा री घणी मन म आय रयी है आप र साथवाळा म कोई मराठी बोलणियो है कनी ?

दूज दिन म उणा-न म्हा र प्रतिनिधि मडळ रा नेता श्री हिरे-सू मिलाया ह्यू ज वा-सू मराठी म धडाधड वात करवा लागा मराठी र ळ आखर रो उच्चारण व घणो शुद्ध करता म । उणा र ळ र उच्चारण पर खुसी हुया और अचभो आयो आपण अठ रा हिंदी बोलणिया भाया-सू खासकर उत्तर प्रदेश अर बिहार वाळा-स ▪ बोलणा नी आव ळ रा प्रयाग राजस्थानी पजाबी गुजराती अर मराठी म तो खूब हुव

इण ळ न लय न मन अेक जूनी वात याद आयगी बीकानेर राज म महाराज गगासिहजी र वगत म महाजन रा राजा हरीसिंह जी ठावा सरदार हा

अगली भर। कोनी—नहा (काई नही)। खाडो—खड्डा। वाय दिया—बो दिय।

३ सरू—शुरू। भेळा—इक्टठे। वार—बाहिर। अचाणचक—अचानक। लाबी वाढ रा—लबे कद के। मुजरो—नमस्कार। आछो—अच्छा। गयोडो—गया हुआ। बोलणियो—बोलने वाला। है क नी—है कि नहा। नेता—नायक, प्रधान। भाया सू—भाइया स बधुजा से। बोलणो ना आव—बोलन म नही आता, बोला नही जाता बोल नही सकते। जूनी—पुरानी। वगत—वक्त, समय।

बीकानेर राज-म उण दिना अेक हुक्म निकळियो क राज री नौकरिया म बीकानेर रा लोगा न ई राखिया जाव फलाणो आदमी बीकानेरी है क नी—इण रो इम्तिहान घणी विरिया महाजन राजा साहब लिया करता इण इम्तिहान री जरूरत यू आयी क घणा जणा नकली सर्टीफिकट ले बीकानेरी बण जावता उम्मेदवार री जाच करवा-न राजा साहब उण-न पूछता—बोलो खळळ खळळ वाहण्वाळा-भू शुद्ध उच्चारण नी करणी आवतो और वै बोलता खलल खलल उण इ वगत राजाजी आप रो फसलो सुणा देता—था र बीकानेरी होवण म खलल ह भाया !

श्री हाजू महाराष्ट्र री मायली वाता री घणी जाणकारी राखै बठ री जन जातिया र बार म उणा रो घणो नान है जद व महाराष्ट्र री जन-जातिया रै जीवण अर सस्कृति री वाता सुणावा लाग्या तो मन म मन घणी सरम आयी मैं तो वा जन-जातिया रो नाम ई नी सुणियो

(४)

कान्फरस हाल र बार कमा प्रतिनिधि लोग गप्पा लगाय रया हा गर्मी तेज पड री ही जापान म आना रा पखा नो हुन ई नी सब जणा हाथा मे जापानी कागज रा पखा लीधा हिलाय रया हा सूडान रा प्रतिनिधि इजिप्ट री लुगाई-प्रतिनिधि मिस करम-न वतळायी—गर्मी तो अठ ई आपा जिमी पड है पर जापानी आपा जिसा काळा क्यू कोय नी ?

पश्चिम जमनी रो प्रतिनिधि हाफ हाफू करतो फूका देतो फिर रयो हो—मर गयो गरमी आगो, मैं तो काले परो जावूला '

यूराप री अेक जवान लुगाई प्रतिनिधि घडी घडी आ र वटव-सू काढ

फलाणो—अमुक । इम्तिहान—परीक्षा जाच । घणी विरिया—अनक बार । महाजन—बीकानर राज्य मे अेक स्थान, यहा के ठाकुर का बीकानेर राज्य के सामता म सवप्रथम स्थान था । यू—यो इसलिअे । खळळ-खळळ—पानी के जोर से बहते समय होने वाली आवाज (तुलना—नाळा यैव खळळ-खळळ—नाला खळ खल करता हुआ बहता है) । करणी आवतो—किया जाता हो पाता । खलल—बाधा रुकावट । भाया—भाई । मायली—भीतरी । सरम—शम ।

हाल—बडा कमरा । वतळायी—बात की बात कही । आपा जिसी—अपने जसा । हाफू हाफू करतो—जोर से हाफता हुआ । आगो—आग से । परो जावूला—चला जाऊगा । वटवो—थला बग । काढ—छिडकती है । तपतै

यूडीकोलन री सीमी न छाट माथ प। हू मंड बठी म्हार ई ललाट र उण यूडीकोलन लगाया। मैं कहियो—मन अिसी ज्यादा गरमी कोनी लाग। हू राजस्थान री अर आ इ तपत बीकानेर री रण-वाळी जठ इण-सू बेमी गरमी पड़।

जिण भवन म कान्फरस हुयी उण र मन ईज शांति-स्मारक म्यूजियम हो। घणखरा म्हे वा म्यूजियम देखण लाग गया। इण म्यूजियम मे हिरोसिमा में जी अटम बम-सू तबाही हुयी ही उण रा तसवीरां नक्सा अर आकडा जमाय राखिया है। पूरो विवरण उण प्रठ राद राखियो है। उण महानाश रा राक्सी कर्मा-न दल बजर री छातीवाळा र इ आसू आया बिना नी रव। भीत प अेक मोटी सारी तस वीर लाग री। उण म धूब रो मगरो रो मगरो लपक्तो लगो ऊंचा चढ रयो है। अैटम बम र फूटता ई हिरोसिमा र आप री काळी छाया म ढाक्तो ओ फोटू चार हजार मीटर दूरा सू खैंचियो हो। १९४५ री छ अगस्त न सुबह अन आठ बज र १८ मिनट प अेक अमेरिका र विमाण बम फकिया। बो मत्यानासी विमाण बम फकता इ नटाटूट पाछ पगा भागिया। वा इमा तज भागियो क बम फूट फूट जी र पला १६ किलोमीटर भाग न दूरो निकळ गयो।

बम जमीन सू ५७० मीटर ऊचो अकास म फूटियो। धरती पर पड र फूटवा सू इतरो नास नी हा सक बयूक बम म अितरी ताकत ही क जमीन मे धस जावता। जा मिनखा बम न आकास म फूटता देखियो वा बतायो क बम फूटता ई इसो लागियो जाण परचड सूरज धरती प उतर रया है। बम फूटियो जिण वेळा उण सू गरमी निकळी वा दो लाख सेंटीग्रेड ही। सौ सेंटीग्रड गरमी मे पाणी उबळवा लाग जाव। वा गरमी ही दो लाख। भूगडा तिडक ज्यू मिनख तिडक गया। वो धूब रा बादळो जिण न आणविक बादळ कव अड साळीम सेकिंड म तीन हजार मीटर ऊचो चढिया। साढी आठ मिनट म तो नौ हजार मीटर ऊपर चढ गयो। पद्रह मिनट पछ उण बादळ म-सू बरखा हाण लागी। दो घटा ताई बराबर कादो बरसतो रयो। रेडिया सक्रियता रा जो

—तपत हुए तपन वाल। रण वाळी—रहने वाली निवासिना। भडईज—पास ही। घणखरा—बहुत-से अधिकाश। जी—जिस। तबाही—विनाश। खचियो—खींचा। अन—ठीक। नटाटूट—बडे वग स। पाछ पगा—उलटे परा वापिस। फूटवा-सू—फूटने से। जा मिनखा—जिन मनुष्या ने। उबळवा—उबलन। भूगडा तिडक—चने फट जाते हैं। साढी आठ—साढे आठ (साघ—सडढ)। कादो—कीचड। लाय—आग। बळवा—जलन। आसइ—मारे ही। छाईस—

कण धूव र मार्गे ऊपर परा गया हा उणा नै वरग्ना पाछा नीच ल आयी।

बम फूटवा रै २० मिनट पछ नीच जमीन प लाय लागगी। लक्डी रा घर अर वासडा रा जगळ भभक भभक बळरा लाग गया। छोग्ना मान्ना सब घर भसम हा गया। आभ्व ई सहर म खाली ब्वाईम घर अधबळिया र गया। नदिया रा पुळ टूट गया। गाडी री पटडिया वाकी होगी। गरमी इतरी हुयी क लोह काई पत्थर पिघळ गया। हिरोसिमा लाय री लपटा म समाय गयो। तान न्ना नाई धू धू बळनो रया। हरियो भरियो जगळ अर सहर राम्व रो ढिगना हो गयो।

(५)

इण कयामत म लोग लुगाव्या टावर टीक्रा री दुरन्सा हुयी उण री वात ता कवण जोगा न कायनी। आखिया दखियोडा हाल बठयाला सुणाय रया हा। म्हा र म ता सुणवा री हीमत ई कोयनी ही, काळजा काप काप जातो। लपटा आभ र अड री ही मिनग्व बरळाय रया टावर चरळाय रया कुण किण री सुण कुण किण-न बचाव! मरिया बळिया! लपटा म भसम! इण भयक्र काड-री याद मू इज मिनख री चेनना परी जाव। २ लाख ४० हजार लाग लुगाई अर टावर बरळावता थका जीवता बळ गया। ५१ हजार बुरा तरह घायन हो गया। अेक लाग्व आसर मामूली घायन हुया।

इण नरमध मे जळ न मर गया वा तो सुख पायो। पण जा री सासा बाकी रगी न जीवनी लासा पाणी पाणी कर री ही पण पाणी र जबाव मे काळ उणा न लाय री लपटा म छानो कर देतो। डील रा गाभा बळ गया डील सूज गया केस बळ गया चामडी अर हाडकिया बळ न लटक गया। अ नर क्काळ चतो आवता ई बरळावता—पाणी पाणी। पाणी कठ? पावा वाळो कुण? आपणै पुराणा म जो रौरव नरक रो वणन कीधो वो इण र आग तुच्छ है। जो हाल तसबीरा म देखिया अर जो देखणवाळा रा मूडा सू काना सुणियो उण न लिखवा न अर कवा-न कोई सबज ई नी। म्यूजियम न देखता मन दुख

छ्वास। गाडी—रेलगाडी। वाकी—टेढी। ढिगना—ढेर। कयामत—प्रलय। टावर-टीकर—बाल बच्चे। जोगो—योग्य लायक। आभ इ०—आकाश को छू रही था। बरळाय रया—चिल्ला रह (थ)। बचाव—बचावे। परो जाव—चली जाती है। आसर—अदाजन (आश्रय)।

५ नरमध—मानव हत्या का यज्ञ। वा—उन्होन। जारी—जिनकी। छानो कर देता—छिपा दता (था)। डील—शरीर। गाभा—कपडे। हाडकिया—

गलानी अर अन्तर्दाह सू बळवा लाग गयो। मन म रय रय ओ मुवाल उठतो— मिनख इसा हत्यारो हो सक ? अ देख रया हा जो साची तसवीरा है ? ह भगवान ! मिनख मिनख र साथ ओ वरताव कीया ? मिनख ई इसा हा सक तो पछै राखस पिसाच त्य अर मानव इण-स ज्यादा काई हुवला ?

(६)

हिरोसिमा र सत्यानास रा जापानिया र दिल अर दिमाग प घणा असर पडियो। बठ रा साहित्यकारा रै आग ला आज ई हिरोसिमा सू हीज बळ रया है अर राष्ट्रीय चेतना वाळा जापानिया रा काळजा म ता आ हाळी पाडिया ताई सिलगती रखला।

अेक चित्राम हो भूना री सवारी—हिरोसिमा म लाय लागवा र तुरत पछै री सिवी ही। धूव-सू काळा पन्यिाडा नर-ककाळा रा झुड ज्या रा कपडा बळ गया नागा चामडी फाटियोडी गाभा-ज्यू लटकियोडी हाथ मूडा सूजि योडा दुख-सू हास हवास गायब ज्या मे अत सूझ न गत विचळायोडा हगा ज्यू वीरान हुयोडी गळिया म बे मतलब भटक रया। उण वखत री असली हालत ही आ। अेक चित्र और हा। अटम बम सू निकळी बे हिसाब गरमी सू लोग घबराय गया। घायल पाणा पाणी कर रया। पाणी कठ ? नळा री लणा टूटगी। चार आडो न लाय लाग री। तिसिया मरता कठ मग्न रया। सरीर घावा सू चीरीज रया। पाणा पाणा करता नदी माम्हा दौडिया। दौडणी वा-सू जाय नी रयो सास लणी नी आय रया। उठता-पडता नदी र किनार जाय पाणी र होठ लगाया। हा बठ रा बठ ठडा पड गया। नदी र किनार नाथा रा ढिगला लाग गया। हिरोसिमा सहर र माय न सात नदिया बय अर सातू नदिया लाथा-सू भरगी।

हुडकिया। करळाबता—कराहते गरणात पाबावाळो—पिशाच वाला। लवज—लपज गाद। सुवाल—प्रश्न। जा—व। कीधा—किया। इसा—ऐसा। हुवना—होंगे। यू हीज—वैसे ही। बळ रयो है—जल रहा है।

(६) काळजा म—कलजा म। चित्राम—चित्र। सिवी—तसवीर। बस हा। नागा—नग। अत सूझ न गत—अति गति कुछ भी नहीं सूझती थी। विचळा योडा—व्याकुल स विचलित हुए से। हगा—मरुहर वीरान। लणा—लाइनें। लाग री—लग रही (हैं)। तिसिया—प्यास (तृषा)। चीरीज रया—चिर जा रहे (हैं)। माम्हा—सामने ओर। दौडणी इ०—दौडा नहीं जाता। वस्त्र=वस्त्र—

सुबह रो वखत हो। टाबर पढण-नै गया हा। अेक दिन पला हवाई हमल सू टूटियोडा घरा म मदद सारू जावा रा स्कूल रा टाबरा रो प्रोग्राम हो। मास्टरा-र लार स्कूला रा टाबर टोळा रा टोळा मन्न मारू जाय रया हा। उण हीज वखत वो हत्यारो पापी बम पडियो। मा मा करता भोळा भाळा मूडा रा टाबर बठै रा-बठै सीभ गया। उण वेळा रो चित्राम देखणी नी आवै। आज ई हिरोसिमा री माया आधी रात रा सणण मणण करतै वायरै म 'मा मा' गोवता टाबरा रा हेला सुण।

म्हारै सू तो वै चित्राम देखणी नी आया। आखिया मीच-न बैठगी। चित्रामा नै देख-देख हिरोसिमा री जापानी लुगाया रोय री ही। उणा रै मन्गा उणा रा टाबर यू ही मा मा करता बळता वरळावता मरिया हा। कितरा ई टाबर बठ ऊभा ऊभा आप रा मा-बापा न याद कर रोय रया हा। हे भगवान! वो नजारो याद आवै जद आज म्हारो काळजो थरथर करवा लाग जावै।

(७)

इण विश्व-सम्मेलन म ससार रा सारा ई देसा सू प्रतिनिधि आया हा। अमरिका-सू ई पाच-सात सरदार आया हा। उणा म डा० पोलिंग ई हा।

डा० पोलिंग अमरिका रा नामा रसायन शास्त्री है। आणविक अस्त्रा न काम-म लेवा पछै उणा रो काई काई असर दुनिया माथै हुव इण विषय म डा० पोलिंग घणी सोध कीधी है। इण ईज काम माथ आ न नोबल पुरस्कार मिलियो।

डा० पोलिंग सम्मेलन मे घणा जोरदार वाजिया। डा० पोलिंग रा भाषण सुण सुणवावाळा रा काना री खिडकिया खुलगी। आगै दुनिया अधारी दीखवा लागी। म्हारा रामजी! आ मोटा दमा रा मोटा लीडरा न जे कुबुद्धि आयगी तो आ दुनिया जिण न हजारा वरसा स मानवी सजावता सिणगारता खप गया है अेक पळ म गारत हो जावला।

बहती है। पैला—पहल। मूडा—मुख्डे। सीभ गया—पक गये जल गये। देखणी इ०—देखा नही जाता (था)। मावा—माताअें। सणण मणण—सन-मन (हवा की आवाज)। वायरो—हवा (वात)। हेला—पुकारें आवाजें। वरळावणो—रोना चिल्लाना। नजारो—दृश्य।

७ सघन। सोध—खोज। कीधी—की (अप० क्रिइ)। काना री इ०—कानो के पर्दे खुल गये। अधारी—अधकारमय। म्हारा रामजी—हे मेरे राम। खप गया—पूरा हो गया समाप्त हो गया। गारत—बवाद।

जापान रा लोगा इण अणु बम विरोधी विश्व सम्मेलण र मौक'प वडा जबरदस्त शांति माध कीवो। दूर दूर सू मिनख पगा चालता माव करता हिरोसिमा तक आया। नावन्म् छाया रालबा न चार ग गुथियोडा मोटा मोटा टाप माथ मल राखिया हा। लची खूब लची सवारी निकाळी। मगळा सू आग ता पदल माथ कर न आवणिया उणा रै लार विन्देसा मू आयोडा प्रतिनिधि पाछ हिरोसिमा री अणपार जनता।

भरी दुपरी। कोई तीन वजिया रा तावडा तम्व रया। सूरज कडक रयो। सवारी धानी। म्हा लोगा र आप आप रा दमा रा भडा हाथ म। पसीनो टपक रया। गत र दोई आडी न मिनख भरिया। थाळी फक तो आगण नी पड। दुकाना री घरा री छाता मिनखा सू लद री। छाता पर मू आदमी लुगाया फूला री वरखा कर रया। रगियाडा कागजा री कतरण री पुसप वरखा करण रा बठ रीत है। ऊची ऊची इमारतिया सू कागज रा फाता नीच म्हा प लटकाय रया। फूला सू सभ्य भरगी। माथा प रग रगीला कागज रा फाता लटर रया। टेलिविजन माळ तसवीरा खचवा न हेलीकाप्टर माथा प आय-आय उड उड जाय रया।

आ उछाव अर म्नागत जापानिया उण लोगा रो कीधो जो आणविक अस्त्र प पावन्दी लगावा री आवाज उठावा न देस विदस-सू समदर लाघ न उठ आया—पदल चालता शांति माव करता देस रा खुणा-खुणा सू टापू टापू-सू वठ आया। मू तो वार कानी हरग उछाह नजर आय रयो हो पण जनता रै जम-न नजर नाम्बा नाळा न अतस में और ई वात दीवी। मडक र दोई वानी ऊभी लुगाया रा हमान आमूडा-मू आला हा। जो माव दख उणा री आखिया आग चवदा वरमा पना रा नजारो हाय गयो। वा न घर वीनी याद आय री ही। वा रा हिवडा हूबका लवा लाग गया। व आमूडा पूछती जाय री ही अर फीका फीका

पगा चालता—पदल चलते। तावडा—धूप (ताप+डा)। सवारी—जलूस। पाछ—पाछे।

तडक रयो—तडतडा रहा था। कडक रयो—कडकडा रहा था प्रचण्डता स तप रहा था। आप आप रा—अपन-अपन। गली—माग। आडी—ओर। मिनख=मनुष्य(समूह)। अर—और। नाखवा वाळा—डालन वाल। अतस म—हृदय के भीतर। आला—गील। चवदा—चौदह। घरवानी—अपन घर वीनी हूक। हबूका=हूक। जाय री ही—जा रही थी।

मूडा मू मुळक न शाति-मनिका रो स्वागत करती जाय गी ही । उणा री अतर रो अदाजा लगाणो कोई कठण नी हो । सगळी जापानी मावा री अेक आवाज हा—म्हारा टाबरा री खैरियत सारू शाति री आवाज उठावा ।

माच कर न आवणिया अर परदेसा म आयोडा प्रतिनिधिया सारू उणा रा मन मे घणो मान हो । माच करणिया नै रोक रोक पाणी री गिलासा लुगाया झलाय री ही । मनै तावड म कळमळातो देख अेक लुगाइ आप र माथ रो टोप उतार म्हारै माथ प मल दीधा , अेक जणो आप रो पखो म्हार हाथ म झलाय दीधो । मनै कडकतै तावट म तपती अर पसीन मू लथपथ देख उणा नै दुख हो रयो हो । यूरोप स आयाडा प्रतिनिधि तो तावड-सू लाल बब पड गया । उणा रा कान ता सा राता हो गया क जाण अबार लाही टपक पडला ।

सवारी सूधी जूझारा री देवळी प गयी । अेटम बम सू मरियोडा री याद म काळ भाठ री समाधि बणायोडी है । सगळा जणा बठै जाय माथा झुकाय ढोल प ताल लागी । ताल रै साग बड री धुन गगन गुजाय दीधो—

Never again the Atom Bomb

कदेई नी अब अटम बम कदेई नी ।

सर मे सुर मिलाय लाग्वा कठ गावा लागिया—

अटम बम कदेई नी कदेई नी ।

कदई ग्वाली बठी रऊ तो उण साझ री वै गहरी भावनाता याद आय जावै अर मैं वा म गम जाऊ ।

मुळक न—मुसकुराकर । अतर्पीडा—हृदय की वदना । कठण—कठिन । सगळी—सारी । खरियत—कुशल क्षेम कल्याण । आवणिया—आन वाल । मान—सम्मान । करणिया—करन वाल । झलाय री ही—पकडा रही थी द रही थी । कळमळाती—व्याकुल होती । मेल दियो—रख दिया । तपती—गर्मी । लालबब—अेकदम लाल । अबार—अभी । सूधी—सीधे । जूझार—योधा, सनिक । देवळी—समाधि । बठ—वहा । साग—साथ । गम जाऊ—खो जाता हू ।

आप नै हर काम म आपणा वडका म घणा वढया चढया समझा पण इण वढोतरी(?) रै लोभ म आपा आपणो अपणपो ही भूलता जावा हा जिकी जात अर जिक देस री आप री खुद री कोई सत्ता कोनी वै दुनिया म आप री कोई जगा कया वणा मक? आज यूरोप रा लोगा री भाषाबा म दुनिया रा ग्यान विग्यान भरयो पडयो है अेसिया रा करोडा मिनख वा भाषावा नै पढ गुणै, उण ग्यान विग्यान ताई पूगण सारू पण इण कोसीस म नै आप री भाषा रो बिलकुल निरस्कार कर देव अर पराय ग्यान र साथ परायी भाषा रा भी गुलाम बण बठ अै आमार चोखा कोनी या अेक घणी गूढ बात है क भाषा खाली भावा-नै प्रगट करणैवाळो आखरा रा ढेर ही नही है भाषा रै गैल लोगा री हजारा वरसा री सस्कृति वा रा आचार विचार इतिहास अर ग्यान विग्यान बन्या पडया है इण वास्त भाषा र नास रो मतलब है इण सगळी धरोड रो नास वेद री विनती म इण सरवनास री ही बात कही है

जिण नै आप री सस्कृति आप रो इतिहास अर आप रा ग्यान विग्यान प्यारो होसी यो आप री वाणी-न आप र दूध पूत री ज्य पाळसी पोससी इण अरथ म वाणी घर लिछमा है जिण री पराया हाथा म जावण री अथवा घर रै दुख-सू तिल तिल कर छीजण री कल्पना भी आपा नही कर सका राजस्थान रा चारण कवि धरम धरती अर लुगाई पर विपद पडता वखत मरण रो हेलो मारता हा—

> ध्रम जाता धर पळटता त्रिया पडता ताय ।
> अ तीनू दिन मरण रा, कुण रक कुण राय ॥

इसी ही वेळा वा समझणी चाहीजै जद घर लिछमी र बरोबर वाणी र मान रो हरण हुतो हुवै आप रै ही घर म उण रो निरस्कार हुतो हुवै आज हेला मारणिया चारण कोनी राजस्थान रा आ नीदाळू सूरा न कुण जगावै

नागो—डालो । रळो—भटका बर्बाद होवा । आपार भाव—अपन निजे, अपनी ओर स । वहवा—बन्दर । कया—कैस । पूगण सारू—पहुचन क लिअे । तार्ई—तक । आख—अक्षर । ढेर—समूह राशि । गन—पौद्ध । धरोड—धरोहर । घरनिछमा—गृह का लक्ष्मी । छीजणा—क्षय होना । हेला मारणा—आवाज देना ।

ध्रम इ०—अपन धम क जाते समय, अपनी पृथ्वी क पराधीन होते समय और स्त्री पर कष्ट पडन पर—य तीनो दिन मरन क है क्या रक और क्या राजा सब क लिअे (उस दिन प्राण द दना चाहिअे)।

जिका वाणी री लूटीजती लाज न वचाव कानी कानी-म् हजारा दुस्सासण अधनागी वाणी रो चीर आप रा हजारा हाथा-मू खीचण म लाग्या है पोटापोट चीर लिया अनेक सावरा मुख री नान सूत्या पड्या है

राजस्थान र इतिहास म राजस्थानी भाषा अर सस्कृति रै सक्ट रो इण सू वेसी बादो कोई वखत कर ही आया सुण्यो कोनी पराय राज म सकडा वरस रह र भी भाषा री हालत इतणी खराब कानी हुइ जितणी आज आपण खुद र राज मे हुवै है इण वास्त आज रो वखत नीद लवण रो कोनी ओ वखत जागण रो भाषा री सार सभाळ लवण रो उण री मान मरजादा सारू सूगपण दिखावण रा वखत है है काई माई रो लाल जिको सामन आवै अर राजस्थान रा दो करोड कमाऊ पूता री विसरायोडी टुकडा मागती मातृभाषा न घर धिराणी र आसण पर पाछी बठाव ?

मारणिया—मारने वाले देन वार। नीन्दाळू सूर—निद्रालु वीर। लूटीजतो—लूटी जाती हुई लुटती हुई। अधनागी—अधनगना। पोटापाट—ढेर-के ढेर। सावरा—कृष्ण। सूत्या—साय हुअे। वाल्गे—खराब। आयो=प्राप्त हुआ। सारू—लिअ। घर धिराणी—घर की मालकिन।

गळगचिया

(गद्य-काव्य)

[कन्हैयालाल सेठिया]

[श्री कन्हैयालाल सेठिया का जन्म सं. १६७६ में सुजाणगढ़ (बीकानेर) में हुआ। ये प्रारम्भ से ही सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों में रस लेते रहे हैं। हिन्दी और राजस्थानी में इन्होंने समान अधिकार से लिखा है। ये राजस्थानी काव्य की तरुणाई में नव जागरण का स्वर भरने वाले प्रथम पंक्ति के कवि हैं। इन्होंने राजस्थानी काव्य को दार्शनिकता का पुट देकर अधिक तरल और व्यापक बना दिया है। इनकी अनुभूति में गहराई और अभिव्यक्ति में सहज प्रेषणीयता है।

हिन्दी कविताओं के इनके कई संकलन प्रकाशित हुए हैं। 'रमणियं रा सोरठा' और 'मींझर' इनके राजस्थानी काव्य-संकलन हैं। 'गळगचिया' नाम से राजस्थानी गद्य-काव्य का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमें ६४ गद्य चित्र हैं।

संकलित गद्य-काव्य 'गळगचिया' में संगृहीत हैं। इनमें लेखक ने लोक-जीवन से विभिन्न उपादानों को चुनकर प्रकृति के विविध कार्य-व्यापारों के आलोक में जीवन के कई चिरन्तन प्रश्नों और संदर्भों को अभिव्यक्ति दी है।]

(१)

ताव र कळस माटी र घड़ न कयो—घड़ा ! थारं म घाल्योड़ो पाणी ठंडो कियां रवे अर म्हारे म घाल्योड़ो ताता कियां हुज्याव ? घड़ो बोल्यो—मैं पाणी न म्हार जीव म जग्यां दू हूं अर तूं आंतर राखं है आ ही कारण है

(२)

मैण-बत्ती कयो—डोरा ! मैं थारं-स्यूं कत्तो मोह राखूं हूं ? साथी ही काळजे म ठौड़ दीनी है।

डोरो बोल्यो—म्हारी मरवण ! जणां ही तिल तिल बळूं हूं।

गळगचिया—पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े।

१ कळस—कलसे ने। कयो—कहा। घाल्योड़ा—डाला हुआ। कियां—कैसे। तातो—गर्म तप्त। जग्यां—जगह स्थान। आंतर—दूर अंतर पर।

२ मणवत्ती—मोमबत्ती। कत्तो—कितना। काळज—कलेजे। मरवण—मारवणी प्रियतमे। जणां ही—जभी तभी। बळूं हूं—जलता हूं।

(३)

डूगर री चोटी परा चढ र कीडी नीचे देख्यो तो हाथी बकरी जतोक अर ऊंट सुसियै जतोक ही लाग्या। कीडी घणी राजी हू'र बोली—अब को डरू नी। बम स्यूं हा बडाळ दाखै हा।

खाथी खाथी चाल र नीचे आयी तो फेरू हाथी डूगर जतोक अर ऊँट हाथी जतोक ही दीस्या। घबरा र डूगर नै पूछ्यो—चनेक मे ही ओ फरक पाछो किया पड्यो ?

डूगर मुळक र बोल्यो—पैली आख्या थारी पण पग म्हारा हा। अब आख्यां अर पग दोनूं थारा निज रा है।

(४)

बदूक उठा र दाग दी। बापड़ो पखेरू तड़फड़ा र नीचे आ पड्यो। लोग कयो—किस्योक हुसियार ठाईदार है!

दूसरै दिन घड़ी री चाल बद हू र ठाईदार मरग्यो। लोग कयो—मौत किसीक निदयी है!

(५)

मिनख कयो—उळझयोड़ी जेवड़ी! मैं तनै सुळझा र थारो कसो उपगार करूं हूं।

जेवड़ी बोली—तू कस्याक उपगारी है जको म्हारै स्यूं छानू कोनी, काई औरां नै उळझाण खातर मन सुळझातो हुसी।

---

३ डूगर—पहाड़। परा—ऊपर। कीडी—चींटी। जतोक—जितना। सुसियो—खरगोश (शशक)। हूर—होकर। बम—बहम भ्रम। बडाळ—बड़े। दाखै हा—दीखते थे। खाथी—तेज। फेरू—फिर। चनेक—थोड़ी (देर)। पाछो—फिर। मुळक र—मुसकुराकर। पैली—पहले। हा—थे। दोनूं—दोनों। निज रा—अपने।

४ बापड़ो—बेचारा (ब्रजभाषा—बापुरो)। पखेरू—पक्षी। ठाईदार—निशानबाज। घड़ी री चाल—घड़ी की भाँति हृदय की गति।

५ मिनख—मनुष्य। जेवड़ी—रस्सी। कसो—कितना। जको—वह, यह। छानू—छिपा हुआ। औरां नै—दूसरों को। खातर—लिए। हुसी—होगा।

(६)

आगियै पूछ्यो—दिवला ! थारी उजळी जोत म स्यू ओ काळा काळो धाट निकळै है ?

दिवलो बोल्या—भाई ! आ म्हार पापी मन गो पिसतावा है

आगिय कया—जणा ही ससार आँख्या म घाल है क ?

(७)

जगत गे दाय देखता-देखता आम्ब अघायीजी ही कोनी अेक दिन अेक छोटा-साक रावडिया आँख न देखण-नै आँख म वडग्यो

आख रीस-स्यू लाल हुगी पण रावडियो क्या रा डर हा ? आखर म आख रोवण लागगी जद लार छोडी

(८)

विरखा आयी छोटा छोटा नाळा र खाळा पाणी ल्या ल्या र तळाव नै भर दियो दूसर-ही दिन करडा तावडो निकळ्यो

नाळा-खाळा रा कठ सूखग्या । नाळा कयो—तळाव ! म्हे काल पाणी ल्याया जक मे स्यू थोडा पाणी कठ आला करण वासतै म्हान पाछो दै

तळाव चिड र बाल्या—जा जा, छोट मूड वडी वात नही करणी वापडा नाळा तिसा मरता घूळ फाकणी सरू कर दी फेर विरखा आयी पण नाळा रा तो कठ रुधग्या हा बी सूखण पडघोडै तळाव ताइ पाणी कुण ल्यातो हो ?

(९)

पानडा कयो—डाळा ! म्हे नहा हूता तो थे कत्ती अपरोगी लागती ?

---

६ आगियो—जुगनू । दिवला—हे दीपक । पिसतावा—पछतावा । आख्या मे घाल है—(दीपक के काल काजल को) आखा मे डालता है ।

७ अघायीजी—तप्त हुई । रावडियो—पत्थर का कण । वडग्यो—घुस गया पड गया । क्या रो इ०—किसका डरता था । आखर—अन्त म । लार छोडी—पीछा छोडा ।

८ विरखा—वर्षा । नाळा—नाले । खाळा—प्रवाह । करडा—तेज । तावडा—धूप । काल—कल । ल्याया—लाये । जक म स्यू—जिसम से उस म स । आला—गीला । पाछा—वापिस । मूड—मुह से । वडी—बडी । तिसा मरता—प्यास मरते । रुध ग्या हा—रुक गये थ । सूखण पडघोड— सूखन को पडे हुए सूखने को आये हुओ ।

९ पानडा—पत्तो ने । हूता—हात । अपरोगी—कुरूप । अडोळा—

फूल कयो—चानणा ! म्हे नहीं हूंता तो थे कसा अडोळा लागता ?

फळा कयो—फूला ! म्हे नहीं हूता ता थारो जलम ही अकारथ जाता ?

फूल म छिप र बठ्यो बीज सगळा री वात सुण र बारयो—भोळा ! मैं नहीं हूता ता थ काई कोनी हूता

(१०)

भूपडी रो आडो खोल्यो 'र बार ऊभी चानणी विना पूछ्या ही चटकण माय बडगी माच परा सूती आगण म पसरी अर कपडा री कोनी खोलण दिया क रू रू-स्यू लटमगी म कयो, चानणी ! रात री वेळया म, सून घर मे पराय मोटयार कन नही रहणू जा रला जा बाद काइ समभसी ? पण चानणी टस-स्यू मस का हुयी नी

अचाणचूको अेक वादळियो आयो अर चाद रो मूडो ढकीजग्यो साग ही चानणी सपक जाती रही वादळिय पाँवडो आग भरयो र चाँद निकळग्यो चानणी पाछी आगी

म पूछयो—चानणी कून गयी ही ? चानणी बोली—भोळिया ! म तो चाँद र साग ही रहू हू अब ही काँमी समभचो के ? म तो मिनखा रो सत टटो ळनी फिरू हू

(११)

हँसी बोली—आँसूडा ? थारो ो कार्ई सुभाव आवे जणा छान सीव ही ढळक र जातो रव ? म तो आऊ जणा काई ठा कतार काना-म फिर र जाऊ हू ?

दोया रो पाडोसी नाक आ बात सुण र होळ-सीक कयो—ऊच र नीच कुळ रा-म अतो ही तो फरक है

सूने शाभाहीन । अकारथ—व्यथ । सगळा री—सब की । भोळा—हे भोला । कोनी हुता—नहीं होते ।

१० आडो—द्वार । बार—बाहर । चानणी—चाँदनी । चटकण—तुरत । बडगी—घुस गयी । माच परा सूती—खाट पर सोयी । पसरी—फला । रू—रोम । लटमगी—लिपट गयी । वेळया—वला । मोटयार—मद । रहणू—रहना चाहिये । अचाणचूको—अचानक । ढकीजग्यो—ढक गया । साग—साथ । सपक—तुरत । जाती रही—लुप्त हो गयी । पाँवडो भरयो—पर रखा । कून—किस ओर, कहा । सत—भार सत्य ।

११ छान-सीव—चुपचुप । काई ठा—क्या पता । होळ—धारे ।

(१२)

आख र दो बेटा अेक रो नाव साच अर दूजै रो नाव सपनू साच री लुगाई दीठ, सपन री लुगाई नींद जेठाणी'र देराणी-म अणवणती दीठ अताळ तो नींद पताळ अेक घरां रैव तो दूजी पीरै अेक रो काम उघाडणू तो दूजी रो काम ढकणू दीठ अणूती अचपळी तो नींद साव ही पळगोड पण घणू अचूभो इ वात रो क सासू-नै दोयू अेक-सी प्यारी बहुवा री वडाई करती-करती को थकै नी कन—इसी सुपातर क पलका म घाली का रडकै नी अेक चानणै र तळाव री माछळी तो दूजी अधेर र समदर री सीप ओपमा थोडी, गुण घणा आंख रो मोटयार मन' सुणै जद कवै—छोरा री मा ! तू तो समदरसी है।

---

१२ सपनू—सपना। लुगाई—पत्नी। दीठ—दृष्टि। अणवणती—अनबन। अताळ—अतल म। पताळ—पाताल म। घरां—घर म (ससुराल म)। पीर—पीहर म। अणूती—अनावश्यक बहुत। अचपळी—अत्यंत चंचल। साव ही—बिलकुल ही। पळगोड—सुस्त। दोयू—दोनों। सुपातर—सुपात्र सुलक्षणी। पलका-मे—आखा मे डाली भी नही खटकती। चानणो—प्रकाश। समदर—समुद्र। ओपमा—उपमा। मोटयार—मन पति। छोरा री—बच्चो की। समदरसी—समदर्शिनी।

फर्रामल

(रेखाचित्र)

[श्रीलाल नथमल जोशी]

[श्री श्रीलाल नथमल जोशी का जन्म स० १९७८ म बीकानेर म हुआ। ये राजस्थानी भाषा के उत्साही लेखक हैं।

आभ पटकी इनका राजस्थानी भाषा म लिखा गया सामाजिक उप यास है। इसमे इन्होने राजस्थानी विधवा को केन्द्रबिंदु बनाकर समाज के दलित गलित अश का मर्मोद्घाटन कर सामाजिक पतन पर गहरी विषण्ण दृष्टि डाली है। उपन्यास की भाषा सरल प्रभावपूर्ण और मुहावरदार है। 'धोरा रो धोरी' इनका दूसरा उपन्यास है जो राजस्थानी भाषा और साहित्य के लिए प्राणोत्सर्ग कर देने वाले इटालियन डा तस्सितोरी के जीवन-वृत्त को आधार बनाकर लिखा गया है। सबडका मे इनके रेखाचित्रो का सग्रह है।

सकलित रेखाचित्र 'सबडका' से सकलित है। इसम एक ऐसे गप्पीबाज की खबर ली गया है जिसकी बातो का भाव नित्यप्रति ऊँचा चढता जाता है और वह क्षण कभी नही आता जब वे पूरी हो।]

(१)

हू बी न मोकळा दिना सू ओळखतो हो अर नाम-ही सुण्यो हो फर्रामल मन म विचार करतो क इसो ठदबुदा नाव कदेई सुण्यो तो कोनी पण दुनिया घणी ही वडी है अर नाम ही मोकळा है कई आदमी रो नाव राम अथवा किसन सुणन कनेई ध भाव नी उठ्या नी क आ आदमी मरजादा परसोतम अथवा सोळ कळा रा अवतार है क नही पण काई ठा क्यू इण रा नाम सुण र म्हारी आ जणण री मनस्या हुयी क आ आदमी साच ई फर्रामल यानी गप्पाबाज तो को है नीव

---

१ मोकळा—बहुत-स। ओळखतो हो—पहचानता था। ठदबुदा—अद्भुत अजीब। वडी—बडी। काई ठा क्यू—क्या पता क्यो। मनस्या—इच्छा।

अेक दिन भाय-जोग सागो हुयग्यो मायला माय-सू अेक-नै फरोमल क्या—तन डाक्टर अचारज रैं बगलै मे गुमास्तो रखाय देसू, टम घणी को हुव नी, खाली मिझया री मात सू रात री इग्यार बजा ताणी काम करणा हुसी भण मई ! देख, काम जी ताड नैं करणो पडला महीना भी तो रुपिया सौ रो है कन क्णि-नैं है सो रुपिया ?

ओसर दख-न हू भी बालियो—इसी नौकरी जे म्हार हाथ लाग जावै तो न्याल हो जाऊ हू तो फरोमल र ढील कठ ही ? भट बोल्या ही—तन तो काल-ही रखाय दू, तू सा टप करणो जाणैं है, जिको सा ब तन कोडायो राखसी, पण हाफ्स रो तजरबा थारा घणो कोनी, इण वास्त तनैं सौ नही तो पिचतर रुपिया तो पक्कायत दिराय देसू हूं डाक्टर साब रो पी अे (निजू सहायक) हू म्हारा बात ब थोडी ही टाळसी ? काम तो रात नै च्यार घटा ही करू, पण महीना दोय सौ बीस रा देवै है

'पी अे' री बात सुण-नै साथला सगळा मुळक्या कै डाक्टर अचारज जिको अठ पी अेम ओ-न छोड-नै सगळा सू बडो है उण रो पी अ इसा आदमी जिण रा कैस तो लूखा अर बिखरियोडा, दाडी बधियाडी अर मूढ री भन्ना उडियाडा, अेक आख उतराद जाव ता दूजोडी दिखणाद, बरसा मे तीसा-स ऊपर नही, पण खाधा झुकियाडा, खाधा ई क्यू कमर ई मुडियोडी, माथो किडकाबरा अर पग आटा पड पडियोडो नवमी फल अर दिन रा जठ नौकरी कर बठ सू पचीस रुपिया महीनो लावै ! पी अे री बात जची ता कई र ई कोनी पण सगळा जीवती माखी गिटग्या

साचई—सचमुच। को है नीक—(कही) नही है। भायजोग—दवयोग स। सागो—साथ। मायला—साथ वान। क्यो—कहा। गुमास्तो—मुनीम। सिझ्या—सध्या। टम इ०—अधिक दर तक काम नही करना हागा। इग्यार—ग्यारह (अेकादश)। महीनो—मासिक वेतन। कय किणन—किस कहते हैं। न्याल—निहाल। ढील—दर। कोडाया राखसी—उत्साह के साथ प्रेमपूवक रखेंग। हाफ्स—आफिस दफ्तर। पिचतर—पचहत्तर। पक्कायत—पक्के रूप स निश्चित रूप स। मुळक्या—मुसकराय। अचारज—आचाय।

लूखा—रूखे। दाडी—डाढी। भन्ना—भौह। उतराद—उत्तर (को)। दूजोडी—दूसरे वाली=दूसरी। दिखणाद—दक्षिण (को)। खाधा—कधे। कुडियोडी—झुकी हुइ। किडकाबरो—कई रग का काला और सफेद। पग इ०—चलते समय पर टेढे पडते हैं। फल—फल नापास। कई र ई—किसी के। कोनी—

हू बोल्यो—तो मन साब र बगल काल मू रखाय देसो ?

फर्रा०—थार घरे साव री मोटर लेय न आऊ हू आज तो हूँ अर तू बगला जाण जाव जद काल सू थारी साईकल माथे आप ई आवो करिय

हू—भई ! म्हार साईकल तो है ई कोनी

फर्रा०—अर ! आछो सोच करियो ! थारो तीन महीना रो रुजगार तो हू तन म्हार कन-सू आगूच देमू अेक तो आलीस्यान साईकल ले लिय अर भई ! दख, थारी आ ड्रस (जामा) ठीक कोनी हूं रुपिया देऊ जिका मे तीन सागीडा सूट करा लिये

हूँ—इत्ता कराया पछ फेर मन काई चाहीज ?

(२)

इत्ती वात हुया पछ बी दिन ता म्हे आप-आप र काम गया दूसर दिन जद बो मिळियो तो मैं कयो—उस्ताद ! रात ता हू निरो अडीकियो पण थारा तो पत्ता ई नही ?

फर्रा०—रात ता इसो अळूमियो काम धधै म क दो वजा सोवण-न वळा मिली

हू—तो अब आज आवणो मोटर लेय न ?

फर्रा०—हूँ टैम को दे सकू नी आसू जद आप ई आ जामू

थोडा दिना पछ बो मिळियो तो भट बोल्यो ई—मैं थार नाव-सू साब-न अरजी देय दी तन हूँ म्हारो छोटो भाई समझ-न थार खातर इत्ती जान लडाऊ हूँ पण तन तीन दिन ताणी काम रा ट्रायल (जाच) करावणो पडसी

हू—आ तीन दिना रा पईसा तो मिलसी क ?

फर्रा०—ना ! ना ! आ तीन दिना री फूटी कोडी ई को मिल नी

हूँ—काम री पारख कुण करसी ?

फर्रा०—पारख ! पारख हू करसू और कुण करसी ?

नही । जीवनी इ०—जीती मक्खी निगलना जानते हुअ भी झूठी बात का मान लना । काल—कल । साव—साहब । आपई—आप ही । आवो करिय—आते रहना । साच—चिंता । रुजगार—वेतन । आगूच—अगाऊ । आलीस्यान आलीशान शानदार । सागीडा—बढिया । चाहीज—चाहिअे ।

२ निरो—बहुत । अडीकिया—राह देखी । अळूमियो—उलझ गया । आवणा—आना होगा । पईसा—पैसे वेतन । पारख—परीक्षा,जाच । कुण करसी—

हू—ता अठ म्हार दफ्तर म ईकर ल

फर्रा०—नही ! नही ! अठै नही साब र बगल-म हुसी

हू—पारख करती वळा म्हारो काई पख तो लेसी क नही ?

फर्रा०—पख लेऊ कोनी सागी बाप रो ई तू किसी चकारी म है । पण अबार जे तू पूछै तो हू तन दुनिया भर री बता सकू हू म्हारै-सू कोई विदया छानी कोनी

थाडा दिना पछै फर्रामल मिलियो तो बालियो—काम री पारख तीन दिन नही पनर दिना ताणी हुसी

सदेई सदई फर्रामल र सागी दळिय-सू जीव अमूभण लागग्या । इण कारण म बात आडी घाल न पूछिया—डाक्टर अचारज र-सू पली तू कठ काम करता हो ? उथळो मिलियो—छव बरसा ताई हू मबाई म टप री ममीनावा री कपनी म वडो अफसर हा बठ आवडियो कोनी, जद इ भूख बीकानर-सू माथा लगावणा पड है

हू—अठ है तो थार आराम ही ?

फर्रा०—आराम काई नव चूला री राख है ? ऊगिय-आथमिय री ता ठा ई को पड नी भाभरक पाच बजी आऊ दफ्तर जिक री रात री तीन तीन बज जाव अठ ई रोटी अर अठै ई बाटी !

हू—ता तू बगल री दिपटो कण काढ ?

फर्रा०—बगल री दिपटा कण काढू ? आई-ता था र म धाप र कसर है हाल ताइ बहू बेटी रा लक्खण सीख सुण मम साब री हाजरी दिलोज्यान-सू भरू हू बम इत्त म ई समझ जा अर मम साब भी म्हार माथ रीभियोडी है

कौन करेगा । पख—पक्ष । सागी—सगा । किसी चकारी म है—कौनसी गिनती मे है । अबार—इस समय । छानी—छिपा हुई । सदेई-सदेई—सदा सदा । सागी—उसी । दळियो—गलिया बातें बनाना । जीव—जी । अमूभणा—ऊबने लग गया दम घुटने लगा । आडी घालन—बीच म दूसरी बात डाल कर । पली—पहल । उथळो—उत्तर । छव—छह । मबाई—बबई । आवडियो कोनी—मन नही लगा । नव इ —नौ चूल्हा की राख—कुछ भी नही । ऊगिय—सूरज क उगन और छिपने का ता पता ही नहा लगता । भाभर-क—वडे सबरे । जिक री—जिसकी । रोटी-बाटी—खाना-पीना ।

दिपटी इ०—डिप्टी (डयूटा) । कण काढ—कब निकालता है काम कब करता है । धाप र—अघाकर, भरपेट भरपूर कसर—कमी । जे कणई—

जे कण ई गाव र बगल काम करण-न नहा जाऊ, तो दूनी आप ई सटका सार न्त्र बात रगवाज नुगाई है अर देग मम-माव री हाजरी तन भा जी ताड र भरणी पन्ना

हूं—कार्ई ता मम-गाव रा हाजरी डाक्टर ई भरता हुमी ?

फर्रा०—डाक्टर-न वापड-न मरण-न ई वेळा कानी यो की री हाजरी भर ?

फर्रामन रो मूनो अेक न्नि उतरियाम्ने हा म पूछियो—आज काई हुया ? फर्रागल फीम ग्यो म धीरज बधायी तो बोलियो—म्हारी ता कदे ई—हुडमानगढ क म्हूर—कोसीस कर-न बदळी करवाय देव तो ध्यान कर

हूं—बदळी हुया पछ तू डाक्टर साब र बगल री दिपटी कण करसी ?

फर्रा०—वी रो मोच ई ना कर बारै महीना म जे अेक न्नि अठ आयग्या ता सगळा कागद फण्ण फण्ण फक देसू दूज-मू इसो काम हुत कोनी दो बरसा म ई

(३)

अेक न्नि हूं ता म्हारै दफ्तर म काम करता हो अर फर्रामन तावा-तावा सास उठियाळा आयो जाण कोम अेक री दौड लगायी हुव बोलियो—ल भइ ! हू तन वधाई द्यू

हूं—काई बात री ?

फर्रा०—हैनफन मन आव कोनी बधाई मान लै म्हारी

हू—थारी अक्कल तो ठिकाण है क ?

फर्रा०—हत थारी ! आघ र आग रोय-न नण गमावणा है देख हूं तो जाऊ हूं जोधपुर पी अेम आ रो पी अे बण र अठ म्हारी जागा न्निराळ

यन्नि कभी । दूनी—दुलही प्यार का शब्द । आपही—स्वय ही अपन आप । सटको सार दैत्र—बात बना देनी है । रगवाज—रगीना । वापड-न—बचार को । वेळा—वक्त फुरसत । फीम ग्यो—मन चना बह चला=रोने लगा । कदे ई—कही । का—या । फण्ण फण्ण फक दसू—फर फर फेंक दूगा तुरत निपटा दूगा । कोनी—नही ।

३ तावो—तेज । जाण—माना पाया । काई बात री—किस बात की । हैनफन इ०—हरनरफन्दर मुझे आती नही । जागा—जगह नौकरी ।

हूं तन बान, किसा क रग देखाळिया ! ञर मक है कोई होड म्हारी ?

हू—थारा ता नक्सा ईज न्यारा है

फर्रा०—याथी वाता-सू हू राजी को हुवू नी चाल सामली दुकान अर तू पी जे हुयो जिक री वधाई में मिठाई खवा

हू—अरे भला माणस ! त मन हास ताई कोई लिखियोडो हुकम तो देखाळियो ई कोनी, अर पैनी मीठो मागण लागग्यो ? साची वात तो आ है क मन तू कन्न जिक-म काई गोळ लागै है

फर्रा०—ओक वात कय द मीठो खवासी क नही ?

हू—विना हुक्म देखिया किया खवाऊ ?

फर्रा०—म्हारी वात री कोई सनद ई कोनी ?

हू—जच ज्यू समझ

फर्रा०—तो थारै खातर नौकरी धौकरी का है ना तू हक्नाक मूढो धोवै है

इनो क र फर्रामन रीसाणो-सो क हुय नै टुरग्यो जा पाछै मिलै तो सलेई है पण बोलै कदेई कोनी मन पसतावो भी हुयो क ओक रुपट्टी गी पाछ मिठाखडी सट्टै जीवडा ! त पी जे री नौकरी हाथ सू गमाय दी पण जार काई हुव ? सीर-मसकार इमा ई हा

देखा ळिया—दिखाय । नक्सा इ०—नक्श ही निराल हैं । सामली—सामने वाली । खवा—खिला । गाळ—गडवड । कय द—कह दे । सनद—सबूत प्रमाण । जच ज्या—जस तेरे जच वस । खातर—खातिर लिओ । नौकरी धौकरी—नौकरी-चौकरी । हक्नाक—अनाहक व्यथ । मूढो धोव है—मुह धोना है पाने को तयार होना है । रीसाणा सोक—रिसाया हुआ सा । टुरग्यो—चल दिया । जा पछ—उसके बाद । पसतावो—पछतावा । रुपट्टी—रुपल्ली रुपया । मिठाखडी इ०—मिठाई के बदल । जीवडा—अरे जी । त—तूने । सीर-मसकार—भाग्य विधि-लख ।

गाव-रा मास्टरजी

(कहानी)

[बजनाथ पवार]

[श्री बजनाथ पवार का जन्म सं० १९८१ में रतननगर (चूरू) में हुआ। प्रारंभ में ये सरकारी स्कूल में अध्यापक रहे पर बाद में सहकारी विभाग में चले गये। इस समय ये औद्योगिक सहकारी-समितियों के निरीक्षक हैं।

हिन्दी एवं राजस्थानी के ये अच्छे कवि कहानीकार और गद्यलेखक हैं। इनकी रचनाओं में राजस्थान के ग्राम्य जीवन का सुंदर चित्रण हुआ है।

संकलित कहानी आज की शिक्षण-व्यवस्था पर लिखी गयी एक मार्मिक कहानी है। इसमें देश के भाग्य विधाता शिक्षक की गरीबी उसके परिवार की दुर्दशा और गाव के स्कूल की दुर्व्यवस्था का जो चित्र खींचा गया है वह मन में विक्षोभ और करुणा के भाव जगानेवाला है।

यह कहानी राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित राजस्थानी कहानी संग्रह में संकलित की गयी है।]

(१)

भूरी अब नाक ताईं धापगी रामू-नै अेकर भळै बुचकारयो काध लगायो समझायो—लाडी ! आज दूध कोयनी दिनगै पी लेयी अब सवेर खा ले थी खा ले ल गाडू रो चूरमो कर दूं पण तीन बरस रा रामू स्याणो नी भोळो कूकतो-कूकतो को थम्यो नी दूध पीऊंनी हूं तो दूध पीऊं ना—कहतो-कहतो ठणकण लाग्यो छेकड भूरी आखती होर दो थाप लगाया—ल ! पी ले दूध ! और पी दूध ! दूध पीवणवाळो डोळ हुतो तो कईं भागी रै जनमतो कण टापर मे भाग र क्यूं आवतो ? करम कमेडी रो अर मन राजा रा !

---

१ धापगी—अघा गयी तंग आ गयी। अेकर—अेकबार। भळै—फिर। बुचकारयो—पुचकारा। लाडी—लाडले। कोयनी—नहीं (है)। दिनग इ०—सवेरे पी लेना। स्याणो इ०—न सयाना और न भोला। कूकतो—रोता हुआ। थम्यो—बंद हुआ। कहतो—कहता हुआ। ठणकण—ठुनकना। छेकड—आखिर। आखती होर—खूब तंग आकर। थाप—थप्पड। डोळ हुतो—ढंग होना मुंह होना। कईं इ०—किसी भाग्यवाला (संपन्न) के (घर) जन्म लेता।

थाप लागता ही रामू अरडायो रामजस, उण रो बाप सुणता-ही बारै-सू भाग र आयो काई हुयो, रामू कीकर रायो ? क'र रामू-न गादी-स लगाया रामू री बुसबुसिया फाट रोवतो-कूकता बोल्या—मा मारयो

कीकर मारयो ? —रामू गरज्यो

भूरी को बोली न चाली माच सू उतर र तळ बसगी अर धरती कुचर लागी रामजस रामू न भुलावत मुलावतै भूरी-नै बूझ्यो—रामू कीकर रोया ?

भूरी भळै का बोली नी

हू बूझू हू, थार मूडै-मे जीभ कोयनी ? रामू काकर रायो ?'

आप रै जामणिया नै रोव है—रीसा मे आ र भूरी बोली—मैं थानै बीस बार क दियो कै इण नोकरी न चूचाडी लगावा जगा जगा पूर गूदडिया ढोवती-ढोवती हू तो आखता हुगी तीन न्निा मू सार गाव म बूझ धापी, दूध को मिलै नी काइ मोल दस न मीत घाल जसू घरमो अर गीतकी तीनू दूध-दूध करता सोयग्या रामू दूध विना रोटी रा टूक-ही को ताड नी तीन दिना म सूख र खेलरो हुग्यो अब इण-न कीकर समभाऊ ? इण तीनू टाबरा-न देखो—अेक खाट पर पड्या है रामू न थ सुवा लसा भळै मेर खातर कायनी

रामजस र आसो हो र देग्यो—अेक टूटेड भोळ म उण री जगी अर दा छोटा बटा नीदा म ऊपरथळी पडबा है दावण माय कर पग नीच लटक है, पीठ जमी र अड रयी है भळ आप री खाटली कानी जोयो—मूज री खाट ठौड ठौड-सू टूटेडी जेवडी भाडी रा ऊला मला सेरू ईस खाट काइ हाथ रो ऊनर हो रामू बुसक्या लेंवतो लेवतो नीद-मे सूयग्यो सपनै म बरडायो—

टापरो—छपरी भोपडी। कमेडी—पडुक चिडिया। अरडाया—चिल्लाया। भाग र—दौडकर। बुसबुसिया फाटै—हिचकियो के साथ राना।

तळ—नीचे। बूझ्यो—पूछा। जामणिया—जन्म देने वाल। चूचाडी इ०—आग लगाओ। पूर—फटे-पुराने कपडे। मीन—मेंत बिना मोल। घाल—डालता है दना है। खेलरा—फूट-ककडी की सूखी फाक। सुवा नेसो—(साथ) सुला लेंग। खातर—लिअे। रआसो—रोना सा। टूटेडै—टूट हुअे। भोळ म—भाली (जमी खाट) म। ऊपरथळी—अेक दूसरे क ऊपर। दावण—अदवान। पग—पर। अड रयी है—लग रही है। जमी—जमीन। भाडी रा इ०—बेर का भाडी की उलटी सीधी लकडिया की बनी हुई ईमें। खाट काइ इ०—खाट क्या थी। हाथ रा ऊनर—न होन क बरावर। बुसक्या—हिचकिया के साथ रोना।

माऊ ? दूध रामजस थाळै चिपायो थपड्या की जपग्यो नी माऊ पर सूयग्या, अर आप भी गोडा गठ-म घाल र पड्यो भूरी तीनू टाबरा न सिराण कानी सिरका र भेळी हू र पगाल्या पडगी

रामजस जात रो बामण बीस बरसा-सू मास्टरी कर दो-च्यार बरसा म कठई ठाठियो जमावै इस म बदळी रो हुकम आ पूग बीस बरसा म कोई पनरा गावा रा रूख दख लिया पती-पली अेकलो हुंतो जद तो दोरो-सोरो धिका लवतो पण अब लुगाई टाबर--मोकळा भरगो हुग्यो जाव जठ गाव-म तो मकान को मिल नी मकान मिल ज्याय तोई दो रोटी र लार सात चीज चाव घर गिरस्ती रो मामलो माडो दूधळो आप रा टाबरा न पाळ हो पण अबक बदळी होण-सू तो मात हुग पायो आखो सामान ढोवता-ढोवता तीन दिन लागा कई चीजा सूधी-सस्ती वेची कई गाय ला दूध देवती गाय जकी डाढ सौ मे मोल लीनी ही बदळी हुण सू खडाखडी आध मोल वेची बगाऊ रो माल लुगाऊ — घास-फूळा लकडी-वळीतो कई चीजा सीत मे ही दीनी अठ आया भळ सारी चीजा री दरकार हुई और तो म्हर दोरी सोरी धिकाव पण दूध री जावक अडगी सारै टाबरा न दूध पीवण री बाण अठ सारा भूखा सोव रामू तो दूध बिना भोत फीको दूध पीसै मिल न सीत मा-बाप रा जी घणो-ही दोरो पण हाथ तोड क पग ?

सूयग्या—सो गया। माऊ—अम्मा। चिपायो—चिपकाया लगाया। थपड्या—थपथपाया। जपग्यो—शात हो गया। की—कुछ। गोडा—घुटने। पड्या—पड रहा। सिराण—सरहाने की ओर। सिरका र—सरका कर। भेळी इ०—सिकुडकर। पगाल्या—पतान म।

मास्टरी—अध्यापकी। कठई—कहीं। ठाठिया जमावै=व्यवस्था जमाता। इस म—इतने म। बदळी—तबादला। पनरा—पद्रह। रूख—पेड। पती पली—पहले पहले। दोरा-सोरो—सुख स दुख स किसी प्रकार। धिका लेवता—काम चला लेता। मोकळा—ज्यादा। तोई—तो भी। दो रोटी र लारै—पेट भरने के लिये निर्वाह करने के लिये। सात=कई-एक। चाव—चाहिये। माडो इ०—दुगो दुबल। अबक—इस बार। आखो—सारा। जकी—जो। खडाखडी—जल्दी म। लुगाऊ—लूटने के लिये। वळीता—इधन। सीत—मुफ्त। भळ—फिर। जावक—बिलकुल। अडगी—कठिन समस्या हो गयी। बाण—बान आदत। फीका—निस्सत्त्व उदास। पीसै—पैसे से। दोरो—दुखी। हाथ इ०—अपने हाथ तोड या पग=क्या करें।

(२)

राम् नै छाती लगाया रामजस खाटली म पडचा पडचा आप री जिदगानी री पाथी रा लारला पाना उथळ नीद आवणी ओखी हुगी नीद भी मूढा देख देख टीका काढ भागी लोगा-न विना लोरी नीद आव अ ता दुरभागिया री राता है जकी पसवाडा फेरता फेरता कटणा जोखी हु ज्याय रामजस नीद रा मोत नोरा काढचा बाकी नीद तो दूर, जारूया सळ ही को पड नी

ढळती रात चवदस रो चानणा आखो गाव नीद मे चूच हो ग्या गळी मे कद कदास कुत्ता भुस बीच बीच-म रामू री बुसक्या सुणाज इत्त म भूरी पसवाडो फेर र बोली—नीद आयगी काई ?

ना ! नीद कोनी आव तू अब ताई जाग है ? हू जाणं हो तू सायगी हुसी नीद को आन नी

सो ज्या तू घणी फिकर मत कर नूवा गाव है, अण-सधा लोग है दस पाच दिना म सारा काम जच ज्यासी मकान मिल ज्यासी खाट-लकडी रो बदोबस्त भी हु ज्यासी टाबरा खातर दूध भी मिल ज्यासी

'टाबरा-न भूखा सुवा'र माइता-न कीकर नीद आव ? तीन दिन हुया मेरो तो काळजा भक्भक बळ है इसी नौकरी-सू तो माग'र खाणो चोखो बाळ सानो जको कान तोड पचास पानडी-सू काई हुव ? पेट लिवाडी ही को चाल नी फिरता फिरता हैरान वत्ती हुणो पड टाबरा मे किसा फोडा पडै ?

तू गनी वाता कीकर कर ? नौकरी छोड र काई भूख मरणो है ? चनी हाडा र ठोकर मारणी चोखी कोनी जुग देख र जीवणा है आख मास्टरा रो ओ हा हाल है'

---

२ जिदगानी—जिदगी। लारला इ०—पिछले पन्न उलटता है। ओखी—कठिन। मूढा—मुह। लोरी—सुलाने का गीत। विना लोरी—बिना प्रयत्न अपन आप। पसवाडा—पार्श्व करवट बदलते। नारा इ०—मनुहारें का। जारूया—आखा म सल ही नही पडता आखें बन्द ही नही होती। नीद म चूच—गहरी नीद म डूबा नीद म बेखबर। कदे-कदाग—कभी-कभी। भुस—भोकत है। जाण हा—जानता था। नूवा—नया। अणमधा—अपरिचित। जच ज्यासी—जम जायगा। माईत—मा-बाप (मातृ-पितृ)। बाळ—जला दो। पानडी—रूपल्ली। पट लिवाडी इ०—पट हा नही भरता। वत्ता—विशेष और। फोडा पड—तकलीफें होती हैं। गनी—बावली। चनी हाडी—चूल्हे पर चढी हुई हँडिया प्राप्त वस्तु या जीविका-साधन। आख—सारे। जुग

'आसा रा हाल चोखो पण मैं सू तो टाबरा न रीरांव्रता को देग्या जाव्र नी अेक दिन री तो बात कोनी इण नौकरी म तो यको पूर नाच्या फिरणो पडसी'

तो तू वता अब नौकरी छाड र काई करस्या ?"

'काई करस्या ? ओर सारी दुनिया काई कर है ? पचास-साठ रुपिया आज रै टम म राडी बूची कमाव्र है मळ था जिसी गुलामी कोनी भुगत अफसरा री गरज कोनी कर, जगा-जगा भटकणो कोनी पड थ काई करचा पढ र ? सूगनो अणपढ है पण रेलवाई म ६८) महीनो लव्र है धनिया टीडी अफसर रो चपडासी है पण ६०) लव है सुरजो गिडदाव्रर पाचवी किलास ताई भण्योडो है पण १२०) लव है अर थ चवद बरस टापरो योथो कर र अ मिसर पानडा ल्यायो हो तो काई अ जमार करो हा ? काई पढ्यो है इसी मास्टरी मे ? इण सू तो रेलवाई चपडासी हूता तो चोखो जको रैल भाडो तो बचावता

बाव्रळी ! मेरी अर चपडासी री अेक ही बात है काई ?

मैं अेक बद बताऊ हू ? मैं ता कतू हूं क चपडासी या सू घणो कमाव्र है अर घणो सुखी है

रामजस रीसा मे आ र बोल्यो—हव ! ठीक है तू अब सो ज्या

रामजस आप री लुगाई-न तो क सुण र सुव्राण दी पण आप न नाम आव्रणी ओखी हुगी भूरी साची ही कवै है रीस आव तो काई ? मन मिल काई है ? उण रो ध्यान लार न वीस बरसा कानी गयो जद वो घण चाड अर चाव्र सू मास्टर बण्यो हो पली पली कित्त चाव्र सू टाबरा-न पढावतो ! कित्त हरख सू गाव्र सुधार रो काम करता ! वा भी अेक जमानो हो जद वो गावा खा र दिन रात भाग्या फिरता विदया सू इलाक न जगमगा दियो आजादी र कोडा-मे अपणै-आप न मिटा दियो पण इत्त बरसा ताई ईमानदारी सू काम करता थका भी जद उण री कोई तरक्की नहा हुयी तो निराश हुग्यो जद ब देख्या क जायक

इ०—समय देखकर जीना है। चाखो—ठीक। रीराव्रता—रिरियाते। राडी बूची—राड जिसके कोई नहीं (बूची—नाककान रहित)। भुगत—भोगती है। अणपढ—अपढ। रेलव्राई—रैल विभाग। गिडदाव्रर—गिर्दाव्रर। किलास—कक्षा। टापरा थो०—घर को बर्बाद कर। पानडा—पत्ते कागज के नोट। जका—जो जिसम। बचाव्रता—बचाते। हा—हा।

सुव्राण दी—सुना दी। कानी—ओर। चोड चाव्र—हप और उमग। जाव्रक—बिल्कुल अेकदम। टिकण द नहीं—टिकने नहीं

कामचार अर हरामखोरा री अफ्सर तरक्की करै है—रिश्वत ल र चोखा चोखी जागा बदळी कर है तो हिम्मत हारग्यो उण रो कोई कसूर नही ता भी अेक जगा टिकण द नहा रमणवाळा दड नै जिण तरह ठोकर मार उणी तरह रामजस अफसरा रो दडो बणग्या उण-न अफसरा-सू नफरत हुमी और पक्को विश्वास हुग्यो कै इण नौकरी म कदई तार करै नी

सोचता-सोचता रामजस रीं आरया लागी र गाय रै कूवै पर माळी वारियो बालै हा

(३)

रामजस दा महीना ताई माकळी चष्टा करी पण रवण न मकान को मिल्यो नी वा ही पलीवाळो कोठा जिण म विरखा हुव जद पाणी पड अर गरमा यारी उण र ना आग आगणो और ना ऊपर छात रेत मे बठ र भूरी राटी पोव अर घर रा आखा टाबर जीम रामजस टैम होण स इस्कूल चल्या जाव अर छुट्टी हुव जद बा ज्याव स्कूल म बठण न ना कुरसी ना मूढो पाणी रो कोई प्रबध कोनी गनी स्कूल छोटा छोटा कमरा जिण म पाच सात मास्टर सौ डोढ सौ टीगरा-न रोड्या राख भूखा मास्टर दिन भर दुख पावता अफसरा अर गाववाळा-न धूळिया देव गाव रा कई मास्टर सू रू जोडै नी

दूवळ-नै दो 'साढ अेक दिन रामजस घडो ल र कूवै चाल्या पैंली भूरी पाणी लावता पण कई दिना-सू पेट मे दरद होणै-सू बा जाण को सकी नी मारग म लुगाया उण-न देख'र आपसरी म बतळायी—मास्टर हो'र पाणी लावै ! सुण र रामजस र तातै तेल रा-सा छाटा लागा आग कूव पर मिनख बतळाया कै मास्टरा

---

²नै । रमणवाळा—खिलाडी । दडन—गेंद को । तार कर नी—ऊपर नही उठगा । माळी—माली पानी निकालने वाले । वारियो—पानी निकालते समय दी जाने वाली आवाज । जद र०—तब रात का तीसरा पहर बीत चुका था ।

³ माकळी—बहुत, खामी । कोठो—बिना आगन की कोठरी । टम—(स्कूल का) समय । टीगर—छोटे बच्चे । रोड्या राख—वदियो की तरह रोके रखते हैं । धूळिया देवै—पीछे धूल उडाते हैं गालिया देतेहै। गाव रा—गाव के लोग । रू जोड—मेल करते हैं। दूवळै न इ०—छिद्रष्वनर्था बहुलीभवन्ति । दूवळा—अकाल के कारण भोजन न मिलने से दुबला । साढ—असाढ (वर्षा म और विलब) । जाणै को सकी ना—जा नही सकी । लुगाया इ०—स्त्रिया न आपस म बात की । तातो गम तप्त । छाटा—छींट । बतळाया—बात की । चोलोवालो—चुपचाप ।

अधपाकी फळसेयडी राटी जीम अठ आ र भूरी मोकळी दुख पायी गाव म छाछ मागी को मिल नी साग-सबजी री वात ही क्यू बूभो ! सहर-सू अळघो होण र कारण हरेक चीज मोत मूघी मिल ऊपर री कमाई रा धेलो नही सहर म प्राइवेट टथूशना रा मोकळा पीमा हा ज्याव पण सहरा म तो अफसरा रा खास-खास आदमी ही रहणे मक बाकी रा ता बापडा खाडा म जूण पूरी कर

रामजम भी इस्कूल म घणा आखतो आठ आठ घटा इस्टूल पर बठयो बठयो आखतो हु ज्याव कुरसी राज देव कानी आ मास्टरी है क सजा ? की समझ मे आवै नी

टीगरा रा ही कोई अेडो कोनी, कोई राक-टोक कोनी पली अर दूजी किलासा-म तो वाय कित्ता ही भर्ती हुवो—काई कानून-कायदो नहीं दो दो च्यार-च्यार किलासा साग पढाणी पड और कित्ता विषय ! इत्ती माथापच्ची, आ तणला,अर बठण-नै जो इस्टूल ! रामजस-न इण सारी चीजा-सू घणी नफरत हुगी

अेकर इस्कूल म अफसर रो दौरो हुया इस्कूल-न अठीन बठीन दखी खोट कसर काढी, मास्टरा-न दस पाच खोटी-खरी सुणायी अर मोटर म जा बठया रामजम भाग र आग ऊभो हुयो—हजूर ! आप-सू पाच मिनट वात करणी चाऊ अफसर गरज'र बायो—हू अेक मिनट भी वात नही कर इत्त-म कोई नेतोजी आयग्या कइ वात पर अफसर सू ताण-तकर हुगी नेताजी घटा अफसर र माजन रा टक्का भाडिया

(४)

रामजम र पाडोम म कई छारी रो व्याव हो जान आयी उण दिन माड वाळा पडोस र भूरी औरा न जीमण-न बुलाया मास्टरजी जावक नटग्या पण टाबर जद ठणकण लाग्या तो भूरी उणा-न जिमावण न लेयगी व्याववाळा र घर मायली लुगाया भेळी हुयागी ही कइ बूझ्यो—बाई ! आ अणसधी लुगाई

—अधजली (?) । जीम—खाना है । रहण सक—रह सकते है । खाडा म—जगना म । जूण पूरी कर—जिन्दगी पूरी करत है, दिन काटते है ।

आखता—तग दुखी । इस्टूल—स्टूल । टीगर—बच्चे । अेडा—हिसाब । वाय—वाह । साग—अेक साथ । खाट कसर—त्रुटि कमी । नेतोजी—नेताजी । ताण-तकर—वालचाल । घटा—घना (तक) । माजनै रा टक्का भाडिया=इज्जत बिगाडा फटकारा बुरा भला कहा ।

४ छारी—लडकी । व्याव—विवाह । जान—बरात । माडवाळा—वधू पक्ष क लोग (स मडप) । औरा न—वगैरह को । नटग्या—मुकर गय,

कुण है ! बीनणी री मा कयो—आ तो आपणी मास्टरणी है कई उगाया सागै ही बोली—बीरा ! आ क मास्टरणी का गणा न पाती या टाका देयोडी पुराणा साडी, मास्टरा र तो मुफ्त री कमाद जाव है

सुण र भूरी नाड नीचा कर ली इत्त-म गीतकी अर नहू बार-सू बूकला आया बूझ्या—लाडी ! कांकर राया ? गीतकी रोवती रावती बोली—मा ! हू आ फाटेडी घघरी कोनी परू मनै सारी छोरया चिगाव भूरी उणन बुचकार र कया—तन ओर नूई घघरी करा देस्या इत्त-म नन्दूभी ठणक लागा—मा ! हू भी नूई कमच परस्यू सारा छोरा कव क आ तो गरीब मास्टर रो छोरो है

सुण र भूरी-सू बठ्यो को गयो नी उठ र खायी गाथी घर जा र माचलिय म मू माथो ले र पन्नी टाबर रोवता बूकता लार आया मा न सुबकया भरती देख र डरता म्हला बनै बठ्या

छुट्टी द र रामजस जद घर पूग्यो तो घर रो हाल देख र मनडो बनरो हुग्यो खाटली कानी निजर गयी तो काळजो धकधक कर लागो भाग र भूरी री नाड पकडी माथ पर हाथ मेल्यो मन म डरत-डरत बूझ्यो—काई हुया ? जी सोरो तो है ?

भूरी सामी देख्या बोल्या का गया नी सिर गोग म द लिया रामजस रो पेट पूछण रो हियाव को पड्यो नी ठाणी ऊपर-न उठा र देख्यो तो टळक-टळक आमूडा ढळक अपमान ओर असतोष री आग सू जळ र हिवड ग सारा भाव आस्या र मारग हो र गाला पर ढळग्या भूरी कातर दृष्टि-सू पसी आप कानी अर भळ टाबरा कानी दग्या

अक आखर कया बिना ही रामजस सौ समभग्यो आस्या रा भाव आग्या म ही पढ लिया रैस्यो म कर्ड टाबर न कमीज कोनी तो कर्ड र जत्या कोनी तो

इनकार कर गय । टणकण—टुनकने । भळो—अजन । अणसधो—अपरिचित । बीरा—बहन । क—क्या कसी । पाता—पत्ती । टाका देयाडी—टाक दी हुई । नाट—नदन । बूकता—रोने हुअे । चिगाव—चिगाती हैं । बुचकार र—पुचकार कर । नूई—नयी । कमच—कमीज । बठ्या इ०—बठा नही रहा गया । खायी खायी—जल्दी-जल्दी । माचलिया—खाट खटाली । मू माथा लर—अपना-मा मुह लकर । मल्यो—रखा । सोरो—प्रस न स्वस्थ । सामी—सामने । गोग—घुटन । पर—फिर दुबारा । हियाव—साहस ।

बा' टोपी मातर उणमणा है भूरी रै दो पुराणी मा'ी ल्हाड र तीजी गे नाव वोनी अर आप रै किसो पोमाका ? अक पजामा अर अक कमाज जिणा-न छुट्टी र न्नि धा र सुवा,, पगा-म टायरा री चप्पल ! टाबरा रा ओ हाल ! लिछमा-सी लुगाई रो ओ डाळ ! इत दिना म बारिया विगरग्या !

दम र भाग विधाताबा गी आ दुरदशा ! गाव-म अपमान राज म अपमान जात बिरादरी म अपमान ! बापडा मास्टर !

(५)

मिनख री जिंदगानी म कइ घडी पळ इसा आव जका उण-न ऊचा उठा देव अर कई घडी-पळ इसा आव जका उण-नै पीदै बठा दव आज भूरी रा आसू अर उण र मन र दुख रामजस-नै नयो प्रकाश दियो वो हडबडा र उठ्या आस्या फाड-अर हाथ पसार-अर बोल्यो—भूरी ! उठ आज वीस बरसा री गुलामी माथ आ ठोकर है वीस बरसा री कगाली उठ, बीटो बाध अर टाबरा-न त्यार कर इण गुलामी-न आज-सू ही नमस्कार है !

भूरी अचरज म आ'र सिर ऊचो कर र देख्या इत्त म रामजस आधो सामान बाध लियो भूरी उठ र बोली—इसी काई बात है ? दिनग चल्या चालसा

न्नि ऊगसी आपण गाव-म—रामजस बीटो बाधतो-बाधतो बोल्यो—तू बरतण भाडा बोरी म घाल हू दो ऊटिया लाऊ हू तू ताका-तोल मत कर मर मूड कानी काई देखै है ?

आ क र रामजस हिरण हुग्या

भूरी बाथाबूथी करती करती सोच—अब काई हुसी ? इणा-म इत्ता जोस अर हिम्मत कठा-सू आयगी ? टाबर सारा विडरडा-सा भूरी न चीज-वस्त

ढळक—गिर रहे है। पैली—पहल। भळ—फिर। कया बिना—कहे बिना। उणमणा—अनमना, उदास। टायर—मोटर के टायर। ढाळ—ढग, दशा। बारिया विखरग्या—सेहत बिगड गयी स्वास्थ्य बर्बाद हो गया।

भाग विधाताबारी—भाग्य निर्माताओ की=शिक्षको की।

५ पीद—पैंदे म बिठा न्त हैं। बीटो—बिस्तर। दिनग—सवर। ऊगसी—उगगा। घाल—डाल रख। ताका तोळो—ताकझाक करना। मूड कानी—मुह का आर। हिरण हुग्या—हिरन की तरह तजी से भागा। विडरेडा—डर हुए। भलाव हा—पकडा रहे थे। पीळती—पीला। भकाया—बिठाये।

झनाव हा नदू धीम स बोल्यो—मा ! अब आपा अठ कोनी रवा काई ?

'ना बेटा ! आपण गाव चालस्या'

गाव रो नाव सुणता-ही नदू नाच उठ्यो—हा मा ! जठ आपणी पीळती गाय है मा मैं अठ कदई नहा आऊला अठ दूध-ही कोनी मा !

इत्त म रामजस दो ऊट सा र मकाया मारो टाडो लाद-लूद अर गाव-सू निकळ्या जद मास्टरा और गाववाळा न ठा पड्यो लार भाग र आया अर हेलो मार्‍यो—मास्टरजी ! इसी काई बात हुगी ? का कयो नी सुण्यो नी ! मास्टर बोल्या—नौकरी छाडणी आछी कोनी पगी हाडी र ठोकर मारणी चोखी कोनी, भळ पछताबाला

पछताबो इण बात रो है क मैं अब ताई नौकरी छोडी कोनी, सारी जवानी इण गुलामी म हाम दी—कवत कवत रामजस ऊटा री मूरी खीच लीनी

टाडो—सामान। ठा पड्यो—पता लगा। हेलो कर्‍यो—आवाज दी। कयो इ०—कहा न सुना। मूरी—नकेल। मूरी खीच ली—चल पडा।

कुण जीत्यो ?

(अेकांकी)

[पूरणमल गोयनका]

[श्री पूरणमल गोयनका चूरू के निवासी हैं। आपने सं० २००१ में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम ए किया और अपना पैतृक व्यवसाय व्यापार करने लगे।

संकलित एकांकी डूंगर कालेज की मुखपत्रिका में प्रकाशित हुआ था। इस व्यंग एकांकी में दो धूर्त सेठों की कथा है जो एक दूसरे को धोखा देने का प्रयत्न करते हैं। दोनों ही धोखा देने में सफल होते हैं पर साथ ही स्वयं भी जबरदस्त धोखा खाते हैं।]

(१)

[सेठ धनराजजी-का बैठक—सेठ सचलालजी मसंड के बीच में बैठ्या है सेठां-कै बांयें नाकै सोहनलाल और रतनलाल बैठ्या है अर नाकै पण्डितजी नटठ-की जियां बैठ्या है]

सचलाल—हां तो भाया मोहनलाल ! छोरी नै सूंत देख लेयो पछै म्हांनै दाम को है ना, हां पंडितजी ! म्है इब्बार-की गाडी-सूं ही चल्या जावाला कुण जाणै अठै रण में सारो बण्यो-बणायो खेल बिगड़ ज्यास्यै वाणियो हूं ब्याव-में हळदात-वानो होया पछै ढुकाव-की टेम मालम पटसी आप की लाज आपै ही को रालसी ना अर भाई सोहन ! थोड़ा ज्यादा बळ ज्यासी दो वेसी नर काम्या कै परवा है ? तेरी घर तो बस ज्यासी—अै ऊमर कै मांय पण्डितजी भी जीवता रख जाण पिछाण इसा आदमियां सूं काम देवै पंडितजी ! सारो खेल थारै पर-ही है

१ मसंड—मसनद। नाकै—किनारे तरफ। सूंत—अच्छी तरह। लेयो—लेना। इबार—अभी। हळदात-वानो—वधू के हलदी चढाने का विधान। ढुकाव—बरात या वर का वधू के घर पहुंचना। टेम—वक्त (टाइम)। पटसी—पडेगा। लाज—लाज के कारण। आप ही—स्वयं ही। थोड़ा ज्यादा इ०—थोड़े रुपये अधिक खर्च हो जायेंगे। दो वेसी—दो रुपये अधिक

पण्डिजी—सेठां ! दुनिया-ना अयान्हा काम चाल है पण भगवान ना भूल जायो

मवलाल—वाह पण्डितजी ! वाह पन्यो ना जद तो पार थान गान सौ की बही था आठ सौ गड़ी

पडिजी—वा मा ! वा दुनिया म सेठ हव ता न्मा ! भलो कर भगवान थारो ! आठ और छव चवन्दा

मवलाल—(वगा मा) हैं हैं ! य कर गरघो ? य अडगा है ?

पण्डितजी—चवदा चवन्स-वा सावो उघन्यो है ना चवन्स-वा !

मोहन०—पण भाई रतन ! अब दारमदार तेर ऊपर है

रतन०—वाह काचोजा ! अ र माय चूक ज्याउ ता मरा नाम रतनिया नही इत्ता बरस घूड-म यो नाया ना गलवी सान मन नाटक ननण-म जेड तगमो मिल्यो हो मग भी ता लाडू जात है पण कावोजी ! अब बार म्लान वसमीर-वी सेर जरुर कराणा पडगी

मोहन०—रे घना ! बीस बार करिय

(२)

[इत्त म माय-स सेठ धनराज आय है]

धनराज—ज गोपाळजी-की सा ! ज गोपाळजी-की !

मवलाल—ज गोपाळजी-की ! ज गोपाळजी-की ! आसो विराजो

धनराज—सा ! माफ परमायो म बार न गयोडो यो थान अडीकणो पडघो

मवलाल—वाह सा ! वाह वावळी बाता कर नागा इसी क ताव है ?

सरकावगे थोड रपय और दगे। अयां—अस। छव—छ हजार वधू पक्ष से मिलेंगे। चवदा—चौदह (हजार)। कर गरघो—क्र डाला। अडगा—बलडा। चवन्स—चौदस चतुर्दशी। सावो—लग्न विवाह-मुहूर्त। उघडघो—खुला निकला।

गलवी सान—पिछले वर्ष। तगमो—तगमा पदक। म्हारा भी ता लाडू है०—मेरे भी तो लड्डू जा रहे हैं (विवाह होगा तो म भी लड्डू खाउगा नही होगा तो मुझे भी लड्डू खाने को नहा मिलेंगे)। सेर—सैर। करिय—करना। विराजो—विराजिये बैठिये। परमायो—फरमाइयेगा। बारन—बाहर। अडीकणो—प्रतीक्षा करना। कर लागा—करने लगे।

घर की बात है तो थारा पडितजी थान सागी बात समझा दा होसी क्यू पडितजी !

पडितजी—हा न ! मैं सेठ साव न सारी बाता मून समझा दा घर का ही काम है मचलालजी स भी म्हारी पुराणी जाण पिछाण है और सेठ तो म्हारा जजमान है ही

मचलाल—हा हा ! ठीक है ठीक है ! धनराजजी ! सो क्य बाता विचार लेयो—घर, वर जलम भर का सीर है पाणी पीय छाणकर, साव करिय जाणकर हा ! तो काइ जची थार ? (रतनलाल कानी इसारा कर है) हा तो बेटा रतन ! तेरी इस्कूल कद खुलसी ?

धनराज—कुण-सी किलास मे पढो हा ?

रतन०—मैं अ साल दसवी किलास पास हो जास्यू

धनराज—आपणै, आप क क भाई भण है ?

रतन०—न भाई अेक भैंण

धनराज—थार स छोटा है क बडा ?

रतन०—सगळा स बडो मैं ही हू

मचलाल—हा तो धनराजजी ! बाई न नही इसी तो काई बात कोनी पण तोभी

धनराज—ब मैं काई आट है ? सगाइ होया पछी छोरी-न बीस जणा दख हा ! रतनचद-नी ! लुगाया जिद कर है क कवरजी न दखस्या जी लुभ है

मचलाल—हा हा ! जा बटा ! जाइया

[धनराज रतनलाल-न साग लर भाय चल्या जाव है]

(२)

मचलाल—क्यू सोहन ! देख, कयाल की बुढू बणायो वाणिय-न ? क्य होयी ना मेरी जीत ? दुकान की टम मानम पटसा जद देखी जासी देख नम्या लुगाया पनाया न ब्याव होया पछ मालम पडसी पछी कुण सा फेरा उघड है ? वाणिय का मू

साव—साहब। घर रा—घर का अपना। सेठ—सेठ धनराज। सो क्यू—सब कुछ (=सारी)। लयो—लीजियगा। सीर—सबध। पाय—पीजिय। साख—सबध सगाई। कानी—तरफ। भण—बहन। आट—आपत्ति। होया पछ—होने क पूर्व। जणा—जन आत्मा। लुभ है—ललचाता है। जाइया—(भीतर) जा जा हो आ। साग—सग। कयाल-का—किस प्रकार का वसा। होयी—हुई। फेरा—भावरें। उघड्णो—खुलना, वापिस होना।

थनी-म सीम दघागा

[धनराज-क साग अेक छोरी माय-न मू आज है, तर वरस-की सी हाथ म इळायची सुपारी-का छबी आ र छबी सचलाल-क सामन छो र वठ ज्याव है]

धनराज—स्या अरोगा

[गोनू वय-क्यू उठा लव है]

सचलाल—बाई तो पढेडी मी लाग है क्यू बाई ! कुण-सी किलास म पढ है ?

[बा वय सरमाकर भळी भेळी सी हुव है]

धनराज—है है है मातसी किलास म पढ है आपण तो घर-को सारो काम-काज आ-टी कर टाको टेबा रसोई पाणी अ-की मा न तो आप क आडा टेडा म ही औसाण का आव ना

सचलाल—म्हार भा व की मनस्या पढी लिखी-की थी (छोरी उठ र चली जाव है) सान क माय सुगघ होगी जो घर अ आदमी अर पछ इसा टाबर कठ राख्या है ?

धनराज—हा ! तो

सचलाल—क्यू भाया सोहनलाल !

(सोहनलाल क्यू वक्त मो हा र भरमा ज्याव है)

सोहनलाल—थे म्हया मैं क कहू ? थ सगळा र भल-की ही करस्यो

धनराज—पण आज-काल म्हारा हाथ क्यू अर पछ आज-काल-की टम

सचलाल—वाह साहजी ! वाह नाम-ही धनराजजी पछ यान क्या-की कमी ? हाथी मरघा भी लाख का पछ थारी बाता तो थार-म ही है भली कही ! आस-पास म चुग्या को पावा नी थार जिसा अर पछ साहजी म्हे तो धेज लण-स्या क मसत खिलाप हा म्हे तो टाबर देखा अर पछ मुख म घगणो

थली म—रुपया स । सीम दघागा-सी दम फिर बानगा नही । छबी—तश्तरी । गरागो—खाइये लीजिय । क्यू-क्यू—कुछ कुछ थोडा थोडा । पढगी—पढी हुई पढीलिखी । भेळी भेळी सी—सिमटता हुई सी । टाको टेबा—सीना पिरोना । औसाण—अत (अवसान) । औसाण को आवनो—अवकाश नही मिलना । म्हार भै को—मेरे यहा उमकी (मेरी घरवाली की) । होगी—हो गयी । ज आदमी इ०—य घर वाले और फिर असा वालक (यहा=कन्या) । हाथ क्यू इ०—हाथ कुछ तग है । चुग्या—चुगने पर ढूढने पर । धेज—दहेज । खिलाप—विरुद्ध । मुख म—मुख्य रूप म ।

देखा हा तो पछ म्हारो रात-की गाडी-म ही जाण को विचार है

धनराज—हा-हा ! म्हार कानी सू तो कोई ढील कोनी पण पडितजी ! इब मूरत क्याल को है ?

पडितजी—हैं-है ! मूरत-की थ क्यू फिकर करो म्हारो नाव पन्ति बुधराम है अयास-क काम मे तो बुद्ध हुव जका आट लगाव सौ क्यू ठीक है शुभस्य शीघ्रम इसो लगन आपण लोगा वास्त ओजू नही आवण को

धनराज—शा पछ बात पक्की होयी करा ? रे सुखला ! माय न-म थाळ ल्यायी अर कवरजी-न भी बुला ल्यायी

सचलाल—पण यान ब्याव करण-न बठ-ही आवणो पडगो लुगाया पताया का टटा होवगो नहा काई अक बामणी अर अेक स्याणी लाग-साळ-की अर ना लण दण-को टटा होण देवागा

धनराज—म्हार तो आप क जचगी जिया होवगी सरदारा-का हुकम रवगो

(४)

[इत्त म सुखलो अेक थाळ ले'र आव है साग रतनचन्द भी है रतनचन्द आ र बठ है धनराज रतनचन्द क तिलक कर है अर थाळ-म स रपिया क्पडो ले र सचलाल-न देव है]

सचलाल—म्हे कपडा-लत्तो क्यू भी कोनी लेवागा

धनराज—लुगाया-को जी कोनी मानगा पण थारी मरजी

सचलाल—आच्छ्या तो आज्ञा हुव ! सावो म्हे उघडा लियो है क्यू पडित जी ! कद-को ठरयो है ?

पडितजी—हैं है ! आगली चवदस-को पूरा चवदा दिन बाकी है

धनराज—पण साहजी ! इत्ती वेगी त्यारी को होगी ना काई दूज-वर-को ब्याव थोडोई है

[स-का स खडया हा जाव है धनराज बठई खुस मुस खडयो र जाव है

कानी—ओर । ढील—देरी । इब द०—अब मुहूर्त कब का है । अयान-कै—इस प्रकार के अस । आट लगाव—बाधा उत्पन्न करते हैं । सौ क्यू—सब कुछ । ओजू—फिर । करा—करें । बठ ही—वही । स्याणी—समझदार । लाग-सोळ की—सबध वाले रिश्ते की । आच्छ्या—अच्छा । उघडा लियो—निकलवा लिया । सावो—लग्न का दिन । ठरयो—ठहरा निश्चय हुआ । दूज वर—दूसरी बार वर बनने वाला । थोडो ई—थोडे ही ।

जाती वरिया मचलाल वा क वानी दया स देव है जानो जातो पडित धनराज वानी देखकर हाम है]

मचलाल—(चमक कर) हैं हैं ! आ क वात कहो हो ? थान वया-की भी फिर करण की जरूरत कोनी सो क्यू ठीक हो ज्यावगो आच्छया तो ज गोपालजी की !

धनराज—आच्छया ता ठसण पर हाजर हाऊगो

मचलाल—नही नहो ! तकलीप करण-की कोई जरूरत कोनी

(५)

[अक मिट पछ धनराज जोर सू बोल है]

धनराज—अ पूलरी की मा ! मार लिया मुडदा-न ! ल आपणी जीत होयी ना ! तन कह्यो हो ना मेरो नाव भी धमू है धमू !

[अदर-स अेक अवाज आव है]

(अदर-स)—रे सुखना ! ऊपर जा र चौवारो खोल म जा लिया क-न सो-क्यू ठीक हाग्यो

धनराज—(वठन -वठता) र ! ठीक न राम है ! इसो भाग ना कोई-को होयो ना होय आ छोरो अर इत्तो पासो ! कुण देख हो तेर वावळ भाट-न ? कोई व्याव-ही को करतो ना बेटी अणचली लाज राख ली राम कर ज न अै-स ही धोखा वर मिलियो !

[मायन-स अक चीरली अवाज आव है]

(मायन मैं)—रे ओ रामू ! अ मा ! मन-क्यू ढक दी ? हू हू हू हू मैं तो चा-नी-की गुडडी लेस्यू अबी लस्यू मन आजू ढकी ता सारो घर बाळ दयूगी

(दूसरी बोली)—र वावळा भाटा ! तेरी सगाई करी है ! आज वळग्यो राम मारय को भाग ! जाता ही बाळही राम मारया-को घर ! वळ वळा ज्यासी जक क तू जासी

[धनराज खम खुस घूमतो र ज्याव है]

[पडदो गिर है]

चमककर—चौककर (क्योकि सोमलालका यह दूसरा विवाह होगा) । ठेसण—स्टेशन ।

वरिया—वला । मिट—मिनट । मुडदा—मुर्दे । लिया—ले आ । पासो—पसा धन । वावळा भाठा—बावला पत्थर (फूहड लडकी को आर सकत) । अणचला—दूसरी लडकी का नाम जिसको दिखाया गया था । ढक दी—बद कर दी । आजू—फिर । राम मारयो—रामका मारा (गाली) । बाळही—जला दगी ।

भीमजी ठाकर

(कहानी)

[नृसिंह राजपुरोहित]

[श्री नृसिंह राजपुरोहित का जन्म सं० १६८१ जोधपुर राज्य के खाडप नामक गांव में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गुरुकुल तोगी और बाडमेर में हुई। इस समय ये खाडप में अध्यापक हैं।

बचपन से ही साहित्य की ओर इनकी विशेष रुचि रही।

पैतृक व्यवसाय कृषि होने से राजस्थान की माटी से इनका विशेष स्नेह रहा है। इनके रातवासो, कलम री मार, अमर चूनडी आदि राजस्थानी कहानियों के संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने सामन्ती युग की कठोर वास्तविकताओं और वर्तमान सामाजिक संदर्भों को अपनी कथाओं का वर्ण्य विषय बनाया है। राजस्थानी जन-जीवन को ये बडी मार्मिकता और कलात्मकता के साथ अंकित कर पाये हैं। ये प्रगतिशील दृष्टिकोण के यथार्थवादी कलाकार हैं।

संकलित कहानी रातवासो से ली गयी है। इसमें भीमजी ठाकर के चरित्र के माध्यम से कहानीकार ने परम्परागत राजपूती आन-बान और टेक की रक्षा का चित्र बडी मार्मिकता के साथ अंकित किया है। वीरता, करुणा और प्रेम भावना से ओतप्रोत यह कहानी राजस्थानी लोकसंस्कृति का सुन्दर दर्पण है। ऐसी घटनाएँ राजस्थान में बराबर घटती रही हैं, कभी कहीं तो कभी कहीं।]

(१)

बैसाख रा महीना अर आधीक रात रा टैम। दिन भर आग में तपियोडी बाळू रेत चंदरमा री इमरती चांदणी में ठंडी टीप व्हैगी ही। दिखण दिसा सूं ऊनाळू पवन ई धीरै धीरै सरू व्हैग्यो हो। इसी टैम में मारग वैवता बटाऊडा नै धरती सुरग जिसी लागै री ही। कठै तो बा दिन में तवा जिसी तपियोडी धरती रा बळबळता लू अर कठै आ ठंडी ठण्डी मखमल जिसी नरम नरम रेत अर धीमो मधरो पून! इसी वेळा में मारग वैवता नै ई हूंस आवै

---

१ आधीक—आधी-ऐक, लगभग आधी। टैम—वक्त। इमरती—अमृतमय। चांदणी—प्रकाश। ठंडी-टीप—बहुत ठंडी। ऊनाळू—उष्णकाल की। व्हैगी हो—हो गयी थी। वैवता—बहते हुए, चलते हुए। बटाऊडा—पथिक। मधरो—मंद। पून—पवन। हूंस—हौंस, लालसा, इच्छा। काठो—दृढ।

थाका थमर बाधन चालता ईज आवा पण थाकेलो नजीक ई ना फटके इण कारण इज तो बूढा बडेरा कह्या है क सियाळा म रोग गाय-न अर ऊनाळा म ब्याळू कर-न गावतरो करणा चाहीजे

समदडा सू दो ऊ ब्याळू कर न जावार वास्तै रवानै हुवा समदडा-सू जाळोर माठ कोस पडे, इण वास्ते ब्याळू कर-नै तुरत पिलाण कर लिया हा जिण-सू दिनूगा पहेली पहेला ठाड-ठाड जाळोर पूग्या जा सके ऊठ भीमजी भाटी रा हा अर भाग पर आयोडा हा

(२)

भाटी भीमजी इण चोखळा रा जाणीता आदमी हा पल्ला खाली हावता थका ई घर गवाडीवाळा खानदानी रजपूत हो इण वास्ते घर धणी होवता थका ई लोग उण-न ठाकर र नाव-सू बतळावता क्यूक भूख तिरस तो भाई-बन्ध है भाटी चीज ना आबरू है अर जिण दिना रो ओ किस्सो है उण दिना पीसा री इतरी इज्जत नही ही मानखो पीसा सू घणो मूघो गिणीजतो उण बखत ताई मिनखपणा रो साफ काळ ना पड्यो हो इण वास्ते काम पड्या मिनख मिनख र काम आवतो लोगा र मन म हो लिहाज अर आख्या म ही सरम मिनख पीसा-न कमावतो जरूर हो पण उण र वास्ते गलो ह्वियोडो नही हो उण बखत रजपूत रो बेटो आप री टेक निभावण न माथो देवण-न त्यार रहतो

ओ इज कारण हो क भीमजी रो गाव अर चोखळा मे बडी कीमत ही बाकी तो भीमजी र कने हो ई काई? टूटो झूपडो बडेरा र हाथ री दस-बीस बीघा जमीन अर बाप री कमाई रा दो ऊठिया बस! इण र अलावा

चालता इ०—चलते ही जाय। थाकेलो—थकावट। सियाळा—शीतकाल। गावतरो—प्रवास यात्रा (ग्रामान्तर)। समदडो—अेक शहर का नाम। पिलाण—पलान जीन। दिनूगा—सूर्योदय। ठाड-ठाड—ठंडे ठंडे।

२ चोखळा—चारों ओर के पडोसी गावों का समूह। जाणीता—विख्यात, प्रसिद्ध। पल्लो खाली इ०—धनी न होने पर भी। घर गवाडो—घर-द्वार। गवाडो—घर। घर धणी—साधारण घर का मालिक होने पर भी। बतळावता—बुलाते। तिरस—प्यास। भूख तिरस इ०—ये तो साथ लगे ही रहते हैं। इतरी—इतनी। मानखो—मनुष्यता। मूघो—महगा। गिणीजतो—गिना जाता था। ताई—तक। काळ—अकाल अभाव। काम पड्या—आवश्यकता होने पर। सरम—शर्म लाज। गलो इ०—पागल हुआ हुआ।

काम ऊंची किया काळजो दीखतो पण भीमजी र वडेरा री कमाणी दूजी तर री ही व रोटी रा राव अर तरवार र धणीहा पीढ़्यां लग उणा र घर आयोडो महमान भूखो को गया नी जिमी भी जव जवार री घर मैं ऊकळी महमान रैं आग हाजर कीवी अर राली माचा रो पग्बध ई कियो आ इज कारण हो के भीमजी र घर-सव कई कड़ावा न ढाब दिया हा इण र अलावा उणा मांको पड़्या तरवार-ही वजायी ही इण कारण फटियो फाटोडो ताई जात री इदी हाथण री वजै सू गराव हालत म इ भीमजी ठाकर रा समाज-म वडा मान हा

(२)

मटिया जाटाळा पातियो काटा छाप लट्टा रा धातियो अर जाळोर री टुकडी री अगरखी ठाकर री बार मास री पोसाक ही राजपूती हाड अर लाबा निसरणी पर अ कपड़ा फावता जरूर हा पण ठाकर रा चहरा वडो कडोपा हा खरो रग चेचक रा दाग स्टालिन-टाइप उळझियोडी मूछा अर आदत र अनुसार डाबी आख हरदम थाडी मिचियाडी रवती मूडा म चौका रा दो दात पडियाडा हावण-सू ठाकर हा हा कर न हसता जर मूडा आडा हाथ राखतो ठाकर री लटपट चाल सू लोग उणा न आघा-सू ईज ओळख

काम इ०—काम कुछ नही था। कमाणी—कमाई। रोटी रा राव—रोटी क राजा, उदारता स अतिथि सत्कार करने वाल। धणी—धनी। लग—तक। जव—जो। ऊकळी—उबली पकी। राली माचा—गुदडी और खाट। सवँ—सब ने। कड़ावा न—कडाहा का। फेंटिया—लहगा। इदी—इदा पडिहार राजपूता की अेक शाखा है जिसकी कभी बहुत प्रतिष्ठा थी। वजैं—वजह।

२ मटिया—मटमला। जाटाळा—जाटो वाला पचा वाला। पातिया—साफा पगड़ी। काटाछाप—लट्ठे का अेक प्रकार। टुकडी—अेक कपडा विशेष। बार—बारहो। हाड—हड्डिया शरीर। निसरणा—लम्बा कद। फावता—फबते शोभा देते। कडापो—भयकर कठोर। खरा—पक्का। स्टालिन—रूस का प्रसिद्ध तानाशाह। डाबी-बायी। मूडा—मुह। चौका—सामने के चार दात। पडियोडा—गिरे हुअे। आडा—सामने। आघासू ईज—दूर से ही। ओळख लेवता—पहचान लेते

लेवता अर मिनता ईज वगता—ज माताजी री ठाकरा ! अर म्हारो सुणता ईज आदतन ठाकर रा अक हाथ चट मूछा माय जाय पूगता अर ज माय जोर देय-न ठाकर नावी न-सूं वालतो—ज ऽऽ ऽऽ माताजी री कीकर ? खमा ? इण रै पछ वाता जानतो करता अर ठाकर आप री उठभियाडी मूछा-न उमठया करता वीच वीच म जात वात पर ठाकर गो तकिया-कलाम समझ्या क नी चालतो रवतो समझ्या क नी भाई साव ! आ वात य हुई समझ्या क नी भाई साव ! वा वात य हुई अर आ समझ्या क नी दरोपदी रा चीर र ज्यू वधतो ईज जावतो छेकट आगतो ईज हार माय र ठाकरा सू माल मागता—ना ठाकरा ! अव सीख करू ! ठाकर चमक र वोलतो—तो समझ्या क नी जावो भाई !

(४)

ठाकर रा गुजारा मामकर ऊठा-पर चालतो समन्दी मोगो गाम हो अर उण दिना रन-मोटरडिया ही कोयनी इण वास्त भाडा भत्ता री कमी नहीं ही यू गाम मे ऊठ ई मावळा हा पण ठाकर री पूछ विसस ही इण रा कई कारण हा जिण म सव-स पलो कारण हो ठाकर रा निरलोभी सुभाव ठाकर आप री उमर म कदई माडो पना नहीं किया वसाव राजी होय न दीना जिका ई न लियो जे भूल म अथवा जाण करता किण ई नहीं दियो तो- ई मांग्यो नहा ठाकर रा नीती हा क यारा आया द उण रा भलो अर नहीं द उण रा ई भलो इण सुभाव-सू ठाकर घणो नुकसाण म रवता दूजा ऊठावाळा ठाकर री मजाका उडायता पण ठाकर आन्त-सू लाचार हा अक वार भाडा रो हुकारा भरिया पछ यो हेम रा डिगली-न ई ठोकर मार देवतो जवान दय-न नट जावणो ठाकर र वस री वात नही हा

कवता—कहते । आदतन—स्वभाव वश । कीकर—कैसे । चालवो करता—चलती रहती । समझ्या क नी—समझ या नहीं । दरोपदी—द्रौपदी । वधता—बढ़ता । छेकट—अन्त में । सीख करू—विदा लू । चमक र—चौंककर ।

४ ऊठा पर—ऊटों से । मोटरडिया—मोटर (ऊनवाचक रूप) । मावळा—बहुत । विसस—अधिक । पला—पहले । वसाव—बठने वाला ऊट भाड करने वाला । जिका ई—जो ही=वही । जाण करता—जान बूझ कर । नीनी—नीति । हूकारो भ०—स्वीकार किये बाद । हेम री डिगली—सोने का ढेर । नट जावणो—इनकार कर देना । मो—मागी । ननी—छोटा । अठी उठी—

अनाथा इण र सब-मू मोटी बात ही ठाकर गे निरमळ चाल चलण उण रै वास्त माटी मौ भा अर नरी मौ बन ही इण वास्तै लुगाया र अठी उठी जावणा टूक्तो ता भीमजी रा ऊठ भाड किया बाद घर रा आदमी री माथै चालण री कोई जरूरत नही ही सोना म पीळी पट्ट अर लडा-लूब हुयोडी सठाणिया निसग भीमजी र साथ आवती-जावती ठाकर रो साथ हुया बाद सारी दुनिया वा र साथ ही ऊठा पर गटर-पटर वाता चालवो करती अर लार ठाकर ऊठ री पूछ पकडिया ध्यान म मगन चालयो करतो खतरनाक ऊमर री लुगाया कई बार ठाकर री मौजूदगी-न भूल जावती अर लौकिक मरजादा-नै ई तोड नाखती कारण कै ठाकर ता वा री निजरा म साळगराम रा-माळगराम अर गोफणिया रो-गोफणिया हो ताम पण ठाकर बुरो नही मानता मन मैं ईज कवता—समझ्या क नी टाबर है हाल टाबर अक्कल नही है इणा मैं, बिल्कुल अक्कल नही है

(५)

उण दिना मारग म चोर-लुटेरा रो वडो उत्पात हो धवळ दिन धाडा पडता अर हजारा री सपदा खोसीज जावती नदी रा थागा म उजाड फाकड म अर डूगरा री छाया मे चोरा रा अड्डा हा दिसावर अर आडा मारगा पर वा री वास निजर रवती मारग वक्ता मिनख-नै लूट-न मार नाखणो वा र डाबा हाथ रो खेल हा पाचव-सातव दिन खबर आय जावती क आज तो

यहा वहा। सोना म पीळी पट्ट—सोने के गहनासे अेकदम पाली बनी हुई खूब सोने के गहने पहने हुई। लडालूब हुयोडा—भरी हुई लदी हुई (सोन के गहना म)। गटरपटर—इधर उधर की। चालवो करती—चलती रहती। खतरनाक उम्र री—नवयुवती। लुगाया—स्त्रिया। साळगराम रा-साळगराम इ०—आदरणीय भी और उपेक्षणीय भी। ताम पण—तो भी। टाबर—बालक, नासमझ। मनम ईज—मन मे ही मन ही मन।

५ धवळ दिन—सफेद दिन म, दिन के प्रकाश म। धाडा—डाके। खोसीज जाता—छिन जाती लुट जाती। थागा—नदी के पानी के कटाव तथा बाढ के कारण किनारो के नीचे की ओर स्थान स्थान पर पडन वाले घडे गड्ढे।। फाकड—सीमा। डूगर—पहाड।

दिसावर—दूसरे गावो को जाने वाले यात्रा मे पडने वाले। आडा—(?)। रवता—रहती। वक्ता—चलते हुअे। डावा—बाये। भाखरी—पहाडी।

गूगळा री वाकड म तीन ऊठ सूटोजग्या तो आज थरी री मागरी कन दो आदमी मारिया गया

इसी कुटेम म भीमजी रा ऊठ माड करवा रो मतलब सुरक्षा रो रिजर्वेशन करावणा हा नजीक चोम्वळा रा तमाम चोर-लुटरा भीमजी ठाकर-न जाण हा थान आ बात आछी तर-सू मालम ही क ज्यण अडियन आदमी र ऊठा री मूरिया इण रो माथो पडिया र पछ ईज हाथ म आवता माथो लखणो था सोंगा मूघो हो इण वास्त व ठाकर र लार धूड ईज वाळता

कई बार डूगरा री छाया म आडा मारगा-पर रात रा टेम अवाज आवती कुण है रे ऊठवाळो ?

पडूतर म ई ट रो जवाब पत्थर-सू मिळता—था रो बाप भीमा भाटी

चट पाछा अवाज आवती—धूड था र लार थू नही मरिया भीमना !

ऊठा-पर बठिया भेटा री पाघडिया विखरण लागती अर भेंरा लवती सठाणिया रा काळजा अचाणचक ऊचा चढ जावता व गोदी म सूत्योडा टाबरिया-न कस र छाती रै चिपाय लेवती अर धाटी म मोरिया कुरळाय उठता—मे ऽ ऽ ऽ ओ ! मे ऽ ऽ आ ! जाण भीमजी ठाकर री ज वालता व्है—म ऽ ऽ ऽ ओ ! मे ऽ ऽ ऽ आ ! जै ऽ ऽ ऽ हो ! अ ऽ ऽ ऽ हो !

सौ-पचास पावडा आग निकळिया बाद ठाकर वालता—डरज मन अे बाई ! अ हिडक्यिा कुत्ता है तो म्हू ई भाटी भीमा हू फाड-न ग्वाय जाऊ साळा-न समभिया क नी ! जवाब-मे ऊठा-पर बठियोडा रा फगत काळजा धडकता—धडक धडक धडक !

कन–निकट। कुटेम–बुरा समय। रिजर्वेशन—आरक्षण। मूरिया–मोरिया नकेल। माथा–सिर (मस्तक मत्थज)। मूघो–महगा (महार्घ महग्घ)। लार–पीछे। धूड—रेत। वाळता—छोडते उडाते। धूड वाळता—नाम नहीं लेते। पडूत्तर—जवाब (प्रत्युत्तर)। चट—तुरत। तू नही मरिया—तू मर नही गया। पाघडिया—पगडिया। भरा लवती—ऊघती। काळजा—कलेजे। अचाणचक—अकाअेक। ऊचा इ०—जी दलहना, डर लगना। सूतियोडा—सोये हुअे। कस र—कसकर, दृढता से। जाण—मानो। पावडा—पर कदम। डरजे—डरना। बाई—बहन। हिडकिया—हिडके हुओ पागल। म्हू—हू म। फगत—फक्त, केवल।

(६)

ठाकर सगा सू दो ऊठ राखतो जायो अेक मोटो लद्द ऊठ अर दूजाडो कवळो पागळ मोटोडा पर बसारू बठाया जावता अर पागळ पर ठाकर खुद चढतो पागळ रवतो ई इण वास्त हो पण बसारू छोटा-मोटा तीन है जावता जर ठाकर-नै लद्दू री पूछ पकड न ढाण चालणा पडतो, धर मजला धर कूचा ! धर मजला, धर कूचा !

आज ई छोटा-मोटा पाच बसारू हैग्या हा सेठ घेवरचन्द, सेठाणी भमकू ननियो बाबूडो बीनणी अर गीगलो सेठा र सासरा म ब्याव हो इण वास्त सेठ परिवार सहित जाळोर जाय रह्या हा भीमजी पर सेठा री विशेष किरपा ही इण वास्त सेठजी भीमजी रा बधियोडा गिरायक हा सेठ न ठाकर र जलावा कोई दूजा ऊठ माथै गावतरा कियोडो याद नही हो, अठा तक क सेठ आप रा खुद रा ब्याव म ई ठाकर साथ उण रा ऊठ पर इज बठिया हा जै जरूरत पडती जर ठाकर रै घर समाचार कराय देवता अर ठाकर टम पर आधी रात रा ई—ममझ्या क नी—हाजर सेठा-सू ठाकर री घनिष्ठता रा अेक कारण औ हो वो ओ क सेठा रा सासरो अर ठाकर रो नानाणो अेक ईज गाव म हो भमकू अर भीमजी टाबरपणा मे घणा साथ रमिया हा सेठाणी न टाबरपण म खेलियोडा छिपना चोरी, आगळी पागळी अर तूबा-सरू आदि खेल आछी तर-सू याद हा इण वास्त परणिया बाद ही भमकू ठाकर नै भीमजी भाई कय-न बतळावती अर ठाकर ई उण न बाई कवता ठाकर र ससार म कोई सगी बन ना ही, इण कारण उण री ई सेठाणी र प्रति बडी ममता ही

सेठाणी डील री सतान अर दिल री दरियाव ही आ जाळोर रा प्रसिद्ध मुहता परिवार री डीकरी अर समदडी रा प्रसिद्ध सेठ परिवार री बीनणी ही

---

६ लद्दू—सामान ढोने वाला। कवळो पागळ—आरामदायक सवारी का ऊट। बसारू—बठनेवाल। ढाण—तेज चाल से। धर मजला इ०—क्रम क्रम स सीमा लाघते हुए। न यो—छुटका। बधियोडा—बध हुअे स्थायी। गिरायक—ग्राहक। माथ—ऊपर। सासरा—ससुराल। नानाणो—ननिहाल। भमकू—सेठानी का नाम। रमिया—खेल। टाबरपण—बचपन। परणिया बाद ही—विवाह हुअे बाद भी। बतलावती—पुकारती बुलाती। बाई—बहन के लिअ प्यार का शब्द। कवतो—कहता था। नी—नही। डील—शरीर। दरियाव—सागर उदार।

मुहता मारवाड़ रा मुसद्दी हा ता सेठ लिछमी रा लाडला मुहता जाळोर रा गढ री रक्षा म गढपतिया साथ कई वार तरवारा वजायी ही ता सेठा री लिछमी रै वार-मे इ कइ दतकथावा दुनिया री जबान पर ही

(७)

तीज रो चदरमा उग्यो अर ऊठा लूणी नदी नाघी उणी वखत डाबी तरफ नदी री ढा पर आयोडा गोगा खेजडा पर वठियोडी भरवी बाली—क ऽ ऽ क क ऽ ऽ क, चरर चरर चरर ! रात रा पला पोर म वरण इसी नी बोली कै जाणै भाटा मे करवत चाली है सठजी मोरी खाच'र आगला ऊठ न रोक लियो अर ठरता ईज दोयू ऊठ पाछला पग चौडा कर न चाटण लाग्या ठाकर लद्, री पूछ छोड र अेक कानी आयग्यो उण रेत-सू भरियाडा पगरखा भाटक र पाछा पर लिया थाडी दर तक काई अेक शब्द ई नहीं बोल्यो सिरफ ऊठ चीडता रह्या—तरर-तरर-तरर ! अर कोचरी बोलती रही—चरर-चरर ! क ऽ ऽ क क ऽ ऽ क, चरर चरर चरर !

छेवट ठाकर मून तोडियो अर बोलियो—मन चगा तो कठोती मे गगा, खडो सेठा ! भूरा-न अर भूरा न खडता ईज ओ आगला पग-सू आवडग्यो

ठाकर बोलियो—चेत भाई ! चेत भूरा ! चेत !

सूडाळा दुख भजणा सभाज बाळो वम
सारा पला सुमरिय गवरी-पुत्र गुणेस !

अर भूरै सभळता ईज नाण पकडनी ठाकर पाछी पूछ पकडली पण

डीकरा—लडकी । बीनणा—दुलहिन । मुसद्दी—अधिकारी ।

७ तीज—(कृष्णपक्ष की) तृतीया । उणा—उसी । डाबी—बायी । ढा—कगार । खेजडा—शमी का पेड । गोगा—गोगाजी नामक देवता से अधिष्ठित । भरवी—उल्लू की प्रकृति का मादा पक्षी जिसके बोलने पर लोग शकुना पर विचार करते हैं । पला पोर—पहला पहर । इसी नी—ऐसी नहीं—असी । जाण—मानो । भाटा—पत्थर । करवत—आरा (करपत्र) । मोरी—ऊट की मोहरा (लगाम) । ठरता—ठहरते । चीडण—पगाव करन । भाटक र—झटकार कर । पाछा—वापिस फिर । कोचरी—भरवी ।

छेवट—अत म मून—मौन चुप्पी । खडा—चलाओ । आवडग्यो—ठोकर खाकर गिर पडा । बाळा—बालक । वस—अवस्था । डाण—ऊट की तेज

मन म अेक काटो गड्यो—सुगन बडा खराब हवा ऊनाळा रा मौसम रात री टैंम मारग बडा खराब गूगळा री वाक्ड अर वरी री मिनखमार भाखरी वीच में आवै दायू लुटारा रा खाम अडडा ठाकर रो मन मोळो पड्‌ग्या पण अब ऊखळ म मायो देय र मूसळा-सू किसो डर ? जगदबा महाय करसी, समझ्या क नी—ठाकर मन में ईज बालिया।

(८)

नदी लाघता इज पोकरण ठिकाणा रो गाव करमाखास आव अठा-सू आगै खारो सरू व्है जाव खारो लालाणा-सू लगाय-न राखी तक पाच कोस री भू म फलियोडो है बिल्कुल सपाट तालर उडणखटली री मदान है जिसो धरती खारी जहर अर निजर पूग जितरै वठई झाड-बाटकै नै घास फूस रो नाव ई नी इण धरती मे साडा अर पीपूडी परडा घणी मिळ वरसात रा दिना म अठ पाणी भरीज जावै कोई-कोई जगै थोडी घास ई ऊग, पण पाणी सूखिया पछै लूण री पापडिया जम जाव ऊनाळा मे लूण रा कण चमक र आखिया-नै पाणी रो धाखो देव तिरस्या हिरण्या पाणी देख'र दौडता रैव अर थाक'र मर जाव इण खारच री वीचलो भाग गूगळा री वाक्ड बाजै, जठै धव़ळा दिन रा ई मिनख तो काई चिडी रो जायो ई नही मिल इण कारण धरती मे मारग बैवता बटाऊडा सक

खारच री काठी धरती-पर ठाकर रा ऊ ठ रपटक चाल-सू जाय रह्या हा

ऊट की तज चाल। काटो गड्यो—खटका रह गया। वाक्ड—सीमा। मिनखमार—मनुष्य मारक हत्यारी। मोळो—हलका।

८ खारो—ऊसर बजर, कल्लर। लगाय-न—लगाकर, लकर। भू—भूमि दूरा। तालर—ताल, मदान। उडणखटली—हवाई जहाज। साडा—अेक प्रकार का जगली जानवर जिसकी चर्बी दवा के काम आती है। जितर—जहा तक वहा तक। झाड-बाटका—पेड-पौध और पत्ते।

पीपूडी परडा—अेक प्रकार की छोटी सापिनें। भरीज जावै—भर जाता है। कोई जग—किसी किसी जगह पर। पापडी—पपडा। तिरस्या—प्यास। थाक'र—थककर। वीचला—वीच का। बाजै—कहलाता है। धव़ळा दिन रा ई—धोळे (प्रकाश भरे) दिन म भी। चिडी रो जायो—चिडिया का बच्चा। वैवता—चलत। बटाऊडा—पथिक। सक—डरते हैं। खारच—वह भूमि

ठाकर ई लार रो-आर घर मजला घर कूचा म हो ऊनाळा री रात धीमी मुधरी पून अर पगा नीच काठी धरती ठाकर कल्पना-लोक म पूगियोड़ो हो—आधो जागतो आधो ऊघाणो दिक्खणदिसा मू आवती पून री ल रा साग गीत रा भणकारो काना म पड़ियो—

नड़ी नेड़ी करजो ढोला ! चाकरी जी
साझ पड़ या घर आव मदी रग लागो

सावरड़ो गाव नजीक आय रह यो हो भीला री बस्ती म कोई र ब्याव हो भीलड़िया री राग ई छानी नही र व ठाकर ई आप रै कल्पना र घोड़ा रा बागा ढीली छोड मेली ही ऊ घ म ईज गुणगुणावण लागियो—

नड़ी नड़ी करजा ढाला ! चाकरी जी
साझ पड़या घर आव मदी र ग लागा

आखिया आग बीस वरसा पला रो चितराम आयग्यो ठाकर इ मोटियारपणा म नेड़ी-नेड़ी चाकरी कीधी ही चाकरी-पर जावता वखत सोना माटी मोटी आखिया म आसूड़ा भर र कह यो हो—पाछा वगा पधारजो

अर ठाकर साचाणी पनरव दिन ईज चाकरी छोड र घरा आयग्यो हो फगत साढी र कारण ईज नही पण अेक दूजा कारण ई हैग्या हो कळपना आप रा पख ओर आर-सू फड़फड़ाया—ठाकर गट सिवाणा म काम करता अेक अैलकार री चाकरी म रह यो हा अलकार जात रो बिरामण पण घर म निपूतो हो बिरामण देवता रो वजन पूरो ढाई मण अर बिरा मणी रा ढाई मण पाच सर हा ठाकर न देग्रोजी री पूरी हाजरी उठावणी पड़ती बिरामण-देवतावा री हाजरी उठावणी अेक राजपूत रो धरम है—आ

काठी—कड़ी कठोर। ल्पटक—दौड़ते हुए तेज गति स। घर मजला घर कूचा—कदम कदम बढ रहा था गतिशील था। ऊनाळो—गर्मी। मुधरी—धीमी (मधुर)। ऊघाणो—ऊघ म। मदी—मह्दी। ब्याव—विवाह। छानी—छिपा। वागा—वगाम। चितराम—चित्र। मोटियारपणो—जवानी। सोढी—सोना नामक राजपूत वश की कन्या, भीमजी की पत्नी जो सोढा वश का थी। साचाणी—सचमुच। पनरव—पद्रह्वें। फगत—फकत, केवल। कळपना इ०—कल्पना सक्रिय हो उठी भीमजी कल्पना म देखने लगा। सिवाणा—अेक स्थान का नाम। अलकार—अह्लकार कमचारी। निपूतो—पुत्रहीन। खीच—खीचड़ा खीचड़ा बाजरी और दाल का बनता

समझ'र ठाकर कपडा धोया वरतण माजिया अर ऊखळ मे खीच ई कूटियो पण पनरव्र दिन देवीजी ठाकर-न पेट मसळण रो हुकम दियो तो ठाकर नीचो माथा घाल र घर कानी रवान हुयो सो घरैं आय न ईज पगरखी उतारी

(६)

सान्नरडो गाव खासो लार छूट्यो हो अर गीत री अवाज मद पडती पडती बद व्हैगी ही ऊठ ढाण छोड र आपराळ म चाल रह या हा अर आगाळी मरू कर दी ही ठाकर ई झेरा मार्थं घूगम्यो हा क अचाणचक अेक भक्को मो लागियो अर नीद अेक्दम उचटगी ऊठा आगाळणो बद कर दिया अर कान ऊचा कर'र चालता चालता अठी उठी दखण लागग्या

आग थोडी दूरी पर मिनखा र गुणगुणावण री अर खुसर-पुसर री अवाजआय रही ही ठाकर आखिया ममळ र देखिया तो जीवणी कानी वेरी री भाखरी ऊभी ही अर आडो मारग ई नजीक न्हे ठाकर जोर-सू खेंखारा किया अर ऊ ठा न टिच कारी दीव्री भूरा समळ ममळ र आगैं पग धरण लागियो पण थोडीमीक दूर जावता ईज उण-न रुकणो पडियो कारण क मारग र स वीच च्यार जमदूत आडा ऊभा हा ऊ ठा र रुक्ता ईज ठाकर धारियो खाथ कर-न आगैं आयग्यो

जमदूत ठाकर र बिरकुल सामन ऊभा हा सस्तर पाटी-सू लस, मूडा र बुकनी न्यिोडा अर हाथ म नागी तरवारा लियाडा चदरमा रा चादणा-म वा री तरवारा चमक री ही अर साथ-साथ आखिया ई

आप रो भला चात्र तो अेक कानी हट जा रे ऊ ठवाळा !—अेक जमदूत बाल्यो

ठाकर थोडा हँस र जवाब दियो—उण रात म्हारो जनम नही हुग्रा रे कुत्ता !

है बाजरी को पहले ओखली म कूटत हैं फिर दाल मिलाकर खीचडा बनात है। पगरखी—जूती।

६ खासो—काफी। ढाण—तेज चाल। आपरोळ—ऊट की धीमा साधारण चाल। आगाळी—उगाली जुगाली। झेरा—नींद के झोंके। अठी-उठी—इधर उधर। गुणगुणावण—गुनगुनाना धीमी आवाज। जीवणी कानी—दाहिनी ओर। भाखरी—पहाडी। वरी री—वेरा की पहाडी (नाम)। आडो मारग—आखो के समानातर बायी ओर से दाहिनी ओर और दाहिनी ओर स बायी ओर को गया हुआ माग। नजीक—नजदीक। खखारो—खासना। टिचकारी—टिच टिच की ध्वनि पशुओ को हाकने का शब्द। आडा—बीच म। धारियो—अेक शस्त्र। सस्तरपाटी इ०—हथियार लिये हुअे। बुकानी—ढाटा।

ऊभा था-न लट ता म्हारा जीविया न धिरगार है दुनिया म्हारा नाव-पर थूकना अर म्हार वडेरा री कीरती न काळख लाग जावैला

लडाई चालती रीं अर मौको मिलता ईज ठाकर रै धारिया रो अक भरपूर हाथ पडियो—वडद करतो बुकानी समेत माथो मूळा री कापी रै ज्यू आघो आय पडियो अर हाथ री तरवार खळद करती भूग र पगा म जाय पडी

सेठाणी र खानदानी खून उछाळो लिया अर वणिक वृद्धि अवसर देख्यो खटाक करती सेठाणी धरती पर अर हाथ तरवार री मूठ पर लग्यियो ओढणी कमर मे लपेट'र वा चडिका-सी भीमजी वीरा री मदद म जाय पूगी—जाणे तूबा-तरू खेल मे उतरी है पण वा पूगी पूगी जितर तो अेक तरवार ठाकर रो भेजो फाड र कनपडा रो लपतरो उथेळनी स्याधा तक आय पूगी लोही रो पडनाळो-सो छूटियो—बग-बग बग !

स्तरा मे लाग-सू तरवार रा अेक भरपूर हाथ पडियो भीमजी पर वार करणवाळा रो माथो आघो कटग्यो अर आखिया रा कोया बारै आयग्या

आचीती बिजळी पडी देख'र लुटेरा रा पग धूजग्या अर वचियोडा दोयू जणा जीव लेय नै पड भागा

ढळती रात म ठाकर री लास थरपड-थरपड करती धरती-पर डिगण लागी पण सेठाणी लास न सभाळ नीं वीरा-रो फाटोडो माथो खोळा मे लिया वाद उण रा हिया फाटण लागियो अर मूडा-सू अेक चीख निकळी—वी रा रे ! ऽऽऽ भीमजी वीरा ऽ ऽ ऽ र !

चीख रै माथै पूरी घाटी म मोरिया कुरळाय उटिया—म ऽ ऽ ऽ आ ! म ऽऽऽआ ! मे ऽऽऽआ ! जाण भीमजी ठाकर री ज बानता है—ज ऽ ऽ हा ! ज ऽऽऽ हा !

अर पछै तर म डूगर गूज उटिया—जै ऽ ऽ ऽ ना ! जै ऽ ऽऽ हा !

ऊभा—खडे । रहत जीवित रहत । धिरगार—धिक्कार धिक्कार । काळख—कालुष्य कलक । री=रही । वडद—आघात का आवाज । मूळा री—मूला की । कापी—चाकू म काटा हुआ गोल टुकडा (कप-कप्प=काटना) । आघो—दूर । खळद—गिरने का आवाज । उछाळो लियो—उछला । खटाक करती—तुरन्त । लरियो—लपेटिया रग का । आग्या—आगना । तूबा—ना । कनपडा—कनपटी लपतरा । उथेळनी—उखाडती हुई । लाग सू—पीछे म । कोया—आँख पडनाळो—पनाळा (स० प्रनाली) । बग-बग—तेज प्रवाह म बहने का आवाज । आचीती—अचिन्तित अप्रत्याशित । वचियोडा—बाका बचे हुए । पड भागा—भाग चले । निकळी—निकली हुई । थरपड ट०—तडफडाता हुई । खोळा—गोद ।

साहित्य

(साहित्यिक निबंध)

[गोवधन शर्मा]

[श्री गोवधन शर्मा का जन्म जोधपुर म स० १९८४ म हुआ। प्रारम्भ म ये साहित्य संस्थान उदयपुर म रहे। इस समय गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद, से संबंधित कॉलेज म हिन्दी के अध्यापक हैं।

प्राकृत अपभ्रंश राजस्थानी गुजराती आदि भाषाओं के ये अच्छे ज्ञाता हैं। 'प्राकृत और अपभ्रंश का डिंगल साहित्य पर प्रभाव' शीर्षक शोधप्रबंध पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने इन्हें पी एच डी की उपाधि प्रदान की। डिंगल-साहित्य इनकी सबसे महत्वपूर्ण रचना है।

संकलित निबन्ध सवप्रथम स २०१२ म मरुवाणी वर्ष २ अंक २ मे प्रकाशित हुआ था। राजस्थानी निबंध संग्रह म भी यह संगृहीत है। इसम लेखक ने साहित्य की महत्ता उसकी उपयोगिता उसके क्षेत्र एवं उसके स्वरूप पर प्रवाहमयी भावुक शैली म रोचक प्रकाश डाला है।]

(१)

अेक सवाल उठै— साहित कांई है ? उण रो कांई अरथ ? समाज म उण री कांई जरूरत ? साहित पन्नियां-स पेट भरीजै नीं भूखो तो धापियां पतीजै कविता कांणी नाटक ख्यान ख्याल बात की काम रा ? अणकमाऊ-र मन भावै कमाऊ पूत न तो मरण री फुरसत कोनी कांई करै वो इण साहित रो ? जमानो बोदो रुजगार चलै नीं साहित खाटी बीमारी इण विध लोग सका करै

बात वाजवी पण अेक गंवार न अेक हीरा लाधो वो उण म कांई समझै ? मन म घणो हरख हुवो—ननिया ताईं रमत लाधी हीरा री कीमत

---

१ भरीजै ना—भरता नहीं। धापियां—तृप्त हुआ पेट भरने पर ही। पतीजै—पतियाता है विश्वास करता है। कांणी—कहानी। की—क्या। अणकमाऊ—न कमाने वाला निठल्ला। बोदो—खराब। रुजगार इ०—रोजगार चलता नहीं।

वाजवी—वाजिब ठीक उचित। लाधो—मिला (लभ—लब्ध)। ननिया—नन्हा (स श्लक्ष्ण, अप न ह)। ताईं—लिये। रमत—खेल खिलौना। खाटी—

तो जौहरी जाणै आ वात साहित ताईं साची आज रा जमानो खोटा आपा सरीर ताईं जतन करा कवा—पैलो सुख नीरोगी काया टका घणा खरचा सियाळ वधज बाधा वदजो री सरण जावा देवी-दवता मनावा पण सरीर सू वत्तो मन मन न दिमाग न्मिाग सारू की करा नी पट न जीमण दा पण न्मिाग-नै खुराक नी दा आज रा जुग रा ओ उल्टो वायरो आ वात उचित कोनी

आज रा दिन साहित सव सू वत्तो इण री सव-सू ज्यादा जरूरत भौतिक वाद रो भूत आज जगत रै दाळो हुग्यो अण-वम नै हाइड्रोजन-वम मिनख मद मे आधो भरम सू आपा मूनम्यो विज्ञान रो मालक वणतो सेवक वण ग्यो मौत र मूडै जावा विनास रा बीज वावै आज मरजाद टूटगी वावळो मानखा दौड है आपत समजै नी जेक-सू-जेक भयकर साधन सजोवै मार काट मचावा इण विनास-वेळा म साहित सव-स जरूरी मिनखपणा री रक्षा तो साहित-ही करसी जद जगत म मिनखपणा रो काळ पडै लोग आपो गमाय कूडी वाता लार दौड , भूठी वाता सिर मोड वण साची लाजै, तो साहित म्हा-न साचा मारग वताव ठोकरा सू वचाव, काम न वणावै मानखा री मरजाद राख इण वास्त आज रा जुग म साहित सब सू जरूरी

कव क ओ मिनख जमारो वार वार नी मिन इण रो कारण ओ ईज क मानखा सगळा प्राणिया सू सिर हाथी सरीमा बळवान न ना र सरीसा भय कर जीवा-न चाव ज्यू नचाव आभा म पखेरू दाईं उड समदरा न पार कर कुदरत नै वस कर इण सब रो कारण काईं ? मानव ओ सगळो करतब आप री चतराई सू कीनो मेहनत सू काना ताकत सू नी ताकत रो सवाल

करा वा कवा—(हम) कहते है। पलो—पहला। टका—टके = रुपय पस। सियाळ—शीतकाल मे। वधज बाधा—पहले स उपाय करते है। वत्तो—विशेप की—कुछ। दा—(हम) दते है। जीमण—भोजन। वायरो—हवा। दोळा—चारोओर। भरम—भ्राति। आपो—अपने आपको। वणतो—वनता-वनता। मूड—मुह मे। वाव—बोता है। मानखा—मनुष्यता मानवता मानव-समूह। आपत—विपत्ति आफ्त। सजोव—सचय करता है। काळ पड—अकाल पडता है अभाव होना है। गमाय—गवाकर। कूडी—भूठी। लार—पीछे। साची—सच्ची (वातें)। लाज—लज्जित होती हैं। वणावै—वनाता है सिद्ध करता है।

मिनख जमारो—मनुष्य जन्म। ओईज—यहा। सिर—बढकर। चाव ज्यू—जसे चाहता है वसे। आभा—आकाश। दाईं—समान (नाईं)।

उठ कोनी तावत ही दुनिया म सग होती तो आज घोडा माथ मिनख नहीं मिनख माथै घोडो सवारी करतो पण मिनख रो ज्ञान उण न सब रो सिरमोड बणायो जुगा सू मिनख ज्ञान रा खोज म खपियो पीढिया तर पीढिया कामीस की कामयाब हुवो इण ज्ञान रा अपूरब भडार, अनुभव रो आगार न जमाना री भणकार—इण रा नाम साहित अच्छाई रो घर, फूटरपण रो माप न मना रो दरपण—इण रो नाम साहित भावनावा रो चितराम जीवण रा अरथ, न धरम रो मूळ—इण रो नाम साहित जगत रो सार तरक्की रो कारण न धरती न सरग वगावणवाळो—इण रो नाम साहित इण धरती माथ जो भी चोखा सुदर न हितकारी—उण रा नाम साहित

(२)

साहित रो क्षत्र घणो विशाळ इण रो ओरण घणो लाबो घणो चवडो मा री ममता न बनड रा लाड सती रो तेज न वीरा रो दप मिरगानणी री लाज नै कत रो मुळकणो भावज रा सुरगी चूदडी न नणद री रोळ बटी री रमत न वीरा री राखी जामी रा सपना न धण रा फरज—अै सग साहित री ओरण रा रूख करसा रो परेवो न बोडिया री मेहनत बागा रा रगरगीला फूल न खेजडिया रा खोखा बाजरी रा फूल न काचर बोर मतीरा सठा रा महल न रबारिया रा झूपा, नयी नवेली वरखा न मुळकती सरद तपाती हुकाती तिसा मारती लू न कपाती धूजाती सिया मारती डाफर ऊचा-ऊचा भाखर न मोटा मोटा धोरा आमोजा रो वळवळतो तावडो न पूनम री धोळी बगला री

सग—सब सबकुछ। खपियो—पचा पूरा हुआ। तर—तर। कामीस—कोशिश। फूटरपणो—अच्छाई सुन्दरता। दरपण=प्रतिबिंबित करने वाला। चितराम—चित्र। सरग—स्वर्ग।

२ ओरण—देवता आदि के निम छोडा हुआ जगल। चवडो—चौडा। बनड—बहिनी बहिन। मुळकणा—मुसकुराना स्मित। चूदडी—चुनरी। नणद—ननद। रोळ—हास्य विनोद। रमत—क्रीडा। जामी—जन्मदाता। धण—प्रेयसी पत्नी। सग—सब। करसा—किसान। परेवो—पसीना (?)। बोडिया—(?)। खेजडी—शमी का पेड। खोखा—शमी की पकी फलिया। काचर इ—कचरी बेर तरबूज राजस्थान के प्रसिद्ध फल। महल—महल। रबारी—ऊट चराने वाले। झूपा—झोपडे। तिसा मारती—प्यास मारती हुई। धूजाती=कपाती। सिया—सर्दी (जाडा)। डाफर—शीतकाल की तेज ठडी हवा। वळवळतो—कडकडाता हुआ जलता

थाव ज्यू चाल्णी—अ सग साहित र ओरण रा रूख मूछा री मरोड न कुळ री आण सारू पग पग माया पाछटणवानी वीर भावना आपणी धरती री मरजाद न प्रेम सारु पग-पग त्याग करणवाळी देशभक्ति, ओछा न सूगला मिनखा-न देख न पदा होवणवाळी घृणा भला न चोखा मिनखा-नै देख-न आवणवाळो लाड —अ सग साहित रा क्षेत्र म गिणीज साहित रा देस अेक अनोखो दस इण दस-री वेला म लाही दोड भाठा मे प्राण वस पखेरू न जिनावर मिनखा री बोली बोल, सुरगा फूल मुळके, न चिरत्या रोव इण साहित री अपरपार महमा

लाग साहित न कैव—ओ सत्य शिव सुन्दरम है इण रो काई अरथ ? इण री काई विगत ? आ घणी जरूरी वात है काइ साहित म सग वाता साची हुव ? काई उण मे लिखियोडो हुव कै रामूडा रा खेत म किसी नेपा हुयी ? साहित काई सदाई जडी देख न डी ईज कव ? पछ उण-म कल्पना क्यू ?—अ सैग सवाल तो है साहित सदाई साची बात कव इण म कोई मीन न मख पण ओ साच नय ढग रो है साहित नी बतावै क रामूडै र अवकै किसी नपा हुयी पण वो ओ वतावै क रामूड-नै घणी नपा देख-नै घणो हरण हुवो साहित मिनखा-स्वभाव री सचाई वतावै मिनखा रो रगढग वदळै पण सुभाव नी वदळ जद ईज ता विलायत रा नाटककार शक्सपियर रा नाटक जुगा-सू सग रसिका-न सुहाव काळीदास री कविता चोखी लाग न चेखव री कहाणिया मन-म मान जगाव

'शिव रो अरथ भलाई करणवाळा हुवै साहित कद भूडा बात नी बतावै उण-सू ज्ञान री वधोतरी हुव सग जीवा री भावनावा साहित र सामल इण विध साहित जगत री भलाई कर

ससार-म जका फूटरा वो साहित रै काम रा साहित-म सूगना टिक नी] सक इण फूटरपण री भावना साहित नै पागडा देव ऊची-ऊची कल्पना जीवण न जगत म जका खराव उण न साहित आप र करतब-सू फूटरपण म ढाळ धरती-नै सरग बणाव जिण-सू साहित सत्य, शिव, सुन्दरम् कवीज

हुआ। तावडा—धूप। आण—आन। पाछटणा—पटकना, गिराना। सूगना—घृणित, बुरे। गिणीजै—गिने जाते हैं। साचै—साथ। भाठा—पत्थर। चिरत्या—कृत्तिका या नक्षत्रपुंज। शिव—कल्याणकर। नपा—फायदा। जडी—जमी। वडी—वैसी। मीन न मख—सदेह। अवकै—इस बार। जद ईज—जभी। विलायत—इगलैंड। चेखव—रूस का प्रसिद्ध कथाकार। भूडी—बुरी। वधोतरी—वृद्धि। फूटरपणा—सौन्दर्य। कवीज—कहा जाता है।

नकटा देव नै मुरडा पुजारी

(निबंध)

[विजयदान देथा]

[श्री विजयदान देथा का जन्म स० १९८३ मे बिलाडा तहसील के बोरूदा नामक गाव मे हुआ। इनके पितामह श्री जुगतीदानजी देथा तथा पिता श्री सबळदानजी देथा राजस्थानी भाषा के अच्छे कवि थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा जतारण तथा बाडमेर मे और उच्च शिक्षा जसवन्त कॉलेज जोधपुर मे हुई।

विद्यार्थी-काल से ही साहित्य की ओर इनकी विशेष रुचि रही। राजस्थानी लोक साहित्य और लोक संस्कृति के ये गंभीर अध्येता और विश्लेषक है। बाता रा फुलवाडी नाम से इन्होने राजस्थानी लोककथाओ के कई भाग प्रकाशित किये हैं।

सन १९५३ मे जोधपुर से प्रेरणा मासिक-पत्र के आठ अको का इन्होने सम्पादन किया। साहित्य और समाज इनके साहित्यिक निबंधो का सकलन है। इस समय ये रूपायन संस्थान बोरूदा से सम्बन्धित हैं।

सकलित निबन्ध वाणी मासिक पत्रिका के बानगी अक मे प्रकाशित हुआ था। इसमे लेखक ने रासाजी बाजी के माध्यम से वर्तमान शासन-व्यवस्था मे प्रचलित लालफीता शाही भ्रष्टाचार स्वार्थपरता आदि बुराइयो को उघाड कर सामने रखा है। प्रयुक्त मुहावरो कहावतो और लोकोक्तियो से राजस्थानी भाषा की शक्तिमत्ता का अच्छा परिचय मिलता है।]

म्हार गाव रा रासोजी बाजी बाता रा पूतळा इ चौगळा मे बाजिदा कुवर रो खजानो खूट जाय पण बा र आखाणा रो खजानो को खूटै नी लाबा हाथा रा फटकारा देता अठा मिठाय मिठाय ने बाल काढ—जाण फूल भड लावा

मेरे गाव के रासाजी बापजी बातो के बस पुतले ही (रासाजी-नाम बाजी—बापजी, आदर का शब्द बाबाजी)। मुहल्ले मे प्रसिद्ध (नामवर)। कुवर का कोष समाप्त हो जाय पर उनका कहावतो का कोष नही खूटता। लवे हाथो के फटकार देते हुए अस माठे बना-बना कर बाल निकालते (बातत) हैं कि माना फूल भड रहे हो। लबी और पतली देह लबी गर्दन, तीखी नाक

नै पतळो डील लावी नस, तीखो नाक, पतळो अर लाबो मूडा दाता रो चौको थोडो-सो बारै तावा वरणो रग लटठा री ऊची धोती विना फडका री लावी गोळ बाया रा ढीलो कुडतो मटिया गोळ फटो—डावै पसवाड की तीखो अर डीगो डावै कान-रा कोकरा सनै अेक भाड बोर जितो काळो मस्सो बाजी उणियार रा फूठरा तो घणा कोनी पण देखण म सुवावणा घणा ई लागै ऊच आयोडा धाळा चौका माथ वा री हसी अर वा रा मीठा बोल अडा लाग जाण सारदा माता हस विराजी

वा री वाता सुणवा-न कोई मारग चलता ई ऊभो रै जाव तो पछ भस चूघती हुवै तो ई पग को उठ नी कदई कोई पूछ—बाजी ! था-न अडी-अडी वाता कठा-सू ऊक्ल की ता म्हार ई पल्लै घालो तो बाजी थोडा-सा मुळक-न तुरत जवाब द—अरे भाया ! अक्ल उधारी ना मिल हेत न हाट विकाय आप-आपर हिया री उगतिया है अे कोई दन्नण नेन्नण री चीजा कोनी—अक्ल सरीरा ऊपजै दीना लाग डाम बरसत पाणी री छाटा गिणाज तो वा रा ओखाणा गिणीज

पतला और लबा मुह (चेहरा)। दातो का चौका (आगे के चार दात) थोडा सा बाहर (निकला हुआ)। तावे जमा रग। लटठे की ऊची धोती बिना फडके (लटकते पल्ले) की। लबी गोल बाहो का ढीला कुर्ता। माटी के रग का गोल साफा (पगडी)। बायी ओर कुछ तीखा और ऊचा। बाये कान के कोकरे ( ) क पास अेक झडबेरी जितना काला मस्सा। बाबाजी आकृति के सुदर तो बहुत नही पर देखने म सुहावने बहुत-ही लगते ह। ऊचे आये हुअे सफेद चौके पर उनकी हसी और उनके मीठे बोल अैसे लगते है मानो हस पर शोभित हुई (बैठी हुई) माता सरस्वती हो।

उनकी बात सुनने के लिअे कोई मार्ग चलता भी खडा रह जाता है तो फिर (चाहे) बछडा भैस का दूध पी रहा हो तो भी पैर नही उठाता। कभी कोई पूछता है—बाबाजी ! आप को अैसी अैसी बातें कहा से सूझती है कुछ तो मेरे भी पल्ले म डालो (मुझे भी दो मुझे भी सिखाओ)। तो बाबाजी थोडे से मुसकुराकर तुरत उत्तर देते हैं—अरे भाई ! बुद्धि उधार नही मिलती, प्रेम हाट म नही बिकता (प्रसिद्ध कहावत) अपने-अपने हृदय की उक्तिया है ये कोई देने-लेने की चीज नही, बुद्धि शरीर म उपजती है देने से तो डाम (गर्म लोहे आदि के दाग) आते हैं (राजस्थानी कहावत)। बरसते हुअे पानी की बूदें गिनी जाय तो उनकी कहावतें गिनी जाय (ओखाणा-म० उपाख्यान)।

अकर व मुआवजा लेवण साम्ह जोधपुर गया च्यार पाच दिन दाठा काया होय-न पाछा खाली हाथ आया अब क्यू पूछो ? बारूद रा कोठार म जाण तिणग पडा मोटर-सू उतरता ई बोल्या—नकटा देव न सुरडा पुजारी अडा ई राज करणवाळा न अडा ई अलवार पना भूवा रा पूत अक-अेक स आगला ! इण राज म तो सूक बिना पान ई को हिल नी वात करार्ई-ग पईसा माग ठेट लिलाड माथ वूक माडियोडी कीकर धाप ? किण किण न समभावस्या ? आ तो कूव ई भाग पडी पला जाणतो—इण राज म की न-की तो अळियो कम हुयो ई हुवला पण डूगरिया रळियावणा आघा ईसरदास काम पड या-ई ठा पड इण कळियार-दाग म इमाफ कठ ? उपासरा म कागमिया रो काइ काम ?

बाजी वाता करता-करता ई पावती रा चातरा-माथ जा बठया ! लाख मायला मटिया थलो चातरा माथ धरयो प्याऊ कानी लावा हाथ रा इसारो कर-न बोल्या—भूमरिया ! अेक लोटो तो भर ला थारो राम भलो कर वाता-

---

अेक वार व (जमीन का) मुआवजा लेन का जोधपुर गय । चार-पाच दिन खूब दुखी होकर खाली हाथ वापिस आय । अब क्यो पूछिय बारूद के भडार म मानो चिनगारी पड गयी । मोटर स उतरत ही बोल—नकटे देवता और बनाम पुजारी । असे ही (निकम्म) राज्य करन वाले और अस ही (निकम्म) अहलकार (कमचारी) । पना बुआ क पूत अेक-अेक स बढकर । इस राज्य म तो रिश्वत क बिना पत्ता भी नही हिलता । बात करन क पस मागत हैं । (पानी पीन का) ठेट ललाट पर चुल्लू लगाय हुअ । बस पेट भरे ? किस किस को समभावेंगे ? यह तो कुव म भाग पडी हुई है—इस कुव का पानी जो पीते हैं सभी नश म हो जाते हैं—ऊपर स नीचे तक सभी रिश्वतखोर हैं । पहल समभता था कि इस राज्य म कुछ न कुछ तो अळिया (कूडा-करकट) कम हुआ होगा । पर ईसरदास कहता है कि पहाड दूर स ही सुहावने लगते हैं । काम पडन पर ही पता लगता है । इस गय बात अधर-खातेम न्याय कहा ? (जना साधुओ क) उपाश्रय म कघो का क्या काम (जन साधु कघा नही रखत व उन्हे जड म उखाड दते हैं) ।

बाबाजी बात करते करत ही पाम क चबूतर पर जा बठे । कारर म का मटमला थला चबूतर पर रखा । प्याऊ की ओर लबे हाथ का (=हाथ लबा करक) इशारा करके बोल—अरे भूमरिय ! अक लोटा तो भर ला, राम तेरा भला कर । बाता-बाता म ध्यान ही नहा रहा तालू सूख रहा पड गया

वाता-म ध्यान ई को रह या नी, ताळवो मुरदरो पड्यो सावळ बोलीजै ई कोनी भूमर दौड-न पाणी लायो बाजी धाप-न पाणी पियो लोटो पाछो पकडाता वाल्या—जीवता रै भाया ! राम थारी हजारी ऊमर करै

लारली वात रो सिलसिला पाछा पकड्यो न कवण लागा—जथा राजा तथा प्रजा ओ तो हळोहळ सूक रो ईज राज है पछ अलकार क्यू ओछी ताणै ? रूखा जडा टेटा, न वाप जडा बेटा मा करै सो धी कर आ तो दखादगी री चलगत है देखा, मोज वणी वादरी-न वीछू खाया जात री राईकाणी न फेर डाकण ऊटा चढ चढ खाय अडी वगत आयी नी फेर कोई आसी ! पाचू आगळिया घी म नै माथो कडाव-म मामा रो ब्याव न मा पुरसगारी जीमो वेटा ! रात अधारी अव कुण कवै ब्याव भूडो ?

दो-तीन दिन तो धीरज राख्यो आण्यो कमस डाळी निवैला पण सापा रै किसी साव ? अ तो भाई ! दूख जिण रै दूखणो न पाक जिणर पीड अ बाबू लोग कद ई किणी रा हुया ? वाळी आगळी माथ ई को मूत नी अ तो नेम ई धार लियो क सूक बिना काम ई को करणो नी इणा-सू फेर काई वण आ

(सून गया)। अच्छी तरह बोला ही नहीं जाता। भूमर दौडकर पानी लाया। बाबाजी ने पेट भर कर पानी पिया। लोटा वापिस पकडाते हुअे बोल—जीता रह भाई ! राम तेरी हजार वर्षों की उम्र करे।

पिछली बात का सिलसिला वापिस पकडा और कहने लगे—यथा राजा तथा प्रजा यह तो हलाहल (=खूब गहरा) रिश्वत का ही राज्य है। फिर कर्मचारी क्या ओछी तान (पीछे रह या कमी रखें)। पेड जैसे टेंट (अर्थात् फल) और बाप जैसे बेटे। मा करती है सो बेटी करती है (धी<दुहिता)। यह तो देखादेखी की चाल है। देखो मौज बन गयी। बदरी थी और (उसे) बिच्छू खा गया। जाति की राईकानी (राईका—ऊंट चराने वाली जाति) और फिर डायन, ऊंटो पर चढ चढकर खाती है। असा वक्त (न) आया न फिर कभी आवेगा। पाचो उगलिया घी मे और सिर कढाई मे। मामा का विवाह और मा परोसने वाली फिर अधेरी रात बेटे ! जीमो (खूब माल उडाओ कोई देखने वाला नहीं)। अब कौन कहे कि विवाह खराब (कोई बुरा कहने वाला नहीं)।

दो-तीन दिन तो धीरज रखा समझा कदाचित डाली झुक जायगी (=काम बन जायगा)। पर सापो के कौन सा सबध ? ये तो भया ! जिसके दुखता है उसी का दुख और जिसके पकना है उसी को पीडा होती है। ये बाबू लोग कभी किसी के (सगे) हुअे ? कटी उगली पर भी नहीं मूतते। इन्होंने तो नियम ही बना लिया है कि रिश्वत के बिना काम ही नहीं करना। इनसे फिर

ऊदरी रा जाया तो ग्रडा ई खोदसी ऐ बाबू ता सुनार नमणा—आपरी मा रा ै हाचळ वाढ लेव । म्हारी तो अक्ल ई कह यो को करयो नी जमी मूता आकास चाट मन म महाराजा हुयोडा सीधो ऊपरला जार बताव काक री पियाडी भतीजा नै कय मिनख न मिनख का गिण नी फगत आप री मारयोडी नै ई हलाल गिण पण ससार म वडावडा रो खेल है किणा लाठा अफसर रो टेलीफून आयो म्हार देखता देखना फटाफट काम हुयग्यो आकरा देव-न स कोई निवै म्हैं तो आ चार-पाच दिना म आछी तर पतवाण ली क लाठी जिण री भस लाठा री सकरायत है पईसा री खीर है गरीबा री कठ ै दाद फरियाद कोनी दूबळा जठ देवरा बराबर

थे तो सगळा जाणा ई ज हो क म्हार इता नठाव कठ ? हाथोहाथ फारगती करी कुण जोखा राख ? मूड मूड कह या—गाया तो ऊछरगी न पोठा लार छाडगी टका री हाडी फूटी इण रो कोई फिकर नी पण कुत्ता री जात ता पिछाणीजगी मुआवजो नी मिळियो जिक्ण री परवा नी पण भाडणा म ता

क्या बन आव (क्या हो सकेगा)। चुहिया के जन हुजे तो गड्ढे ही खोदेंगे। य बाबू ता सुनार क लक्षणो वाल हैं—अपने मा के ही आचल (स्तन) काट लें। मगी ता अक्ल ने ही कहा नही किया (=काम नही किया)। जमीन पर सोय हुअे आकाश को चाटते हैं। मन म महाराजा बन हुअे (=अपन का महाराजा समझते है)। सीधे उपर का जोर दिखाते हैं। चाचा की पी हुई (भाग) भतीजे को उगली है (=भतीज का नगा लाता है)। मनुष्य को मनुष्य नही गिनते। कवल अपनी मारी हुई को ही हलाल गिनते हैं।

पर ससार म बडा बडी का खेल है (बडे को भी बडा मिल जाता है)। किसी बडे (=जबदस्त) अफसर का टेलीफोन आया। मेरे देखत देखते फटाफट (=तुरत) काम हो गया। बडे देवता को सब कोइ नमस्कार करते है। मैंने तो इन चार-पाच दिना म अच्छी तरह परीक्षा करली कि जिसकी लाठी उसकी भस है। जबदस्तो की सक्राति (आनन्दोत्सव) है। पसो की खीर है। गरीबा की दाद फर्याद कही नही। दुबला जेठ देवरा के बराबर हाता है (उसका कोइ सम्मान नही करता उसे कोई नही गिनता)।

आप तो सभी जानते ही हैं कि मरे इतना धीरज कहा ? हाथाहाथ (तुरत) फारगती की (=निपटारा किया)। कौन जोखिम रख ? मुह पर ही कह डाला—गायें ता चरल को चली गया पर गोबर पीछे छोड गया (भले आदमी तो चल गये निकम्मे पीछे रह गये)। टके की हडिया फूटी इसका कोई फिक्र नहा पर कुत्ते की जाति तो पहचान ली। मुआवजा नही मिला उसकी

हू ई पाछ वा राखू नी हूँ मरस्यू पण राड तो थन ई कवा'र छाडस्यू छेबट री लार म्हैं तो लुणिया सूधा हाथ जाड-न कह या—धायी थारं वस-सू, विणिया रै खेत बार वाढ धायो थारी छाछ-सू, कुत्ता सू छुडाय म्हार मुआवजो को चाहीज नी—ऊथळी लार दायजो ई सही

देखा आजादी रा कळियारा मचियो नितातांई बेटा जायो, नाळा पली नाव कटायो आ लखणा-न फेर आजादी ! कुत्तो नाळर रो काई कर ? इण राज म तो आधा पीसैं न कुत्ता खावैं जठी देखो उठी-न ई अल्ला री मा री चाळीसा है ! पण काई करा ? किण आगैं जाय कूका ? भस आगैं भागवत वाचणी ! पण भाई ! आप कमाया कामडा किण-नैं दीज दोस, लाजीजी री पालडी कादा लीनी खास भाटा फक-नै माथो माडियो आप र हाथा जाय-न वोट री परची वाळी ही दोनू गमायी रे जोगडा ! मुदरा न आदेस ! अब काई कारी लाग ? चोर री मा मटका-म मूडा घाल न रोव

नागडा कता फिर—गरीबा रा राज आयो नामी राज आयो ! बाबोजी

पर्वाह नही पर भाडन म (=बुराइ करन मे) तो मैं भी कमी नही रखता । मैं तो मरू गा पर राड तो तुझे भी कहलवा ही दूगा (पति की पत्नी के प्रति उक्ति) । अत म मैंने तो कुहनिया तक हाथ जोडकर कहा—अघायी तेर वश (कपडा का सट) से, खेत के बाहर निकाल । अघायी तेरी छाछ स, कुत्तो स (पिंड) छुडा । मरे (=मुझे) मुआवजा नही चाहिये । (घर छोडकर पराये पुरुष के साथ) भागी हुई क पीछे दहेज ही (दिया) सही ।

देखो आजादी का बर्बाद-खाता मचा है । (अत्यन्त चपल और उच्छृखल युवती) ने बटा जना और नाल के पहल नाक कटवा लिया ! इन लक्षण वाला का फिर आजादी ! कुत्ता नारियल का क्या कर ? इस राज्य म तो अधे पीसत हैं और कुत्ते खात हैं । जहा देखो वही अल्लाह की मा का चालीसा । पर क्या करें ? किसक आगे जा कर पुकारें (रोवें) ? भस के आग भागवत बाचना है ।

पर भया ! अपने कमाये हुअे काम हैं किसको दोष दिया जाय ? लोजी जा की पालडी को कान्ो ने छीन लिया । पत्थर ऊपर फेंककर उसके नीचे सिर दिया । जाकर अपने हाथा वोट की परची वाली थी (=वोट दिया था) । वाळी थी—जलायी थी (गाली) । अर जागी ! मुद्रा और आदेश दोनो ही गवा दिय । अब क्या कारी लग (क्या उपाय हो) । चोर की माँ मटकी म मुह डालकर (=छिपकर) रोता है ।

नगे (=बनाम लुच्चे) कहते फिरते हैं कि गरीबा का राज्य आ गया । खूब नामवर राज्य आया ! बाबाजी ! धूनी तापिये तो कहा—बटा ! जो जानता है

घूणी तापो क वेटा ! जीव जाण है ! गरीवा-न राज कुण दन ! लरडी माथ ऊन कुण छोड ? बकरी रा मूडा-म मतीरो कुण राख ? फगत चुणावा रा ग्निा म गरावा न चितार वा-न हाथ जाड गराव छीदा पड जाव पण भाइ ! ओ धन ता धणिया रो है गुवाळिया रा हाथ म तो गटिया है इत्ता क्यू चौडा पडो ? इत्ता क्यू जोर जताओ? खावण-पीवण-न भमला नाचण न नगराज बोट दिया पछ काई हींग लगाय-न ई को पूछ नी इण राज रा सूना जोट म तो खाव सूर न वूटीज पाडा

दखा ईज ?ा क आ वारा वरमा-म काइ चानणो करियो ? काई नव री तेर करी जको ऊगतोई को तपियो मी वो आयमतो काई तपसी ? आ री थोथी वाता म कण थोडा न फाकरा घणा कोरो थूक विलोव पसरी म पाच सर कूड घोल कीकर पतियारो हुव ? भूखो तो घाया पनीज पण आ री उडायोडी चिडिया ता न्स्या ई ना बठ नी

(कि धूनी तापन म कितना कष्ट होता है) गरावो क राज का आनद लो इस गरीवा क राज स जो आनद मिल रहा है उस जी ही जानता है । गरीबा का राज कौन देगा ? भेड (क शरीर) पर ऊन कौन रहन देगा ? बकरी के मुह म तरबूज कौन रखेगा (=रहन देगा) । गरीब को सुख कौन भोगन दगा ? केवल चुनावा क दिनो म गरीवो को याद करत हैं उनको हाथ जोडत हैं । बम गरीव ढील हो जाते हैं (=प्रसन्न हो जाते हैं) । पर भाइ ! यह धन तो मालिका का है ग्वाले के हाथ म ता वस लठिया है (वही उसक पास रहेगी) । धन—गाय गोरू जिनको ग्वाला चराता है । इतन चौडे (प्रस न) क्यो होते हो—इतना जोर क्या जतात हा ? खान पाने का खमली है और नाचने को है नगराज (मौज करन को वड लोग, काम करन का गरीव) । वोट दने के बाद कोई हींग लगाकर भी नही पूछता । इस राज क सूने (बिना देखभाल वाले) खत म खा जाते है सुअर और (उनके बदल म) पाटे जाते हैं पडवे (भम क यच्च) ।

दखते ही हैं कि इन वारह वर्षो म क्या उजाला किया ? क्या नौ की तेरह की ? जा उग्य हात ही नही तपा वह अस्त होना हुआ क्या तपेगा (जिसक आरभ म हा जनता का सुख नही मिला आग चलकर उमस क्या आशा है) । इनकी भारहीन बाता म अनाज के दान कम और ककर अधिक । कोरा थूक बिलोत हैं (कोरी झूठी वात वनाते हैं) । पमरा म पाच सर (पूरा-क पूरे) झूठ बालत हैं । क्योकर विश्वास हा ? पर इनकी उडायी हुई चिडिया ता पेड पर बठ्ता ही नही है ।

ज नता लोग डूगर बळती देख, पगा बळती को देख नी गुद रा दोसण ढाक, नागा रा दोसण उघाड खुद तो गुरुजी वेंगण खाव दूजा नै परमोद वताव खेरणा मूडन्न हस तवा हाडी न काळी वताव ! पराया धन माथ लिछमीनाथ वणियाड़ा है आ र गाला मे घाटा दौड पण देखा ज तात रा घाटा कितीक कोस चालै ? कुण इ देस रो भलो का चाव नी ? आप-आप री रोटा हेठ सै खीरा दवै घर घर ज ईंज माटी रा चूल्हा है जाणा सब हा पण दरसावा कोनी चिडिया-सू किसा खेत छाना है ? राज करियो नी तो काई हुय देखा ता हा धान खावा कोई धूड ता नी खावा परणीज्या नी तो जान ता गया हा तू म्हार मूडा म आगळी दे म्हैं थारी आख म दू—जकी वात ई हुयी है था री आगळी खा जाऊ, थारी आख फोड दू पण दोनू हाथा म अै लाडू घणा दिन को रवैला नी इद पछ राजा तो करणा पडसी

अब जाय नै बाजी सा सास लियो थोडी ताळ ताई पाखती लागा मामी

य नेता लोग दूर पहाड पर जलती आग को देख लेते हैं पर पैरो के पास जलती आग का नही दखते । अपने दाप ढकते हैं पर लोगो के दोपो को खालते हैं । गुरुजी स्वय तो बैंगन खाते है पर दूसरो को प्रवोध (ज्ञान) दते हैं (=दूसरा का उपदश देते हैं स्वय उस पर नही चलते)। खेरणी ( ) मुह का हसती है ! तवा हाडी को काली बताता है ! (जो खुद दोपा स भरे है वे दूसरा को दूपित वताते हैं)

दूसरो के धन पर लक्ष्मी के नाथ वने हुअ हैं इनके गाला म घाटे दौडते हैं । पर देखें ये तात के (बनावटी, दिखावटी झूठे) घोडे कितन कोस चलते है (झूठे वादे कब तक जनता को प्रभावित करते हैं) ।

कौन इस दश का भला नही चाहता ? अपनी-अपनी रोटी के नीचे सभी अगारे रखत हैं (सब कोई अपने मतलब का ध्यान रखत हैं) । घर घर म य ही मिट्टी के चूल्हे हैं (सब की यही हालत है) । (हम) जानते सब कुछ हैं पर प्रगट नही करत । चिडिया से खेत कौन से छिपे हैं (दाई से पेट क्या छिपा है) । राज किया नही ता क्या हुआ देखत तो हैं । नाज खाते हैं कोई धूल ता नही खाते । विवाह नही हुआ ता क्या हुआ, बरात म तो गय है । तू मेरे मुह म उगली दे मैं तेरी आख म देता हू—वही बात हुई है । तेरी उगली खा जाऊ तेरी आँख फोड दू—बस दानो हाथा मे लडडू । पर दानो हाथा म य लडडू अधिक दिन नही रहग—ईद के बाद रोजे तो करन ही पडगे ।

अब जाकर वापजी ने सास लिया (बोलना वद किया) । थोडी दर तक आसपास लागा की ओर देखते रहे । अपना थैला वापिस कांख मे डाला,

देखता रह् या आप रो थलो पाछो खाग म थालियो चातरा मू नीचै उतग्या दात पीसता थका बोल्या—करिया जाओ अयाय, छेवट घडो भरिया रसी, ओ पाप फूट-फूट नै निकळला आज तो था रा सतीर तिर मनचाया कर लो धगत आन्नण दो था रा सूखा काठ ई डूबैला आ तो घग्त-वधत री छिया है ओ तो चढणो जितोई उतरणो है देग्या बकरा री मा किता थावर टाळै ? था-न आज कऊ—याद राखजो के ठडो लो' ताता-न खाय ना ! ठीकरी घडो फोडैला !

चबूतरे से नीचे उतरे। दात पीसते हुए बोले—किय जाओ अयाय आखिर (पाप का) घडा भरकर रहेगा (अवश्य भरगा) यह पाप फूट फूट कर शरीर से निकलेगा आज तो तुम्हारे (गीले) शहतीर तैर रहे हैं, मन चाहे (काम) कर लो (पर) वक्त आने दो तुम्हार सूखे काठ भी डूब जायग, यह तो बढने घटन वाली छाया है यह तो जितना चढना है उतना ही उतरना भी है (=उतरना भी होगा) देखते हैं कि बकर की मा कितन शनिवार टालती है (कब तक खर मनाती है आखिर वह तो बलिदान होना ही है)। तुम्ह आज कहता हू—याद रखना—कि ठडा लोहा गम लोहे का (अवश्य) खावेगा —ठिकरी घड का (अवश्य) फाडगी—गरीबों का राज्य अवश्य होगा और ये गरीब अयाय करने वाला का अवश्य अत करेंगे।

मिनखजमारो

(ललित निबंध)

[मदनगोपाल शर्मा]

[श्री मदनगोपाल शर्मा का जन्म सं १९८३ में सामोद (जयपुर) में हुआ । जब ये तीन वर्ष के थे तभी इनके पिता का देहान्त हो गया। इनका लालन-पालन मां की देखरेख में हुआ। इनकी माता राष्ट्रीय विचारधारा की महिला थी जिनका संबंध महिला-आश्रम, वर्धा से रहा। मां की जन सेवा देश भक्ति और निर्भीकता का प्रभाव इनकी रचनाओं पर भी पड़ा। इनकी शिक्षा वर्धा वन स्थली नवलगढ़ जयपुर और दिल्ली में हुई। इस समय ये राजस्थान विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक हैं।

शर्माजी मूलतः कवि हैं। इन्होंने हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में कविताएँ लिखी हैं। गोख ऊभी गोरडी इनकी राजस्थानी कविताओं का संग्रह है। 'रवीन्द्र पद्य कथा' बंगला से राजस्थानी में किया गया अनुवाद ग्रंथ है।

कवि होने के साथ साथ शर्माजी सफल गीति-नाट्यकार और गद्य लेखक भी हैं। इनके गद्य में इनका कवि रूप सर्वत्र झांकता रहा है। भाषा प्रवाहपूर्ण एवं शैली आकर्षक है।

संकलित निबंध सर्वप्रथम मरुवाणी वर्ष ७ अंक २ में प्रकाशित हुआ था। रजस्थानी निबंध संग्रह में भी यह संगृहीत है। भावात्मक प्रवाहमयी शैली सधी हुई प्रौढ भाषा और प्रसंगानुसार लोकजीवन तथा लोकसाहित्य के रोचक प्रसंगों और उद्धरणों के कारण यह रचना अत्यन्त सुन्दर बन पड़ी है।]

(१)

मिनख-जमारो यूं ही नीं मिलै कांडी सूं लगा र कूंजर लग जितरी इण धरती-पर जीयाजूण उण-में मिनख री जूण सं सूं उत्तम मिनख-नै घडता घडता

मिनखजमारो—मनुष्य-जन्म, मनुष्य-जीवन। नीं—नहीं। कीडी—चींटी। लगा र—लगाकर लेकर। कूंजर—हाथी। लग—तक। जीयाजूण—जीवों की योनियां। सं सूं—सब में। घडता घडता—गढ़त-गढ़ते बनाते-बनाते। जाण—

जाण पिरजापत री कारीगरी ही निठगी अण चितराम-न रच र चितारो जाण आप चितराम हुयग्यो । मिनख कांई जाण विधाता र हिवड़ै री हूक जाण गंगा जी री मौज क जाण दिसावां रा आज जाण चानण री सुवास चनणा रा निवास धार विम्पूती मिरख री सौरम साग माय चात्रिग री प्यास रमाय मोती रा आभा पन्‍रया मिनख र रूप जाण सिस्टी रो सुभ सवळण साकार हुया जाण आद जोगी-जती सिधजा रा जप-तप साकार हुया जाण धरती रो सिणगार हुया मिनख माद जनमिया जाण धरती रा भाग-म परमातमा रा आप रा औनार हुयो ।

जिण घड़ी मिनख जनमिया पखीड़ा विरद बखाण्या चिड़कल्या मंगळ-गीत गाया किरण उगाळी उगूण आंगण कूकू बिखेर्यो । कवळ-फूल आंगणा रा मानी लुटाया भाया भौरिया भवर गरणाया वसन रा विगास हुया आभ उजास हुया

मिनख-जमारो इण धरती रो धन क अनमोल रतन इण रतन धन-न जिनगाणी री जगीदा भोळी भर झेल्यो आभ-ना धरती-न मायड़ पण मिनिया तो गाळ भरी, राची प्रेम-भावना रा प्यासी मतवाळी मीरा माथ रो मान मान मोद भरी नाची । भोळी माळ री गाण्या राजमहला री मीरा सू भी दो पग आग वध आप ही नी नाची उण-न भी चळू भर छाछ र लार नचाया छकाया अर जीवण रो परम फळ पायो पण उणी रतन धन-न वभाव वेच र कितरा-ही जलम अकारथ गमाया हीरो दे र भाठो विसायो । धागा दे र घाटो खायो । हीरा र हजारी लाखीणो विणजारो करम कसाई र हाथा काढी र मोल मिनख पणो वच्यो जौहरी रो बटो कोयला री दलाली म हाथ काळा करया बडा-बडा सुर नर मुनि ग्यानी इण मिनखाजूण री चादर ओढी पण भली ही करी काइ मा

माना । पिरजापत—प्रजापति ब्रह्मा । निठगी—समाप्त हो गयी । चितराम—चित्र । चितारो—चित्रकार । कांई—क्या है माना । क—या अथवा । चानण—चन्दन । निवास—पोशाक । सौरम—सौरभ । चात्रिग—चातक । रमाय—रमाकर । सिस्टी—सृष्टि । आद—आदि । औनार—अवतार । जनमिया—जनमा । विरद—विरुद । चिड़कल्या—चिड़ियों ने । किरण-उगाळी—किरनों के उदय ने । उगूण—पूर्व व प्राची दिशा ने । गरणाया—गूंजे । आभो—आकाश । जिनगाणी—जिन्दगानी जिंदगी जीवन । झेल्यो—पकड़ा ग्रहण किया लिया । मायड़—माता । राची—शोभित हुई । चळू भर—चुल्लू भर । कितरा ही—कितनों ने ही । भाठो—पत्थर । विसायो—(माल) लिया (स० व्यवसाय से) । घाटा खाया—हानि उठायी । हजारी—हजारों का स्वामी । लाखीणो—लाख

राम रो पूरा दास क्बीर जतन सू आढ'र ज्यू री-त्यू घर दी ता काई हुयो ? मिनख रा या डोळ देख धरती रोयी, विधाता उदास हुयो

मिनखजमारै रो या विगत क्यू ? फूल मे कीडो क्यू लाग जाव ? दीव री जोत काळख क्यू ऊगळै ? वणराय म दावानळ क्यू परजळ ? जिण सुरसरी रा पवित्र धार गगात्री म इमरत ज्ण फूट उण म ही आग सददमिळाव-म (?) लूण कुण घोळ देव ? कुण वा ठगणी जो पर्दै ओल रह अणूता खेल खेल ? इमरत म जहर घोळ ? रमतिया तोड ?

उण रा नाम कुण कोना जाण ? दो आखरा रा नाम—माया जो आप री लट में लाक अर परलोक-न समट मिनख र सगळ करम धरम न नचाव भरमाव अर ग्यान ध्यान नसावै जिण सू वडा वडा जत्ती मनी भी पार ना पाव काइ है या माया ? फकत अेक इदरजाळ ? राम र खेल-न चुगती चिडकल्या-न भगावण -न खड यो अेक अडवो ? तान तोडत तबूर री अक टेक ? क या है काई मागोपाग ठोस चीज जीवण में दरसै है जिण रो रूप जिण रो रग ?

माया रा रग अथाह रूप अपरमार कोई उण-नै फळ विहूण सेमळ र फूल रूप देख, कोई न आ म्रिगजळ र रूप भासै कोई सीप मे चादी र भरम-न ही माया समझ कोई न काळ रा विकराळ रूप धर डराव तो कोई-नै कामण र रूप लुभाव भरमावै । माया रा सहस नाम—इदर र इदराणी हा बैठ रमावि र बिरमाणी लाभ मोह कपट पाखड झूठ रो माया रो विकट कटक जग जीतै तुळसी-सा भगत भी हा हा खाव राम-नाम रै सरण जाव

तो काई है या माया ? इण वडी वडी वाता-न कुण समझ ? कुण कनै वधाऊ टम है जा वाता रा वडकूरया थाप ? अठ ता गीता अर गायत्री जिसी

मूल्य वाला लाखा का स्वामी । विणजारो—विणजार बजारे न व्यापारी न । काइ सा—किसी अेक न ।

डोळ—ढग । काळख—कल्मष, कालुष्य । वणराय—वनराजि वनसमूह । सदद मिनाख —? । वा इ०—वह ठगिनी है । ओल—आट म । अणूता—अनहोते निरथक । रमतिया—खिलौने । कुण कानी जाण—कौन नहीं जानता । लूट—वस्त्र क कोने म आचल म । सगळ—सारे । क—अथवा । फळ विहूण—फलहीन । फूल विहूण—फूल विहीन । इदर र इदराणी इ०—कबीर के प्रसिद्ध पद की अेक पक्ति का रूपान्तर । हाहा खाव—दीनता से गिडगिडाते हैं ।

वधाऊ—अतिरिक्त । टेम—टाइम समय । वडकूरा—गोबर की चपटी छेदार टिकियाअें । थापणो—पाथना । सराव—दस्तूर ढग (?) ।

गाया-न दूवण रा ही सराव वोनी छात कुण विलोवै ? तो पर समभ यो—जो आप-हा-आप मात्र अर औरा न नी मावण द वा ही है माया, जो आप-ही आप यात्र पण औरा-नै नी मावण दे वा ही है माया, जो मिनख-न मुमारग स डिगावै अर कुगल चलाव वा ही है माया

फूल म कीट क्यू नी नाग ? उण रा जन्म गदगी म जो है गन्गी री कमाई पाण फूल इतरा सर्र फूल सक मुळक सक पण वासना र कीट सू चिता र कीट-सू चिता रैं घुण-सू वच नी सक लो गदगी रा नाम ही है माया वासा री वनी-म आग लागणा ही जोग है व आप रैं वस-नै विसार वगनी हुवा री वाता-वाती री अव फूल माय आपस-म लड मर माध अर ईर्ष्या री रगड लाय वळ मरै मरता अर आदशा रो वस रो-वस जड-मूळ सेती गयो इणी अेक फूल-स इणी अक आग-सै ओम री विसात ही काई ? तो ईर्ष्या हुप रो ही नाम है माया

निलो चस उजास कर सही पण कुण-न सराया ? निलो सनह र पाण वळ पण मनेह परायो घाणी मे लो विचारा तिल पिल पिस, मनेह रस गे दान कर वाता भी रुअड री ता पराई कुरबाणी रैं पाण जो जस रो चानणो होव उण म काळूम लागणी ही चाहीज स्याग-म कपट रो कळास सदा ही लाग ता कपट रा ही नाम है माया

सुरसरी भागीरथी र देवलोक र घोळ हेमाळ री ववचूध सचाई आन्या म रडकी तळ हरियाळी दल तिसली ना फर गुडक ती ही चलीगी ऊचा ठाव, दिव्य धाम भूलगी जळ गदळाग्यो अर लूण रळग्यो ठीक ही तो है—जीवण री आब डीघ मुकाम-म ही अडिग रव नीच गिरता पाण गदळाव ता पतन रो ही नाम है माया

मात्र—समावे। कुमग—कुमार्ग पर।

कीट—कीडा। पाण—बल पर। इतरा सक—गव स भर सकते है। मुळक मर—हम सकते हैं। वनी—जगल रोही। जोग है—योग्य है चाहिजे। विसार—भुलाकर। वगती—चलती हुई। वाताबाती—बतबतिया। चस—जलता है। सराया—सराह। पिल—पल जाते हैं। रुअड—रुई। चानणा—प्रकाश। काळूस—कल्मष कालिमा। कळास—कालिमा। धोळ—धवल सफेद। रडकणो—खटकना कटकना। तळ—नीचे। तिसली—फिसली। गुडकणो—लुढकना। ठाव—स्थान। गदळाग्यो—गदला हो गया।

माया मोहक रूप धर छळ छाया सू उडता पखेरुआ-न पकडे छाया-ग्रासणी सुरसा नाम अहिह री मा हडमानजी न लीलबा-न सदा ही मूडा फाड होती आयी रीत, इण-मे काई अनीत सुरसा यानी सुदर रसा स्वादा, हाळा पिरथी री ममता जो भात भात रा विसय वासना रूपी सापा री जणणी है, सदा ही ठाडी रै मान नम्र पर त द्रिढ निहचै र हणमान-न लीलबा री करै पण द्रिढ निहचै दूणो विकराळ रूप धर दूणा जोस धारै पकड-मे नी आवै जो पकड मे आ जावै ता साचा हणमानजी नही घर-बार पिरथी गिरस्ती री मोहक ममता-नै तोड जा भी फलाग लगायी सम दर पार हुया अर नरपुगव हणमानजी-री पदवी पायी पण जो इण पार ही रहग्या ब वानरा ही रह्या तो घर-बार-री ममता जो पुरसारथ अर पराक्रम र आडी आव, उण रो हा नाम है माया

(२)

पण इण तरिया सा माया रा रूप गिणाया गिणीज नही कठ लग रामाण करा ? मिनख-जमारै-न सुधारण रो कोई सीधो-सा नुसखो बतावो तो फेर सुणा—मिनख री सगळी गतविध रो आधार है चितवणी, कथणी अर करणी मिनख जिनगाणी री गाडा रा दो पडा—कथणी अर करणी चितवणी है उण रो धुरो धुरा अर दो पडा ठीक-ठाक ता गाडी चाल सडाक सडाक चितवणी धुरो है धुरो ध्रुव-द्रिढ-अटल रहणो चाहीजै चित मे चचळता मरदानगी रो निसाण नही भगवान-म अटळ भरोसो राख द्रिढ निहच हाळो ही निसक रव—

नहच होय निसक, चित नह कीजै चळ विचळ ।
अ विधना रा अक राई घट न राजिया ॥

रळग्यो—मिल गया । आब—कान्ति आभा । डीघ—दीघ ऊच । अहिह री—सर्पो की । होती आयी इ —यह रीति सदा स हाती आयी है । अनीत—अनुचित । हाळी—वाली । मान—बराबर । फलाग—छलाग । आडी—सामने (विघ्न बन कर) ।

तरिया—तरह । रामाण—रामायण लबी चौडी कथा । चितवणी—चितन । जिनगाणी—जिंदगानी, जीवन । पडा—पहिय। हाळो—वाला । नहचै—निश्चित रूप स । अक—लख । राई—राई भर भी जरा भी । राजिया—बारठ कृपाराम का सेवक जिसको सबोधन कर बारटजा न दोहे बनाये थ, राजस्थान म ये दोहे अत्यन्त लोकप्रिय हैं ।

काम पडया पछी सोच विचार कर सा निमळो पाणी पैला पाळ बांध सारू नानी सोच र काम कर पण कर र कर्‍ ना सोच कर—

सोच कर सो सूर है कर सोच सो कूर।
सोच करयां मुख नूर है कर सोच्यां मुख धूर॥

जद चितवणा रा धुरो ठीक रख ता कथणी रा पडा गुडाजता ही रख सारु सोरा अब सेठ-न अक साधू कह्यो—करणी चालती राख सपत दिन दूणो वधती रालो सेठ चेजो चलतो रियो कारीगर लागग्या करणी कद रोकी नहीं सेठ करोडपति हुयग्या कारीगर री करणी र लार उण री करणी-न भी चालता रहणो पड यो वो कमाई री जुगत जोड नी बठाप ता चेजार री करणी रुक जाय इण मन्त्र म यो ही भेद

कथणी भी जरूरी है कारी करणी गूगी अर कोरी कथणी लगडो अर चितवणी र बिना दोनू ही आधडल्या तीनू अकठी हुव तो पार पड कथणी विन जिनगाणी रा विणज चाल नहीं अणबोल्या रो खाखलो भी बिना बिक्यो रह जाय अर बोल जी-का बूमळा-का बालवाला छ कथणी खांड-सी मीठी हुव तो हिवड म इमरत घुळ मना रा मेळा हुव इण लाड म खरच काई नी पेर भी मिनख सूम किपणता कर कागो कुण-सू लव अर कोयल कुण-न देव मीठा वचन सुणाय-क मनडा हर लव सो कथणी म मिठास राखो अर राखो उदारता गुड न द तो गुड री सी बात तो कह पण कोरी बातां-सू भी छान को बध नी बातां ही-बातां रा वव्हारी ढपाळसख बाज इण वास्त कथणी र करणी री गोट

निमळो—निमल। पाणी इ०—पानी (की बाढ क आने) क पहल जो पार बाधे जो आपत्ति क आ पडने क पूर्व उसका उपाय कर रख। कूर—नीच। नूर—ज्योति आभा। गुडीजणा—लुढकना चलना। सोरा—सहज सुख कर। रखला—रहेगी। चेजा—तामीर का काम। करणी—(१) काम करना (२) कनी नामक तामीर करने का औजार। जुगतजोड—युक्ति मन्त्र। चेजारा—तामीर करने वाला कारीगर। भेद—रहस्य।

आधडल्या—अधी। विणज—व्यापार। खाखला—?। बूमळा—नुस भूमी। वव्हारी—व्यवहारी। ढपाळसख—मूख। बाज—कहा जाता है (स० वादघते)। गोट—किनारी, मगजी।

लगाणी ही पड, जद ही जिनगाणी री चूनड चावी चिलक कथणी म पातर कुपातर रो भी ध्यान जरूरी है नही तो सीख वानर न दयी घर वइयै रो जाय' आळी वात हुय वात ठोड ठिकाणो देख करणो पड नही ता दसा विगड इण सारू अेक कहाणी याद पड—

चाळीस गावा रो ठाकर जगी गढ चिणायो गढ टीघो अर मजबूत सिफ्त या क माय वडण-रो अर वार निसरण रा गेला घणो ढूढया ही हाथ का आव नी अेक जाट बी गढ-न देखण आयो गढ दिखा'र सिपाया पूछया—पटेल ! गढ किस्योक लाग्यो ? जाट बोल्या—गढ तो घणा ही ठाडो पण म-नै यो साच आवै क ठाकर मरसी जद उणा-न काढगा कठी कर ? सुणता ही ठाकर न रीस आयी—मर हिया फूटया ! इस्या बावळ बोल अर दे दिया उण-न काठ म पटेलण वड वेगन भेज्या क जाय र बाप न छुडा ल्यावै छोरो जाय बोल्यो—बापूजी-न इण तरिया बोलण री काई पडी ही ? उणा र भाव भलाई ठाकरा-न काट-काट र काढया होव जा भस पाणी म ! छोरो ता बाप स भी वधाक उण-न भी काठ मे जड दिया दूसरा बटो छुडावण न जायो र कही—व तो दायू ही मूरख है उणा-न क पनी ही इण तरिया कोभो बालण-री ? उणा र भाव चाय ठाकरा-नै महल माय ही खाडा खोद र गाड दिया हाव ल्या यो और भी सुभानल्ला ! उण न भी साग ही काठ म धर दियो पटेलण घणी चतर पूची जेळी जेवडी ल'र तीनुवा न छुडावण जाय कह्या—ठाकरा ! अठ तीन डागरा आया हा क ? मिनख री बोली बालणिया तीन डागर

चूनड—चुनडा। चिलक—चमकती है। बइयो—बया पक्षी बया और बदर का प्रसिद्ध कहानी की ओर सकेत। ठोड ठिकाणो—ठौर ठिकाना, उचित अवसर। इण सारू—इसके लिअे इस सम्बध म।

जगी—बहुत बडा । टीघा—ऊचा । सिफ्त—विशेपता । वडणो—भीतर जाना । ठाडो—जबरदस्त मजबूत (स० स्तब्ध अप० टड्ढ) । कठीकर—कहा स हाकर किघर स । बावळ—बुरा । उणा र भाव—उनकी ओर से । जा भस पाणी म—

वधाक—विशष बढकर । कोभो—बुरा । चाय—भल हा । सुभानल्ला—सुभान अल्लाह—बढकर । साग—साथ । जेळी—जेई पावा । जेवडी—रस्सी । डागरा—डगर जानवर । अठीन—इधर । स्याणा—सयानी ।

म्हारा अठी-न आया हा ठाकर समभ्या कै पटेलण घणी स्याणी तीनुवा-न छोड दिया ठीक ही ता है भगवान मिनख-न वाणी री बखसीस करी इण बखसीस रा निरादर ठीक नही बोलण री सुरता विना मिनख मिनख नहीं डागर ही बाज ता कहणा-अणकहणो री निग राखणी ही पडै सु-पातर दख र ही कहणो चाहीज जिण तिण र आग ढाढ मार र दुखडो रोवणो जगहसाई कराखणी है—

दुखिया आग दुख कहा, आधा दुख हर लय ।

सुखिया आग दुख कहा हस-हस ताळी दय ।।

कहणी री अपणी मरजाद कहणी रा अपणा मोळ धरम माणस-कु माणस र साम कहणी रा घूघटा मनो उघाडै रहा तो इज्जत आवरू जाव कहणी री लाज बहू बेटी री लाज सै तिल भर घाट नही कहणी री पत सुहागण री पत-स भी घणी ऊची कहणी र माग करणा रा सग साथ दायू मा-जायी भणा कहणी अर करणी रा सगपत सीधो सुरग रो पथ कहणी अर कथणी म जितरो आतरो उतरा ही खाडा पड कहणी रा भोग बापडी करणी-न भुगतणा पड कहणी रो बोल्योडो दायजा करणी-न दणो पडै—

रहिमन जिभ्या बावरी कहि गइ सरग पताळ ।

आप तो कह भीतर भया जूतो खात कपाळ ।।

इण वास्त कहणी अर करणी र कहणाप-न टूटवा मनी दयो दोयू धरम रा भणा अक री लाज दूसरी हक अक रा धाव्र दूसरी भर दोया-म मेळ ता विस भी इमरत हुव—

कहणी मीठी खाड सी करणी विख सा होय ।

जे कहणी करणी हुव, विख ही अमरित होय ।।

सुरता—ध्यान सावधानी । निग—निगह ध्यान । सुपातर—सु पात्र । ढाढ मारणा—धाड मारना, चिल्लाना ।

ताळी देय—ताली बजाता है, हसी उडाता है ।

घाट—घटकर कम । पत—प्रतिष्ठा । माजायी—सहोदर । भणा—बहनें । सगपत—सगाई सबध मेल । आतरा—अतर । खाडा पड—हानि होती है । बोल्योडा—बोला हुआ, मानता किया हुआ । दायजा—दहेज ।

सरग पताळ—स्वग स पाताल तक की बडी बडी अब भली-बुरी बातें । कपाळ—सिर । कहणापो—कहनापा । कहणी—कथनी बातें । करणी—करना, काम । जे कहणी इ०—यदि कहन के अनुसार ही काम किय जाय ।

(३)

कहणी सोच-सोच, अर करणी सतोल-सतोल कहणी अर करणी रा दो पालडा अर चितवणी इण री डाडी इण ताखडा म मिनख रा लोक अर पर लोक तुलीजै करणी म काण राखै सो स्याणो नही काणो करणी म ल दे बराबर रव तो विणज वेपार धरम री लीक चल पण आजकल तो स ही दद्दा बण्या बिना ही गोदी मे लल्लो खिलायो चाव देवण री वेळा अेक न ना सो राग हुरै या नी मालूम क—

वास चढी नटणी कहै होत न नटिया काय।
मैं नटकर नटणी वणी, नट सो नटणी हाय॥

अेक कानी तो है सूम जो देवण रो नाम नी जाण बीजी कानी है सत जो देता देता भी रीत नही रीभ नहा उण री निजरा माटी भी सोना अर सोना भी माटी पातस्या ममदसा रा मीर मुसी घनानन्द फकीरी ले र व्रज म जा बैठ्यो क्रिस्ण प्रेम रा मतवाळा गीतडा गाव पण कोई चुगल ईर्ष्या रो मार्‌या दर लवा रा औसर देख नादरस्या-सू चुगली करी—दिल्ली काई लूटो? जर (धन) तो मीर मुनी घनानद दाब्या बठ्यो है नादरस्या रा सिपाही जा र घनानन्द-सू कह्या—जर जर जर घनानन्द रै क्रिस्ण नाम ही धन तीन मूठी व्रज री धूळ फक नाख्यो— रज रज रज'

जा प्रेम रस रा प्याला सू छक्या है धरम ही जिणा रो धन है उण प्रेमिया री निजरा मे जर (धन) रज (धूळ) है अर रज ही जर

सोच—विचार कर। सतोल—तोलकर। ताखडी—तराजू। पलडा—पल्ले पलडे। चितवणी—चितन। डाडी—डडी। तुलीज—तोल जाते हैं तुलते हैं। काण—पासग, कमी। स्याणो—सयाना समझदार (सज्ञान)। काणो—काना कमी वाला अज्ञान (यहा सयाना का विपरीत)। ल दे—लेना देना। वपार—व्यापार। लीक—बना-बनाया मार्ग। स ही—सभी। दद्दा=(१) दकार (२) दादा (३) दना। लल्लो—(१) लकार (२) लाल (३) ललना। न ना—नकार इनकार। नी—नही।

नटणी—नटनी वास वे खेल करने वाली। होत इ०—पास म होने पर काई इनकार न करे। नटणा—नट का खेल करना, इनकार करना। नटणी—(१) नटना (२) इनकार करने वाली।

कानी—ओर, तफ। वाजी—दूसरी (द्वितीय)। रीत—खाली होना है। निजरा—नजरा म। माटी—मिट्टी। पातस्या—बादशाह। ममदसा—मुहम्मदशाह। नादरस्या—नादिरशाह।

पण गिरस्ती रा या घरम नहीं गिरस्त म ता दोयू हाथ रळाया धुप लेण त्ण बराबर चाले घर म फाटया गूदड़ा नहीं, लुगाई रै अंग-पर लाज ढकण-न दे हाथ चार नही लीरक-लीरा डाल अर ढालोजी वीच बजारा घरम री धुजा फरकाव या ढोग निभ नहीं गिरस्ती न ता खानी रो वसूला वण वसूल ही वसूल अर न रिदै सो रिदाई धार छीलण तकात पर ही-पर वगाव उण न तो करौत री तरिया भायू ही करोट बराबर वाटणो-खाणो पड़—

रदोही होव मती मती वसूला मित्त।
हाथ करवत सारिसा बाटण खाटण वित्त ॥

(४)

ता इण तरिया जद चितवणी र धुर बचणी अर करणी र पड़ा पाण मिनख जमार री गाडी चाल ता मोज आव सो तो ठीक पण इण गाडी री गेलो कुण सो है? गला हजार है पण नीक अक ही वा है मरजाद री लीक पण अर पत री लाक पण घट ना धन घट अर पत घट ता मत—

पणघट जाता पण घट पणघट कह सब कोय।
कहिया पण किण विध घट जद पण घट ही होय ॥

जिण र घट पण ही नही उण रो काई घट? नाकहाळा री ही नाक कट, नकटा री काई कट? अथवा फेर दूसरो अरथ भी घट—जिण र घट (प्राण)

गिरस्ती—गृहस्थ। दोयू इ०—दोनो हाथ मिलाने से धुलते है। बराबर—समान रूप स। चीर—कपडा। लीरक-आरा—फटे हाल फिरती है। लीर—कपड की फटी चीर। ढोलाजी—पति। धरम री धुजा फरकाव—धर्मात्मा बनने का ढाल करत हैं।

खाती—बढ़ई। वसूला—अेक औजार। वसूल — लेता ही लेता है वसूला छीलन को अपनी ओर फेंकता है। रिदो—रदा। रिदाई—फक्कडपना।

धार—धारण करके। तकात—तक। पर—दूर। वगाव—फेंकता है। करौत—आरा। तरिया—तरह। करोट—करवट तफ। वाटण—दूसरो को दना त्याग करना। खाटण—कमाना भोगना। रदोइ इ०—हे मित्र! न तो रदा होना और न वसूला। करौता (आरे) के समान देने और लेन (त्याग और भोग) दोनो म समान रूप स चित्त रखने वाला होना। धुर—धुरी पर। पड़ा इ०—पट्टियो के बल। गला—माग। पण—पन वचन। पत—प्रतिष्ठा। सत—सत्य। पणघट जाता इ०—पनघट जाने स पन घटता है इसीलिअ सब उसे पनघट कहत है पर कहिय जब पन पहल हा घटा हुआ है ता वह फिर कस घटगा। घट—शरीर म। नाकहाळा—नाकवान। घट—आयू हा सकता है।

मे पण है उण री पत झूठी लोकलाज री लीका-हू घटै नही झूठी मान मरजाद, झूठी लोकलाज, कूडा अधविस्वासा-म पत रो वासो नही पत रो वास घट ही मे है लीक-अलीक रो ग्यान घट ही म होवै घट घट आतम राम है साई ग्यान करै

पण इण घट-नै, इण अत करण-न देख्यो कुण ? विजळी रो चीराफाडी री मसीन-सू भी डाकदरा इण न दरयो नही, तो म्हू विस्वास कइया करा ? ठीक है तरकेसुरजी ! थार तरक रो अजीरण हा रयो है सीधी सी, मोटी सी, वात किया रुचै ? थारा सारा ज्ञान बीजगणित र आधार पर है थ बीजगणित म अमुक चाज बराबर है 'क' क्यू मानो हो ? यो क कठ-सू आयो ? रखागणित मे बिंदु रो नाप नहीं लबाई मोटाई नाव री ही नन्ही फेर भी बिंदु री सत्ता क्यू मानो ? कहाणी म अेक राजा हो अर अेक राणी विना पत ठिकाण इण राजा राणा न हुकारा क्यू साभळो ? अ सगळी चीजा उनमान री है अर आखै ग्यान विग्यान री नीव ही उनमान है इण वास्तै इण घट न भी मानो मानो हा नहीं माजा मोचो, सवारो भा ! कवि बिहारी रा सबदा म—आख जणाघ जगत-न आख न देखी जाय इणी तरिया इण अत करण सू ही सारा चानणो सारो उजास हुव पण ण्न-न देखणो दोरो है मायली ग्यान री आख उघड ता सारी खेल दीखै या ग्यान री आख उघाडो घट न छाणा अर पिछाणो माटा माटा महल माळिया चिण्या काई हुवै जे भीतर हिरद म मल रो मळबा दब्या पड यो रव हिंद महासागर म पट्या काई वण जे कदे हिवड र प्रेम सरोवर रै रस-सू दो घडी भाज्या नही अर हिमाळो फलाग्या काई ज दिला री दूरा उलाघी नही ? पडोसी दीन दुखी टाबर र चादडल-स मुखड रा आसू पू छ् या विना चाद नै छुवण रो जोम भूठी ठमक है सो खुदाई-नै सभाळण-सू पहल्या खुदी नै सभाळा दुनिया भर-न मनो पण पहल्या अपण-आप-न गडो जद ही या मिनख-जमारा सफळ हुसी

लीका हू—लीको मे । कूडा—झूठे । डाकदरा—डाक्टरा ने । कया—कम । तरकेसुर—तर्केश्वर बहुत तर्क करने वाला ।

साभळा—सुनते हो (?) । उनमान—अनुमान । दोरा—कठिन । मायली—भीतर की । छाणा—छाना जाना । माळिया—मकान के ऊपर का कोठरी, अटारी । चिण्या—चुनन मे तामीर करने से । भोज्या—भोग । हिमाळो—हिमालय । फलागणा—छलाग मारना पार करना । पूछ्या—पोंछे । सुगाई—स्थिरता । खुदी को—अपने आप का । मनो—मनाओ । गडो—गढो बनाओ ।

रतनकुवरी

(रेडियाअेकाकी)

[दानयाल ओझा]

[श्री दानदयाल ओझा का जन्म बीकानेर मे स० १६८६ मे हुआ। आपका परिवार मूलत जसलमेर का निवासी है। हिन्दी और राजस्थानी मे इन्होने समान रूप से लिखा है। राजस्थानी लोक-साहित्य एव लोक सस्कृति के ये अच्छे अध्येता एव व्याख्याता हैं। राजस्थान के जनपदीय सतो एव राजस्थानी कवयित्रियो पर किया गया इनका शोध काय महत्त्वपूर्ण है। राजस्थानी मे इन्होने कई कविताएँ, कहानिया निबन्ध एव एकाकी लिखे हैं। राजस्थान के कहानीकार भाग २ इनके द्वारा सम्पादित ग्रथ है जिसमे आधुनिक राजस्थानी कहानियाँ सगृहीत हैं।

'रतनकुवरी' एक ऐतिहासिक रेडियो रूपक है। इसम जसलमेर के रावळ रतनसिह और अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर के बीच हुए युद्ध एव सधि प्रस्ताव की पृष्ठभूमि म रावल रतनसिह की सुपुत्री रतनकुवरी के वीरतापूर्ण त्यागमय व्यक्तित्व की झाकी प्रस्तुत की गयी है।]

(१)

(रण रा बाजा बाज है)

रतनकुवरी–(दृढ विश्वास भरय स्वर म) दाता ! आप कई बात री चिंता ना कराया जद ताई इण दुग रो अेक अेक पत्थर परथर-मू जुडियोडो है जद ताइ इण दुग रो अेक-अेक वीर बाकी है जद ताई इण दुग री रिच्छा मैं करू ला दाता ! म करू ला अलाउद्दीन भले ई आप री सगळी सेना रो बळ अजमाय ल, हमलो कर ल पण रणवका भाटी राजपूत कदेई पाछा पग नी देवला दाता ! नी देवला ! आप निधडक हुय दरिया म भगावो। दुग री रि छा हूँ कर लेमू

रतनसिंघ–(वीरा-जोगा गभीरता र बोल सू) साबास बेटो ! साबास ! मन थार स् आ-ई आसा ही। हूँ जाणू हूँ तू सगळा सरदारा र साग इण दुग री रिच्छा घणी चोखी तर कर सकला पण ध्यान राखजे शत्रु लडाकू ई नहा, घणा धूत भी है बेटा ! घणा धूत !

रतनकुवरी–(दृढ़ता रै स्वर म हस र) दाता ! आप कोई बात री चिंता

ना कराया म्है सगळी मैंभाळ लेसां आप तो इण मतवाळा मळच्छां-नै अेक वार बताय दो कै 'उत्तर भड किंवाड भाटी मवाळणियां अै राजपूत अर आ रा अ दुग इण तरै कबज में नहीं आय सकै दाता ! आप पधारो विजयश्री आप रै साग है

[घणकरी सेना रै साग रतनसिंघ निकल-म ऊनर नगारां री आवाज आवै]

(२)

रतनसिंघ—(वीरता रै भाव-सू) आ राजकुमारी कोनी गुमानसिंघजी ! म्हारो राजकुवर है देखो किण तर रो जास है इण मं !

(गुमानसिंघ वीच म बोल र कवै)

गुमानसिंघ—क्यू नी अनदाता ! क्यू नी ? आप राजकुमारी रो पाळण पोसण कुवर-सू ई वसी कराया आप तीर तरवारां अर घुडसवारी रो अभ्यास कराया वा आज सगळा ई काम आय रया है

रतनसिंघ—(गरब भरय सबदा म) क्यू नहीं गुमानसिंघजी ! क्यू नहीं, हू जाणू हू समळ सरदारा रै साग रतना चोखी तर दुग री रिच्छा कर सकला काइ मजाल कै मन्नु उण र जीवत दुग री कार ई लाधी कर सकै ?

गुमानसिंघ—(अचरज भरय स्वर मे) काल री ईज तो बात है अनदाता ! उण बुज-माथ मार्चो लेय र राजकुमारी जिण भात मलिककाफूर रा दात खट्टा किया हा हू तो देखना ई रयग्यो साच कैवू अन्नदाता ! राजपूत जात-नै इण तर री राजकुमारियां माथ घणो गरब है घणा अभमान है

रतनसिंघ—राजपूत री परम्परा रण म हुवै देखोला आज रणबका भाटी राजपूत आप रा साम सारू किण तर वरियां रा माथा तरवारां री धारां उतार अर विजय पावै (रुक र) देखो ! दुसमणा री सेना वधती थकी आय रयी है

(३)

रतनकुवरी—(अचरज भरय स्वर मे) पन्ना ! देख ! ओ काई आय रयो है ? वळवत ! मार्चो सभाळ ल साव कोई हुव बच र जीवता नहीं जावणा चाहीज वळवत ! दाता रो सदेस चार दिन सू नहीं है ? काई हाल है कोई पता नी

बळवत—(सशय भरय स्वर मे) बाईसा ! अन्नदाता रो ईज आदमी हुवला !

रतनकुवरी—(अेक तीर चलाव तीर र गिरण री आवाज आवै वीरता भरय स्वर-म) कुण मानवी है ? रुक जा !

अजनबी—(डरयोडी बोली-म) अ नदाना रो सन्देस लायो हू वाईसा !

रतनकुवरी—(अचरज भरय स्वर म) सन्देस ! (क्रोध भरय बात-सू) मदस लायो है ? यान दे बठ मू वाई सन्म है ?

अजनबी—(घाड साहस भरय स्वर म) गुपत सदस है वाईसा ! सगळा न सुणावण रा नानी

रतनकुवरी—(क्रोध भरय स्वर-म) घूत ! (तीर चलावण अर सीटी बजावण री आवाज)

सिपाही—हाजर हू वाईसा !

रतनकुवरी—(फटकार र स्वर म) पकड नो इण घूत न म्हार-सू छळ करणिय इण यवन न बताय दा क इण दुग रो अेक अेक पत्थर आग है छळ करणिय-न काई दण्ड मिल इण दुग म जमवत ! बताय दा इण छलिय-न !

(राजकुवरी अर दूज सनिका री आग वधण री पग धुनी)

(४)

द्वारपाळ—सम्मा ! वासम्मा ! अेक अरज है !

रतनकुवरी—(हसता अर प्रससा र स्वर-म) जाग रया हो आप ! आप माय ईज तो दुग रो भार है आप राजी तो हा ? काई वात है ?

द्वारपाळ—(धीर धीर वात करण री चष्टा) आज आधीरात-न यवन सेनापति मलिककापूर इणी रास्त-सू दुग म आवता मातीमहन र आगआळी लाकडी नाळ र दोया वानी मारयो लय र सगळा न पकड लवण रा खरा इतजाम कराय दीजा वाईसा ! (हस र) सोनो देखण री लायन करयो है कितोक खरो उतरसी देखणो है

रतनकुवरी—(वारता भरय स्वर-म) सावास ! सगळो प्रवध हुय जासी वावासा ! आप आज महमाना न भेज दिराया आटा सरदार घणी रूडी मिजमानी देसी दुसमणा-न

(आग वधण री पग धुनी)

(५)

पद्मा—पूरा सात दिन वीतग्या वाईसा ! आप आख ई भेळी नी करायी आप नीद कगवो ! सगळा सरदार दुग री रिच्छा कर लसी ? अब ता दिन रा ई उगाळा है वाईसा !

रतनकुवरी—(विस्राम र स्वर म) पद्मा ! तू नी जाण जीवण-मरण र इण भणा म नीद नी आय सक पदमा ! समरभाम म अेक-अेक भूल रा कित्तो मोल चुकाणो पड पदमा ! तन नी मालम । जद ताई सगळी यवन-सेना न

खाडै री धार नी उतार दूं जद ताई इण आख्या म नीद नी आवला, पदमा ! नी आवला नीद तो सगळी यवन-सना-नै सुताय र ईज आमी

[धीमी धीमी पग धुनी अर वाना री अवाज]

(६)

सेनापति—साबास द्वारपाळ ! राजपूत वायद रा घणा साचा हुव चालो अव आगै रा रस्तो वताय दो काई फेर है ?

द्वारपाळ—(विस्वास भरय स्वर म) वाकी सानो कठ सेनापति !

सेनापति—(विस्वास-सू कवै) मिल जासी द्वारपाळ ! सगळो सानो ई नी पद अर इनाम भी मिलसी पण म्हारै सागै चाल र रस्ता ता वताय दा देखो कोई आय नी जावै ?

[थली निकाळण री आवाज रै साथ आग वधण री पग धुनी सुणीज है अचाणचक पगा री आवाज वद हुव अर कूदण री आवाज आव सागै ई घणाकरा आदमिया र भेळा हुवण री पग धुनी]

सेनापति—(अचरज भरय स्वर मे) हरक चान न नाकाम करणिया अ राजपूत रण-सूरमा हालण र सार्ग-साग हरेक छळ सू पूरी तरै वाकफ है इणा न जीतणो घणो मुसकल है माहमद ! घणो मुसकल !

माहमद—(निरासा रै स्वर म) खुदावद ! अब सा आपा सगळा इण दुग म कद हा सगळी वात माथ पाणी फिरग्यो खुदावद !

(७)

रतनकुवरी—(वीरता भरयै स्वर म) सावास जसवत ! सावास सेनापति ! समर भोम म रजपूता-सू सामना करता थावग्या अब छळ रो रस्तो अपणाया धाग्यो दणा चाया ! सनापति ! जिका रजपूत जुध म कटणा जाणै, व सौन र लाभ म आप रा अर आप र देस रो नास ना करावला छळ अर बळ-सू ना जीत सकोला सेनापति ! नी जीत सकोला ! जिण राजपूता आप री आन-मान अर मातभोम सारू मरणो विचार राख्या है वै इण तर जीत्या नी जाय सक सेनापति ! बाला काई खातरी करू ? जसवत ! सगळा र हाथा नागोरी गणा पराय दा

[हथकडिया री आवाज सगळा र हाथा म हथकडिया पड है]

जसवत—सिपाही ! सेनापति न ऊगूण वुरज म अर दूजा-न वाच-पाळ उत राद वुरज म बद कर'र चावी लाय दो देखो किणा तर री तकलीफ नही हुव !

[सगळा र चालण री पग धुनी रै साग साग हथकडिया री अवाज]

रतनकुवरी—(नम्रता र स्वर म) जसवत ! सगळी सना-सारू रसद रो

प्रबध तो पूरो है ? कोई कमी तो नही आय रयी है ? सगळ वदिया-न रसद मिल रयी है ?

जसवत—(थोडा रुक र) ठीक ई प्रबध है पण

रतनकुवरी—पण काई ? जे कमी हुमी तो अेक वखत भोजन करसा सगळ वदिया-न बराबर खुराक मिलणी चाहीज ! जसवत ध्यान राखजे ।

(घोडा र टापा री अवाज)

(८)

गुमानसिंघ—(विजय र स्वर म) खम्मा बाईसा ! अनदाता री विजय-सार आप-न वधाई है शाही सेना-न अनदाता खदेड र माळवै तक पाचाय दी है आप जिण वीरता-सू दुग री रिच्छा करी अनदाता घणी घणी वधाई भेजी है

[बात न बीच म काट र रतनकुवरी आप रो हार उतार हार उतारण री अवाज आव]

रतनकुवरी—(पण हरख-सू) गुमानसिंघ ! औ लवो वधाई म म्हार गळ रो हार आप सगळ भाली सरदारा-ऊपर धरती-न घणो घमड है आ दुसमणा री सेना आप रो सगळो छळ अर बळ अजमाय लियो पण काई मजाल क दुग री कार ई लाडी हुय जाव ? (विजय र नगारा री अवाज आव है)

गुमानसिंघ—(प्रसन्नता र स्वर म) बाईसा ! दखाशा ! अनदाता सगळ सरदारा-साग विजय घजा फरावता पधार है

[अचाणचक अेक अजनबी रा आवणो]

(९)

अजनबी—(नम्रता र वचना म) सलाम महारावळ साहब ! जहापनाह बादशाह-का दस्तावेज पेम हा !

रतनसिंघ—(क्रोध भरय भाव-सू) पदमसिंह ! देखो ! यवनसाह री फेर काइ मनसा है ?

पदमसिंघ—(हस र) सधि-पत्र है अनदाता ! सनापति मलिककाफूर-न छोड र सधि करण रो बादसाह सदेस भिजवायो है अनदाता ।

रतनसिंघ—(राज्योचित गभीरता-सू) पदमसिंघ ! यवन-सेनापति-न म्हारै सामन हाजर करो (पदमसिंघ र जावण री पग धुनी)

(१०)

मलिककाफूर—(गभीरता-सू) सलाम महारावळ साहब !

रतनसिंघ—(स्नेह भाव-सू) सनापति ! युद्ध री वेळा-म काई पतो नही लाग

सक कँ किण री खातरी किण भात की जाय सकै रतना सू आप री खातरी म जरूर भूल हुई हुवैला काई तक्लीफ हुइ हुवै ता ध्यान ना दिराशा, अब आप म्हारा महमान हो सेनापति !

मलिक्कापूर—(घणै हरख-सू) महारावळ साहब ! राजकुमारी वीर छत्राणी ही नी देवी है देवी ! आप अेकवखत भाजन कर भूखी रैय सगळी सेना न अर राजबदिया नै पूरी सर रसद दी प्राणा रा बाजी लगाय दुग री रिच्छा करी जद ताई इण प्रकार रा रणवका राजपूत अर छत्राणिया धरती-माथ जीवै साच कवू महारावळ साहब ! कोई दुसमण इण भोम-माथ दृषकार करणो ता दूर, आख उठाय र ई नही देख सक महारावळ साहब ! मै जलम भर राजकुमारी रो अहसान नही भूल सकूला

रतनसिंघ—(प्रेम भरय बोला म) सेनापति ! यो लक्षो प्रमोपहार (दाना कानी सू रण बाजा री अवाज)

बोलिया—उण सू भी बो डरू नी जीवण रो साचो निचोड़ है—मृत्यु, पण थ कुण हो ? तीरथ जात्री तो कोनी

ना स्वामीजी ! हू तो अेक लेखक हू अठ फिरतो फिरतो आयग्यो घणो चोखो अर शान्त जागा है यात्रिक नगरा र भीड भडक्क अर थाकन सू अठ आ र मन जिनो वेसो सुख सताप पाव है जो अठ सू जावणो ही नही चाव

फर घणी वाता हुया आगर स्वामीजी म्हारा मितर बणग्या म्हे हमेश मिलण लागिया

(२)

अक दिन म्हे मनसा दवी र दरसणा साल टुरिया म्हार साग म्हारा भायला गवरीशकर हा मनसा दवी डूगर माथ विराज है रस्ता घणा दोरा छिन छिन म मरयु री आशका मिदर पर पूगिया जद विचारा क ओजू अठ नही आवा किसी दोरी जात्रा है !

म्हे सास खावण लागिया उण वखत म्हारी निजर स्वामीजी माथ पडी तुरत कन जाय-न म्हा दोना नमस्कार कियो व मुळक न बोलिया—फरमाओ लेखकजी ! किया हा ?

बोल्यो तरिया हू स्वामीजी ! आ मनसा दवी मन री रळिया पूरता जद पूरता पण मारग म मरण रा भाव सा घणा सूधा हुयग्या हा किसो दोरा मारग है !

स्वामीजी म्हा न अक खूण म लेयग्या उठ व म्हा र साग बस ग्या गहरी मून सामन हरिद्वार री ताती-पाती डूगरिया न गगा री आगी लेरी धारा दीग

मुळकिया—मुसकुराय । पणग—फता । आजू—फिर । अगाणी—आग । आय ग्या हा—आ गय हैं चले आये हैं । झट देसी—तुरन्त । चमकिया—चौंके । निसाड—मार । काठी—नही । चोखी—अच्छी सुन्दर । जागा—जगह स्थान । थाकना—थकावट । वसी—वनी विशेष अधिक ।

२ टुरिया—चले रवाना हुअे । साग—साथ । भायला—मित्र । डूगर माथ—पहाड पर । दोरा—कठिन दुगम । छिन—क्षण । पूगिया—पहुँच । आजू—फिर रळिया—रलिया आनन्द व मनोरथ । पूरता—पूरी करना । सूधा—मस्त । खूणा—कोना । बस गया—बठ गय । मून—मौन (की स्थिति) । डगरी—पहाडी ।

आगीलेरी—सामन । लाग रया हा—दिख रहे था । जाभ पाणी—

रयो हो आभै पासी निजर न्हाख-न स्वामीजी कवण लागा—तू लायक है, तनै अेक कहाणी सुणाऊं—साची कहाणी तू जाणतो हुवला कै इण अनास्था रै जुग मे जद नास्तिकता रो जोर है मिनख अेक कूडी खुशी र लारै गलो हो रयो है, थोथी भागवानी कर है आप रै लोगा र बीच म रय-न खुद नै पिछाण कोनी, अणजाण बणै, खिलावी र नाच-नै खुली गाळिया काढ, उणा रो मरियोड ताई रो टाको कर दियो अडी बखत माय म्हारो अनुभव है, इण मूनवाड रै तप रो निचोड है क अेक अजाणी अदीठी हस्ती है जका आपा लागा री हस्ती री खिलाफत-म है, जको आपण लीक माथ चालत जीवण माय कुचमादा कर है आडी पसरै है वा सगती कुण-सी है? घणा दिना री घोटाई मथाई र पछै हू समझियो हू वा सगती है ईश्वर—उण न भला-ही कुदरत कवा, भला ही आत्म शक्ति पण हू उण-नै ईश्वर-हीज कहूला—जको आपा री काया रै पीजर माय विराज है जका चेतन है उण म विराज है, अर उण रो अमोघ अस्त्र है मत्यु

स्वामीजी गभीर हुयग्या आग बोलिया—आपा-न अठ जको सुख सोवतो दीस है जका फुठरापो दीस है जका चोखा चोखा मन न मोवणिया चित्राम दास है ध सगळा कोरा चिलकारा है छिन म अनीठ हुवणवाळा है हिय री आगिया सू जाणो, था न रिंद रोही ही रिंद रोही लोगैला इण सुख माय कांगे

आकाश की ओर (अभ्र पाश्व)। साची—सच्ची (सत्य, सच्च)। जाणतो हुवला—जानता होगा। अनास्था—अश्रद्धा श्रद्धा हीनता। कूडी—झूठी। लार—पीछे। गैलो—बावला (ग्रहिल)। थोथी—निस्सार। भागवानी—मप नता भाग्यशालिता, अपन को भाग्यशाली समझकर तदनुकूल व्यवहार। रय नै—रहकर। पिछाण—पहचानता है। अणजाण—अनजान। मरियोड इ०—मरने तक का। टाको—मृत्युभोज मरणोत्तर क्रिया। अडी—असी। मूनवाड—मूकता निजनता। अजाणी—अनात। अदीठी—अदृष्ट। हस्ती—(१) सत्ता, शक्ति, (२) अस्तित्व। खिलाफत—विरोध। लीक माथ चालत—साथ चलते। कुचमादा—शरारतें। आडी इ०—सामने आती है सामना करती है आगे बढने नही देती। सगती—शक्ति। घोटाई-मथाई—माथापच्ची सोच-विचार। कुदरत—प्रकृति। भला ही—चाहे। जको इ०—जो कुछ भी चेतन है उस सब म। अमोघ—अचूक। सुख-सोवता—सुख शांति। सुख—स्वस्थता। दीस है—दिखायी पडती है। फुठरापो—सुन्दरता स्वच्छापन। मोवणिया—मोहने वाले। चित्राम—चित्र। सगळा—सारे (सकल)। चिलकारा—चमक। अनीठ इ—अदृश्य होने वाले हैं। जाओ—देखो। रिंद रोही—घोर अरण्य।

दुख ही-दुख है आणद म पीडा है आ पीडा-ही इसी चीज है जका कदई नही मरै—अमर है अजर है इण गी आठ पौर चौमठ घडी री अनुभूति-हीज माणसा न बतावना क जीवण अकारथ है वृथा है बा र देह मिदर रो ईस्वर जागला जद बा न जीवण रै निचोड रो ग्यान हुवला क मत्यु मगळा सू बमी पौंचवाळी है इण मत्यु रो ग्यान हीज जीवण रा सत्य है

स्वामीजी खट सू थम ग्या फेर थोडोक हस र कवण लाग्या—उपदेश दवण रा सभाव पडग्या है—हू तन अेक वहाणी सुणावना हो मिनख न ईस्वर किया नाच नचाव है उण री कहाणी ता सुण कहाणी सुण

कोरो—खालिम। अजर—वृद्ध नही होने वाली। आठ पौर चौसठ घडी—दिनरात। जागला—जागेगा। निचोड—सार, रहस्य। वेसी—अधिक। पौंच—पहुच, सामर्थ्य। खटसू—अेकाअेक। थम गया—ठहर गये। थोडोक—थोडा सा।

लालजी 'र हीरजी-की कहाणी

(लोक-कथा)

[संग्रहकार—मैकालिस्टर]

[लालजी 'र हीरजी की कहाणी एक लोक-कथा है। इसमें रूप परिवर्तन, वेश-परिवर्तन दैवी-संयोग आदि कथानक रूढ़ियों का सहारा लिया गया है। ठगों की बस्ती और उनके लोक व्यवहारों का चित्र यथार्थ बन पड़ा है। राजस्थानी लोक-संस्कृति की कई विशेषताएँ इस कथा द्वारा सूचित होती हैं। इसकी भाषा जयपुरी है। यह कथा मैकालिस्टर द्वारा संग्रह की गयी थी और उनकी जयपुर राज्य की बोलियों के नमूने नामक पुस्तक से संकलित है।]

(१)

अेक गूजर छो जी-की लुगाई करकसा छी चौको दियां पाछै गोबर-पीळी र जातो जी-न वा चूला-का आळयां में भेळा कर देती अइयां छ म्हैना ताईं भेळा करयां गयी फेर वा अेक दिन पीर चली गयी अर दो रोटी कर र ले गयी गेला में अेक भूकी ब्यावर बैठी-बैठी रोव छी वा अेक रोटी ऊन दे दयी अर आप अेक खायी

ऊं-का पाछा सूं जो गोबर पीळी जो वा भेळा कर छी जो सिड गयो गूजर-न जिद ई की बुरी सड़ाद आयी वो सारा घर-न हेरयो अस भाई! या कांई की बास आव छै हेरता हेरता जद ऊं का हात चूला-का आळयां में पड गयो अर ऊ गोबर न फेंकबा लाग्यो तो ऊ गोबर में अेक लाल लाधी लाल ले र वो आप के मांमर लुगाई कनै गयो

जिद ऊड सासरस गवार ई-गवार छा ई वां न दिखायी जिद वां सब गूजर-न क छ—र बावा! या तो कोई लाल कांकरो छ ई न कांई दिखाबा लाग्या? जिद जा र अेक बाण्यां न दिखायी बाण्यूं क छ—म्हां-न कांई परख तू तो कोई

---

१ जी की—जिसकी। पीळो—पीली मिट्टी। र जातो—पीछे रह जाता बच जाता। आळयां—ताक। भेळा—इकट्ठा। अइयां—ऐसे। पार—पाहर। ब्यावर—गर्भिणी। वा—वह=उसने। ऊन—उसको। जिद=जद जब तब। हेरयो—देखा। अस=कि। जद—जब=तब। लुगाई—पत्नी। ऊड—वहाँ। छा ई—थे ही। क छ—कहते हैं। बाण्यो—बनिया यापी

सराफ-नैं लेजा'र ऊ-नैं दिखा गूजर ऊन सराफ-क ले गयो जिद अक-न दिखायी दूसरा-न दिखायी, तीसरा-न दिखायी अस ऊ को तो काई ई सराफ सू मोल कोन हुयो जिद फेर वो बा लाल-नैं ले'र जौंरी-बाजार म सेठ सऊकारा म गयो सब सेठ-सऊकार भेळा 'है गया अस ऊ-को मोल तो कोई-सू ई कोन हुयो पण वा मे-सू अेक लख पती सऊकार छो जी-क कोई बेटा-बेटी कोन छो वो बोल्यो क छ—भाई ! इ को क्यू मोल सू तो आथ ' न पर तू-सू जितरो धन चाल उतरो ई छकडा जुपा'र ले जा अर या लाल म्हानैं दे जा, म्हा-क तो या ई बेटा छ

सो सऊकार गूजर न जित्तो ऊ-सू धन चाल्यो उतरो धन दे'र वा लाल ले लानी अर आपका म्हैन म पालणू घला'र ऊ पालणा मे ऊ लाल-न बठाण दीनी अर सेठ'र सेठाणी दायू आता'र जाता ऊ क झोटा दे सो वा नान छ म्हैना तो गूजर-क रही छी अर तीन म्हैना अब सऊकार-क रही सो अइया पूरा नौ म्हैना म ऊ लाल को तो पुत्तर व्है गयो अर ऊ-को नाव लालजी पडग्या सऊकार सब बडा-बडा पिंडता न अर जोस्या न बुला'र या पूछी अस इ लाल को पुत्तर क्'या 'हैगा सब पिंडत अर जोसी बोल्या—यो तो कोई बडा पु न को परताब छ जिद सऊकार दखीस मैं तो काई ई अस्यो पुन कोन क'रयो भेर गूजर-क ठीक पडायो जिद गूजरी लया—और ता मैं काई ई पु न कोन क'रयो पण मैं पी'र गयी छी जिद अेक भूकी गायवर न गला म अक रोटी तो दीनी छी जिण फेर या सुण'र पिंडत अर जोसी बोल्या—ई पुन का परताब सू इ यो लाल का बेटो है गया छ

(२)

वो अब घडी वधता पलका बध्या अक दूसरा सऊकार क छा अेक बाई जीं-का नाव हीरजी छो जद हीरजी अर लालजी दो या क सगाई है गयी

ऊ—उस । जौंरी—जौहरी । कोन—नहीं । आ'र ई न—है हा नहीं । जुपा'र—जुतवाकर । अस—सा पादपूर्ति के लिजे प्रयुक्त निरथक शब्द ।

पालणू—झूला । घला'र—डलवाकर । बठाण—बिठा । झोटा—झूले को हिलाने वाला धक्का । म्हैना—महीने । पुत्तर इ०—पुत्र हो गया । जोस्या—जोशियो (ज्योतिषी आदमी) । अइया—ऐसे हो गया । परताब—प्रताप फल । अस्यो—असा । ठीक पडायो—पता लगवाया । भूकी—भूखी ।

२ घडी वधता इ०—घडी में बढे उतना पल में बढ़ा । छा—थी ।

पण पणमसर की असी मरजी हुई अम लालजी का बाप मरग्यो सेठजी का मरवा-सू वा-का घर मा आ गयी नादारी अस लालजी अर वा की मा दोयू मीनत मजूरी कर र आप रो पेट भर सगाई करथा घणा दिन व्है गया जिद हीरजी-की मा जाणीम भाई ! जद सेठजी सू तो मर ई गया अर वा-क अब क्यू आय-नै-साय अस थे हीरजी की सगाई दूसरी जगा कर दीनी कोई सजोग-सू लालजी ऊ इ जोसी की साळ पढवा जाय छा जड हीरजी पढै छा पण हीरजी क्यूक लालजी की सुरत पिछाण लीनी वा लालजी-न सब हाल-हवाल पूछ्या अर मन म जाण गयीस या-ता म्हारो बीद छ जिद वा लालजी-नै क छै—थे इ मोदी-का सू था दोयू मा-बेटा-क ताई लाबा-न ले-जावो करा अर थे रोजीना पढवा आवो करो

थोडा दिना पाछै हीरजी-को ब्याव रप गो ऊ दिन तोरण मारया पाछै हीरजी अर लालजी दोयू मरदाना लत्ता पैर र घोडया माल चढ घोडयो नचावा लाग्या जिद जान-का तो जाण—भाई ! माडा-का छै अर माडा का जाण—भाई ! जान-का छ बै तो दोयू नाचता-नाचता कोसा निकळ गया दिन ऊगता ई वा का हेरो माच्यो नोग-बाग हेरबा नै निकळया सो वा को सा कोसा ताई पता ई कोन लाग्यो जिद जान-का तो जनवास चल्या गया अर माडा का माड चल्या गया

(३)

बै जाता-जाता अेक ठगा-का गाव मे पोचकर हात मूढो धोबा को विचार करयो ठग तो कोड लूटबा-नै गया छा अर ठगा की लुगाया मान-दब'र बोली—हाय-हाय ! आज कोड चल्या गया ? या वात हीरजी सुण लीनी जिद वै

बाई—बहन यहा पुत्री । नादारी—दरिद्रता । मीनत—महनत । करया—किय । घणा—बहुत । जिद—तब । आय न साय—धन न धन ।

जगा—जगह । ऊई—उसी । साळ—शाला, पाठशाला । जाय छा—जाते थे । जड—जहा । पढ छा=पढते थे (आदराथ बहुवचन और नरजाति)। क्यूक— कुछ-अेक । पिछाण—पहचान । बीद—दू हा । थे—आप । इ—इस । मोदी-का-सू—मोदी के यहा स । ले-जावो करो—ले जाते रहा । रोजीना—रोजाना । आबो करो—आते रहो । रप गो—स्थापित हो गया । तोरण मारया—तोरण मारन के (तोरण मारना विवाह की अेक रस्म है) । लत्ता—कपडे । मालै—ऊपर । जान-का—बरात के (लाग) । माडा-का—कन्या-पक्ष के (मडप) । हेरो माच्यो—खोज हुई । जनवासो—बरात गृह ।

ऊडा सू भागा न चल्या गया ठगा न घरे आता इ वा-की जुगाया वा-नै या-क पाछै खिनाया हीरजी-लालजी वा न आता देख र बोल्या—तीर उठाओ ठगा म-सू तीन तो हीरजी-का तीर सू मर्या अर तीन लालजी का सू मर्या अेक बाकी बच्यो सो वा-का घोडा ले र आप-का गाव म आ र घा-ा-न बाध र आप अेक घोडो न'र वा-कै पाछ-को-पाछ गयो

हीरजी अर लालजी चाल्या चाल्या अेक बडा सर-नै फळस पोच्या अर उठै आप-का घोडा भी बाव दिया अर आप भी उतर पडघा वै ऊड ई रसाई करी हीरजी ता रसाइ करबा लाग्या अर लालजी ऊ सर म चीज वस्त लेबा न गया ओ ठग आ र वा-कै घोडा की लीद बीणबा लाग गयो अर हीरजी ऊ-नै कै छै—रे तू क्यू म्हा का उठा र ले जायलो काई ? जिद वो क छ—ना महाराज ! मैं ता इ न बच र खावा को मलीको करलो सो हीरजी ऊ-न गरीब जाण र आप-क राख लीनू अब लालजी बजार जा र दाणा हाळा-न ता दाणा का साई दियाया अर फेर तमाळी-क मोडा लेबा न गया सो तमालण वा-न माडा कर र बठा लीना हीरजी रसाई छाड र लालजी न हेरबा आया जिद देख काई क लालजी तो मीडो हुआ तमालण-क बन्या छ देख र उळटा ई चल्या गया

ऊ सैर को राजा नार-की सिकार खेलवा-न रोजाना जाय अर हीरजा भी रोजीना देखवा न जाय अेक दिन नळा-म अस्यो भारयो नार आ गयो सो कोई-सू ई का मरघो न जिद हीरजी आप-का घोडा-माळा-सू तीर-की द र

३ काड—वहा। ऊडामू—वहा स। खिनाया—भेज। मरया—मरे मारे गये।

बच्यो—बचा। चाल्या-चाल्या—चल चल चलने-चलते। फळस—प्रवेश द्वार पर। ऊ—वही। वस्त—वस्तु। बीणबा—चुगन अेकत्र करन। क्यू—कुछ। म्हाको—हमारा। जायलो—जावेगा। काई—क्या। गावा-को—भोजन का। मलीको—प्रबंध व्यवस्था उपाय। आप-क—अपने पास। दाणा हाळा—दान वाले अनजिन्सा। साइ—पेशगी बातचीत पक्की करने के लिए आरंभ म दिया जाने वाला अल्प धन या वस्तु। दियाया—दे आये। मीडो—मेढा। तमालण—तवायिन। उळटा ई—वापिस ही। नार-को—सिंह का। नळा—आसपास की भूमि स नीची वह भूमि जो प्राय वर्षा के पानी के बहने स दूर तक लकीर के रूप म बन गया हो। भारयो—भारी। काई सू—किसी स भी। घाण द०—घोडे पर से तीर को मारकर।

ऊ मारन्न मार नाख्या जिद राजा हीरजीन्न बुला र क छै—रे भाई जुवान ! आ तू म्हा-की माथ रवा कर राजा र हीरजी जाय छा जिद राजा-न तिस लागी राजा क छ—'वार पाणी चायज जिद हीरजी सीसा म स अेक पाणी का सीसा काढ र राजा-नै पाणी पा दियो फेर राजा क छ—भाई ! अब ता क्यू खावा-नै भी चायजै जिद हीरजी सीसा म-सू काढ र दो लाडू ता राजा-नै दीना अर दो आप खाया राजा राजी व्है र हीरजी न क छ—भाई जुवान ! तू-न चायजै सो ई मांग जद हीरजी क छ—और ता काइ भी नै सोना-का सौ टका राजीना चायजै छ सो राजा माना रा सौ टका तो राजीना कर दीना अर ऊ-न आप-की बेटी परणा दीनी अर हीरजी का नाव लखटकिया जुवान पड गया अर राजा का भी सब काम ठा ई करवा लाग गया

फेर ठा सब जिनावरा-को नहाई करायी कदे घोडा-का कदे काइ-की कद काइ-की अर पाछै ई-माछ मीडा-को जिद सब सहर-का मीडा आया अर तमासण-का मीडा भी आयो हीरजी ऊ मीडा-को डागे ताड र लालजी कर दीना फेर आप-कै देस जावा नै राजा-सू सीख मागी राजा वा-नै नरा धन-दौलत देय र सीख देय र विदा कर दीना

हीरजी र लालजी अर वा राजा-की बाइ तीयू चाल्या थोडी-सी दूर चाल्या र अेक नदी आगी ऊ नदी-का तीर माळै डेरा कर दीनू फेर राजा-की बेटी न ता डेरा-की चौकस बठा गया अर हीरजी अर लालजी आप का चाकर न ले र नदी मे न्हावा-न गया चाकर-न ता कपडा खोल र ठा-की चौकस बठा दीनू अर आप दोयू न्हावा-नै नदी म धस्या अर हीरजी ता लालजी न क्यो—देखा थे क चुभक्या म निकळा अर लालजी बोल्या—देखा हीरजी ! थे वे चुभक्या म निकळा सो हीरजी तो चुभकी मारी अर वो ठग लालजी -की नाड काट र धड पाणी म रवा दियो अर मूडो-न कूचा म फेंक'र सब

नाख्या—डाला । रवा कर—रहता रह रहा कर । तिस—प्यास (तृषा) । चायज—चाहिअे । 'वार—अवार अभी । सीसा—सलीता थला । सीसा—पात्र । पा दियो—पिला दिया । का'र—निकाल कर । काई भी न—कुछ भी नहीं । टका—रुपय । परणा दीनी—विवाह दी । कद क०—कभी किन्ही की कभी किन्ही की । सहर—शहर । सीख—विदा । नरा—बहुत । विदा कर दीना—रवाना कर दिये । बाई—बेटी । नदी—नदी । आ गी—आ गयी । माळै—ऊपर । चोकस—चौकसी चौकीदारी मे । बठा—बिठा । देखा—देखें । चुभकी—डुबकी । नाड—गर्दन गला । मूडो—माथा । कूचा—अेक पौधा ।

माल मता लय र भाग गयो हीरजी निकळ र देख तो चाकर भी कोन अर लाल जी भी कोन निकळया लालजी न्है तो निकळ ! मो हीरजी अर राजा-की बाई दा यू गाव अर विलाप कर अतरा ई म महादेवजी अर पारबतीजी मिरतलोक म आया सा महादेवजी ता क स ई गर्ने चालो अर पारवतीजी क ई गल चालो फेर महादेवजी अर पारवतीजी ऊ नदी-कन आया जिद पारवताजी हठ करयो अक अ लुगाया क्यो रा र छ ? या-न काई दुख छ ? या का दुख दूर कर र मैं तो आगा-न सरकू ला महादेवजी क छ—पारवतीजी ! थ बावळा हुया छो अठ तो सबी दुखी छ कुण-कुण क दुख-ताई हठ करोला अर कुण कुण-को दुख दूर करोला पण पारवतीजी ता अेक मानी नैं अर बोल्या—महाराज या का धणी-न सरजीवत कर र या-का दुख मेटोला जिद ही मैं तो अगाडी पग धरू ली जिद महादेवजी धड तो पाणी म-सू काढयो अर माथो कूवा म-सू लेय र आगळी-का छाटा दीनू दताई लालजी सरजीवत न्है र बठ गया फेर महादेवजी अर पारवतीजी तो चल्या गया

(४)

अर हीरजी र राजा की बाई लालजी-नैं ले र डेरा आ गया ऊ ड जा र न्हाया धोया अर रसोई जाम र बठया खाना कर छा अतराई म रात पड गयी जिद बाल्या ता क छ—अब रात रात तो अठ ई रस्या अर दिन ऊगता ई चल्या चालाला अर ऊ राजा की बाई न हीरजी आप-को भद खोल दीनू अर कही—भाई ! मैं भी थारी नाऊ लुगाई ई छू अर य आपणा दो'या का घर धणी छ—सो देस चाल र आपा दो यू ई या-सू ब्याव कर लस्या वा राजा की बाई क छ आछ्या य तीयू ऊ डा-सू चाल्या चाल्या अेक उजाड बगान वन मे पोच्या ऊ डा-सू चालता चालता ऊ ठगा-का गाव-क फळस आया ऊ ड लक्वी

मान मता—धन दौलत । कान—नहीं (है) । ह य तो—हा तो । अतरा ई म—इतने म ही । मिरतलोक—मृत्यु लोक मत्य-लोक । क स—कहते हैं कि । अक—कि । आगा-न—आगे को । सरकू ली—सरकू गी चलगी । वावळा—वावले (आदराथ बहुवचन और नरजाति) । माना न—नही मानी । सरजीवत—सजीवित, जीवित । अगाडी—आगे । छाटा—छीटा । हव र—होकर ।

४ अर—और । रात रात—रात भर । अठ ई—यहीं । नाऊ—नाई समान । य—ये । घर धणी—घर के मालिक, पति । देस—स्वदेश । आच्छ्यो —अच्छा । बेगान—निर्जन ।

विणजारा-को टाडो पड यो छो लक्खी विणजारो वा नै देख र क छ—भाई मानखीओ ! अड तो था-न मार नाखसी य ता ठगा-का गाव छ अर अड अेक ठग की वटी छ जो सक्ड था-न मार मार र वा का धन खास लीनू छै हीरजी अर राजा-की बाई था बात सुण र डरप्या लालजी-नै क छ—म्हाराज ! अडा-सू वेगा चाला पण लालजी क जिद आ गयी क छ—म्हे तो ऊ ठग-की बटी-नै देखस्यां अक वा वसीक छ लालजी हीरजी-न अर ऊ राजा की बाई-न क छ—थे मरदानू भेस कर र आगै चाल र फलाणा गाव म उतरो मैं वी आऊ छू सो हीरजी अर राजा की बाई दो यू मरदाना साग कर'र घोडा माळै चढ र ऊ गाव-न चाल्या जी की वई लालजी क्ही छा अर लालजी ऊडै ई र गया

अब गाव मे ऊ ठग की बेटी-न ठीक पड्यो सो ऊ को बाप भाई लालजी कनै विणजारा का टाडा म आया आ र क छ—बाबा सा ब ! थे तो म्हा-की बाई-न परण र ई छोड गया अब तो घरा चालो अर मिजमानी जीमो सो लालजी जाबा लाग्या जिद विणजारो वा-न दो-तीन तो विणजारा साथ दीना अर वा न सिग्वा दीना अक थे रात-न म्हैल पधारो 'र ढोलणी-माळ चढो जिद पैली ढालणी-को पल्लो हुघाड र पाछ बठज्यो लालजी गया र जीम्या चूट्या ठग-क घर जवाई न गीत गाळ गाया पाछै दिन आथ्यो जिद म्हैला पधारघा ठग-की बेटी ढालणी विछायी र क्ही—बठो लालजी जा र ढोलणी ऊपर चढबा लाग्या जिद अेक कूट उठा र वठया जिद दख तो नीचा न अेक खाडा म कोयला झगझगाव छ ठग-की बेटी जाणी अब ई-न तो ठीक पड गयो दूसरी ढोलणी विछा र सो गया दिन ऊगता ई लालजी तो उठ र विणजारा का टाडा

ऊडा-सू—वहा से। फळस—प्रवेश द्वार पर। लक्खी विणजारा—लक्खी बजारा। टाडो—बैला का समूह। मानखीओ—मानवो। अडै—यहा। नाखसी—डालगे। सक्ड था-नै—सक्डा(लोगो) का। खोस लीनू—छीन लिया। डरप्या—डरपे, डरे। अक—कि। वसीक—क सी अेक कसी। मरदान—मर्दाना। भेस—वेष। साग—रूप परिवतन वेश धारण। माळै—ऊपर। ठीक पड या—पता लगा। कन—पास। परण र—याह कर। घरा—घर म। मिजमानी जीमो—महमानी मे (भोज) जाम। म्हैल—महला म। पधारो—जावें (पद धारण से)। ढोलणी—पलग(डी)। पल्लो—पल्ला। हुघाड=उघाड कर खालकर उठाकर। पाछ—बाद म। जीम्या चूट्या—जीमे जूठे (भोजन समाप्त किया)। आथ्या—अस्त हुआ।

म आ गया हात मूडो धोवा-न गया अर ठग आप-की बटी न क छ—काल न ता आज म्हा

(५)

दूसर दिन लालजी फेर ठग-क घर आवा लाग्या जिद विणजारो क छ—भाई ! आज थारा प्राण जासी लालजी क छ—देखो मैं वी ऊ प्राण लवा-हाळी न ले जाऊ तो-ता म्हारो नाम लालजी सो लालजी ठग-क घर गया अर रसोई जीम चूठ र रात पडा र म्हैन पधारया अर चौपड-पासा खलवा लाग्या जिद लालजी ठग की बेटी-न क छ—भली आदमण ! त न अक बात पूछू छु अक जा य अतरा मिनख विणास्या छै या का पाप कुण-न लाग छ या बात तू थारा बाप न पूछज्र या क छ—आच्छया ! जिद रात-न ता स सो गया अर दिन ऊगता ई लालजी सो हात मूडा धावा-न ऊठ'र विणजारा का टाडा मे चल्या गया

ऊ ड रमाई त्यार हुई रमाई ह वनी बगत ठग की बेटी आप का बाप-न क छ—दादाजी ! मैं थान अक बात पूछू अस जो मैं अतरा मिनख विणासू छू या को पाप कुण न लाग छ बाप क छ—बटी ! कर जान ई लाग छ तू या बात आज क्यूं पूछी ? बटी क छ—ना दादाजी ! मैं तो या इ पूछी छ रसोई जीम र दिन आथ्यो जिद लालजी फेर म्हैन पधारया व ई जा र चोपड-पासा खेलवा लाग्या अर लालजी पूछी क छ—भली आदमण ! काल म तू न बात पूछी जी को थारा बाप काई उत्तर दीनू या क छ—म्हारो बाप कही स—बेटी ! कर जा न ई लाग छ जिद लालजी ऊ-न क छ—बावळी ! तू क्या अतरा पाप कर छ ? देख थारा पाप कोई-बी बटाव न य थारा बाप भाई पाप ता थार क्न कराव छ अर माल आप उडाव छ मान तो सब क बाट आ जाय अर पाप तू-न अकनी न ई लाग मो तू राम का घर म आगा न काई जुवाब दली ? देख थारो सगो बाप ई

कूट—काना। काई इ०—क्या देखत हैं कि। धाडा—धडडे। भगभगात—जल रह हैं। ठीक पड गयो—पता लग गया। मूडो—मुह। न तो—नही तो।

५ ऊ—उस। लवाहाळो—लनवाला। चौपड—चौसर का खेल। आदमण—आदमी की नारीजाति। भली आदमण—भला मानुस। अतरा—इतने। मिनख मनुष्य। विणास्या—मारे (विनाश स)। हुती इ०—होते वक्त। क्ड्या—कम। याई—यो ही अस ही। जी-न ई—जिसका ही=उसी को। जिद—जब तब। बाट—हिस्स म। अेकनी—अकेली। आगा न—आगे बाद म जाकर। जुवाब—

तू न या क दीनी अर थारो सगी कोनै हुयो सा तू तो आपणै देस चली चाल, ऊ ड मतखण्या म्हैला-म तो रवो कर, मूब धन-दौलत भोग विलास अर चन कर

ठग-की बेटी कै छ—या ता साची छै, चालो, बार ई चल्या चालो सो ठग-की बेटी आप-का बाप का ताळा-आळा तोड र खूब धन-दौलत काढर गाठ-आठ बाध र त्यार व्है गयी अर बाप-का नारा म जार अेक ऊ टडी ले र, सब ऊ-क माळै लाद र, आप अर लालजी दोयू बठ र आधी-का ई चाल दिया

दिन ऊग्या नरो दिन चढ गयो जिर ठग बोल्यो क छै—आज बेटी जवाई कोन ऊठ्या ? जा र देखे तो ऊ ड ता कोई बेटी न जवाई जिर ठग क छ—बेरी आछ्या दगो दियो अर ठग बेटा न हलो पाड'र कै छ—देखा, बेगा-सो ऊठ'र दख—जे ऊ टडी कसी छ अर कसी कान ऊ ठग-क दो ऊटड्या छी अक तो सारा दिन-म साठ कोस चाल छी अर अेक डोढ सै कोस चाल छी जिद बटा क छै ऊ टडी ता साठ कास हाळी गयी छ, डोढ सै कोस हाळी तो बधी छ कोड अधेरा म ऊ-क भोळ सा लगा सा सुण र बाप कै छ—ता कर ! क्या-की फिकर है बार चाल ल्या छा सा स्र चू घी कर र बाप-बेटा दोयू चाल्या लालजी-की अर ठग की बटी की ऊ टडी थोडी इ दूर रही अर ठग-की बटी लालजी नै क छ—या ल्यो ! म्हारो तो बाप आ गयो या देखो म्हा की बडी ऊ टडी अरडाव छ जिद लालजी बोल्या—तो अब काइ करा ? वा कै छ—थे ता ई बड-का डाळा-क नटक जावो अर मैं हाय घोडो करू छू अस म्हारो बाप र भाई ता था-न पकड्वा न चढैला, म भट ऊ डोढ स कास-की ऊ टडी माळ सब चीज बस्त मल र चढ जाऊ ली अर थे लटका जी डाळा-क नीच लीयाऊ ली, सा थे ऊ क-माळ चढ्याज्यो अस आपा तो लवा व्हाला फेरस बा-क कन साठ कोस की ऊ टडी र जायनी सो आपा हात आवा

जवाब । दला—दगी । सगी—साथी । सतखण्या—सात खडा वाले । रवो-कर—रहती रह सदा रहना । बार ई—अभी । ताळा वाळा—ताले वाल । नोरा म—बाडे म । आधी का ई—आधी रात का ही । नरो—बहुत । कोई इ०—न कोइ बेटी न कोई जॅवाई । ऊठ'र—उठकर । कसी—कौनसी । हाळी—वाली । कोड—कहीं । भाळ—धोखे म । क्यो वी—कुछ भी । 'बार इ०—अभी चलकर (पकड) लेत हैं । चूची कर र या ल्यो—यह ला । वा—वह । अरडावणा—ऊट का बोलना डाळा—बडा डाली । हाय घोडा—रोना चिल्लाना, हाय हाय करना । अस—कि । ऊ—उस । लीयाऊ ली—ले आऊ गी । लवा ह वाला—लवे हागे चल देंगे । फेरस—फिर तो । लूम गया—लटक गये ।

कोनै सा लालजी तो वड-का डाळा-क लूम गया अर ठग की बेटी चिल्लायी क छ—दादा जी ! वगा भाज्यो मू न वाळचो लीया जाय छ या सुण र ठग क छ —बेटी ! आया ठग अर ऊ-को बेटा जा र लालजी-न पकडवा-न वड माळ चढ्या अतरा म वा स सब चीज वस्त ऊ डोढ स कोस-की ऊटडी माळ मेल्र र आप ऊ माळ चढ ऊटडी-नै उठा र लालजी न ऊटडी माथ कूदा र ल्यायू चालता बण्या ठग अर ऊ का बटो राता ई र गया

(६)

थोडी सी दूर जा'र वा-न हीरजी अर राजा की बाई भी मिल गया पाछ स च्यारू जणा आप-क देस चल्या गया ऊ ड जा र लालजी, हीरजा राजा-की बाई अर ठग-की बेटी तीन्यू ब्याव कर लीनु अर ती'या-क ताई सतखण्या म्हैल बणा दीना

मूनै—मुझे। वाळचो—जलाया हुआ (गाला)। वा स—वह ता। मल्र र—रखकर। कूदा र—कुदवाकर।

६ ताई—लिये। सतखण्या—सतखण्डे, सतमंजिले।

सूरज भगवान-री वात

(व्रत-कथा)

[संग्रह-कर्त्री—लक्ष्मी कमल]

[लोक-कथाओं का अेक भेद व्रत कथा है । यह कहानी अेक व्रत कथा है । स्त्रियां रविवार को सूर्य का व्रत करती हैं तब कई-अेक कहानियां कहती सुनती हैं । यह कहानी भी उनमें से अेक है । इसमें एक ग्वाल की निर्लोभता, निरीहता सचाई और ईमानदारी का सुन्दर परिचय दिया गया है । इसे लक्ष्मी कमल ने जोधपुर से प्राप्त कर लिपिबद्ध किया है ।]

(१)

अेक गवाळिया को गाव री गाया नैं चरावतो गाया र भेळा अेक सूरज भगवान रो साडियो ई चरण नैं आवतो गवाळियैं न उण री मा राजीना कवै —तू भगळा रा चराई रा पइसा ता लियाव पण इण साडियावाळा रै घर सू तो कदई विरत रा पइसा नही लाव जणै गवाळियो आप री मा-नैं कय—हू तो इण साडिय रा घरवाळा-न जाणू नही पइसा लाऊ कठै-स ? जद अेक दिन मा कह्यो—काले जण ओ साडियो आप रै घर जावै जण तू इण र लारै-लार जायीज जणैं आप-ही ठा पड ज्यासी क आ साडिया किण रा है

दूज दिन वा गवाळियो मा कह्या ज्यू साडिय र लार-लार गया साडियो सूरज भगवान र घर जाय ऊभा रह्यो जण गवाळिय घरवाळा नैं हेलो पाडियो जण सूरज भगवान री मा बारै आयी नैं पूछियो कै काई वात है ? जणै गवाळियै कह्यो—इण साडियै-नै चरावता मन इतरा दिन हुया पण थे मनै कद ई काई नही दियो जद सूरज भगवान री मा कह्यो—तू कदे ई मागण नो आयो नही तो हू किया देती ? लै अबै ले ज्या

१ गवाळिया—ग्वाला । भेळो—साथ । साडियो—बछड़ा । कैव—कहती है । चराई—चराने की मजदूरी । पइसा—पैसे । लियाव—ले आता है । कदेई—कभी । विरत—वृत्ति । जण—जब, तब । कठै-सू—कहां से । काले—कल । लार इ०—पीछे-पीछे जाना । आप-ही—अपने आप ही । मा कह्यो इ०—मा ने कहा कि । ऊभा—खड़ा । हेलो इ०—आवाज दी । बार—बाहर । काई—कुछ । किया—कैसे ।

जद थाळी भर सान रा जव्र उण-नै थान दिया गवाळिय मसल मैं जव्र ल नियाओर उठ मू चालिया अहडा जव्र गवाळिय कनै ई देखिया नहीं हा उठ-नू लय-न चालिया ता मारग म विचार करण लागा—अहडा करडा-करडा खाला हुव जिग जव्र घालिया म्हा री मा ता बूढी है, वा इणा-न किया पीसला ? आ विचार-न उण वै जव्र मारग म ही फेंक दिया और घरै पाछो आय ग्यो घर आय न आप रो मसनो धटटी माथै मेल दियो दो च्यार दाणा जव्रा रा खेसल र नागियाला रयग्या हा जका गेमनो मलता हेठ जा पडिया

दिनूग गवाळिय री मा घूस वारण लागी जद व जव्र रा दाणा उण र हाथ आया जण मा गवाळिय-न पूछियो क काल तू माडियावाळा र घर पर्दमा लाबण गया हो सो काई लायो ? जद गवाळियै सगळी वात माड न आप री मा न कही जद मा उण-न व जव्र बताय-न कह्यो—अ ता सान रा जव्र हा जब तू फेंक आयो अबार रो-अबार उण माग्ग म पाछो जा और व जव्र उठा ला

जद वा गवाळियो दौड-न उण जाग्या गया पण उठ उण-न व जव्र नहीं लाभा जणा वो पाधरो सूरज भगवान र घर गया जाय-न कह्यो क काल था जव्र दिया जके ता मैं मारग म फेंक दिया अब थ मन और काई दो जण सूरज भगवान उठ बठा हा उणा कह्यो—थार भाग म लिखियोडा नहा हा अब म्हे काई करा ? जद गवाळिय कह्यो—मोट ठिकाण-मू काई निरास नहीं जाऊ मन की तो दिरावो, खाली हाथ पाछो हूँ किया जाऊ ? जद सूरज भगवान कह्यो—था री मनस्या हुव सो माग ल गवाळिय विचार कर न कह्यो—म्हा री मा बूढी हुयगी है घर रा काम काज रसोई और रो उण-सू हुव नहीं जको मन तो काई इसी चीज देवो जिण-मू बणी-बणायी रसाई त्यार

जव—जौ अनाज। गेमनो—ओढने का वस्त्र विशेष। अहडा=ऐस। करडा—कडे। खीला—कीने। बूढी—बूढी। घट्टी—चक्की। मेल दिया—रख दिया। लागियोडा इ०—लग हुए रह गये थ। जका—जो=व। हेठ—नीचे। दिनूग—दिन उगने पर सवेरे। वारण—बुहारने। माड-न—आरभ से अत तक या विस्तार स। बताय-न—बताकर दिखाकर। अबार इ०—अभी का अभी। जाग्या—जगह। लाभा—मिल (लभ)। पाधरो—सीधा। था—आपने। उठ—वहा। अब—अब। मोट ठिकाण सू—बडे घर स। की तो—कुछ तो। दिरावो—दिलाओ=दो (आदरार्थ प्रेरणार्थक प्रयोग)। मनस्या—मंशा इच्छा। रसाई और रो—रसाई आदि का। जको—जो=इसलिए। बणी-बणायी—बनी-बनायी। त्यार—तय्यार। कुडछी—

मिन ज्याव जण सूरज भगवान उण-न अेक कुडछी और अेक कडालिया देय नै कह्या—तू म्हाय धोय न इणा र कन-सू थारी इच्छा हुव ज्यू माग लीज तू मागला ज्यू ही तन मिल जावला

कुडछी-कडालिया लेय नै गवाळिया आप र घर पाछा आयो, और आप री मा-न सगळी वात कही मा घणी राजी हुयी अबै मा-बेटा दोन वखत मन चाया भोजन जीम

(२)

अेक दिन गवाळिय र मन म आयी क सगळै गाव-न जीमाया चाहीज जणै वो सगळै गाव म सिगरी नूतो द आया लाग कवण लागिया—काले ता ओ गाया चारतो और भूखा मरता हा आज अ कन इत्ती मता कठ-सू आयी क सगळ गाव न नूतो दिया है तमासो देखण र काड-सू सारा गाववाळा जीमण-न आया गवाळिय सारा-न तरा तरा री मिठाइया और दूजा भाजन जिमाया जीम जीम-न स अचूभा करता घर गया

अेक पाडासी-न आ वात नही भायी वो सीधो राजदरबार-म गया उठ राजा र आग जाय-न चुगली खायी क फलाण गाव रा फलाणा गवाळियो काल ताई सा भूखा मरता हो और आज उण पूरो गाव जिमायो आर जामण अहडा किया क आज ताणी कद ई नही हुयो

जद राजा उण गवाळिय न दरबार म बुलाया और कह्यो—इतरो धन थार कन कठ सू आयो जको त सगळ गाव-न जिमाया जण गवाळिय कह्या—म्हार कन धन कठ ? हू तो अेक गरीव गवाळिया हू और गाया चराऊ हू सूरज भगवान रो माडियो म्हारी गाया मे चरतो उणा र घर सू विरत-म मन कुडछी-कडालियो मिनिया, जिण सू मैं गाव-न जिमाया राजा पूछिया—कुडछी-कडालिय-सू जीमण किण भात वण ? गवाळिय सारी वात साफ कर-न

कलछी। कडालियो—बहुत छाटी कडाही (स० कटाह)। कन सू—पास स स। मागला—मागगा। मनचाया—मनचाहा अभीष्ट।

२ जीमायो चाहीज—भोजन कराना चाहिअे भोज देना चाहिअे। सगळ इ०—सारे गाव (क लागो) को। सिगरी—समूह घर के सब लागो का दिया जान वाला। नूतो—निमन्त्रण। कवण लागिया—कहने लग। चारतो—चराता। इत्ती मता—इतना धन। काड—कौतुक कौतूहल। तरा-तरा री—तरह-तरह की। अचूभो—अचभा। भायी—अच्छी लगी। फलाणै—अमुक। जको—जो। कठ—कहा। वण—बनता है। साफ करन—स्पष्ट करके।

वतायी राजा बुडछी वडालियो दोनू दरबार म मगवाया और कही—अहडा कुडछी वडालिया गवाळिय र घर मे क्या ? अ तो राजा र घर मे छाज आ कय-न बुडछी वडालियो गवाळिय कन-सू खाम-न ले लिया और महल म भेजाय दिया गवाळियो वळाप करतो आप र घर गयो

दूज दिन राजमहल म राजा गवाळिय रै वताय मुजब हाय घाय-न बुडछी-वडालिया लय न बठो पण वाई भोजन री चीज नही वणी फेर उण-सू आग री लपटा उठी और च्यारू कानी पसरण लागी लपटा बुभावण रा घणा ही उपाय किया पण लपटा नही बुभी स नहा बुभी और आख शहर म पसरण लागी जणै राजा गवाळिय-न फेर पकड-नै मगवायो गवाळियो बोलियो—हु तो मूरख गवाळियो हूँ हु तो इण बात म की नही समझू अ तो मनै सूरज भगवान दिया हा जको उठ-ही चालो

जण सगळा लोग गवाळिय र लार लार सूरज भगवान र घर आया और सूरज भगवान-न हाथ जोड न कयो क भगवान ! म्हा-न किया ई बचावो जद सूरज भगवान बोलिया—म्हे तो अ बुडछी वडालिया इण गरीब भूखै-नै दिया हा या र काई कमी ही जको तन इणा रो लाभ आयो अब तो आग बुभण रा अेक-हीज उपाय है क तू था री बेटी रो ब्याव इण गवाळिय सू कर द और आधो राज उण-न द द

सूरज भगवान री बात मान-नै राजा आप री बेटी गवाळिय-न परणाय दी और आप रो आधो राज ई उण न द दियो उण गवाळिय-न राजा रो दियोडो सहर अबार ताई गवाळियर नाम-सू मसहूर है

छाज—शोभा देते हैं। कय न—कहकर। वळाप—विलाप करना। वताय मुजब—बताये अनुसार। च्यारू कानी—चारो ओर। पसरण—फैलने। नही बुभी इ०—नहा बुभी सा नहा ही बुभी। आखै—सारे (अक्षत)। उठ ही—वहा, सूय भगवान के पास। चालो—चलो। कियाई—कैसे भी किसी प्रकार। बचावो—बचाओ। ब्याव—ब्याह। परणाय दी—ब्याह दी। राज ई—राज्य भी। दियोडो—दिया हुआ। अबार ताई—अभी तक।